(८) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'तुला ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५८ के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५९ से १२७० तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२६० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७० के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२७१ से १२८२ तक में देखना चाहिए।

वृश्चिक (८) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२५० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८२ के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८३ से १२९४ तक में देखना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण । ली संख्या १२९० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या १२९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९४ के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १२९५ से १३०६ तक में देखना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १२९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १३०० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण ली संख्या १३०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०६ के अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०७ से १३१७ तक में देखना चाहिए।

कुंभ (११) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडली में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३१० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३११ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १३१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली सं॰ १३१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली सं॰ १३१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुं॰ संख्या १३१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली सं॰ १३१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुं॰ संख्या १३१८ के अनुसार समझना चाहिए।

'कुंभ' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः प्रथमभावः सूर्य

१३१९

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, परंतु तेज एवं शक्ति की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ी दौड़-धूप करने वाला तथा तेज स्वभाव का होता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष से विशेष सुख मिलता है और वह अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता पाता है। उसका गृहस्थ जीवन आनंदमय तथा प्रभावशाली बना रहता है।
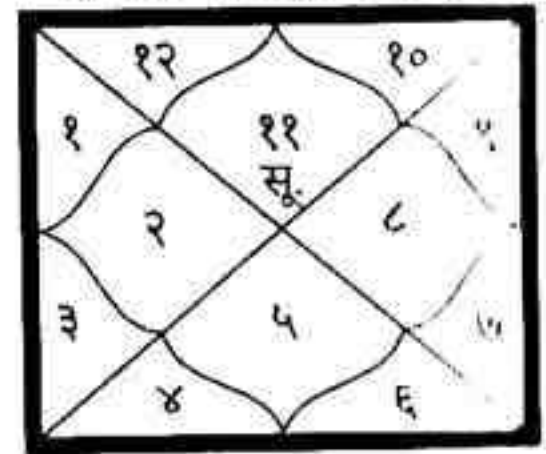
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः द्वितीयभावः सूर्य

१३२०

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब पक्ष से भी पर्याप्त सहयोग एवं शक्ति मिलती है। परंतु स्त्री पक्ष में जातक को किसी विशेष कमी का अनुभव होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः जातक की आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति में वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।
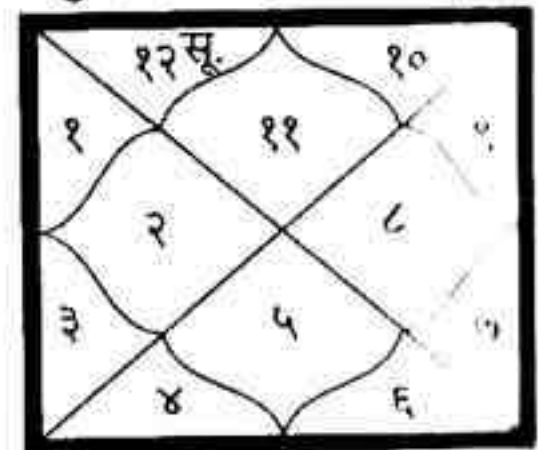
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः तृतीयभावः सूर्य

१२१३

तीसरे भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख भी पर्याप्त मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक धर्म के विषय में लापरवाह रहता है तथा भाग्योन्नति में भी कुछ कमी का अनुभव करता है। ऐसा व्यक्ति यश-सम्मान भी अधिक प्राप्त नहीं करता।
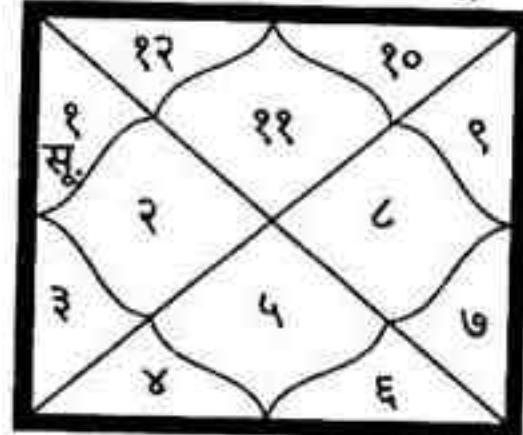
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः चतुर्थभावः सूर्य

१२१४

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कठिनाई के साथ मिलता है। इसी प्रकार व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता रहता है। उसकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होती है।
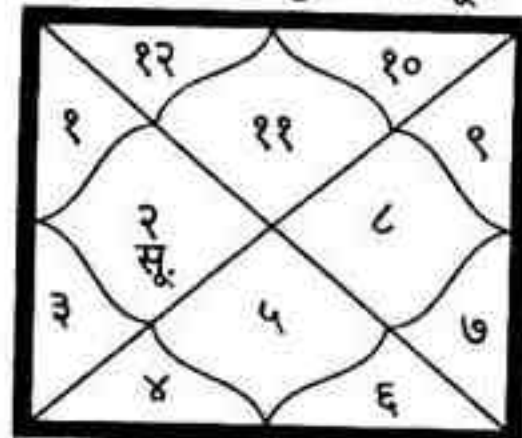
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः पंचमभावः सूर्य

१२१५

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है तथा संतानपक्ष से भी सहयोग मिलता है। उसे बुद्धिमती स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के योग से विशेष लाभ प्राप्त करता तथा अपने जीवन को सुखी, धनी, उन्नत तथा प्रभावशाली बनाता है।
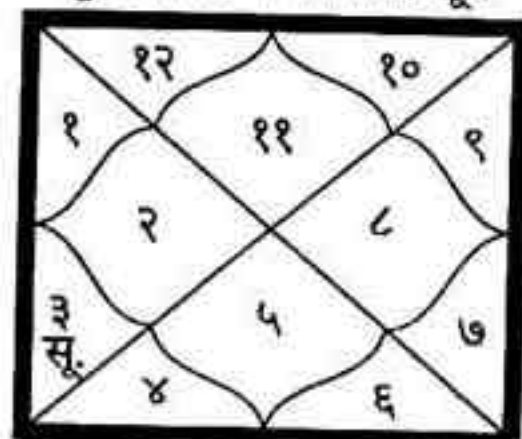
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। उसे व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा स्त्री की शक्ति कुछ मतभेद के साथ प्राप्त होती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से उसे कुछ कठिनाइयों के साथ शक्ति प्राप्त होती है।

कुंभ लग्नः षष्ठभावः सूर्य
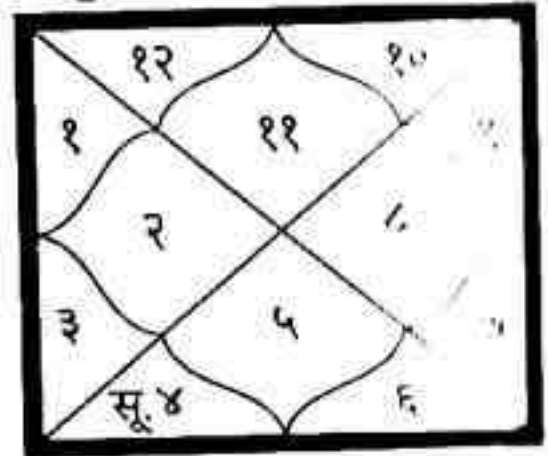
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख पर्याप्त मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। उसे सुसराल से शक्ति मिलती है तथा गृहस्थ-जीवन आनंदपूर्ण बना रहता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी रहती है। स्त्री पक्ष से सामान्य मतभेद बने रहने के बावजूद भी व्यावसायिक सफलता से गृहस्थ-जीवन सुखमय बना रहता है।

कुंभ लग्नः सप्तमभावः सूर्य
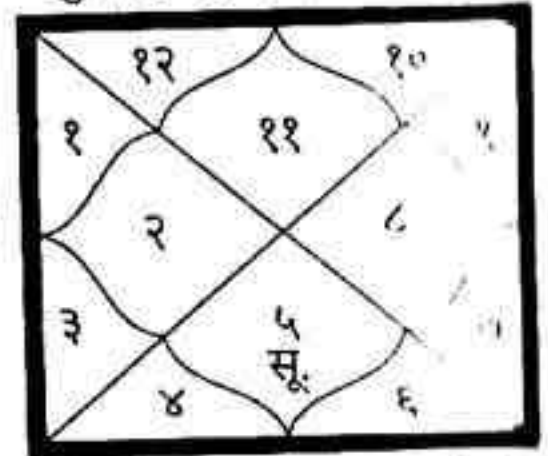
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु स्त्री पक्ष में परेशानी एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के संबंध से व्यवसाय में कुछ सफलता मिलती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की मीन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक व्यवसाय एवं कठिन परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि करता है और उसे अपने कुटुंब का सहयोग भी प्राप्त होता है।

कुंभ लग्नः अष्टमभावः सूर्य
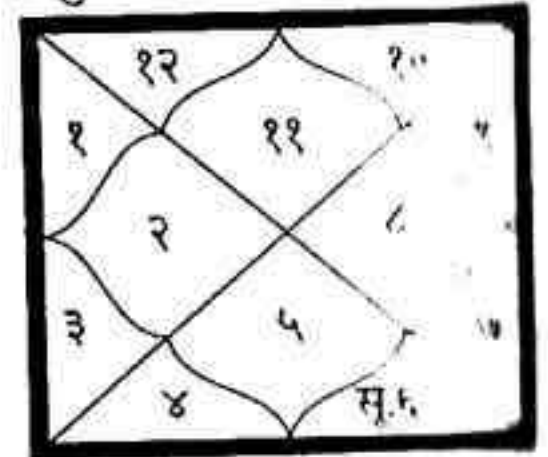
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः नवमभावः सूर्य

१२१९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी आती है तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं होता, उसे स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ साधन के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता। यहां से सूर्य अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में भी विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान होता है तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त करता रहता है।
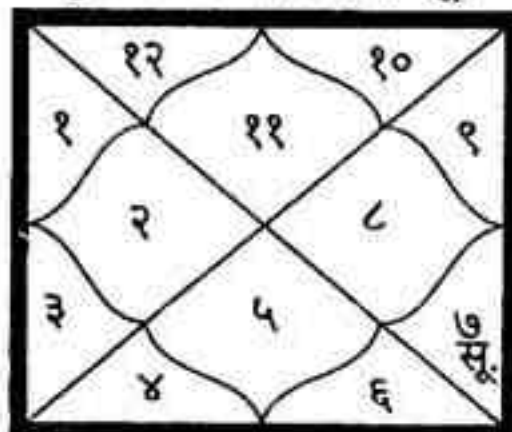
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः दशमभावः सूर्य

१२२०

दसवें केंद्र, पिता, राज्य तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह स्त्री पक्ष से भी श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त करता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि एवं मकान आदि का सुख भी कम ही मिल पाता है।
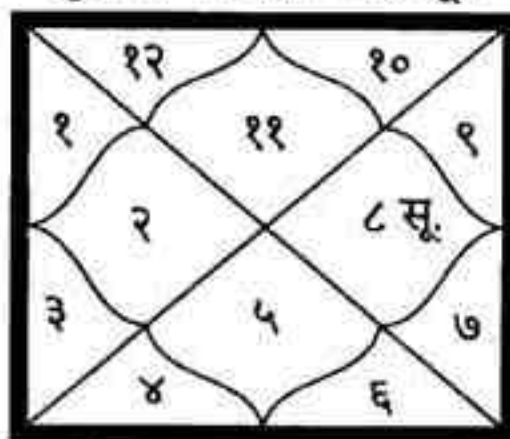
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः एकादशभावः सूर्य

१२२१

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय के द्वारा श्रेष्ठ आमदनी होती है तथा स्त्री पक्ष से भी विशेष लाभ मिलता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक की विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है तथा संतानपक्ष से भी सुख एवं संतोष प्राप्त होता है।
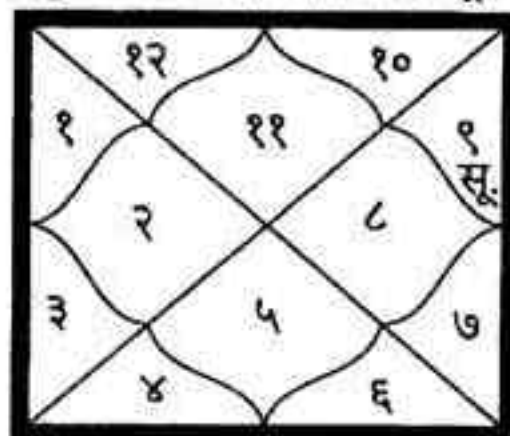
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः द्वादशभावः सूर्य

बारहवें व्यय-भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के कारण कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ की शक्ति मिलती है, परंतु स्थानीय व्यवसाय में नुकसान रहता है तथा स्त्री के सुख में भी बहुत कमी आती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखता है तथा झगडे के मामलों में लाभ उठाता है तथा सफलता प्राप्त करता है।
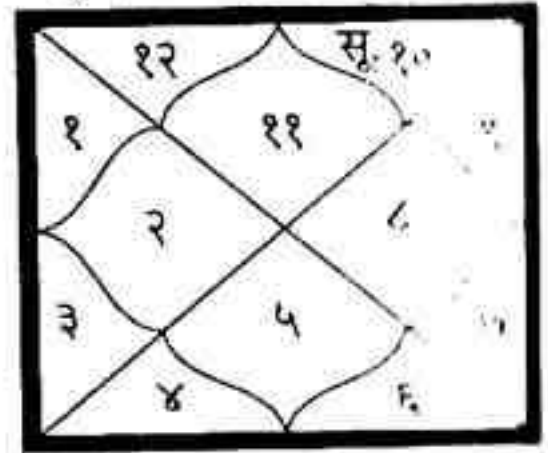
'कुंभ' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः प्रथमभावः चंद्र

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक का शरीर कुछ रोगी रहता है। उसके मन में भय, चिंता एवं परेशानियों का निवास रहता है तथा शत्रु पक्ष से भी उसे कठिनाइयां बनी रहती हैं, परंतु वह अपने मनोबल द्वारा शत्रुओं पर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों पर विजय भी पाता रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक का स्त्री पक्ष से भी कुछ मतभेद रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी चिंताएं एवं परेशानियां बनी रहती हैं।
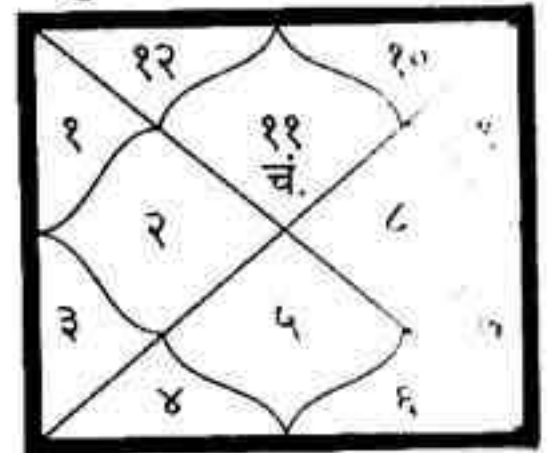
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः द्वितीयभावः चंद्र

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र गुरु की कुंभ राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं परिश्रम द्वारा धन का उपार्जन करता है तथा कुटुंब की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। उसे शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी भी रहती है, परंतु झगड़े-झंझटों से लाभ भी होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के विषय में कुछ परेशानी बनी रहती है।
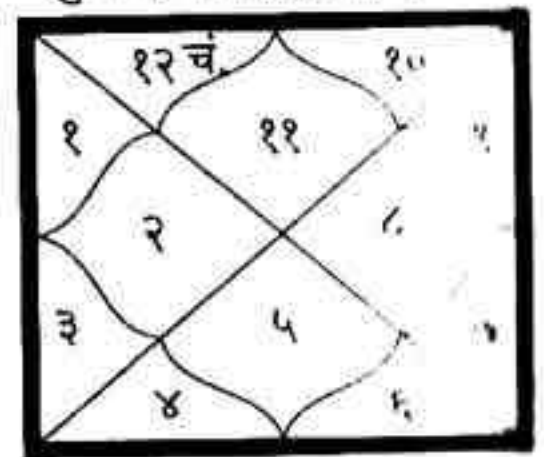
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक के मनोबल तथा पराक्रम की वृद्धि तो होती हैं, परंतु कुछ कठिनाइयां भी आती रहती हैं, साथ ही भाई-बहनों से भी कुछ मतभेद बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति तथा धर्म के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयां आती हैं, परंतु अंततः प्रभाव की वृद्धि होती है और भाग्य की उन्नति भी होती है।

कुंभ लग्नः तृतीयभावः चंद्र
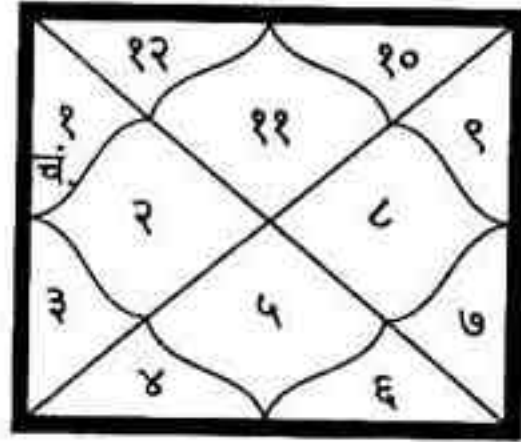
१२२५

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर षष्ठेश एवं उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली रहता है तथा झगड़े-झंझटों के मामलों से लाभ उठाता है। यहां से चंद्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता के सुख में कमी आती है, राज्य के क्षेत्र में झंझट तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

कुंभ लग्नः चतुर्थभावः चंद्र
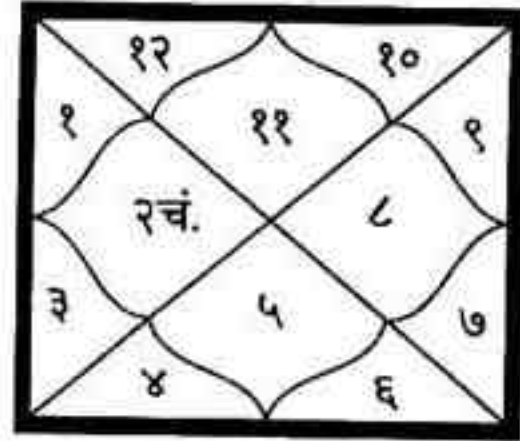
१२२६

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं बुद्धि-बल द्वारा शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखता है, परंतु उसे विद्याध्ययन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं संतानपक्ष से भी परेशानी बनी रहती है। उसके मन में और भी अनेक प्रकार की चिंताओं का निवास रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक कुछ परेशानियों से जूझते हुए अपनी आमदनी की वृद्धि करता है तथा गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ कमाता है।

कुंभ लग्नः पंचमभावः चंद्र
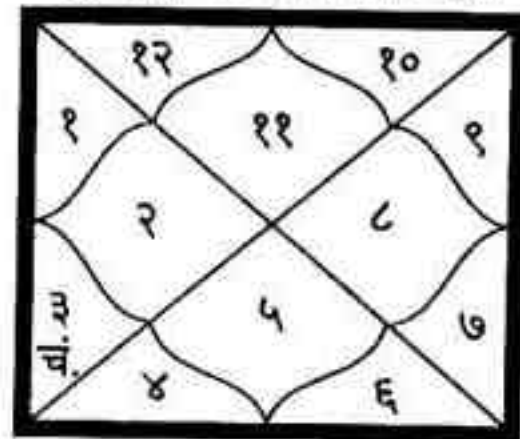
१२२७

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्नः षष्ठभावः चंद्र

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ चं. ४ ६

१२२८

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में बड़े धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है, परंतु उसके मन में चिंताएं बनी रहती हैं। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को अपना खर्च चलाने में कठिनाइयां आती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी परेशानी बनी रहती है। वह अनेक प्रकार की युक्तियों का आश्रय लेकर ही अपना खर्च चलाता है।
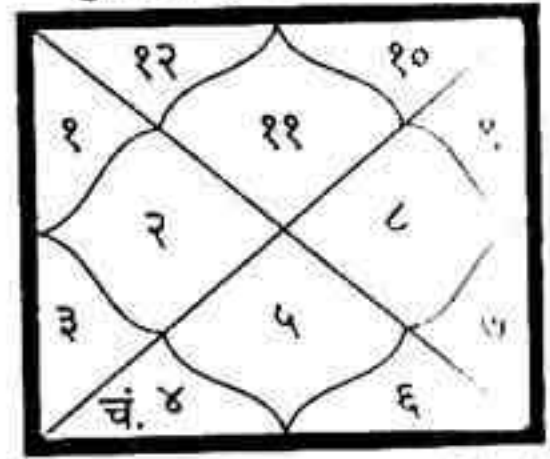
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्नः सप्तमभावः चंद्र

१२२९

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से रोग, वैमनस्य तथा परेशानी बनी रहती है एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से शक्ति प्राप्त करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को रोग एवं चिंताओं का शिकार बनना पड़ता है, परंतु उसका मनोबल बढ़ा रहता है। साथ ही उसे दौड़-धूप भी करनी पड़ती है।
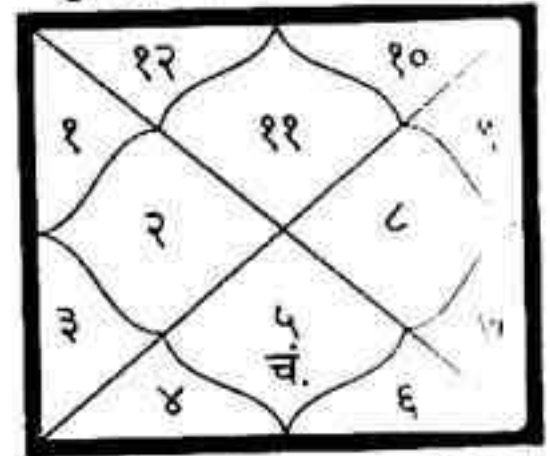
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्नः अष्टमभावः चंद्र

१२ १० १ ११ ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ चं. ६

१२३०

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं संबंध में कुछ परेशानी रहती है एवं पुरातत्त्व की भी हानि होती है। वह शत्रु पक्ष पर बड़ी कठिनाइयों से प्रभाव स्थापित कर पाता है। उसे हर समय चिंताएं घेरे रहती हैं। ऐसे व्यक्ति का ननिहाल पक्ष भी कमजोर रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन एवं कुटुंब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है।
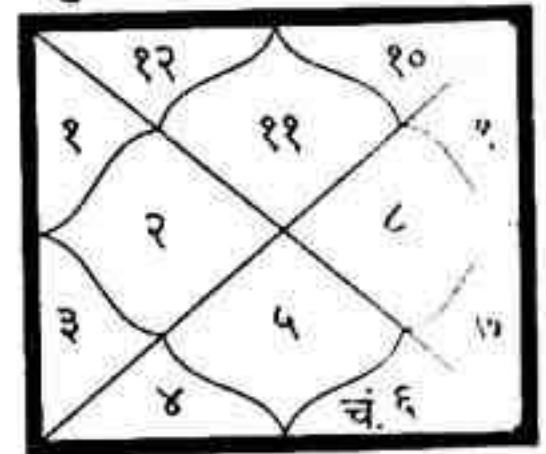
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः नवमभावः चंद्र

	१२		१०
१		११	९
	२	८	
३		५	चं. ७
	४		६

१२३१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयां आती हैं तथा यश की भी कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ प्राप्त करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन के संबंध में कुछ परेशानी का सामना करना पड़ता है, परंतु उसके पराक्रम एवं मनोबल की वृद्धि होती है।
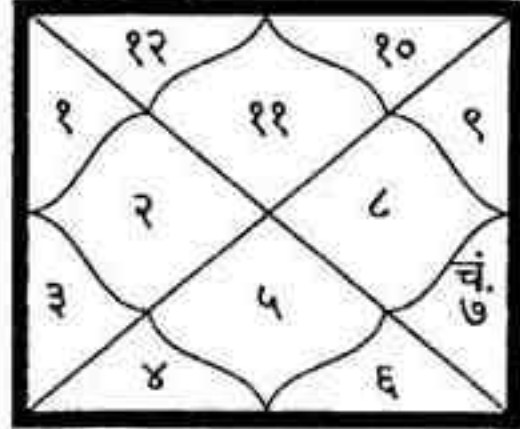
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः दशमभावः चंद्र

१२३२

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित षष्ठेश एवं नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष से सुख में कमी रहती है। राज्य के क्षेत्र से सम्मान में कुछ हानि प्राप्त होती है, तथा व्यावसायिक उन्नति में रुकावटें आती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष से परेशान बना रहता है तथा उसका प्रभाव भी कम होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सामान्य सुख भी प्राप्त होता है।
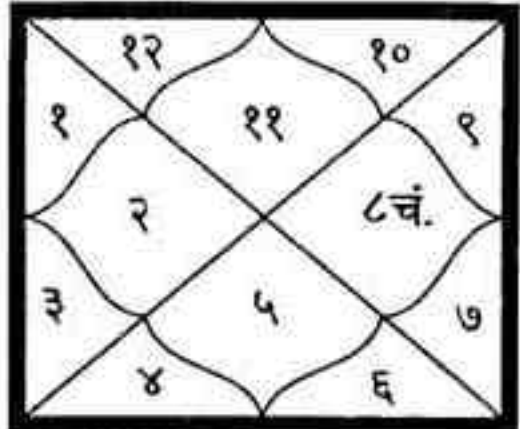
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः एकादशभावः चंद्र

१२३३

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल एवं परिश्रम द्वारा आमदनी की वृद्धि करता है। वह शत्रु पक्ष पर प्रभाव बनाए रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठाता है। परंतु उसे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए दौड़-धूप अधिक करनी पड़ती है तथा लाभ के पक्ष से कुछ असंतोष भी बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को विद्या, बुद्धि की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है, परंतु संतानपक्ष से कुछ चिंता बनी रहती है।
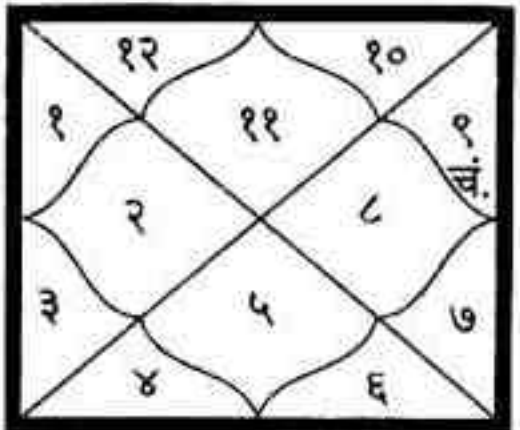
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः द्वादशभावः चंद्र

१२३४

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए कठिनाई बनी रहती है। वह अपने मनोबल तथा परिश्रम द्वारा खर्च चलाता है। बाहरी स्थानों के संबंध से भी परेशानी होती है। शत्रु पक्ष से मानसिक चिंताएं बनी रहती हैं। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष पर नरमाई से काम लेकर अपना प्रभाव स्थापित करता है एवं सफलता प्राप्त करता है।
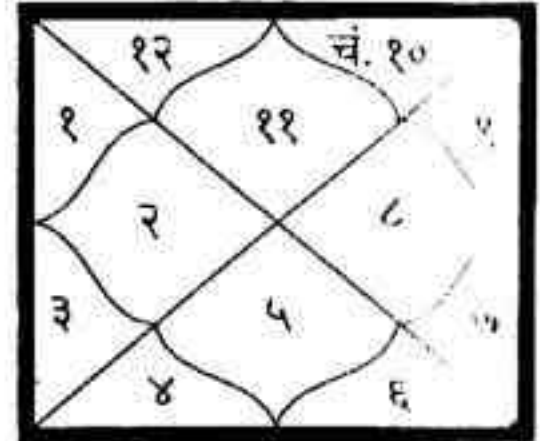
'कुंभ' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः प्रथमभावः मंगल

१२३५

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है तथा शारीरिक सौंदर्य की प्राप्ति होती है। वह पिता के पक्ष से कुछ असंतोषयुक्त सहयोग प्राप्त करता है, राज्य के क्षेत्र में प्रभाव को बढ़ाता है तथा व्यवसाय की उन्नति करता है। भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि भी होती है। यहां से चंद्रमा चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषराशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष तथा व्यवसाय के पक्ष से भी सुख एवं शक्ति मिलती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है।
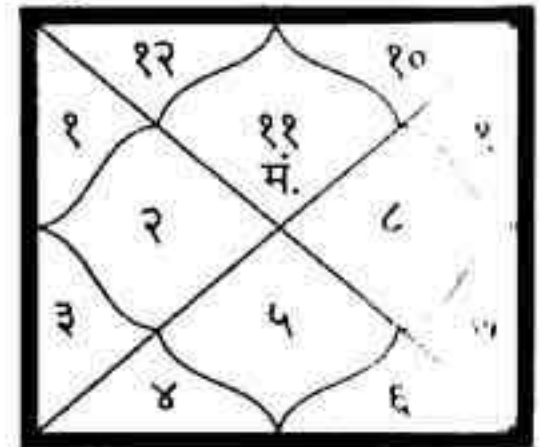
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ धन एवं कुटुंब का सुख प्राप्त होता है। परंतु भाई-बहन एवं पिता के सुख में कमी रहती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होती है तथा यश भी प्राप्त होता है।
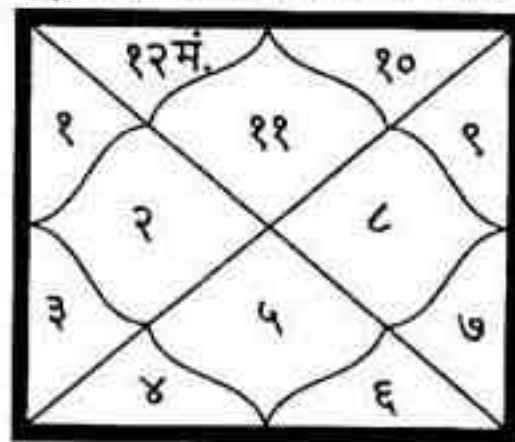
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में **'मंगल'** की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: शत्रु पक्ष से परेशानी रहती है तथा ननिहाल के पक्ष में हानि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ के बल पर बड़ा भाग्यवान् बनता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता की शक्ति मिलती है, राज्य से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नति होती है।
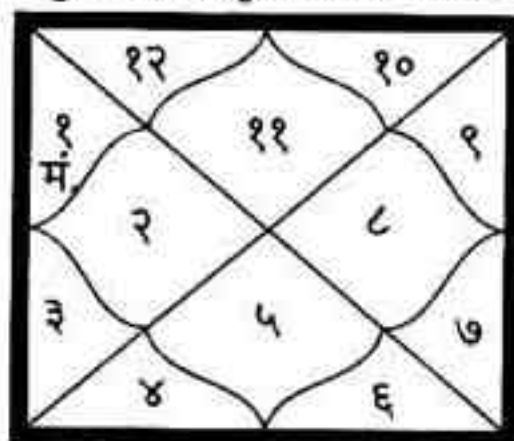
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में **'मंगल'** की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने सामान्य-मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कमी साथ माता, भूमि एवं मकान आदि की शक्ति प्राप्त करता है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सुख, सम्मान, यश एवं सफलता की प्राप्ति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी खूब होती है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति सुखी, धनी यशस्वी तथा प्रभावशाली जीवन व्यतीत करता है।
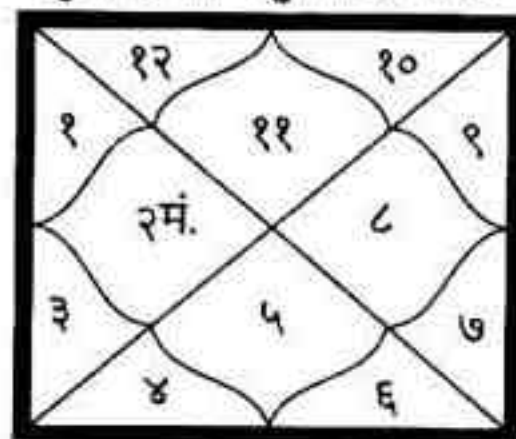
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः पंचमभावः मंगल

१२३७

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा संतान पक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति भाई-बहन एवं पिता से भी शक्ति प्राप्त करता है तथा राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ उठाता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है तथा आठवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के श्रेष्ठ संबंध से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बातें करने वाला होता है।
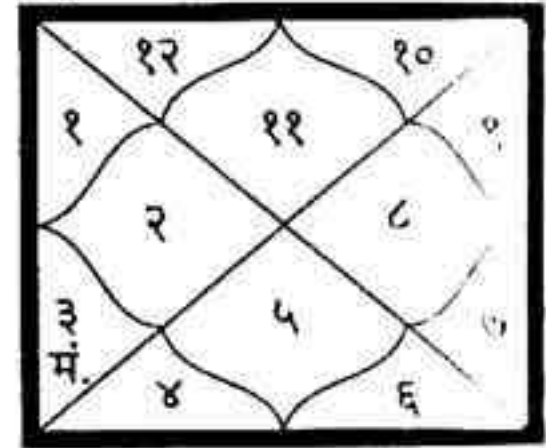
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः षष्ठभावः मंगल

१२३८

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहन तथा पिता पक्ष से कुछ वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी कम प्रभाव रहता है। यहां से मंगल अपनी चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म का भी थोड़ा-बहुत पालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को शत्रु की राशि में देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से विशेष संबंध बनता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी आती है, परंतु प्रभाव में वृद्धि होती है और स्वभाव में तेजी रहती है।
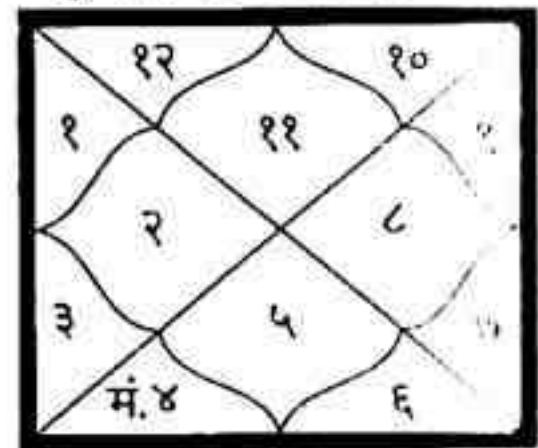
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष उन्नति प्राप्त करता है। उसे भाई-बहन की शक्ति भी मिलती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखता है; अत: पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्ति होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी रहती है, परंतु मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक भागयवान तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

कुंभ लग्न: सप्तमभाव: मंगल
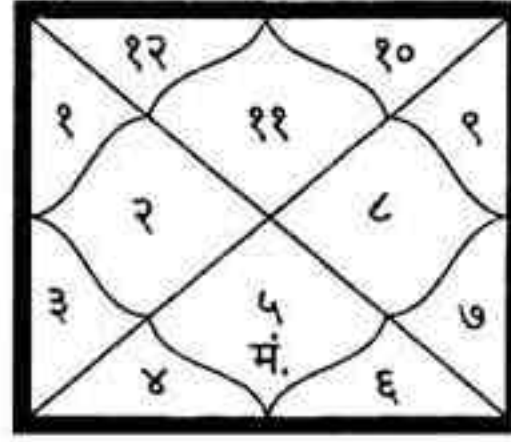
१२४१

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। परंतु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं, भाई-बहनों के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आती है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुंब का सुख प्राप्त होता है तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

कुंभ लग्न: अष्टमभाव: मंगल
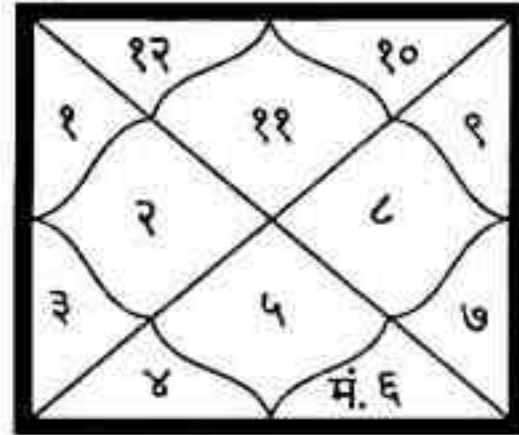
१२४२

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। उसे पिता का सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय में सफलता भी मिलती है। यहां से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान तथा पुरुषार्थी होता है।

कुंभ लग्न: नवमभाव: मंगल
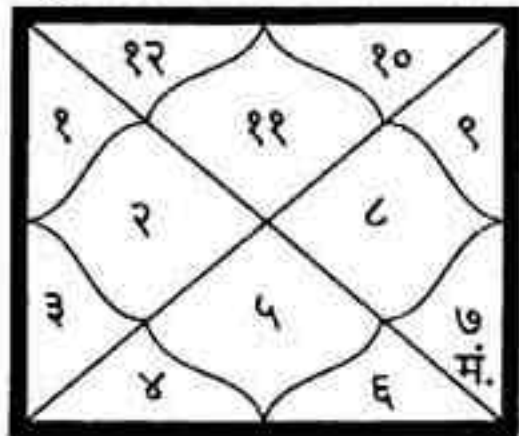
१२४३

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: दशमभाव: मंगल

१२६८

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पिता की शक्ति, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। उसे भाई-बहनों का सुख भी मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: शारीरिक सौंदर्य में कमी रहते हुए भी प्रभाव, स्वाभिमान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में सामान्य कमी रहती है तथा भूमि, मकान आदि की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्न: एकादशभाव: मंगल

१२६९

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह अपने पराक्रम द्वारा खूब धन कमाता है तथा भाई-बहनों का सुख भी प्राप्त करता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है। अत: धन का संचय खूब होता है तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा ननिहाल का पक्ष भी कमजोर रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: द्वादशभाव: मंगल

१२७०

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से विशेष लाभ होता है। राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। वह अपनी मातृभूमि की अपेक्षा अन्य स्थानों में सफलता प्राप्त करता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखता है,
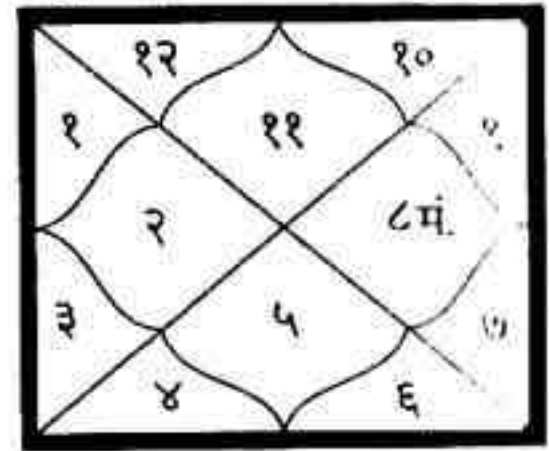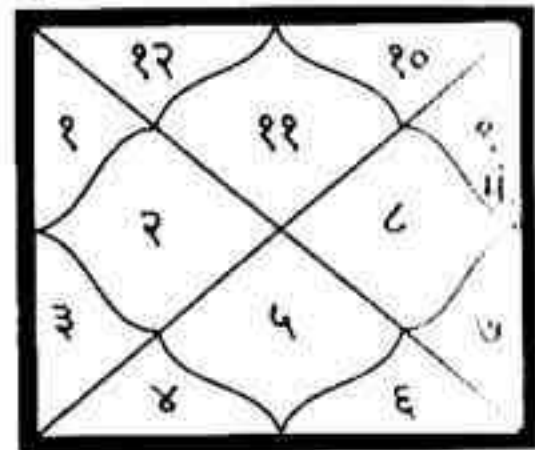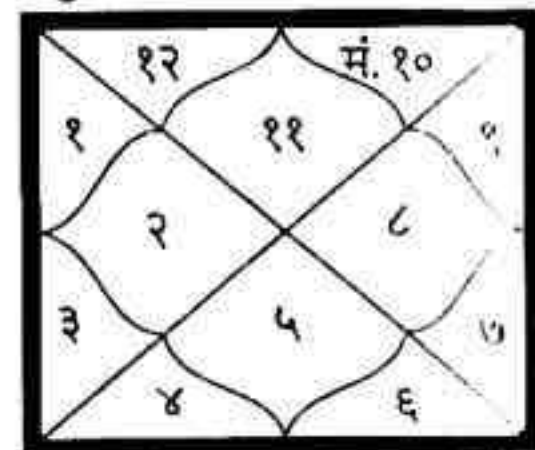
अतः भाई-बहनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र चंद्रमा की राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा ननिहाल का पक्ष भी दुर्बल रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री द्वारा दुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'कुंभ' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः प्रथमभावः बुध

१२४७

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है, परंतु उसे आयु, पुरातत्त्व एवं संतानपक्ष की शक्ति प्राप्त होती है। मन में कुछ चिंताएं भी बनी रहती हैं। बुध के पंचमेश होने के कारण जातक के विवेक शक्ति उत्तम रहती है और उसके प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि भी होती है। यहां बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री-पक्ष से सुख एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है।
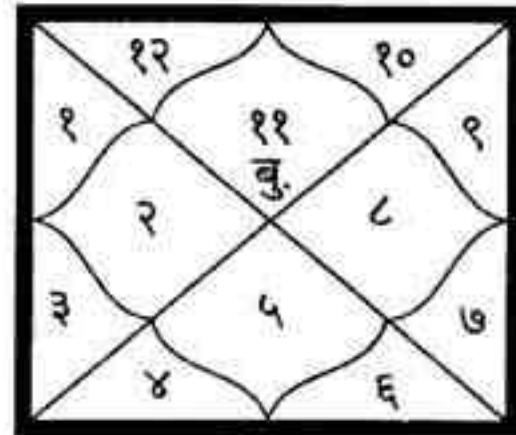
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः द्वितीयभावः बुध

१२४८

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कुटुंब से भी विरोध रहता है। उसका विद्या तथा संतानपक्ष भी कमजोर रहता है तथा जीवन-यापन के संबंध में चिंताएं भी बनी रहती हैं। यहां से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु पुरातत्त्व का लाभ अपूर्ण रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने विवेक एवं विद्या-बुद्धि के बल पर सम्मान तथा लाभ प्राप्त करता है।
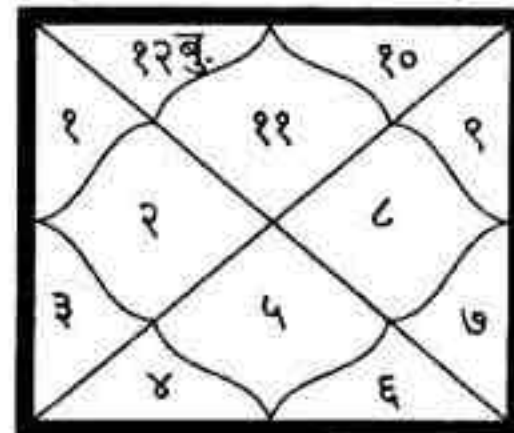
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों से कष्ट मिलता है तथा संतानपक्ष से भी परेशानी रहती है। उसे विद्या-बुद्धि एवं पराक्रम का लाभ तो होता है, परंतु कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि मे नवमभाव को देखता है, अतः जातक कुछ कठिनाइयों के साथ अपने भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्मपालन की दिशा में भी सचेष्ट बना रहता है। उसे पुरातत्त्व का भी लाभ होता है, परंतु प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए [illegible] अवश्य करना पड़ता है।

कुंभ लग्नः तृतीयभावः बुध
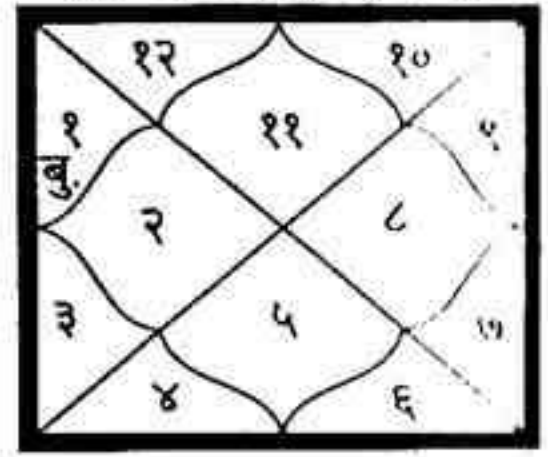
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा माता के सुख में भी कुछ कमी रहती है। उसे संतानपक्ष से सुख मिलता है, पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः पिता के कारण कुछ परेशानी रहती है एवं राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

कुंभ लग्नः चतुर्थभावः बुध
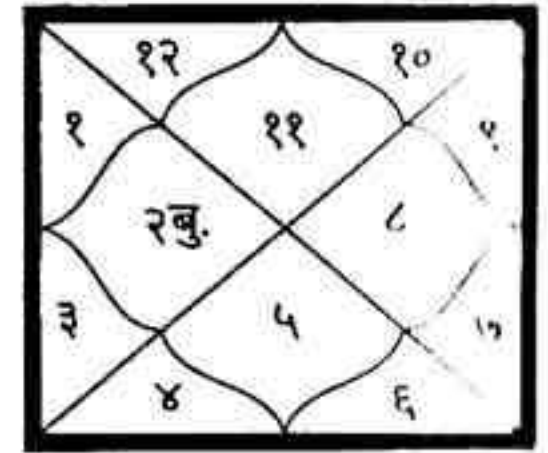
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कुछ कठिनाइयों के साथ शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। वह बुद्धिमान, वाणी का धनी तथा विवेक-शक्ति से संपन्न अवश्य होता है, जिसके कारण अपने प्रभाव का विस्तार करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

कुंभ लग्नः पंचमभावः बुध
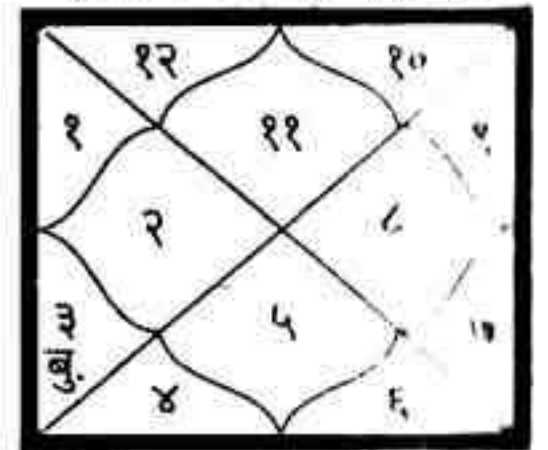
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से कुछ अशांति रहती है, परंतु वह अपनी विवेक-बुद्धि से उन पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में सफल एवं लाभांवित होता है। उसे विद्या, संतान, आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा लाभ उठाता है।

कुंभ लग्न: षष्ठभाव: बुध
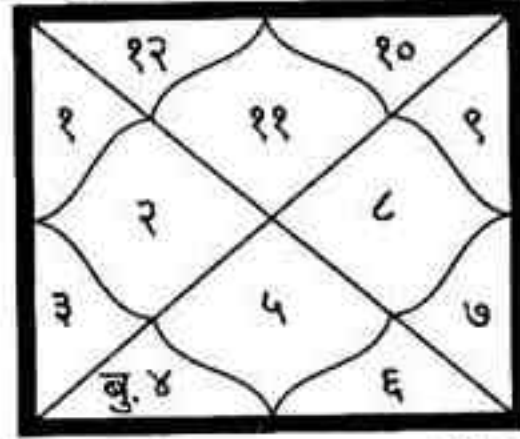
१२५२

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश के बुध के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के बाद स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। उसे विद्या, संतान, आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का भी कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ मिलता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को सामान्य रूप से शारीरिक परेशानी तो रहती है, परंतु उसके प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

कुंभ लग्न: सप्तमभाव: बुध
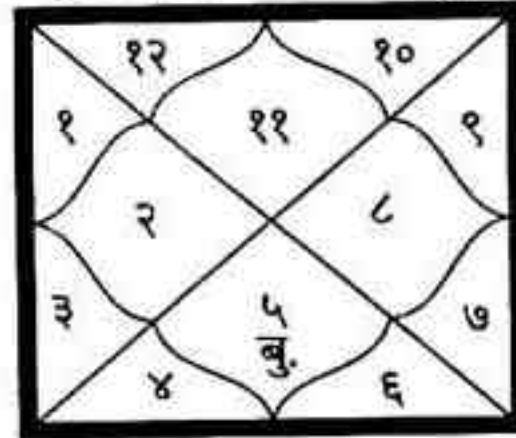
१२५३

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। उसका दैनिक जीवन बड़ा प्रभावशाली रहता है। परंतु विद्या एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है, जबकि उसकी विवेक-शक्ति तीव्र होती है और वाणी में विशेष प्रभाव पाया जाता है। यहां से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन-संचय में कठिनाई पड़ती है तथा कुटुंब से भी कुछ क्लेश प्राप्त होता है।

कुंभ लग्न: अष्टमभाव: बुध
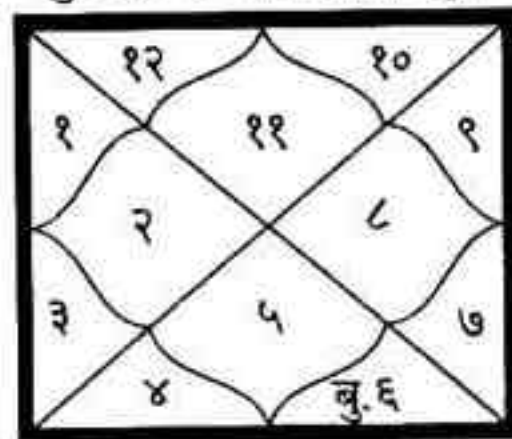
१२५४

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' मे 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्न: नवमभाव: बुध

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी बना रहता है। बुध के अष्टमेश होने के कारण कभी-कभी कुछ कमियां भी आ जाती हैं। संतान, विद्या, आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति का जातक को पर्याप्त लाभ होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहनों एवं पराक्रम का कुछ त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।
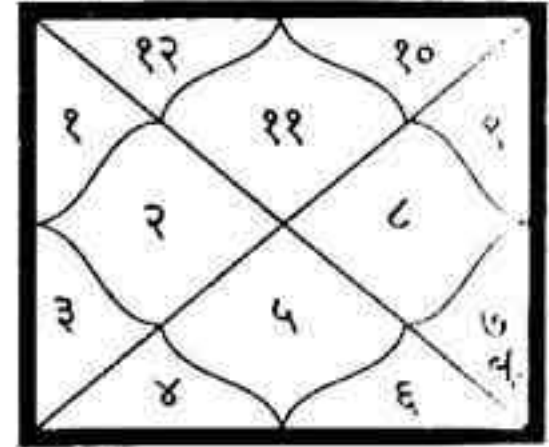
१२५९

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' मे 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्न: दशमभाव: बुध

१२६०

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक को पिता से कुछ परेशानी, राज्य से कुछ बाधाएं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां प्राप्त होती हैं, परंतु जातक को आयु, पुरातत्त्व, संतान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता मिलती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है तथा यश एवं विवेक की वृद्धि होती है।
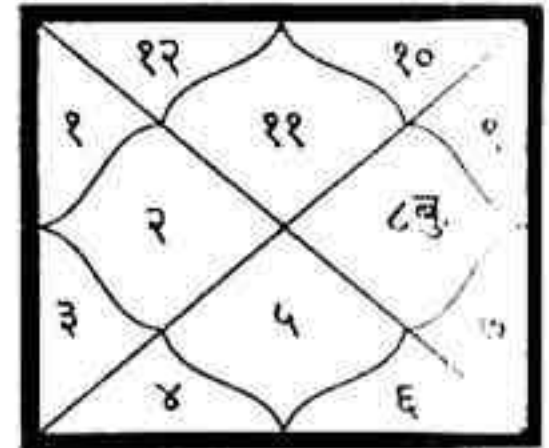
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्न: एकादशभाव: बुध

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा पर्याप्त लाभ अर्जित करता है, परंतु बुध के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती हैं। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन भी उल्लासपूर्ण रहता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं संतान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी प्रभावपूर्ण रहती है और वह स्वार्थी भी होता है।
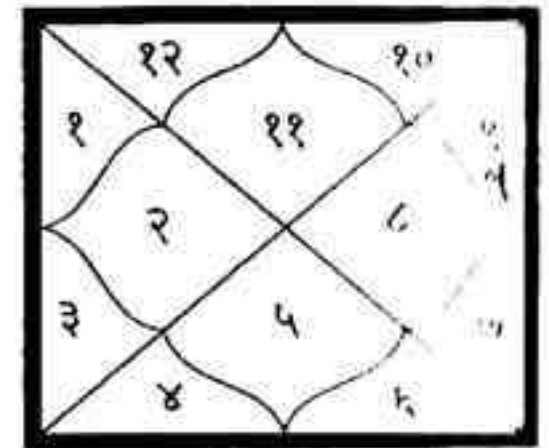
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः द्वादशभावः बुध

१२५८

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उसे कुछ लाभ मिलता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की हानि भी होती है। संतानपक्ष से चिंता तथा विद्या की कमी रहती है। मस्तिष्क में हर समय चिंताएं घर किए रहती हैं। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में कुछ नरमी से काम निकलता है तथा आपनी विवेक-बुद्धि द्वारा सफलता प्राप्त करता है।
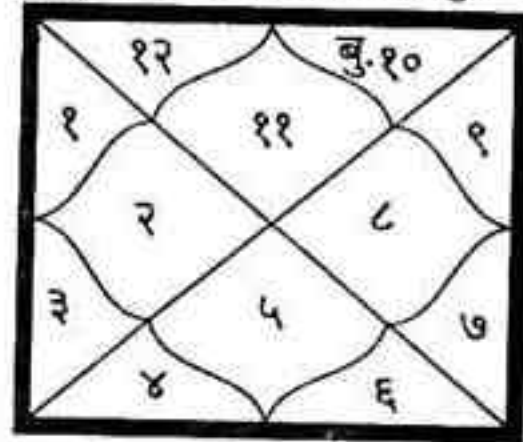
'कुंभ' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। उसे धन तथा कुटुंब की शक्ति का भी लाभ होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या-बुद्धि के क्षेत्र से भी सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष में सफलता मिलती है तथा व्यवसाय के द्वारा धन की उन्नति होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की उन्नति भी होती है तथा धन द्वारा धर्म का पालन भी होता है।

कुंभ लग्नः प्रथमभावः गुरु
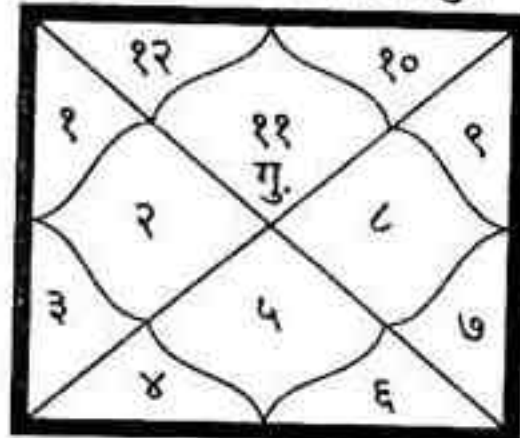
१२५९

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः द्वितीयभावः गुरु

१२६०

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक धन का खूब संचय करता है और उसे कुटुंब का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। वह अपनी धनोन्नति के लिए निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं उच्च-दृष्टि से मित्र की राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है एवं झगड़े-झंझट के
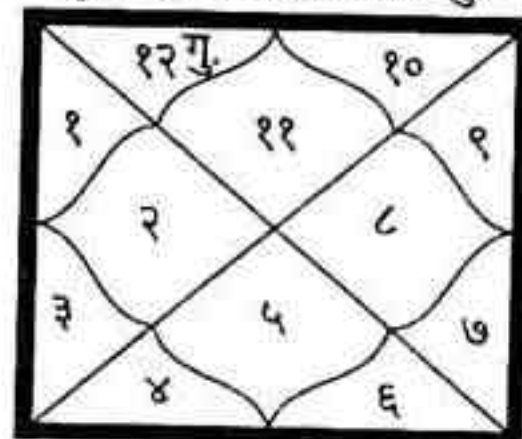
मार्ग से लाभ मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरा... वृद्धि होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता द्वारा सहयोग, ... द्वारा सम्मान एवं व्यवसाय द्वारा सफलता तथा लाभ की प्राप्ति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कुंभ लग्नः तृतीयभावः गु.

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है उसे धन तथा कौटुंबिक सुख का भी यथेष्ट लाभ होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है। अतः स्त्री के पक्ष में सौंदर्य एवं सुख लाभ की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। उसे अपनी ससुराल से भी कुछ लाभ मिलता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में नवमभाव को देखने से कुछ-कुछ रुकावटों के साथ भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म की जिज्ञासा रहती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि होती है।
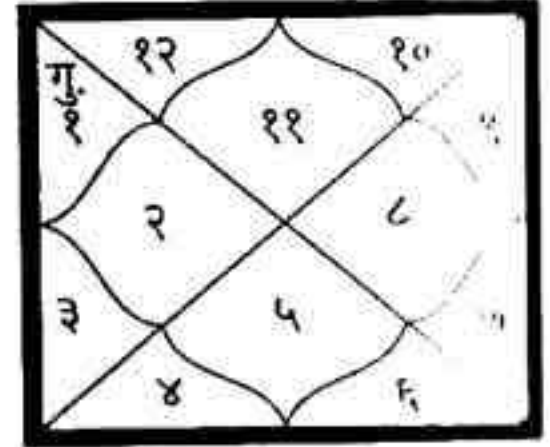
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है, परंतु माता से लाभ होता है, साथ ही भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा धन और कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन शान-शौकत से व्यतीत होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च तथा बाहरी स्थान के संबंधों के कारण परेशानी बनी रहती है।

कुंभ लग्नः चतुर्थभावः गु.
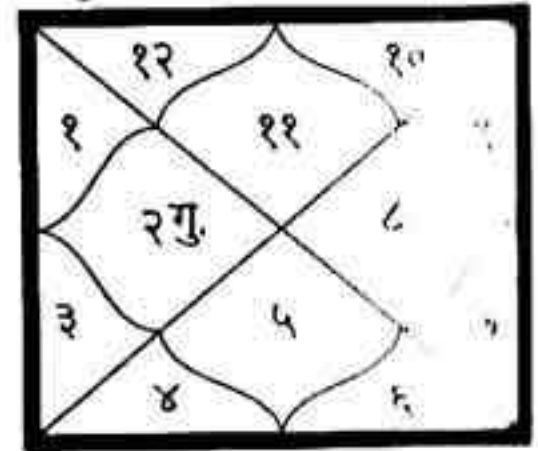
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। धन, कुटुंब तथा संतानपक्ष का भी खूब लाभ होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवी दृष्टि से शुक्र की राशि में नवमभाव को देखता है, अत: कुछ कठिनाइयों के साथ जातक के भाग्य की वृद्धि होती है, और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा उसे धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में वृद्धि होती है। स्वार्थ, परमार्थ, प्रभाव, सम्मान, योग्यता, सज्जनता, विनम्रता, सौभाग्य आदि सभी क्षेत्रों में जातक सफल होता है।

कुंभ लग्न: पंचमभाव: गुरु
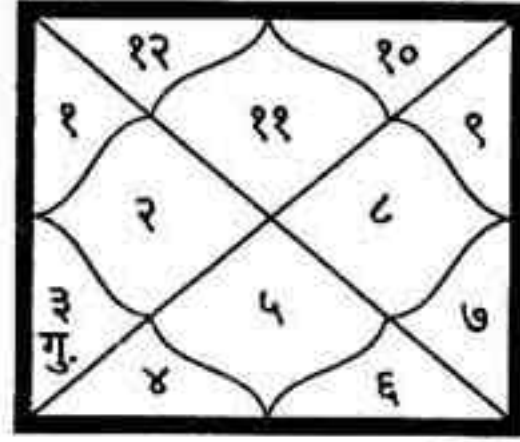
१२६३

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च गुरु के प्रभाव से जातक धन की शक्ति से शत्रु पक्ष पर बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ प्राप्त करता है। उसका ननिहाल पक्ष ऊंचा होता है। कुटुंब से कुछ झंझट एवं धन-प्राप्ति के मार्ग में कुछ कठिनाइयां भी उपस्थित होती हैं। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: उसे पिता से शक्ति, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव का शत्रुराशि में देखने से खर्च तथा बाहरी स्थानों के संबंध से परेशानी रहती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि मे तृतीयभाव को देखने के कारण कुछ परिश्रम तथा झंझटों के साथ धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब का सुख मिलता है।

कुंभ लग्न: षष्ठभाव: गुरु
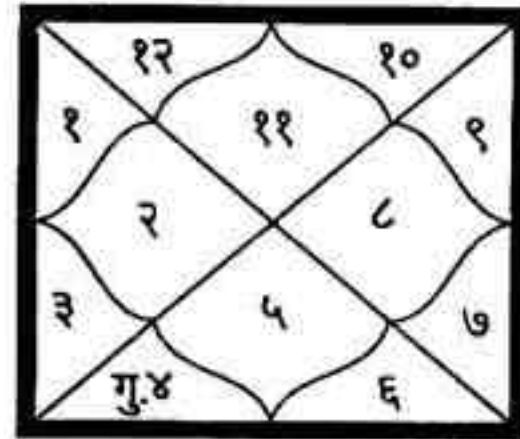
१२६४

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से सौंदर्य, धन एवं सुख की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय द्वारा भी पर्याप्त लाभ होता है। घर की प्रतिष्ठा खूब बढ़ती है तथा धन एवं कुटुंब का पर्याप्त सहयोग बना रहता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में

कुंभ लग्न: सप्तमभाव: गुरु
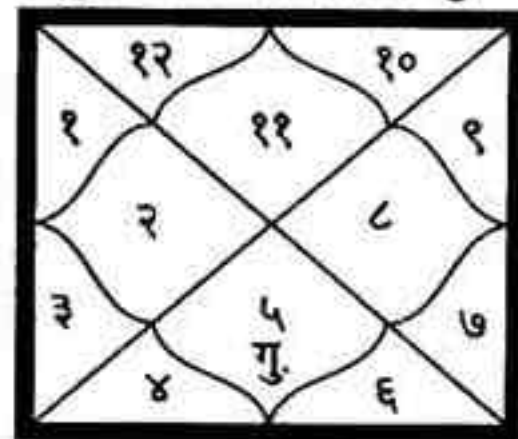
१२६५

एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी खूब रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी आ जाती है, परंतु मान-सम्मान एवं प्रभाव प्राप्त होता है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा जातक बड़ा बहादुर, यशस्वी, सुखी, धनी तथा प्रभावी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए.

कुंभ लग्न: अष्टमभाव: गुरु

आठवें आयु एवं पुरातत्व के प्रभाव से अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। गुरु के अष्टमेश होने के कारण संचित धन की हानि तथा कुटुंब से कष्ट का योग भी बनता है। आमदनी तथा बाहरी स्थानों के संबंध में कुछ कमी आती है। यहां से शनि अपनी पांचवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च तथा बाहरी स्थान के संबंधों के कारण कठिनाई रहती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि के द्वितीयभाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा कुटुंब से सहयोग मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के सुख में कमी आती है तथा भूमि एवं मकान आदि की भी सामान्य शक्ति प्राप्त होती है।
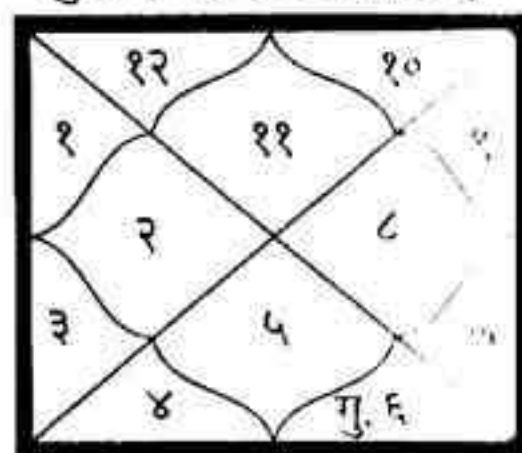
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कुंभ लग्न: नवमभाव: गुरु

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष वृद्धि होती है। वह न्यायोचित मार्ग से प्रचुर धन प्राप्त करता है तथा धर्म का पालन करता है। उसे कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक प्रभाव की वृद्धि होती है तथा जातक भाग्यवान माना जाता है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतान से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।
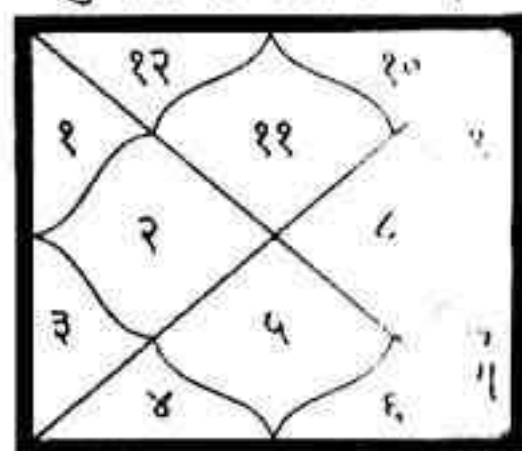
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा धन एवं सफलता का यथेष्ट लाभ होता है। वह बड़ी शान से रहता है तथा भाग्यवान माना जाता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन एवं कुटुंब की वृद्धि होती है। सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता का सुख एवं भूमि और भवन का यथेष्ट लाभ होता है। नवीं उच्चदृष्टि से चंद्रमा की राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर बड़ा भारी प्रभाव रहता तथा झगड़े-झंझटों के मार्ग से सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बड़ा धनी, यशस्वी, सुखी तथा प्रतापी होता है।

कुंभ लग्नः दशमभावः गुरु

१२६८

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी उसे संपत्ति का आकस्मिक लाभ भी होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है और नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

कुंभ लग्नः एकादशभावः गुरु

१२६९

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक के अपने खर्च तथा बाहरी स्थानों के संबंध के कारण परेशानी बनी रहती है तथा संचित धन का अभाव होता है। साथ ही कुटुंब में अशांति एवं धन-संचय में कठिनाइयां आती हैं। यहां से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि और मकान आदि के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण
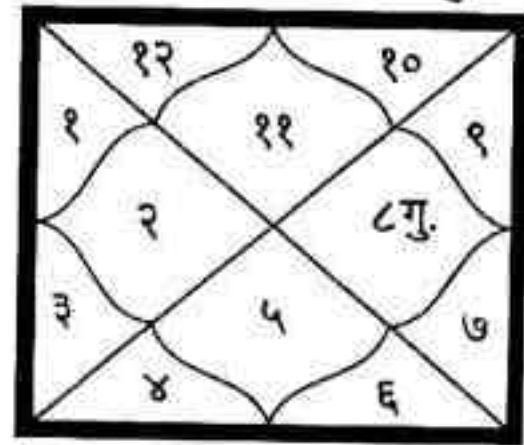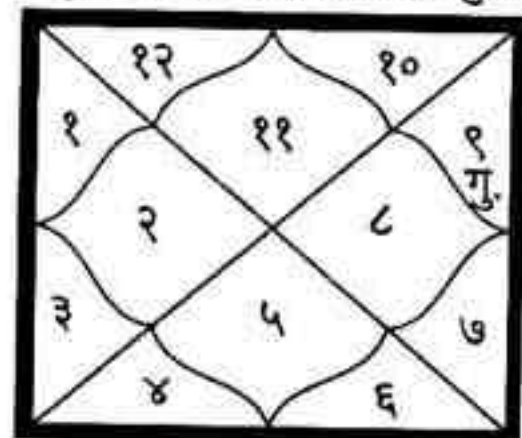
कुंभ लग्नः द्वादशभावः गुरु
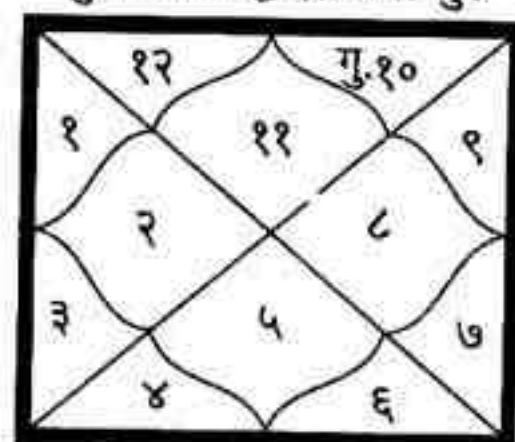
१२७०

सफलता प्राप्त होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों के मार्ग से लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है तथा जीवन बड़े अमीरी ढंग से व्यतीत होता है।

'कुंभ' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: प्रथमभाव: शुक्र

१२७१

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि के कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सुख, सौंदर्य, प्रभाव एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी मिलता है। वह अपने भाग्य की उन्नति करता है, तथा धर्म का पालन करने में भी तत्पर बना रहता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री पक्ष में सुख तथा सौभाग्य की प्राप्ति होती है, परंतु व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान होता है तथा अपने लोक और परलोक को बनाता है।
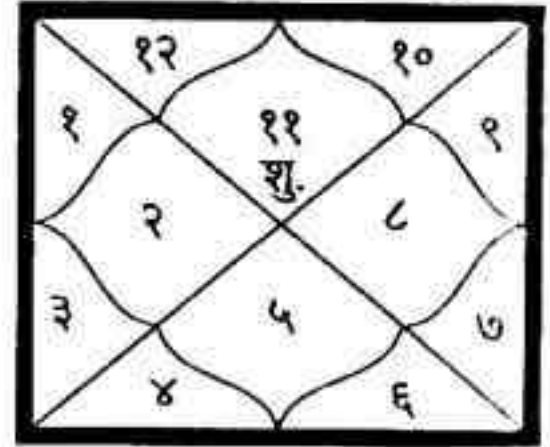
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

१२७२

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के प्रभाव से जातक धन-संचय की विशेष शक्ति प्राप्त करता है तथा कुटुंब का सुख भी पर्याप्त रहता है। उसे भूमि, मकान आदि का पर्याप्त लाभ होता है और वह बड़ा धनी, यशस्वी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति के संबंध में कुछ कठिनाई रहती है तथा दैनिक जीवन में भी चिंताएं बनी रहती हैं।
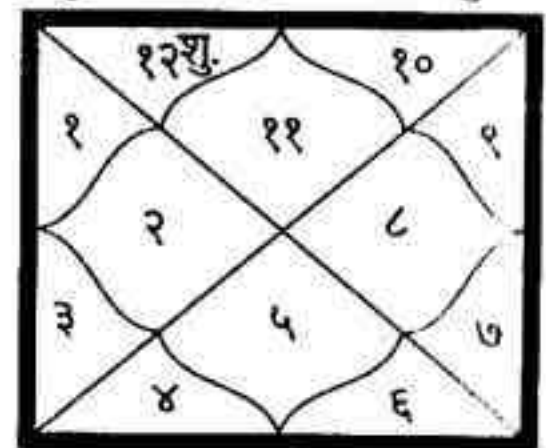
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है तथा घरेलू सुख के साधन भी प्राप्त होते हैं। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक धनी, धर्मात्मा, सुखी, यशस्वी, पराक्रमी तथा भाग्यशाली होता है।

कुंभ लग्नः तृतीयभावः शुक्र
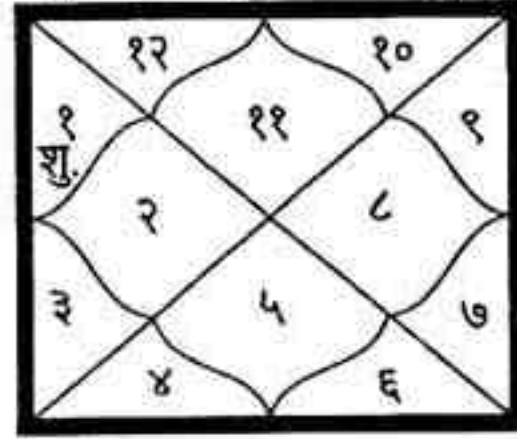
१२७३

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। उसकी भाग्योन्नति निरंतर होती रहती है और वह धर्म का पालन भी करता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली तथा सुखी होता है।

कुंभ लग्नः चतुर्थभावः शुक्र
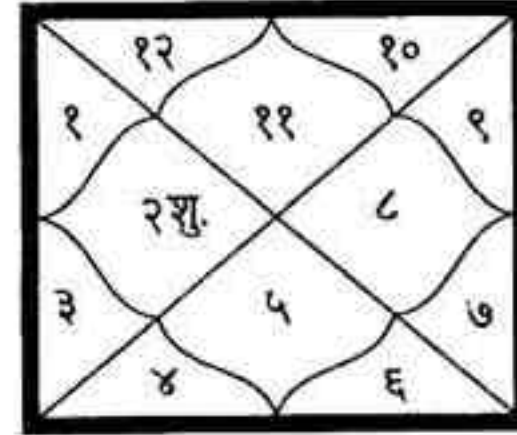
१२७४

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है तथा संतानपक्ष से सुख मिलता है। वह धर्म का पालन करता है और बुद्धियोग से उसके भाग्य की उन्नति निरंतर होती रहती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख तथा यश भी यथेष्ट मात्रा में मिलता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक अपनी चतुराई से लाभ कमाता है तथा भाग्य की उन्नति करके सुखी होता है।

कुंभ लग्नः पंचमभावः शुक्र
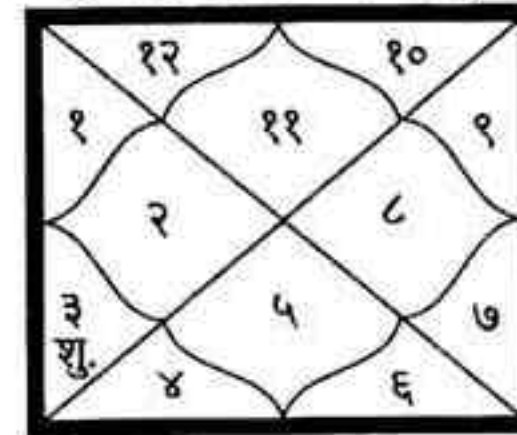
१२७५

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़े के मामलों में लाभ उठाता है। उसे माता के सुख में कमी का सामना करना पड़ता है। साथ ही मातृभूमि, भूमि, मकान, भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमजोरी रहती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सफलता प्रप्त होती है। ऐसा जातक बहुत चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

कुंभ लग्न: षष्ठभाव: शुक्र
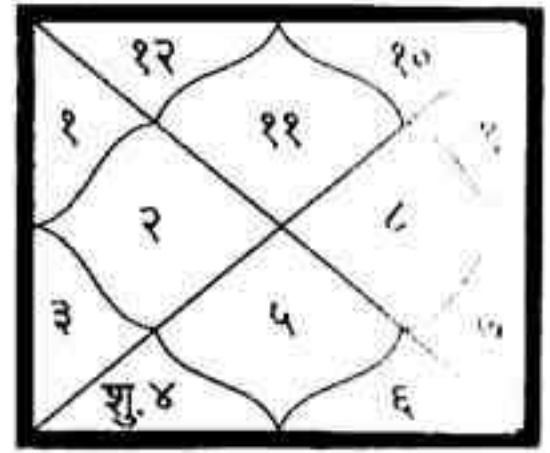
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ असंतोष के साथ सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष परिश्रम करने पर सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख यथेष्ट प्राप्त होता है तथा घरेलू वातावरण भी आनंदमय रहता है। वह धर्म का पालन करने वाला तथा भाग्योन्नति के लिए प्रयत्नशील होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि को कुंभ राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक को शारीरिक सौंदर्य, सुख, सौभाग्य, यश, सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

कुंभ लग्न: सप्तमभाव: शुक्र
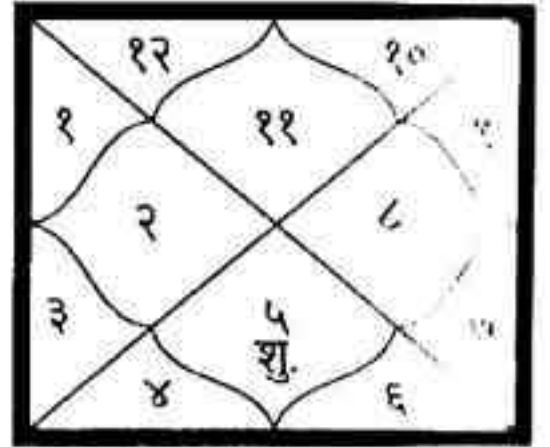
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक के जीवन में अशांति रहती है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। माता के सुख में बड़ी कमी आती है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी त्रुटिपूर्ण रहता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक विशेष परिश्रम द्वारा अपने धन तथा कुटुंब की वृद्धि एवं उन्नति करता है।

कुंभ लग्न: अष्टमभाव: शुक्र
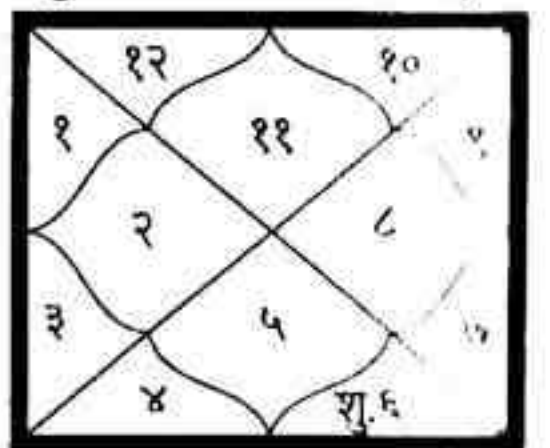
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। अपने गुण एवं चातुर्य के बल पर ऐसा व्यक्ति यश भी प्राप्त करता है। उसका घरेलू जीवन भी उल्लास एवं आनंदपूर्ण बना रहता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

कुंभ लग्न: नवमभाव: शुक्र
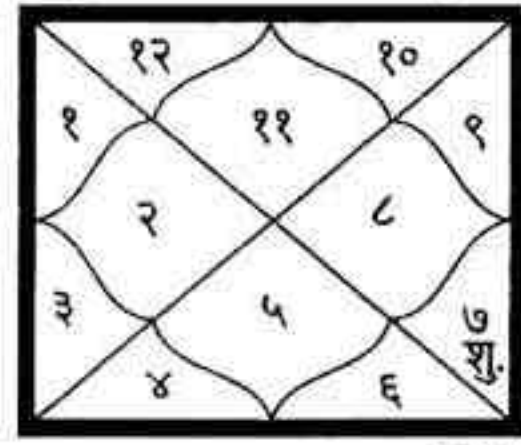
१२७९

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता, एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता से विशेष शक्ति, राज्य से पर्याप्त सम्मान तथा व्यवसाय से बड़े लाभ की प्राप्ति होती है। वह समाज में प्रतिष्ठित, धनी, धार्मिक तथा यशस्वी होता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़े ठाट-बाट से रहता है तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करता है।

कुंभ लग्न: दशमभाव: शुक्र
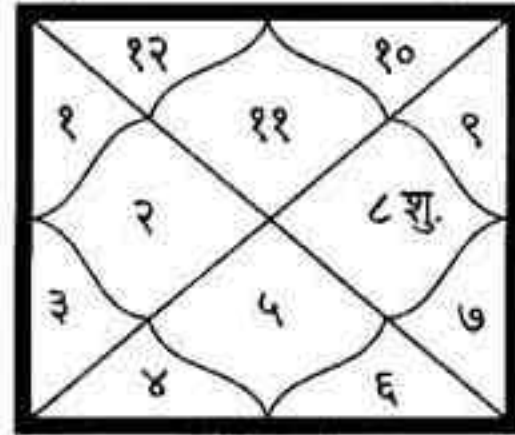
१२८०

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति न्यायी, चतुर, धनी, धार्मिक तथा यशस्वी होता है। उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतानपक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली वक्ता तथा चतुर भी होता है।

कुंभ लग्न: एकादशभाव: शुक्र
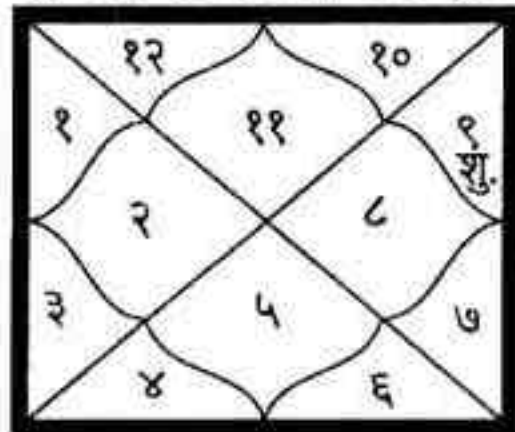
१२८१

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है एवं बाहरी स्थानों के संबंध से सुख तथा सफलता प्राप्त होती है। वह धर्म का पालन भली-भांति नहीं कर पाता, माता का वियोग छोटी आयु में ही हो जाता है तथा यश में भी कमी रहती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपने चातुर्य के बल पर शत्रु पक्ष में सफलता पाता है तथा झगड़े से लाभ प्राप्त करता है।

कुंभ लग्न: द्वादशभाव: शुक्र
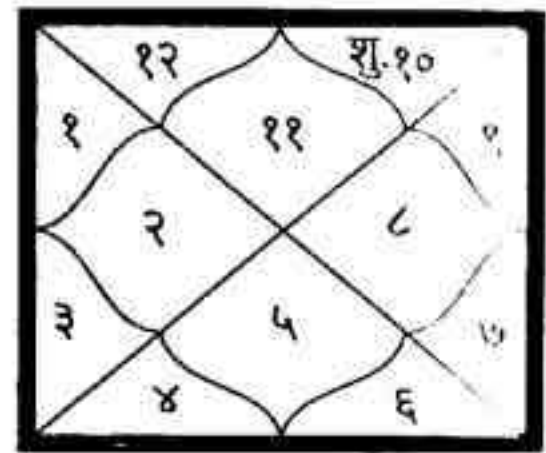
'कुंभ' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही कुंभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है, परंतु शनि व्ययेश होने के कारण शरीर में दुर्बलता भी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानी, यशस्वी, शानदार खर्च करने वाला तथा कभी-कभी किसी कठिन रोग का शिकार भी होता है। यहां से शनि अपनी तीसरी नीच दृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहनों के सुख में कठिनाई एवं पुरुषार्थ में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष से असंतोष रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियां बनी रहती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं रोजगार के क्षेत्र में भी कठिनाइयां रहती हैं।

कुंभ लग्न: प्रथमभाव: शनि
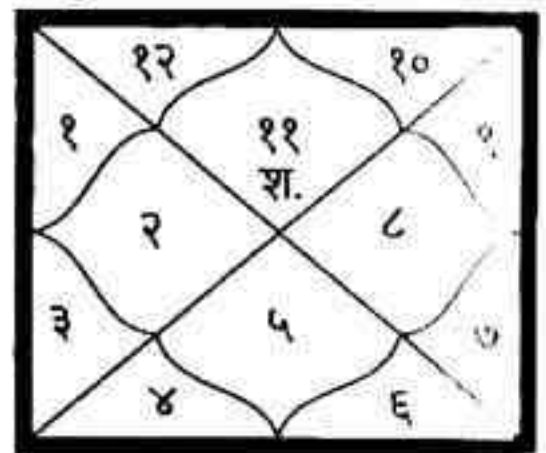
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन संचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है, फिर भी धन एवं कुटुंब के सुख में कमी बनी रहती है। खर्च अधिक होता है, बाहरी स्थानों में प्रतिष्ठा मिलती है तथा शारीरिक सौंदर्य एवं सुख त्रुटिपूर्ण बना रहता है। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, एवं मकान का सुख मिलता है। घरेलू सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को

कुंभ लग्न: द्वितीयभाव: शनि
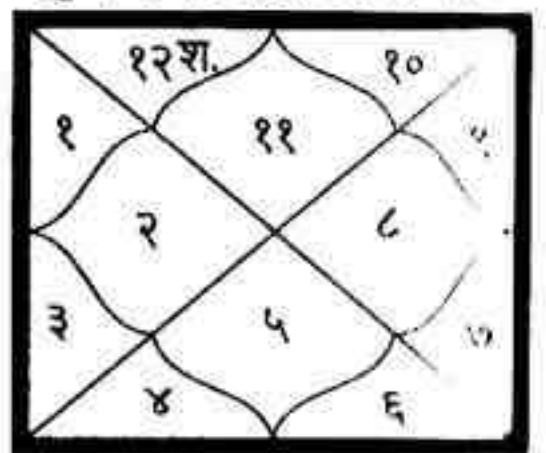
देखने से आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं। ऐसा जातक अधिक मुनाफा कमाने की इच्छा रखता है, परंतु सफल नहीं हो पाता।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः तृतीयभावः शनि

१२८५

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का कष्ट मिलता है तथा पराक्रम में कमी आती है। शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य भी त्रुटिपूर्ण रहता है। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सुख एवं सफलता प्राप्त होगी। सातवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की उन्नति रहेगी तथा धर्म का पालन होगा। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के संबंध में कुछ परेशानी रहेगी तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्नः चतुर्थभावः शनि

१२८६

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का अपूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा घरेलू सुख में कुछ कमी रहती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपनी शारीरिक शक्ति एवं बाहरी स्थानों के संबंधों के कारण शत्रु पक्ष से रक्षा प्राप्त करेगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानियां बनी रहेंगी तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौंदर्य, यश एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी, परंतु चिंता एवं कमजोरी भी बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता तथा संतानपक्ष से शक्ति की प्राप्ति होती है। परंतु शनि के व्ययेश होने के कारण उस शक्ति में कुछ कमी भी अवश्य बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति चिंता से ग्रस्त रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में परेशानी का अनुभव होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां आती [illegible] दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब के संबंध में चिंतित रहना [illegible] है तथा अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

कुंभ लग्न: पंचमभाव: शनि
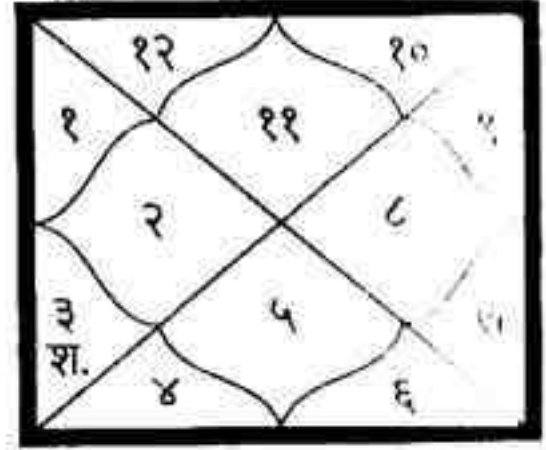
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा अपने प्रभाव की वृद्धि करता है तथा शत्रुओं पर विजय पाता है। उसके शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी रहती है। मस्तिष्क में चिंताओं का निवास रहता है। खर्च के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है। [illegible] नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहनों के सुख में कमी रहेगी तथा [illegible] में भी कुछ कमजोरी आएगी।

कुंभ लग्न: षष्ठभाव: शनि
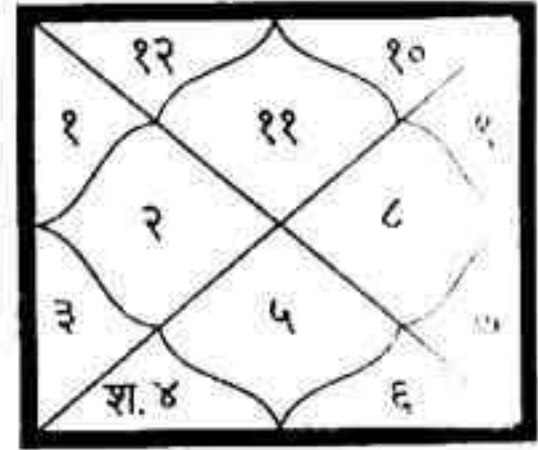
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से परेशानी रहेगी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों द्वारा सफलता मिलेगी। खर्च अधिक रहेगा तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होगी। यहां से शनि अपनी तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से नवमभाव को

कुंभ लग्न: सप्तमभाव: शनि
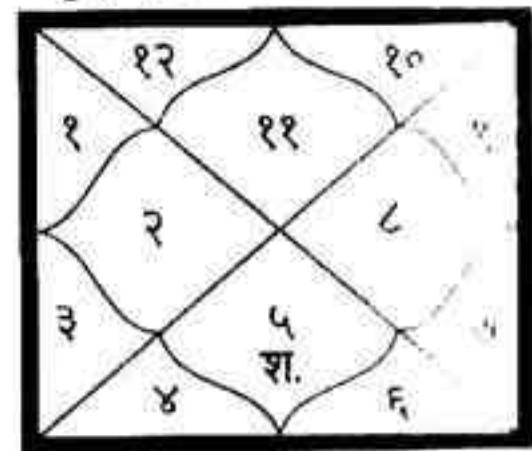
देखता है, अत: जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती रहेगी। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य, यश एवं सम्मान की वृद्धि होगी तथा दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता का सुख एंव भूमि, भवन आदि का भी लाभ होगा, परंतु शनि के व्ययेश होने के कारण उसमें कुछ कमी अवश्य रहेगी तथा घरेलू सुख भी त्रुटिपूर्ण रहेगा।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: अष्टमभाव: शनि

१२९०

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व के संबंध में कुछ हानि रहेगी, परंतु आयु की वृद्धि होगी। शरीर तथा खर्च के संबंध में कठिनाइयां आती रहेंगी तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ शक्ति प्राप्त होगी। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता से वैमनस्य रहेगा तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र की उन्नति में बाधाएं आएंगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुंब का सुख भी त्रुटिपूर्ण रहेगा। दसवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतानपक्ष से कुछ शक्ति मिलेगी तथा विद्या-पक्ष में भी त्रुटिपूर्ण उन्नति प्राप्त होगी।
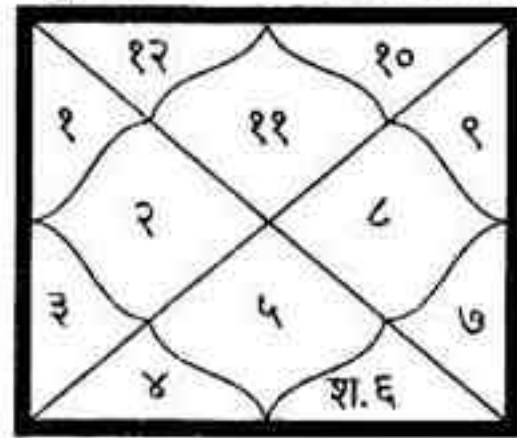
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: नवमभाव: शनि

१२९१

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की यथेष्ट उन्नति होगी, परंतु कभी-कभी उसमें अड़चनें भी आ जाया करेंगी। ऐसा व्यक्ति शरीर से सुंदर, स्वस्थ, धार्मिक, धनी, खर्चीला तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाने वाला होता है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलेगी तथा कभी-कभी आकस्मिक लाभ भी होता रहेगा। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन के सुख एवं पराक्रम में कमी आती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रखने के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा झगड़े से लाभ होता है।
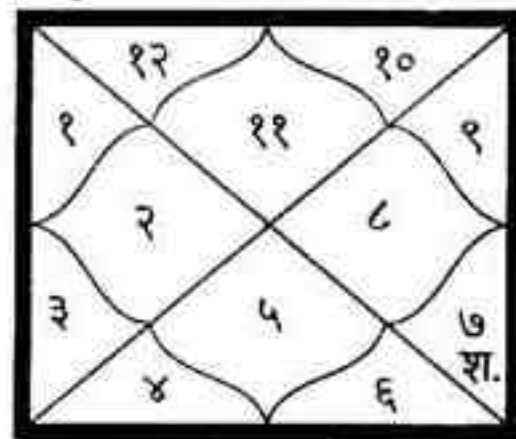
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक तथा शानदार रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष से असंतोष रहता है तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयां आती हैं।

कुंभ लग्नः दशमभावः शनि
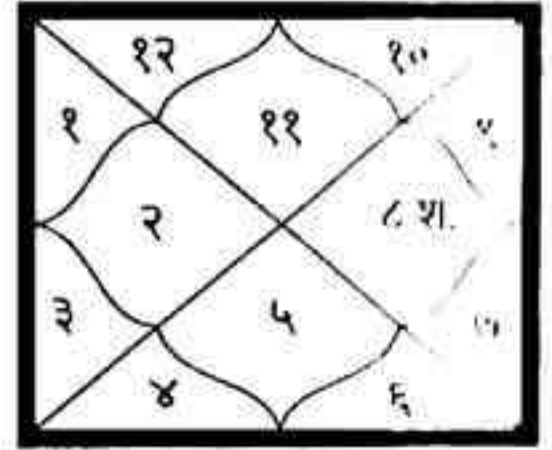
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसका खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक प्रभाव तथा यश में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतानपक्ष से कुछ त्रुटिपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन शान से ढंग से बीतता है।

कुंभ लग्नः एकादशभावः शनि
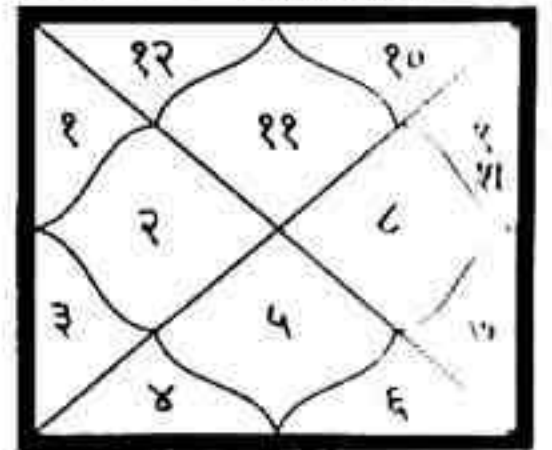
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

बारहवें व्यय स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से विशेष लाभ भी होता है। शनि के व्ययेश होने के कारण शरीर में कमजोरी भी रहती है तथा यात्राएं भी करनी पड़ती हैं। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक को धन एवं कुटुंब के सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम एवं चिंता करनी पड़ती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी

कुंभ लग्नः द्वादशभावः शनि
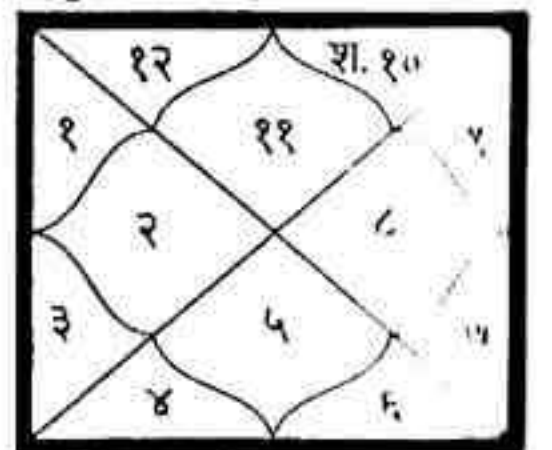
रहती है, परंतु बाद में उस पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म का पालन होता है तथा भाग्य की वृद्धि होती है। ऐसा जातक भाग्यवान समझा जाता है।

'कुंभ' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: प्रथमभाव: राहु

१२ १० १ ११ रा. ९ २ ८ ३ ५ ७ ४ ६

१२९५

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शरीर में कहीं चोट लगती है तथा शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। वह गुप्त चिंताओं से ग्रस्त बना रहता है। अपने व्यक्तित्त्व की उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करता है तथा सफलता भी पाता है, परंतु कभी-कभी बड़ी परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी मस्तिष्क शक्ति तथा गुप्त युक्तियों के बल पर प्रभाव एवं शक्ति भी प्राप्त करता है।
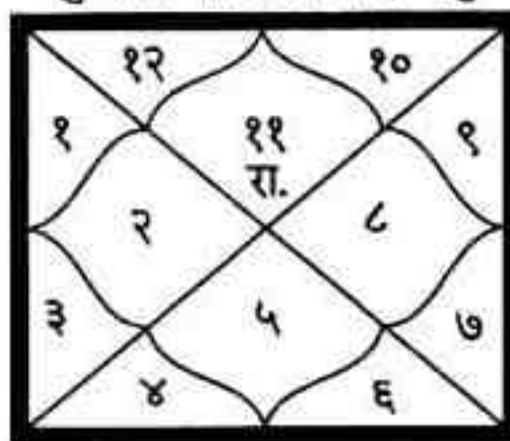
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: द्वितीयभाव: राहु

१२९६

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुंब के सुख में कमी आती है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर धन भी प्राप्त करता है तथा प्रभावशाली एवं भाग्यवान समझा जाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी हिम्मत वाला होता है तथा अनेक कठिनाइयों से जूझने के बाद अपने जीवन को सफल और उन्नत भी बना लेता है।
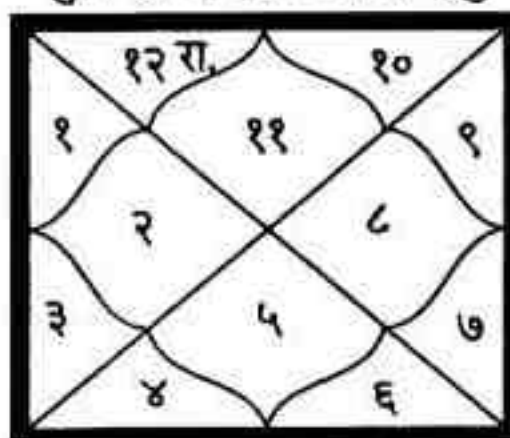
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु ' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: तृतीयभाव: राहु

१२९७

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। परंतु उसका भाई-बहनों से विरोध रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्ति,
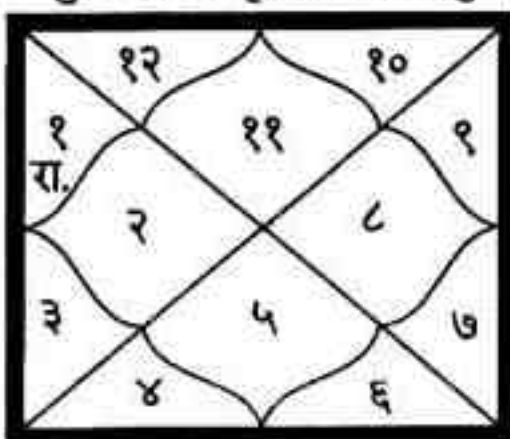
बुद्धि-चातुर्य, परिश्रम तथा हिम्मत के बल पर सुख के साधन तथा सफलताएं प्राप्त ... है और समाज में अपना प्रभावपूर्ण सम्मान भी बना लेता है। वह अपनी गुप्त कम... तथा चिंताओं को छिपाता है और प्रकट रूप से विजयी बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: चतुर्थभाव: राहु

१२९८

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष से बहुत कष्ट प्राप्त होता है, घरेलू जीवन अशांति एवं संकटपूर्ण बना रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। परंतु अनेक संघर्षों से टकराने के बाद ऐसा जातक अंत में सफलता प्राप्त कर लेता है और वह अपने जीवन को सुखी बनाता है।
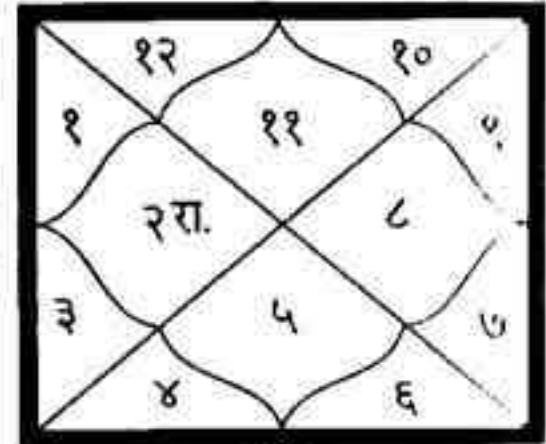
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: पंचमभाव: राहु

१२९९

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक संतानपक्ष से कुछ कष्ट पाने के उपरांत उसकी शक्ति भी प्राप्त करता है। वह विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफल होता है। अपनी भीतरी कमजोरी को छिपाने का विशेष गुण उसमें पाया जाता है तथा प्रकट रूप से प्रभावशाली बना रहता है। ऐसा व्यक्ति बहुत अच्छा बोलने वाला, चतुर एवं मस्तिष्क-शक्ति से सम्पन्न होता है।
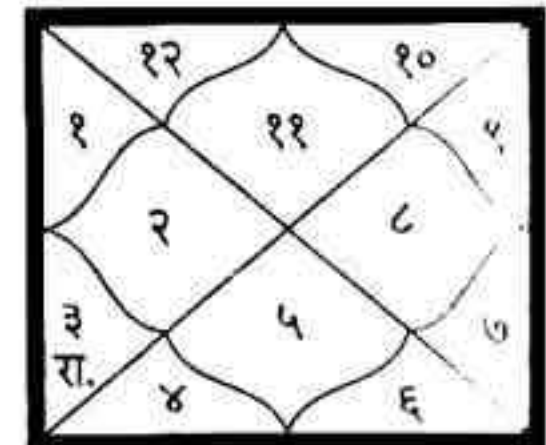
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: षष्ठभाव: राहु

१३००

छठे रोग तथा शत्रु स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना बड़ा भारी प्रभाव रखता है तथा गुप्त युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि-बल से झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त करता है। वह भीतरी रूप से परेशानी का अनुभव करने पर भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं खोता। अपने प्रबल मनोबल एवं बुद्धि-बल से वह अंत में अपनी सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।
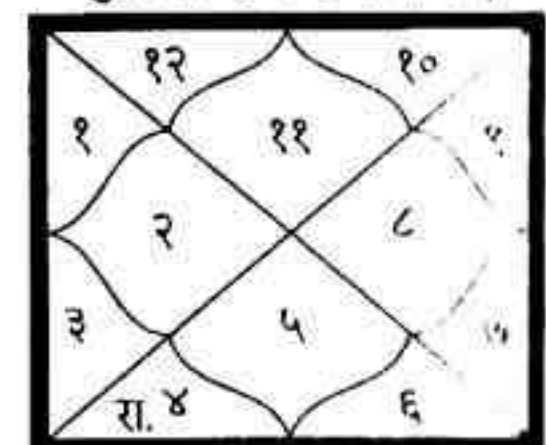
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से बहुत कष्ट मिलता है, गृहस्थी संचालन में कठिनाइयां आती हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनेक संकटों तथा निराशाओं से टकराते रहने के बावजूद भी अपना धैर्य नहीं खोता तथा हिम्मत, परिश्रम एवं युक्ति बल से काम लेकर अंततः अपने जीवन को उन्नत बनाता है तथा घरेलू सुख की शक्ति प्राप्त करता है।

कुंभ लग्न: सप्तमभाव: राहु
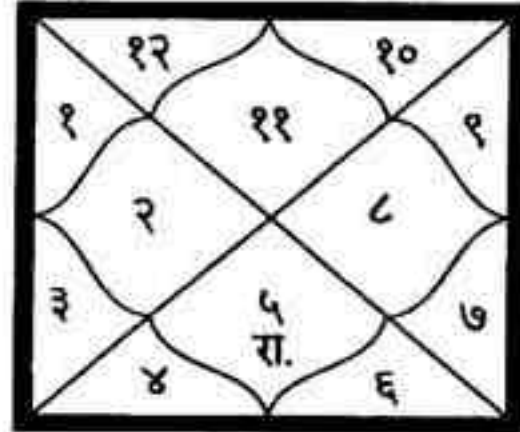
१३०१

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के संबंध में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है, फिर भी वह बड़ी आयु पाता है तथा विवेक-बुद्धि एवं युक्ति-बल पर अपने जीवन को प्रभावशाली ढंग से बिताता है।

कुंभ लग्न: अष्टमभाव: राहु
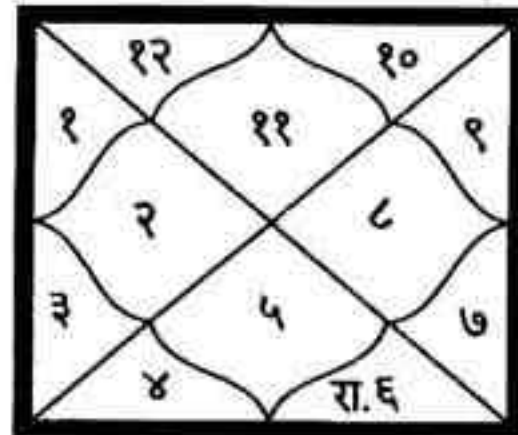
१३०२

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएं आती हैं तथा धर्म का पालन भी ठीक प्रकार से नहीं हो पाता परंतु ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, परिश्रम चातुर्य एवं बुद्धि-बल से भाग्य की उन्नति करने में सफल हो जाता है। मन में कमजोरी अनुभव करने पर भी वह अपनी चिंताओं एवं त्रुटियों को प्रकट नहीं होने देता, अतः प्रभाव की वृद्धि करता रहता है।

कुंभ लग्न: नवमभाव: राहु
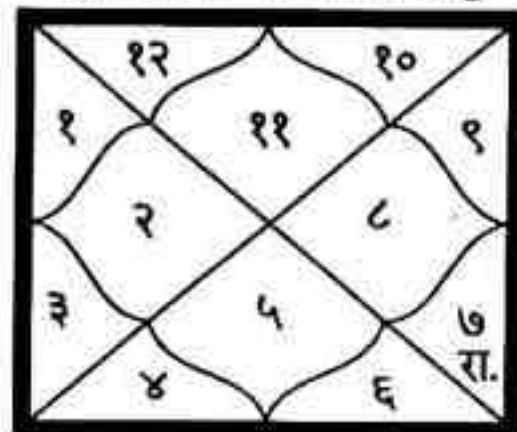
१३०३

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से कष्ट, राज्य के पक्ष से परेशानियां तथा व्यवसाय के पक्ष से कठिनाइयां प्राप्त होती है, परंतु वह अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है एवं अनेक संघर्षों से टकराने के बाद सफलता पा लेता है तथा अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।

कुंभ लग्न: दशमभाव: राहु
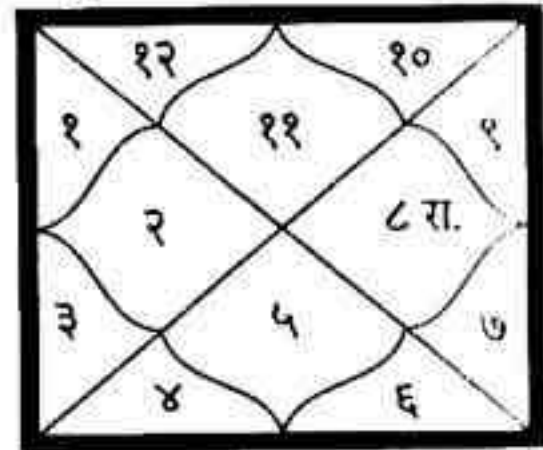
१३०८

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: एकादशभाव: राहु

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में बहुत कठिनाइयां आती हैं, परंतु जातक अपनी गुप्त युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि-बल से किसी प्रकार उन कठिनाइयों पर थोड़ी-बहुत विजय पा लेता है, फिर भी पूर्ण उन्नति नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति प्राय: अपनी कठिनाइयों को किसी पर प्रकट नहीं होने देता।
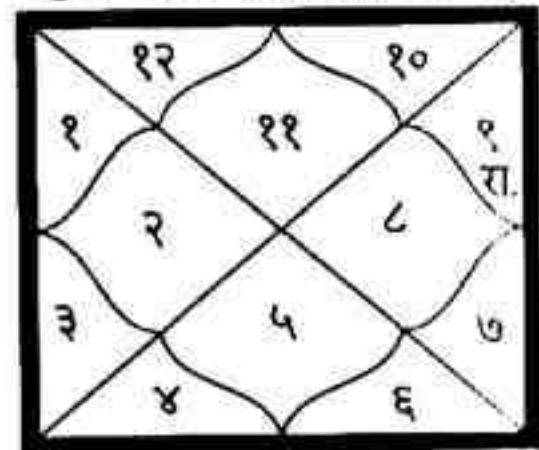
१३०९

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: द्वादशभाव: राहु

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के संबंध में बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। कभी-कभी तो उसे अत्यधिक चिंतित हो जाना पड़ता है। वह अपना खर्च चलाने के लिए कठोर परिश्रम करता है, तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

१३१०
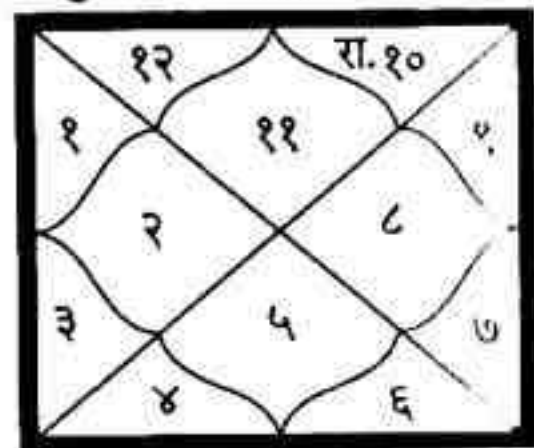
'कुंभ' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर में किसी चोट अथवा घाव का चिह्न बनता है तथा शारीरिक सौंदर्य में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, गुप्त युक्ति-संपन्न, धैर्यवान तथा परिश्रमी होता है। वह अपने प्रभाव को स्थिर रखने के लिए अत्यधिक कठिन प्रयत्न करता है और उसके कारण यश तथा सम्मान प्राप्त करता है।

कुंभ लग्न: प्रथमभाव: केतु
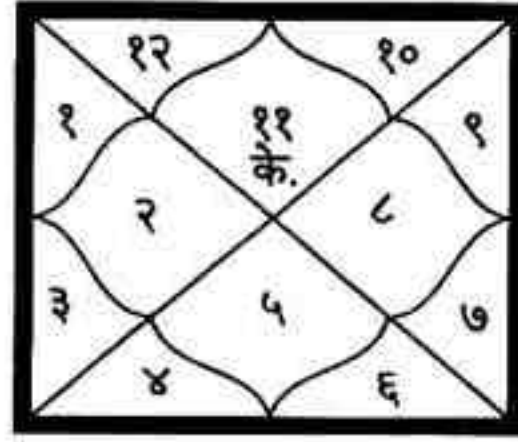
१३०७

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन की कमी का सामना करना पड़ता है तथा उसके कुटुंब में भी क्लेश तथा उपद्रव उठते रहते हैं। ऐसा व्यक्ति कठोर परिश्रम तथा न्याय के मार्ग से धनप्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अंत में थोडी-बहुत सफलता भी पाता है। वह बड़ा धैर्यवान, साहसी तथा परिश्रमी होता है।

कुंभ लग्न: द्वितीयभाव: केतु
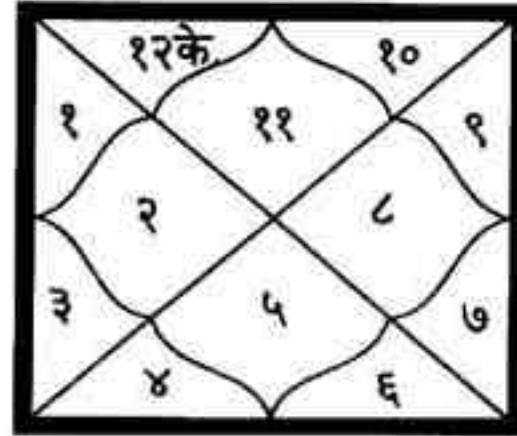
१३०८

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा पुरुषार्थी, परिश्रमी, हिम्मतवाला, धैर्यवान तथा उद्योगी होता है, अत: अपनी उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करता है। परंतु उसे भाई-बहनों के सुख में कमी अथवा कष्ट का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा अनेक संघर्षों से टकराने के बाद अंत में अपने जीवन को उन्नत बना लेने वाला होता है।

कुंभ लग्न: तृतीयभाव: केतु
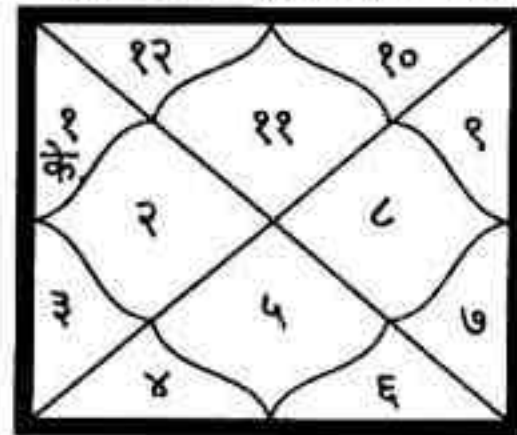
१३०९

जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: चतुर्थभाव: केतु

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष से हानि अथवा परेशानी उठानी पड़ती है, साथ ही मातृभूमि से वियोग भी होता है। उसे भूमि तथा मकान आदि के सुख की भी कमी रहती है, परंतु ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा बुद्धि-बल से भूमि एवं मकानादि का सुख पाने के लिए प्रयत्न करता रहता है और अंततः उसमें थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।
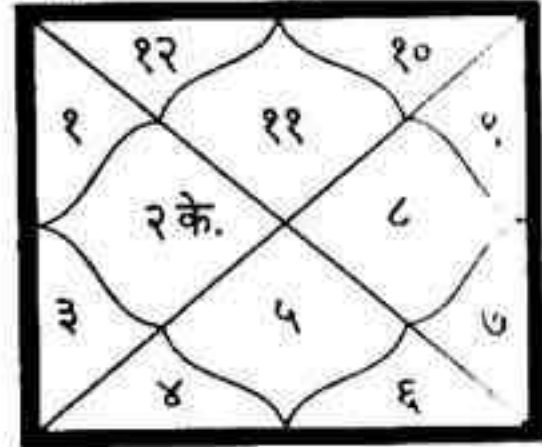
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में '[illegible]' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: पंचमभाव: केतु

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा संतान का सुख प्राप्त करने के लिए भी गुप्त युक्तियों एवं कष्टसाध्य प्रयत्नों का आश्रय लेना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को संतान का अल्प सुख ही प्राप्त होता है। उसमें शील तथा विवेक की कमी रहती है तथा मस्तिष्क में अशांति एवं चिंताएं घर किए रहती हैं।
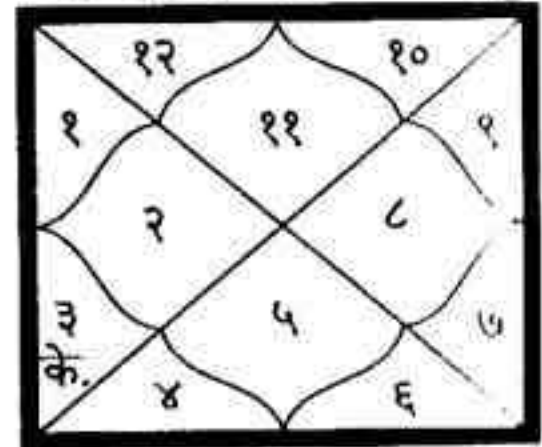
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में '[illegible]' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कुंभ लग्न: षष्ठभाव: केतु

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से अशांति तो मिलती है, परंतु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने और विजय पाने में विशेष सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति अपने मनोबल एवं युक्ति-बल से शत्रुओं को मात देता है। मन में भयभीत रहने पर भी वह प्रकट रूप में बड़ी हिम्मत एवं बहादुरी का प्रदर्शन करता है। वह धैर्यवान तथा कठोर परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।
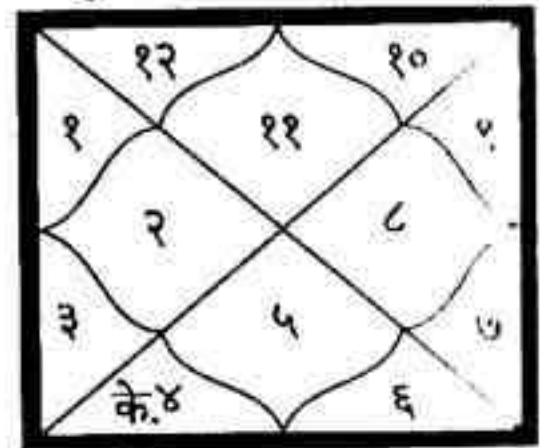
जिस जातक का जन्म 'कुंभ' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में '[illegible]' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर [illegible] के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के [illegible]

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः नवमभावः सूर्य

१३३०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन होता है। परंतु सूर्य के षष्ठेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां अवश्य आती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का भाई-बहनों से कुछ विरोध रहता है, परंतु कुछ कठिनाइयों एवं परिश्रम के साथ हिम्मत, प्रभाव तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।
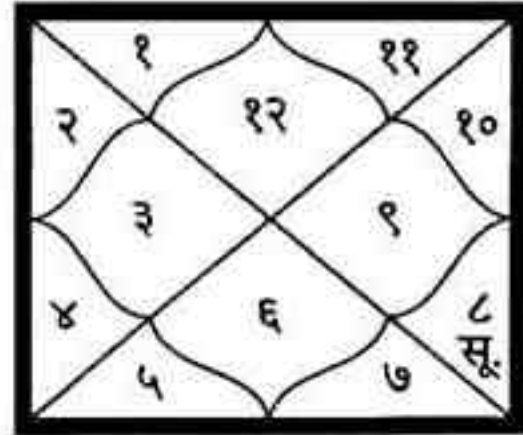
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः दशमभावः सूर्य

१३३१

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित षष्ठेश सूर्य के प्रभाव से जातक का पिता के साथ कुछ वैमनस्य रहता है, व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परंतु राजकीय क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान की वृद्धि होती है। वह अपने शत्रु पक्ष पर भी विजय प्राप्त करता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः कुछ परेशानियों के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है।
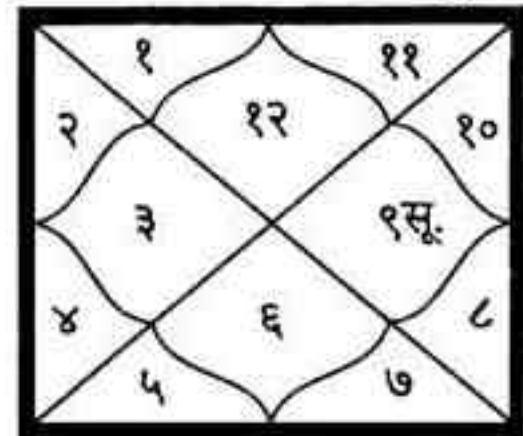
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः एकादशभावः सूर्य

१३३२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपनी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि करता है। साथ ही शत्रु पक्ष पर विजय भी पाता है। सूर्य के षष्ठेश होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां अवश्य आती हैं, परंतु अंततः सफलता मिलती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ संतान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।
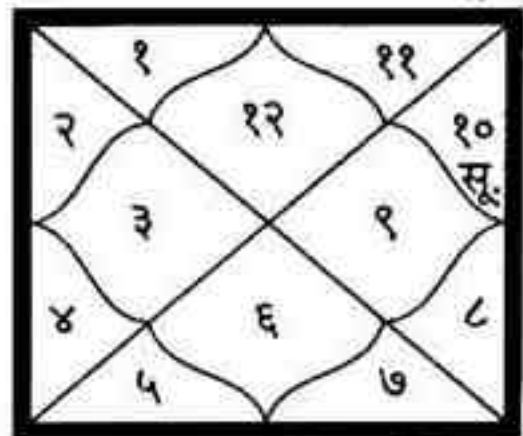
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः द्वादशभावः सूर्य

१३३३

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित षष्ठेश सूर्य के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध में भी दिक्कतें आती हैं। शत्रु पक्ष से भी कुछ परेशानी बनी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक खर्च के बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा प्रभाव को बढ़ाता है। वह क्रोधी तथा अहंकारी भी होता है।
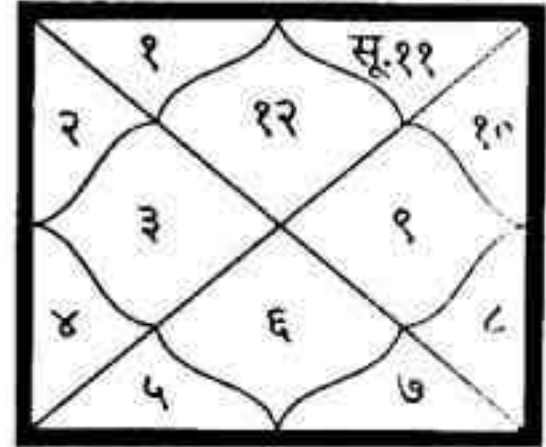
'मीन' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में वृद्धि होती है। वह कोमल स्वभाव का होता है तथा यश, प्रभाव, सम्मान एवं आत्मिक शांति अर्जित करता है। वह मधुर वाणी बोलने वाला, सर्वप्रिय, आदर्श एवं ज्ञानी होता है। उसे संतानपक्ष से भी अच्छी शक्ति मिलती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः उसे सुंदर स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बुद्धि-बल से अच्छी सफलता मिलती है।

मीन लग्नः प्रथमभावः चंद्र
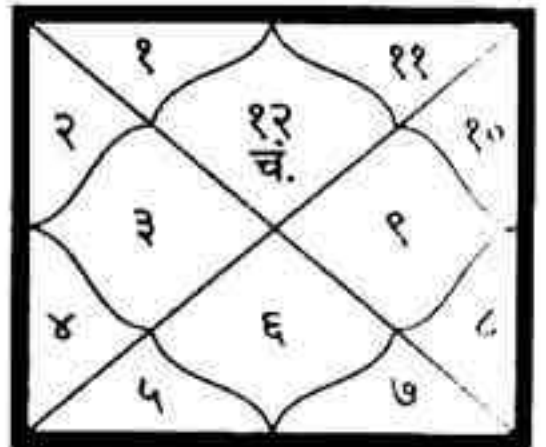
१३३४

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः द्वितीयभावः चंद्र

१३३५

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है, परंतु संतानपक्ष से कुछ परेशानी रहती है। इसके अतिरिक्त संतान तथा विद्या-पक्ष से प्रतिष्ठा भी मिलती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव
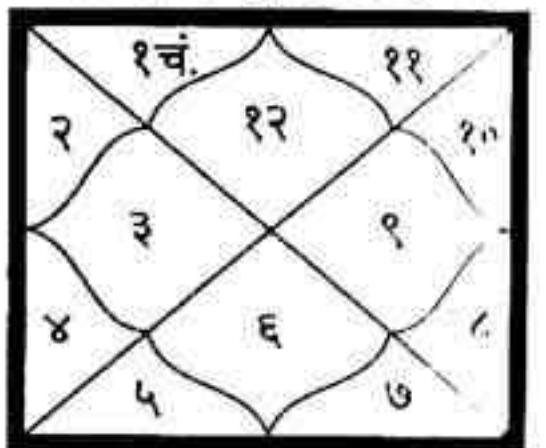
को देखता है, अत: जातक की आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति वृद्धि होती है तथा उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: तृतीयभाव: चंद्र

१ ११ २ १२ १० चं. ३ ९ ४ ६ ८ ५ ७

१३३६

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक का भाई-बहनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे विद्या एवं संतानपक्ष का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। वह बड़ा हिम्मती, बातचीत करने में चतुर तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक की भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पक्ष भी कमजोर रहता है। ऐसा जातक असहिष्णु होता है, अत: उसे यश भी कम ही मिल पाता है।
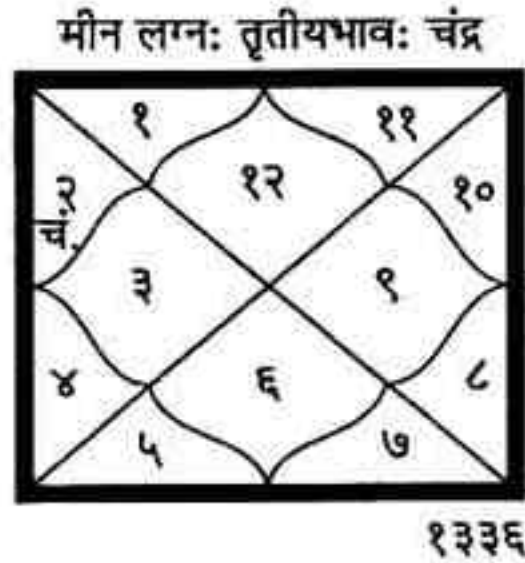
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: चतुर्थभाव: चंद्र

१३३७

चौथे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति की मानसिक शक्ति अत्यंत प्रबल होती है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा यश प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली समझा जाता है।
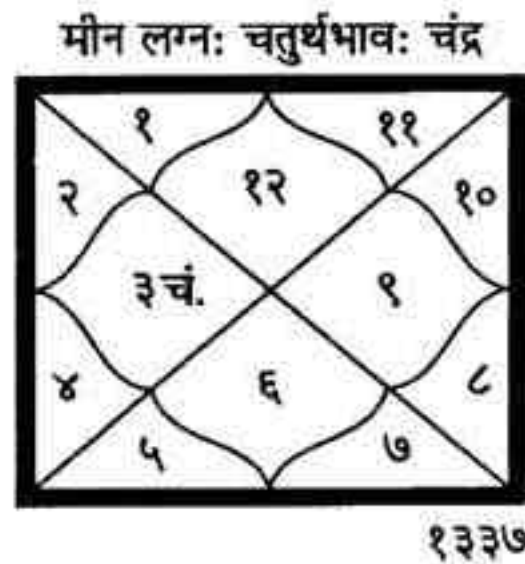
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चंद्रमा के प्रभाव से जातक के विद्या-बुद्धि एवं संतान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। वह वाक्पटु होता है तथा उसकी वाणी में कोमलता एवं मधुरता रहती है। वह दूरदर्शी, गंभीर, स्थित विचारों वाला तथा प्रसन्न रहने वाला होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि के विशेष प्रयोग द्वारा आमदनी की वृद्धि करता है, यद्यपि आमदनी के पक्ष में कुछ असंतोष बना रहता है।

मीन लग्न: पंचमभाव: चंद्र
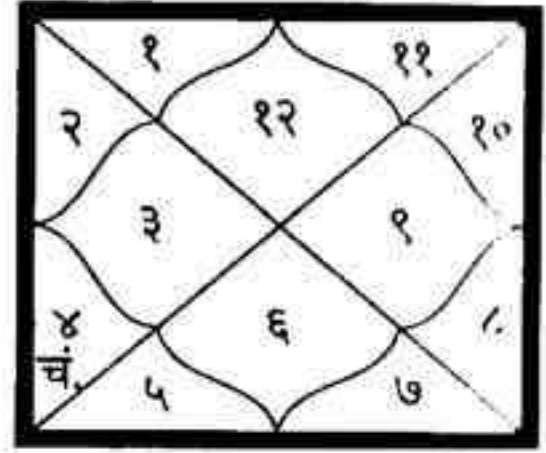
१३३८

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष एवं झगड़े-झंझटों के कारण अशांति का सामना करना पड़ता है। अंत में वह अपने मनोबल तथा बुद्धि-बल से शत्रु पक्ष एवं झगड़ों पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। इसे संतानपक्ष से भी कष्ट होता है तथा विद्याध्ययन में भी परेशानी एवं त्रुटि रहती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक खर्च की अधिकता से दु:खी रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से असंतोषपूर्ण शक्ति प्राप्त करता है।

मीन लग्न: षष्ठभाव: चंद्र
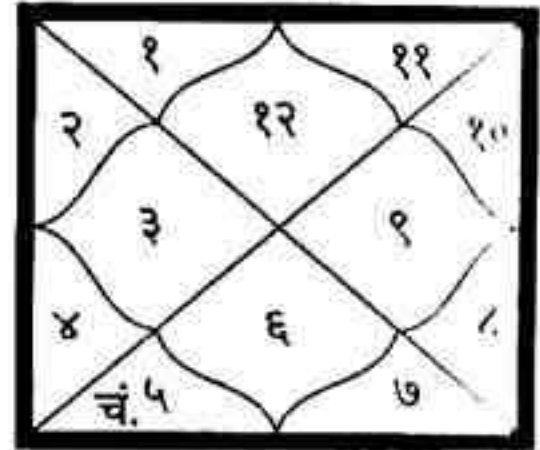
१३३९

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को सुंदर एवं बुद्धिमती स्त्री मिलती है और व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता भी प्राप्त होती है। इसके साथ ही जातक को संतानपक्ष से सहयोग मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। उसके घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव, सम्मान एवं योग्यता की प्राप्ति होती है। वह घरेलू एवं सामाजिक कार्यों में कुशल तथा यशस्वी होता है।

मीन लग्न: सप्तमभाव: चंद्र
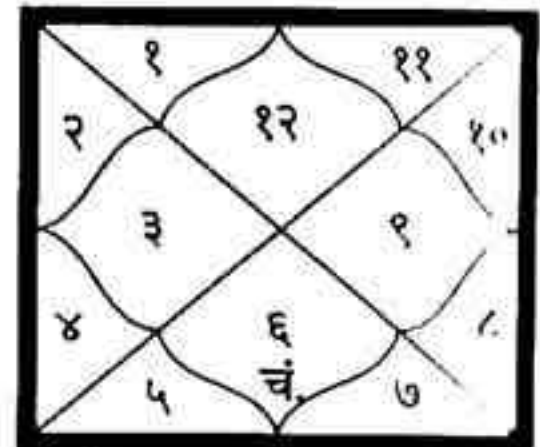
१३४०

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: अष्टमभाव: चंद्र

१३४१

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है, परंतु विद्या एवं संतान के पक्ष में कमी एवं कष्ट का अनुभव होता है। साथ ही मन तथा मस्तिष्क में अशांति बनी रहती है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है। अत: जातक अनेक साधनों से धन की वृद्धि करता है। वह कौटुंबिक मामलों में विशेष रुचि रखता है तथा कुटुंब का सुख भी प्राप्त करता है।
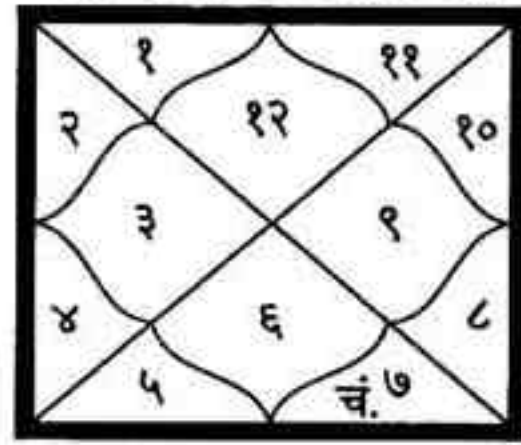
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: नवमभाव: चंद्र

१३४२

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पालन भी यथाविधि नहीं हो पाता। उसे संतान के सुख में कमी तथा विद्या के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। मन तथा मस्तिष्क में परेशानी भी बनी रहती है। यहां से चंद्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव के देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों की शक्ति मिलती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मती एवं धैर्यवान होता है।
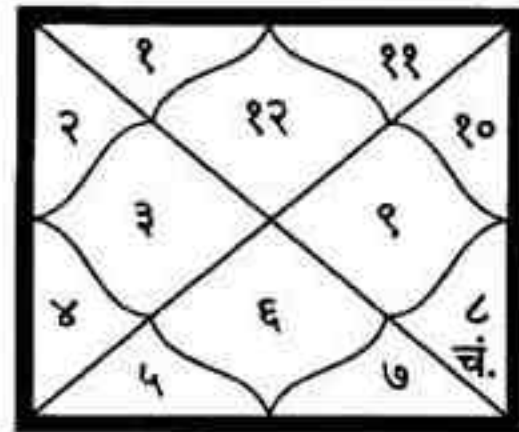
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: दशमभाव: चंद्र

१३४३

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य द्वारा सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होता है। वह कानून को मानने वाला, स्वाभिमानी, विद्वान, बुद्धिमान तथा संततिवान होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि का अच्छा लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान, धनी, यशस्वी, प्रतिष्ठित विद्वान, बुद्धिमान तथा सुखी होता है।
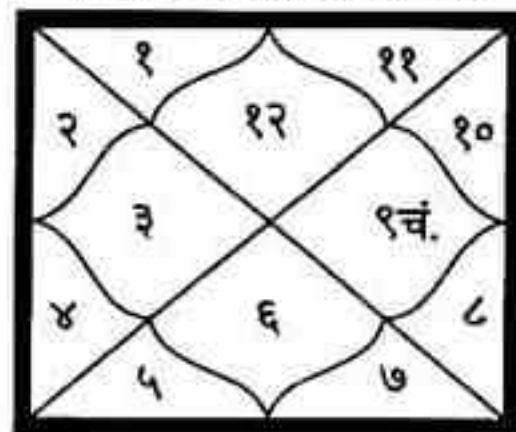
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मीन लग्नः एकादशभावः चंद्र

१३४४

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि-बल एवं मनोबल द्वारा आमदनी की खूब वृद्धि करता है, फिर भी उसे कुछ न कुछ असंतोष बना रहता है। ऐसे व्यक्ति को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या एवं संतान की शक्ति प्राप्त होती है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी ही कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः वह विद्या, बुद्धि एवं संतानपक्ष की उन्नति के लिए निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थपूर्ण बातचीत करने वाला तथा अपनी उन्नति का ध्यान रखने वाला होता है।
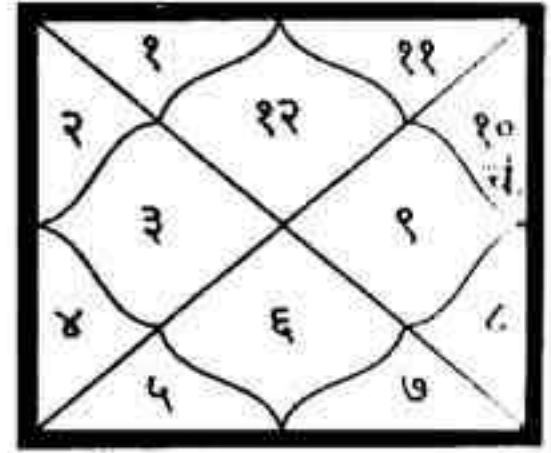
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मीन लग्नः द्वादशभावः चंद्र

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंधों से उसे लाभ भी प्राप्त होता है। उसे संतानपक्ष से कष्ट मिलता है, विद्या-पक्ष में कमी रहती है तथा मन एवं मस्तिष्क परेशान बने रहते हैं। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपनी बुद्धि के बल पर शत्रु पक्ष में काम निकालता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में प्रभाव स्थापित करता है।
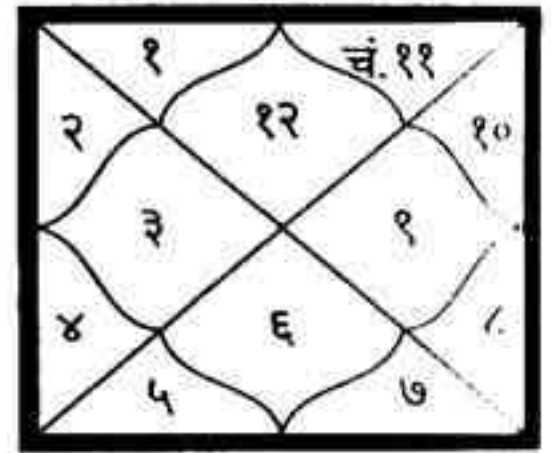
'मीन' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः प्रथमभावः मंगल

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं सम्मान में वृद्धि होती है। साथ ही धन, कुटुंब, भाग्य तथा धर्म की उन्नति भी होती है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव
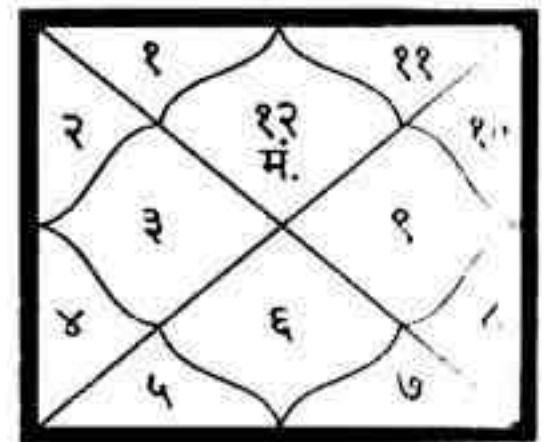
को देखने से स्त्री की शक्ति मिलती है एवं व्यवसाय द्वारा धन तथा घरेलू सुख की वृद्धि भी होती है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुछ कठिनाइयों के साथ अमीरी ढंग का जीवन बिताता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

१३४७

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपनी ही मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक के धन एवं कुटुंब की वृद्धि होती है और वह बड़ा धनवान समझा जाता है। यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: विद्या एवं संतान के पक्ष में कुछ कमी रहेगी तथा चिंता एवं परेशानी के कारण बनते रहेंगे। ऐसा व्यक्ति कटु शब्दों का प्रयोग करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है तथा रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता रहता है।
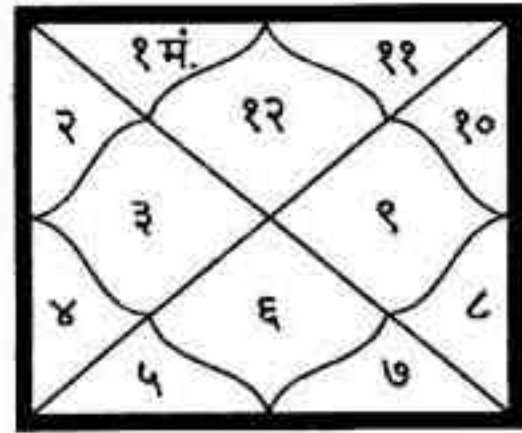
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: तृतीयभाव: मंगल

१३४८

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है और उसे भाई-बहनों का सुख भी प्राप्त होता है। इसके साथ ही धन तथा कुटुंब की भी उन्नति होती है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है। अत: शत्रु पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़ों के मामलों में विजय मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता द्वारा सुख-सहयोग मिलता है, राज्य से सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में तरक्की होती है। ऐसा जातक यशस्वी, धर्मात्मा, शत्रुजयी तथा भाई-बहन, कुटुंब एवं धन के सुख में संपन्न भाग्यशाली होता है।
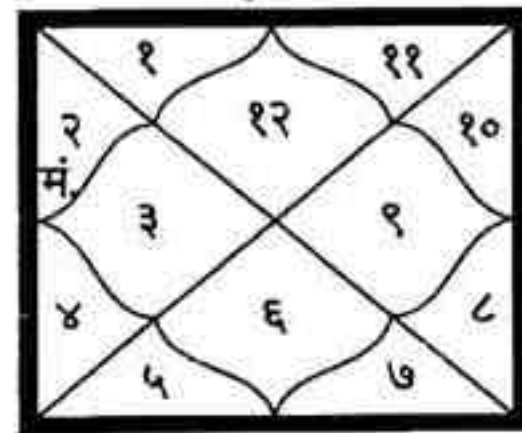
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता का सुख एवं भूमि, मकान आदि की शक्ति प्राप्त होती है। उसे धन तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। घरेलू सुख भी खूब रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय से सुख, सम्मान तथा लाभ मिलता रहता है। आठवीं उच्चदृष्टि से शत्रु की राशि में एकादशभाव को देखने से घर बैठे ही लाभ का योग बनता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है।

मीन लग्न: चतुर्थभाव: मंगल
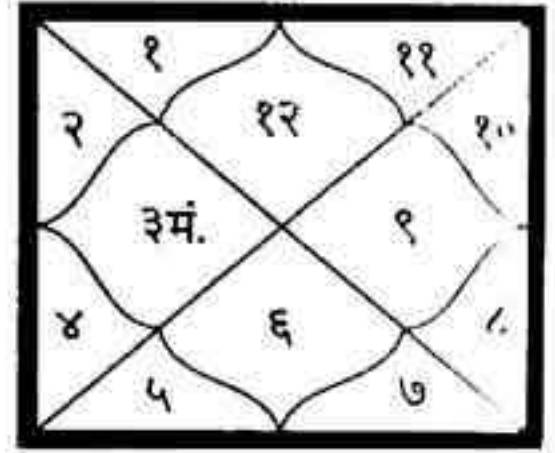
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को संतान तथा विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है तथा धन एवं कुटुंब-पक्ष से भी चिंता बनी रहती है। भाग्य एवं धर्म का पक्ष भी दुर्बल रहता है। यहां से मंगल चौथी सामान्य मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की कुछ वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से लाभ-भवन को देखने से जातक आमदनी बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्न करता है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के मामले में परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ असंतोषपूर्ण सहयोग मिलता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षमय बना रहता है।

मीन लग्न: पंचमभाव: मंगल
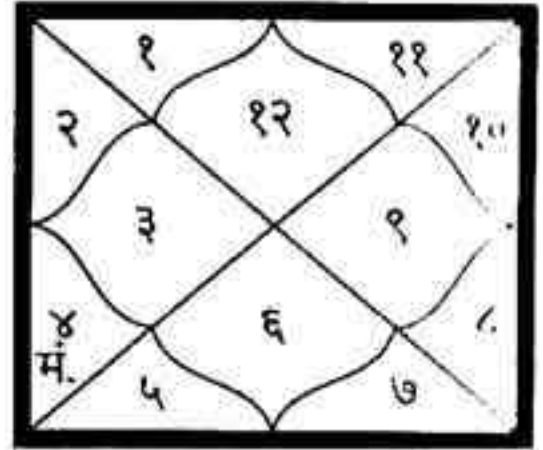
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना बड़ा प्रभाव रखता है। धन की कुछ कमी रहते हुए भी खर्च शान से चलता है तथा कुटुंब से भी थोड़ा सुख मिलता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखता है, अत: कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से असंतोष रहता है।

मीन लग्न: षष्ठभाव: मंगल
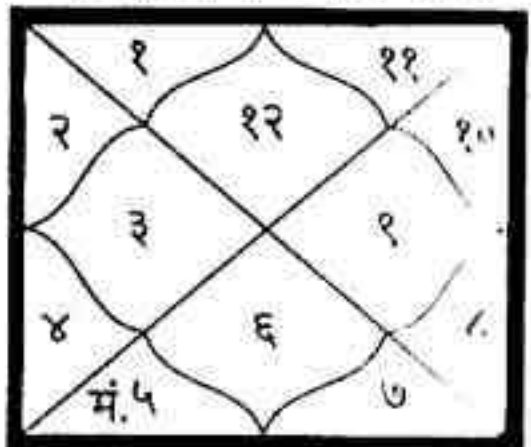
आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है तथा झगड़े के मामलों में जातक हिम्मत से काम लेता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: सप्तमभाव: मंगल

१३५२

सातवें केंद्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्यवान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय में भी लाभ होता है। वह धर्म का पालन करता है और भाग्यशाली होता है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सम्मान, लाभ एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। विशेषकर रोजगार खूब बढ़ता है तथा धन की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य, यश, प्रतिष्ठा एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से भाग्य की प्रबल शक्ति से धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है।
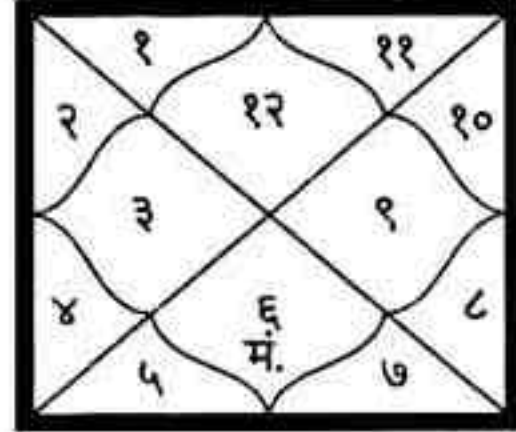
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: अष्टमभाव: मंगल

१३५३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परंतु भाग्य, धर्म एवं यश के क्षेत्र में कमी आती है। यहां से मंगल अपनी चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी अच्छी रहती है तथा जातक अधिक मुनाफा खाने का प्रयत्न करता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का संचय होता है तथा कुटुंब का सहयोग भी मिलता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों से कुछ असंतोष रहता है, परंतु पराक्रम में वृद्धि होती है।
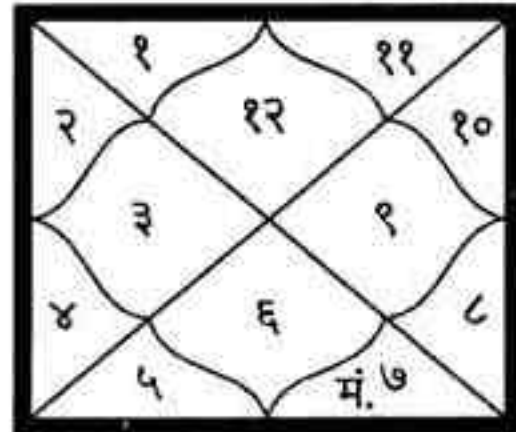
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली, धनी, धर्मात्मा तथा यशस्वी होता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च के मामले में असंतोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी विशेष रुचिकर नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है, परंतु पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सुख यथेष्ट मात्रा में मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा जातक भाग्यवान, सुखी तथा यशस्वी होता है।

मीन लग्न: नवमभाव: मंगल
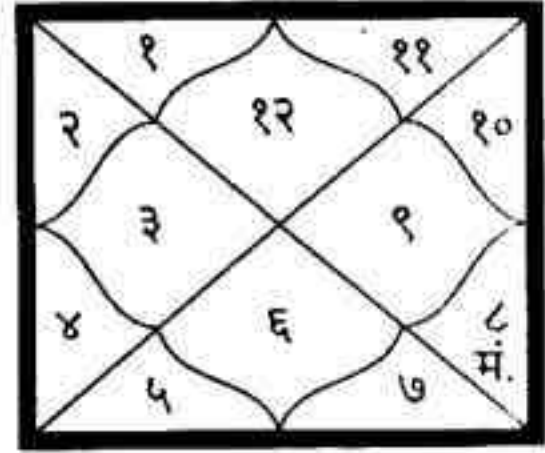
१३५८

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पिता से बहुत सुख, राज्य से अत्यधिक सम्मान तथा व्यवसाय में बड़ी उन्नति करता है। उसे धन तथा कुटुंब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। यहां से मंगल अपनी चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक प्रभाव, शक्ति, प्रतिष्ठा, यश एवं स्वाभिमान की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। आठवीं नीचदृष्टि से मित्र की राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: संतान तथा विद्या के पक्ष में कुछ कमी रहती है। वाणी में रूखापन तथा मस्तिष्क में कुछ परेशानियां भी रहती हैं।

मीन लग्न: दशमभाव: मंगल
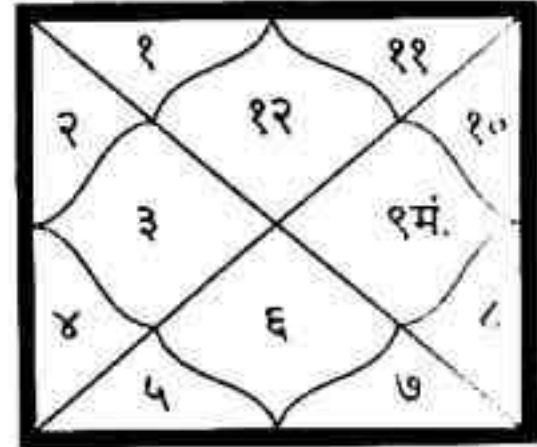
१३५९

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा भाग्यवान होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: धन तथा कुटुंब की उन्नति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से मित्र चंद्रमा की राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या तथा संतान के

मीन लग्न: एकादशभाव: मंगल

१३६०
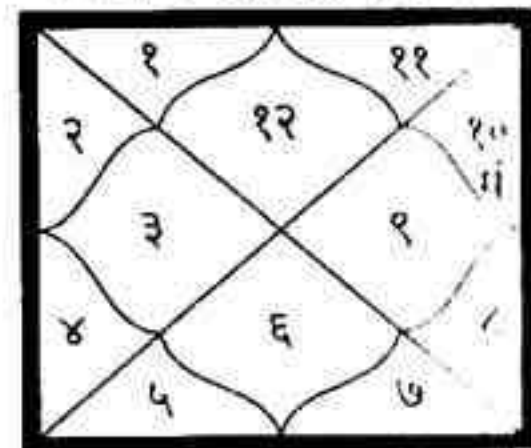
पक्ष में कुछ कमी तथा परेशानी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक भाग्य की शक्ति से शत्रु पक्ष पर विजय एवं प्रभाव प्राप्त करता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता पाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, धनवान तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति प्राप्त होती है। धन तथा कुटुंब के पक्ष में बहुत कमी रहती है तथा भाग्य, धर्म एवं यश की उन्नति में अनेक कठिनाइयां आती रहती हैं। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहनों की कुछ असंतोषपूर्ण शक्ति मिलती है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री से सुख तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है।

मीन लग्नः द्वादशभावः मंगल
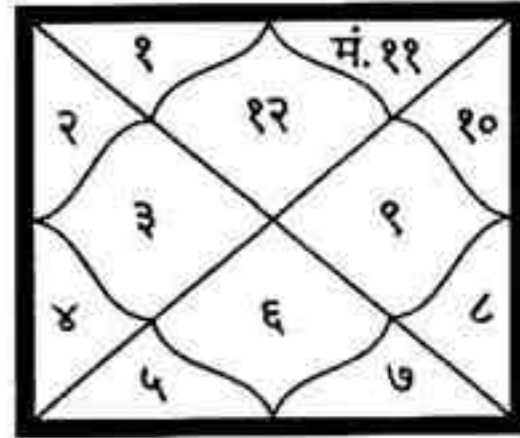
१३५७

'मीन' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी थोड़ा ही प्राप्त होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री पक्ष से सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव की एवं व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

मीन लग्नः प्रथमभावः बुध
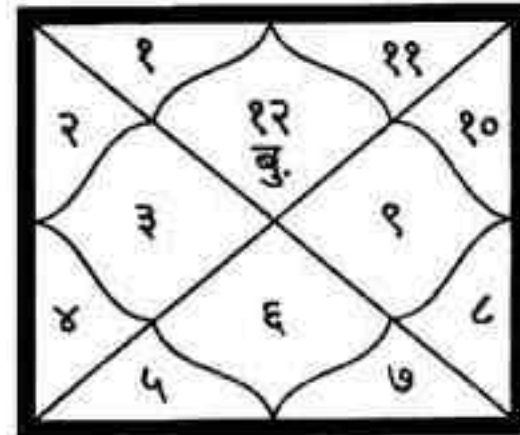
१३५८

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः द्वितीयभावः बुध

१३५९

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक कुटुंब से शक्ति प्राप्त करता है तथा अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा धन का संचय करता हैं। उसे माता तथा स्त्री के सुख में कुछ कमी रहती है, परंतु घरेलू सुख अच्छा रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि की शक्ति का भी लाभ होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है।
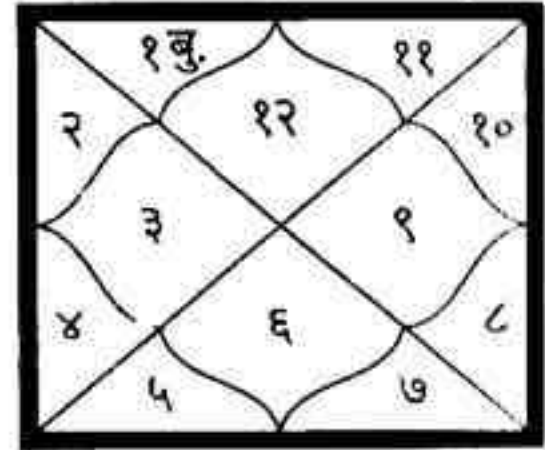
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः तृतीयभावः बुध

१३६०

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। वह बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता हैं। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की उन्नति होती है। वह धर्म का पालन करता हैं तथा यशस्वी भी होता है।
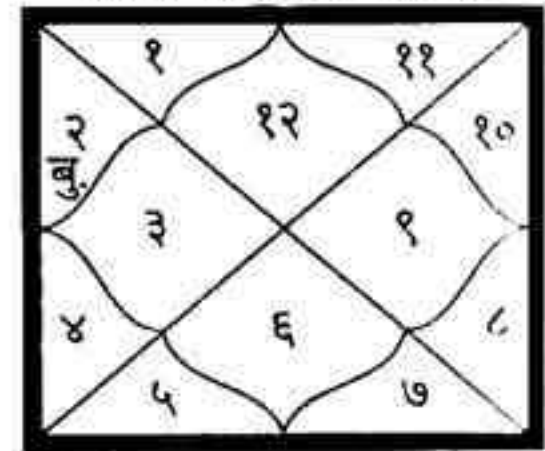
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः चतुर्थभावः बुध

१३६१

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को माता का विशेष सुख मिलता है तथा भूमि, मकान आदि की शक्ति भी प्राप्त होती है। वह स्त्री पक्ष से बहुत आनंदित रहता है और उसका घरेलू जीवन भी सुख तथा उल्लासपूर्ण बना रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसे सफलता मिलती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को पिता से शक्ति, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा भाग्यवान होता है।
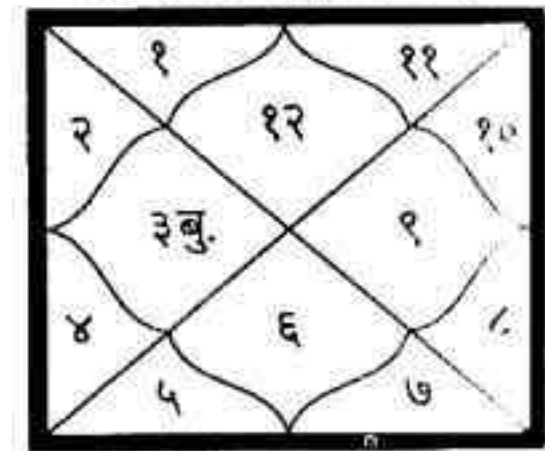
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। उसे प्रसन्नता का सुख भी मिलता है। वह बड़ी मीठी वाणी बोलने वाला तथा गृह-कार्य के संचालन में कुशल होता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि में लाभ भवन को देखता है, अत: जातक अपनी बुद्धि-बल से आमदनी की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी तथा विवेकी होता है।

मीन लग्न: पंचमभाव: बुध
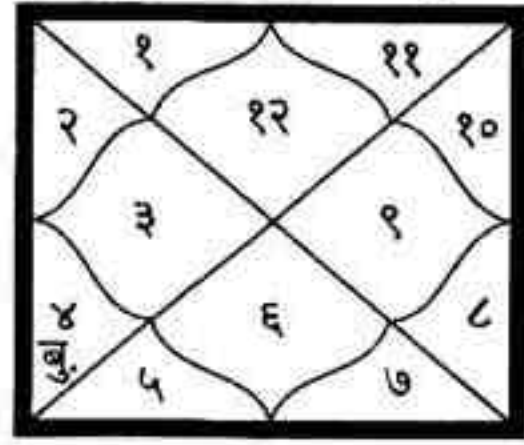
१३६२

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में शांति से काम निकालता है। उसका माता तथा स्त्री से कुछ विरोध रहता है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी कम मिलता है। व्यवसाय के क्षेत्र में वह अपने बुद्धि-बल तथा परिश्रम से सफलता प्राप्त करता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ मिलता है।

मीन लग्न: षष्ठभाव: बुध
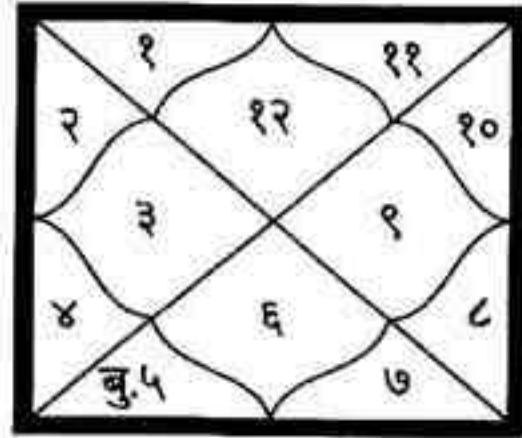
१३६३

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्रीय तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को सुंदर स्त्री मिलती है, घरेलू जीवन प्रभावपूर्ण रहता है तथा व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहां से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा गृहस्थी का संचालन करने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

मीन लग्न: सप्तमभाव: बुध
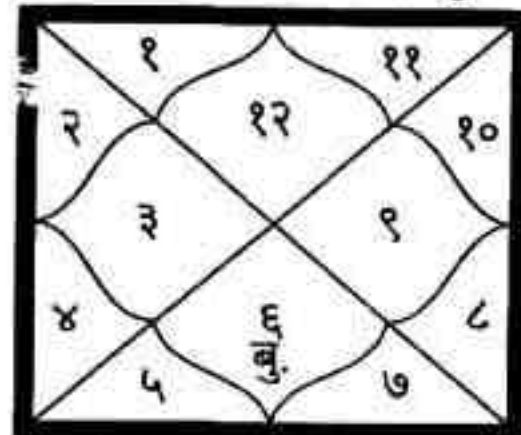
१३६४

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: अष्टमभाव: बुध

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन भी सुखी तथा प्रभावपूर्ण रहता है। परंतु स्त्री के सुख में विशेष कमी रहती है और माता का सुख भी कम ही मिल पाता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक कुटुंब की शक्ति प्राप्त करता है तथा धन की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील बना रहता है।
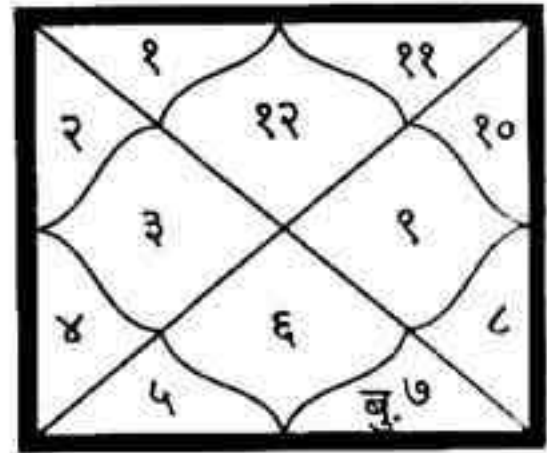
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: नवमभाव: बुध

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहनों का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, यशस्वी, पराक्रमी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
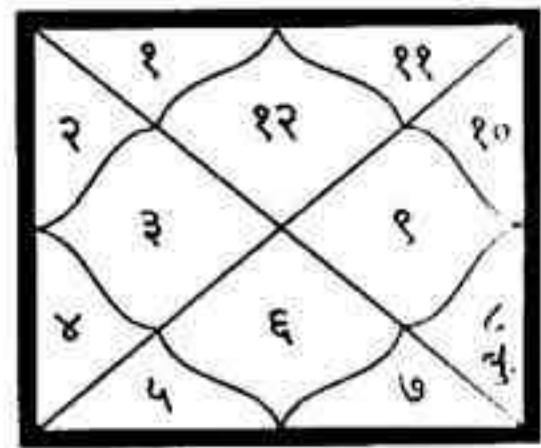
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: दशमभाव: बुध

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता से सुख-सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। उसे स्त्री पक्ष से भी प्रभाव प्राप्त होता है तथा गृहस्थ-जीवन सुखपूर्ण बना रहता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि, मकान एवं घरेलू सुख भी पर्याप्त मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, भाग्यवान, गौरवशाली तथा यशस्वी होता है।
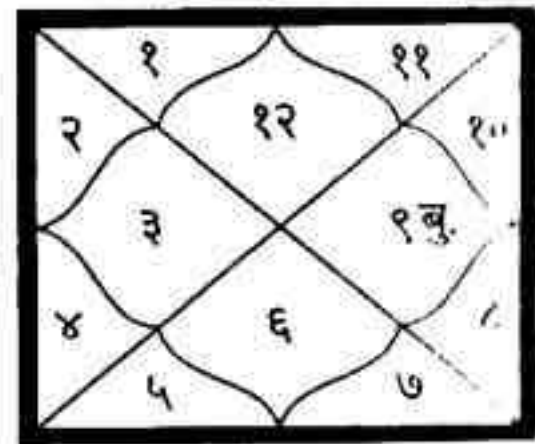
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसे माता, स्त्री, भूमि, मकान तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता मिलती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतानपक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी, बुद्धिमान, धनी, सुखी, प्रभावशाली तथा यशस्वी होता है।

मीन लग्न: एकादशभाव: बुध
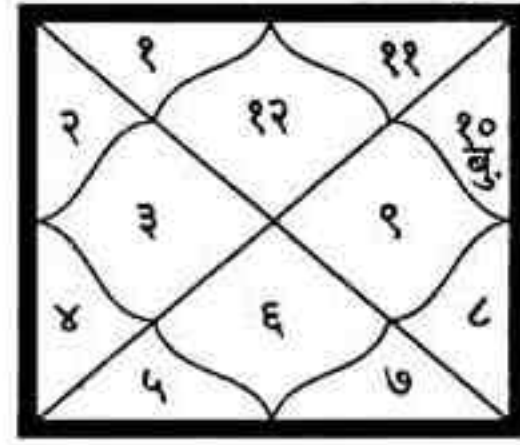
१३६८

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता है। उसे स्त्री, माता, भूमि, मकान, घरेलू सुख तथा स्थानीय व्यवसाय के क्षेत्र में भी हानि तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। वह धैर्यवान तथा हिम्मती होता है।

मीन लग्न: द्वादशभाव: बुध
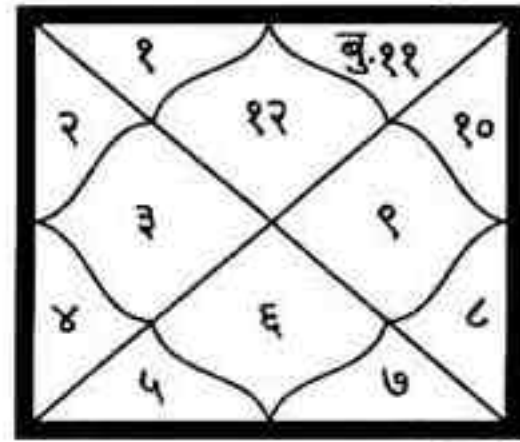
१३६९

'मीन' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपनी ही मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। वह राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सहयोग, लाभ एवं यश प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा व्यवसायी तथा धनी होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: विद्या एंव बुद्धि की विशेष उन्नति होती है तथा संतानपक्ष से सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुंदर स्त्री मिलती है तथा स्त्री के सुख एवं व्यवसाय में वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव के देखने से भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है।

मीन लग्न: प्रथमभाव: गुरु
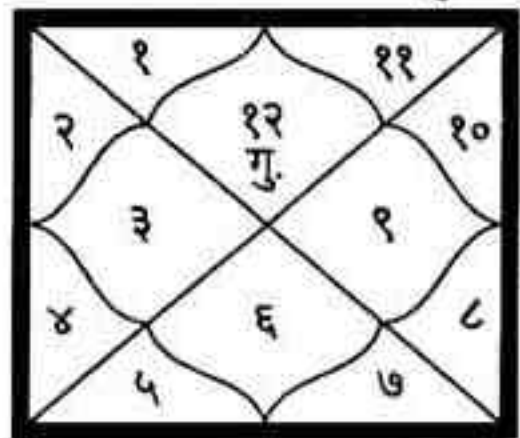
१३७०

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: द्वितीयभाव: गुरु

१३७१

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक धन का संचय खूब करता है तथा कुटुंब शक्ति प्राप्त करता है, परंतु शारीरिक स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़े के मामलों में धैर्य से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है तथा दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने के कारण पिता से बहुत सहयोग मिलता है, राज्य से प्रतिष्ठा एवं व्यवसाय से प्रचुर लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी सुखी तथा यशस्वी होता है।
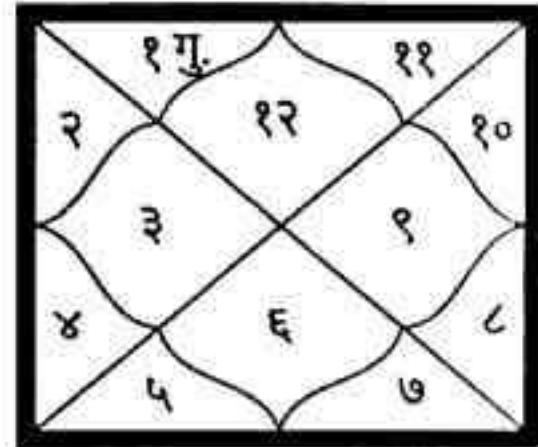
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: तृतीयभाव: गुरु

१३७२

तीसरे भाई-बहनों एवं पराक्रम के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाई-बहनों का सुख कुछ मतभेद के साथ मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। उसका पिता से भी कुछ मतभेद रहता है, परंतु राज्य में प्रभाव बढ़ता है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है एवं नवीं नीचदृष्टि से शनि की राशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं।
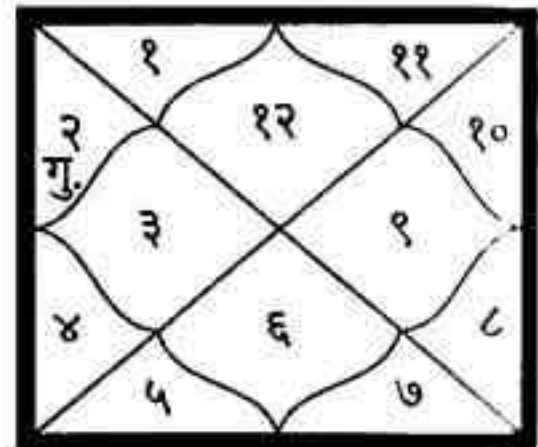
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का अच्छा सुख मिलता है। शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव, यश तथा घरेलू सुख में भी वृद्धि होती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में दशमभाव को देखने से पिता से शक्ति मिलती है, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ एवं सुख प्राप्त होता है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के कारण असंतोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी अधिक रुचिकर नहीं होता।

मीन लग्न: चतुर्थभाव: गुरु
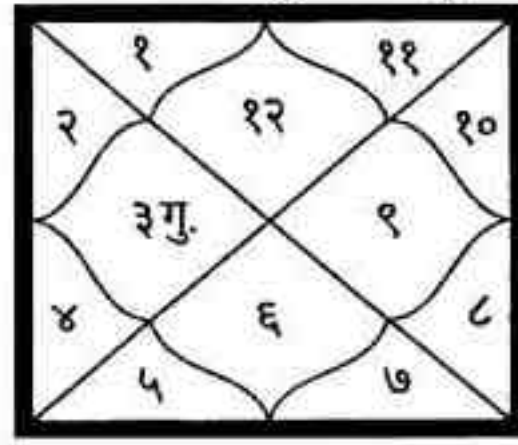
१३७३

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या, बुद्धि एवं वाणी का श्रेष्ठ बल प्राप्त होता है। साथ ही राज्य, पिता एवं.व्यवसाय से भी लाभ होता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं तथा नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य, प्रभाव, स्वाभिमान, गौरव एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। सामान्यत: ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

मीन लग्न: पंचमभाव: गुरु
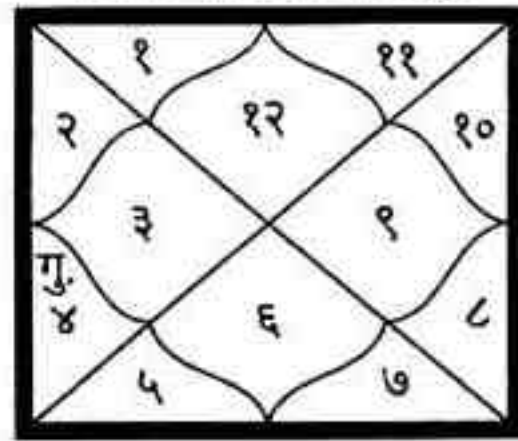
१३७४

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली रहता है, परंतु उसके शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में नवमभाव को देखता है, अत: पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता है। वह अपने शारीरिक श्रम के बल पर उन्नति करता

मीन लग्न: षष्ठभाव: गुरु
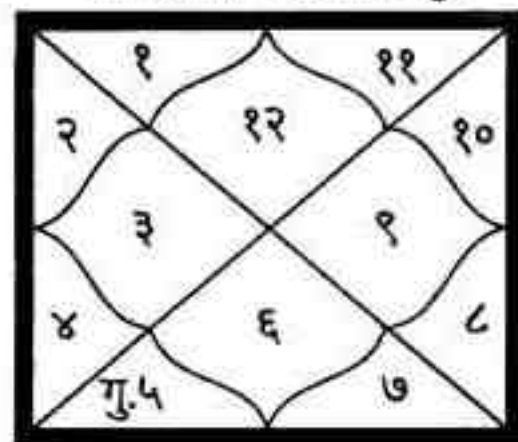
१३७५

रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च तथा बाहरी स्थानों के संबंध में असंतोष रहता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन की वृद्धि होती है और कुटुंब का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा धन तथा यश प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: सप्तमभाव: गुरु

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सुंदर स्त्री मिलती है तथा स्त्री पक्ष से सुख एवं शक्ति प्राप्त होती है। साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं नीचदृष्टि से शत्रु शनि की राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी का पक्ष कमजोर रहता है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, यश, स्वाभिमान एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों की शक्ति अच्छी मिलती है, परंतु उनसे कुछ असंतोष रहता है। साथ ही पराक्रम में भी वृद्धि होती है।
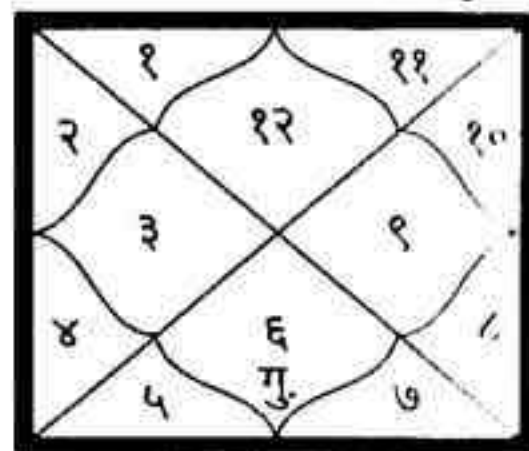
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: अष्टमभाव: गुरु

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च एवं बाहरी स्थानों के संबंध से असंतोष बना रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब की वृद्धि होती है एवं नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है।
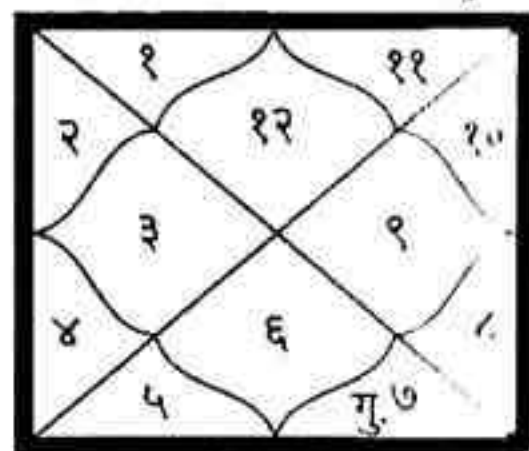
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। वह राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में भी अत्यधिक सफलता, यश, सम्मान, लाभ तथा सुख प्राप्त करता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव, यश तथा स्वाभिमान में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। नवीं उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा संतानपक्ष से भी सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति कलात्मक रुचि का, प्रभावशाली तथा वाणी का धनी होता है।

मीन लग्नः नवमभावः गुरु
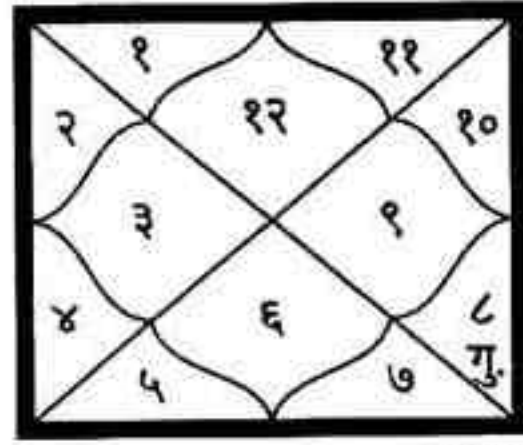
१३७८

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को पिता से बड़ी शक्ति, राज्य से बड़ा सम्मान तथा व्यापार से बड़ा लाभ प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रतिष्ठित, धनी, यशस्वी तथा प्रभवाशाली होता है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन की उन्नति होती है तथा कुटुंब का सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर भारी प्रभाव रहता है तथा झगड़े के मामलों में सफलता एवं विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी, बहादुर, हिम्मती तथा हुकूमत करने वाला होता है।

मीन लग्नः दशमभावः गुरु
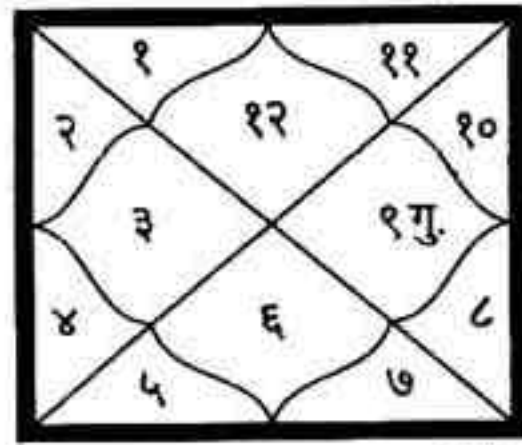
१३७९

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में बहुत कमी आती है। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से भी कष्ट प्राप्त होता है तथा भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं। यहां से गुरु अपनी पांचवीं दृष्टि से शुक्र की राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहनों का थोड़ा सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी कुछ वृद्धि

मीन लग्नः एकादशभावः गुरु
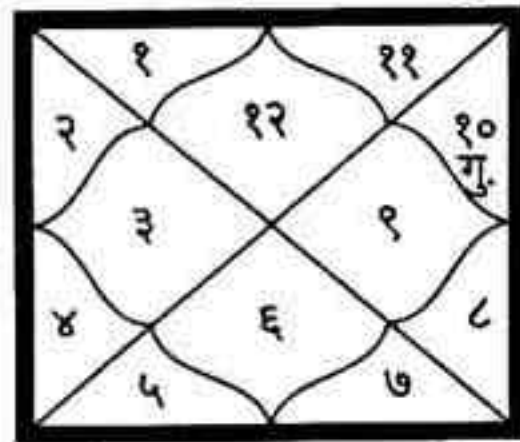
१३८०

होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से उन्नति प्राप्त होती है तथा विद्या-बुद्धि का विशेष लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री सुंदर मिलती है, उससे सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः द्वादशभावः गुरु

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी असंतोष रहता है। शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में कमी आती है तथा पिता के सुख की हानि होती है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु की हानि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।
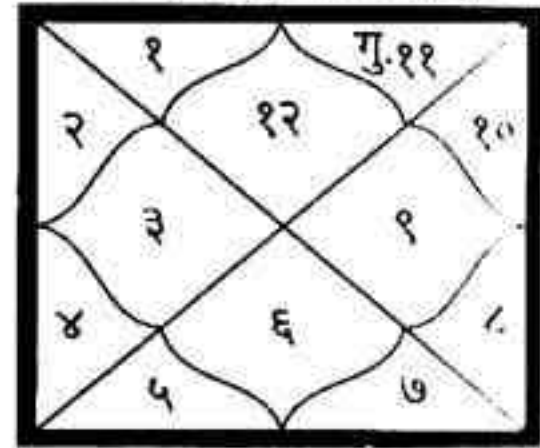
'मीन' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः प्रथमभावः शुक्र

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। वह अच्छी आयु पाता है। भाई-बहनों का सुख रहता है, पराक्रम की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। उसका दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण बना रहता है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री के सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परेशनियां उठानी पड़ती हैं। उसका गृहस्थ जीवन असंतोषपूर्ण बना रहता है।
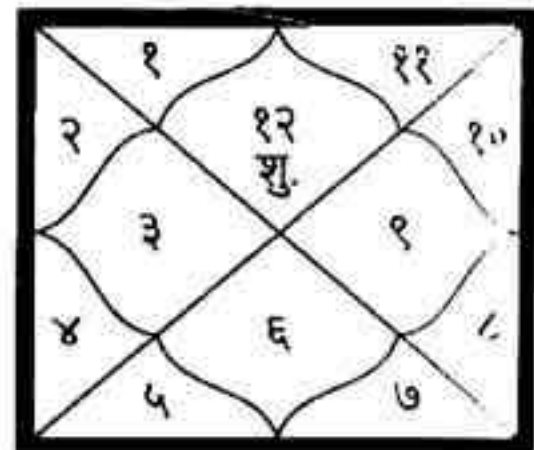
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा धन की वृद्धि करने का प्रयत्न करता है, परंतु उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती। कुटुंब के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है तथा भाई-बहनों के सुख में भी कमी आती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ तथा होशियारी द्वारा रईसी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

मीन लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र
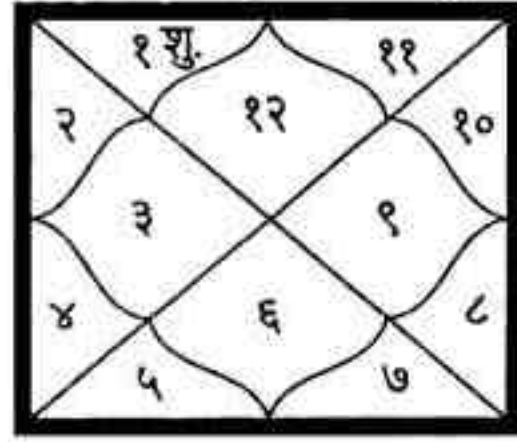
१३८३

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन तथा पराक्रम के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों की शक्ति तो मिलती है, परंतु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण उनसे कुछ परेशानी भी रहती है। पराक्रम की वृद्धि के साथ-साथ उसे आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में भी लाभ होता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक की भाग्योन्नति तथा धर्मिक उन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं। फिर भी ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर सुखी तथा समृद्ध जीवन व्यतीत करता है।

मीन लग्न: तृतीयभाव: शुक्र
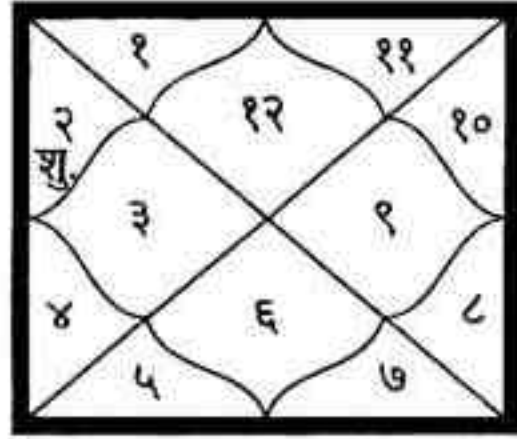
१३८४

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से माता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा भूमि एवं मकानादि की भी त्रुटिपूर्ण शक्ति प्राप्त होती है, परंतु उसकी आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति को भाई-बहनों का सुख मिलता है एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि में नवमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा प्राप्त सुख, सहयोग, प्रतिष्ठा एवं लाभ में कुछ कमी रहेगी, परंतु जातक अपने चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा लाभ उठाता रहेगा तथा उन्नति करता रहेगा।

मीन लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र
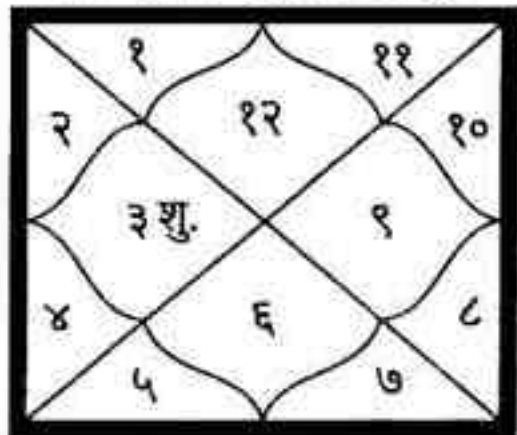
१३८५

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः पंचमभावः शुक्र

१३८५

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने सामान्य शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि की विशेष शक्ति प्राप्त होती है। वह कला के क्षेत्र में उन्नति करता है तथा वाणी का भी धनी होता है। उसे संतानपक्ष से सुख मिलता है। भाई-बहनों की शक्ति प्राप्त होती है, पुरुषार्थ की वृद्धि होती है तथा दीर्घायु भी मिलती है। परंतु शुक्र के अष्टमेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में कुछ-न-कुछ कमी अथवा असंतोष की झलक भी अवश्य बनी रहती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है और वह अपने प्रत्येक स्वार्थ की सिद्धि करता रहता है।
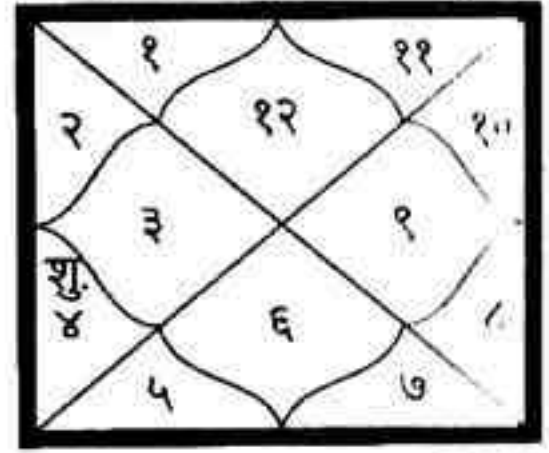
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः षष्ठभावः शुक्र

१३८६

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से कठिनइयां प्राप्त होती हैं, परंतु अपनी चतुराई के बल पर उन पर विजय प्राप्त करता रहता है। साथ ही जातक को भाई-बहनों से कष्ट, आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में हानि तथा पुरुषार्थ में कमी का सामना भी करना पड़ता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से कुछ शक्ति प्राप्त होती है।
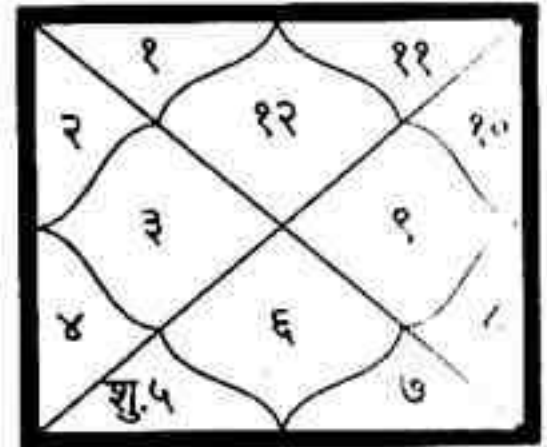
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः सप्तमभावः शुक्र

१३८७

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही भाई-बहिनों की कमी तथा पराक्रम में कमजोरी भी रहती है। पुरातत्त्व, आयु एवं दैनिक जीवन की ओर से भी असंतोष बना रहता है। यहां से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से अपने
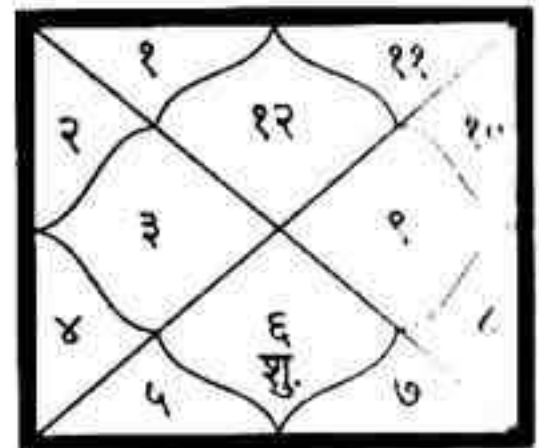
सामान्य मित्र गुरु की मीन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शरीर स्वस्थ, सुडौल, विशाल तथा प्रभावशाली होता है। वह स्वाभिमानी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः अष्टमभावः शुक्र

१३८९

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ मिलता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभावशाली बना रहता है तथा भाई-बहनों से असंतोष एवं पराक्रम में कमी का सामना भी करना होता है। ऐसा व्यक्ति लापरवाह किस्म का होता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को कुटुंब से परेशानी रहती हैं, परंतु चतुराई के बल पर धन की वृद्धि होती है।
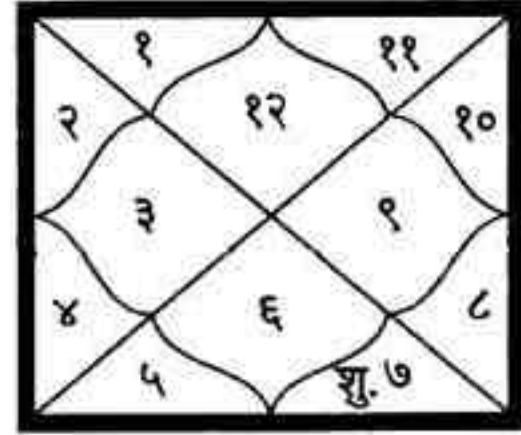
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः नवमभावः शुक्र

१३९०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता तथा उसकी भाग्योन्नति एवं यश-वृद्धि में कठिनाइयां आती हैं। फिर भी उसका दैनिक जीवन आनंदपूर्ण बना रहता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। यहां से अष्टमेश शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहनों का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परंतु पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थ के बल पर ही अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।
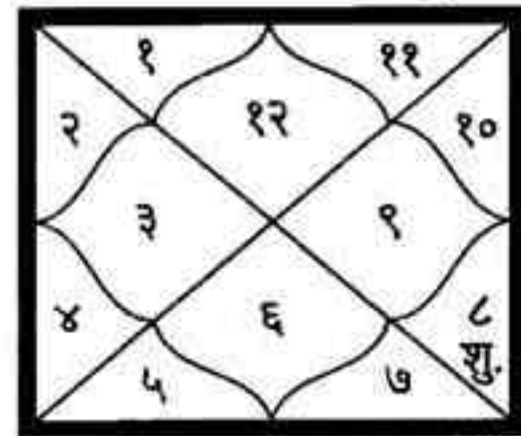
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: दशमभाव: शुक्र

१३९१

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी रहती है। साथ ही राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष से भी असंतोष रहता है अथवा त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है, परंतु जातक की आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है और वह अपने पुरुषार्थ द्वारा सफलता एवं यश प्राप्त करता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख तो प्राप्त होता है, परंतु उसमें कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर उन्नति करता है।
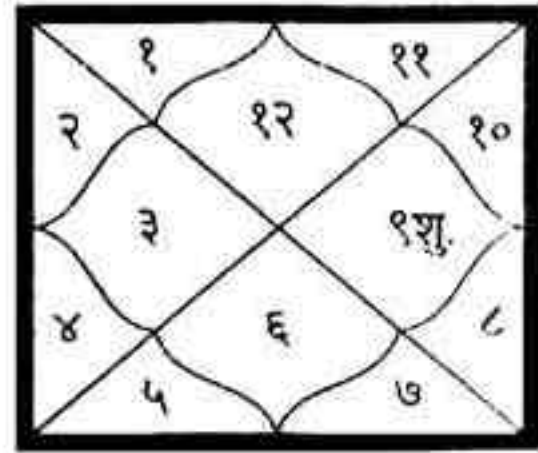
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: एकादशभाव: शुक्र

१३९२

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ अपनी आमदनी को बढ़ाता है। उसे पुरातत्त्व शक्ति एवं आयु का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है तथा पराक्रम की भी विशेष वृद्धि होती है, भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी रहती है। वह परिश्रम द्वारा उन्नति करता है तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चतुर होता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को प्रयत्नपूर्वक संतानपक्ष से शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि का भी लाभ होता है।
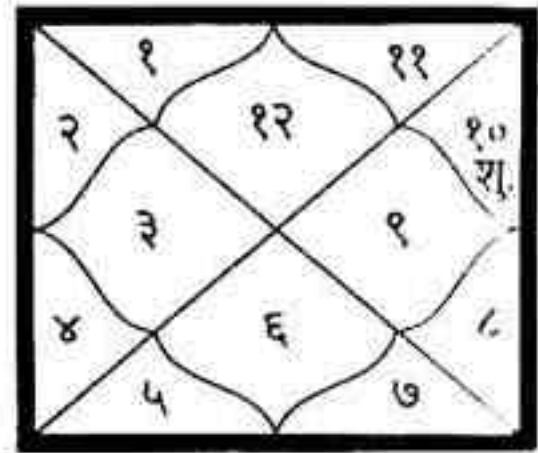
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: द्वादशभाव: शुक्र

१३९३

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित अष्टमेश शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। उसकी आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की भी हानि होती है तथा भाई-बहनों के सुख एवं पराक्रम में भी कमी रहती है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपनी चतुराई के बल पर शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा झगड़ों से बचे रहने का प्रयत्न करता है।
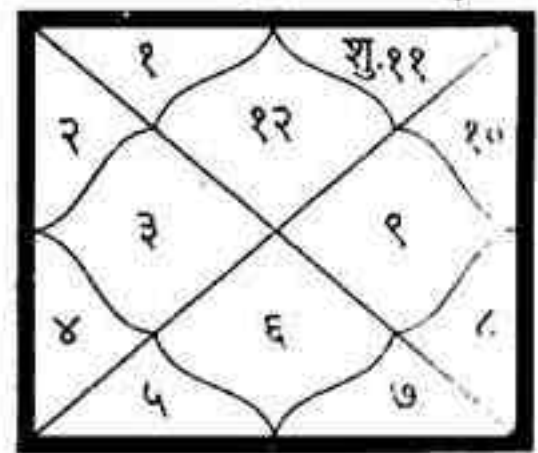
'मीन' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर-स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहनों के सुख तथा पराक्रम में उतार-चढ़ाव आता रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय-पक्ष से हानि-लाभ की प्राप्ति होती रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है, राज्य से परेशानी मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

मीन लग्न: प्रथमभाव: शनि
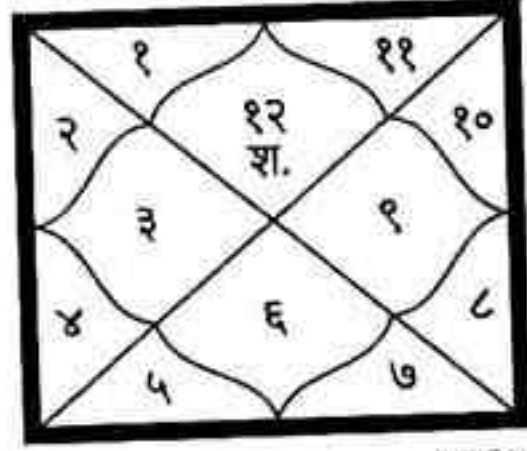
१३९४

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश तथा नीच के शनि के प्रभाव से जातक के धन-संचय में कठिनाइयां आती हैं तथा हानि भी उठानी पड़ती है। साथ ही उसे कुटुंब का सुख भी थोड़ा ही मिल पाता है। बाहरी स्थानों के संबंध हानिकारक सिद्ध होते हैं। यहां से शनि अपनी तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। सातवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी खूब रहती है, परंतु धन का संचय नहीं हो पाता।

मीन लग्न: द्वितीयभाव: शनि
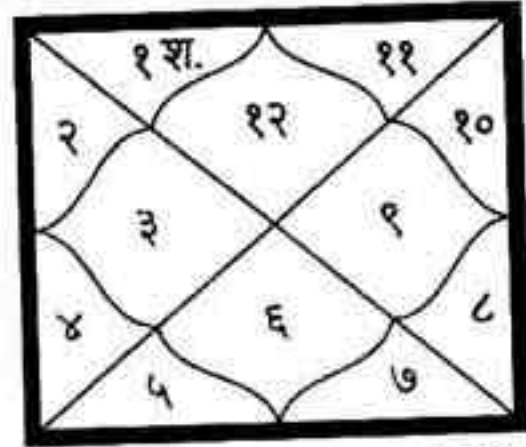
१३९५

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों के द्वारा सुख-दुःख दोनों की ही प्राप्ति होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। वह बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मत वाला तथा परिश्रमी होता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: संतानपक्ष से कठिनाई रहती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ कमी रहती है तथा दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी प्राप्त होता है।

मीन लग्न: तृतीयभाव: शनि
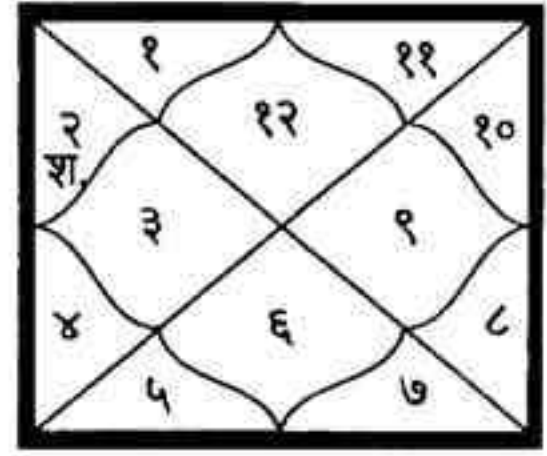
१३९६

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में हानि-लाभ युक्त शक्ति प्राप्त होती है। घरेलू सुख में भी कुछ कमी रहती है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है। अत: शत्रु पक्ष से परेशानी रहती है तथा झगड़े के मामलों में कभी हानि उठानी पड़ती है और कभी लाभ भी होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती रहती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परंतु बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख मिलता है।

मीन लग्न: चतुर्थभाव: शनि
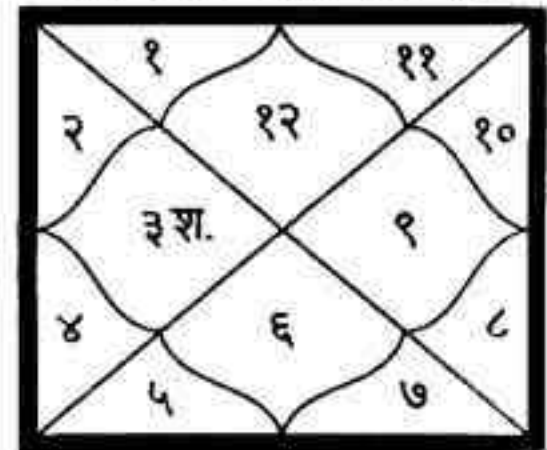
१३९७

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से हानि-लाभ दोनों ही प्राप्त होते हैं तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ अच्छा रहता है, तथा बुद्धि-बल से खर्च चलाने की शक्ति भी मिलती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है। अत: स्त्री पक्ष से सुख-दुःख तथा व्यवसाय से हानि-लाभ दोनों का मिश्रित योग प्राप्त होता है। सातवीं

मीन लग्न: पंचमभाव: शनि
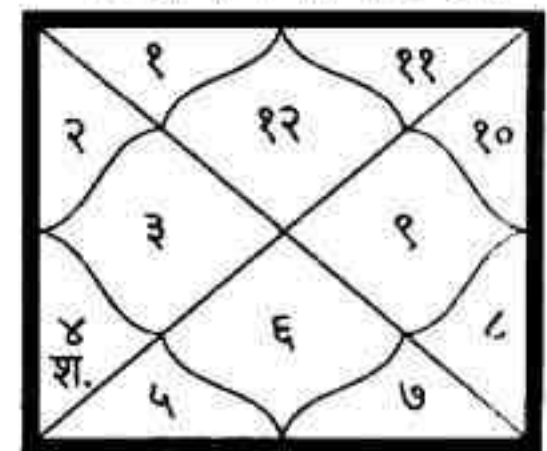
१३९८

दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता रहता है। दसवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि मे तृतीयभाव को देखने के कारण धन-संचय की शक्ति में तो वृद्धि होती है, परंतु कुटुंब द्वारा क्लेश प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: षष्ठभाव: शनि

१ ११ २ १२ १० ३ ९ ४ ६ ८ श.५ ७

१३९९

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में खर्च करके लाभ प्राप्त करता है। उसे बीमारी आदि में भी खर्च करना पड़ता है। यहां से शनि अपनी तीसरी उच्चदृष्टि से मित्र की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है।
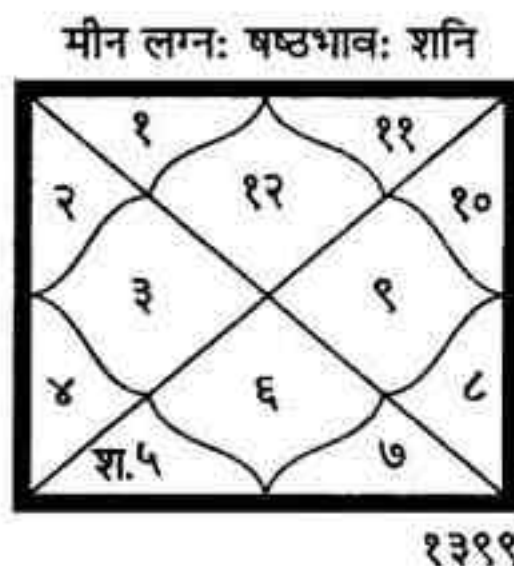
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: सप्तमभाव: शनि

१४००

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश तथा लाभेश शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख-दु:ख एवं हानि-लाभ दोनों की ही प्राप्ति होती है। खर्च अधिक रहने से परेशानी होती है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: भाग्योन्नति एवं धर्मोन्नति में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक के शरीर में कुछ कमजोरी रहती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता के सुख में हानि-लाभ दोनों का ही योग रहता है तथा भूमि एवं मकान आदि का सुख भी कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। बाहरी स्थानों के संबंध से विशेष आमदनी होती है, परंतु उसके लिए दौड़-धूप अधिक करनी पड़ती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता-पक्ष से असंतोष, राज्य-पक्ष से सामान्य संपर्क तथा व्यवसाय-पक्ष से सामान्य लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु की राशि में द्वितीयभाव को देखने से धन संचय का अभाव रहता है तथा कुटुंब से परेशानी प्राप्त होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतानपक्ष में हानि तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क में चिंताएं घर किए रहती हैं।
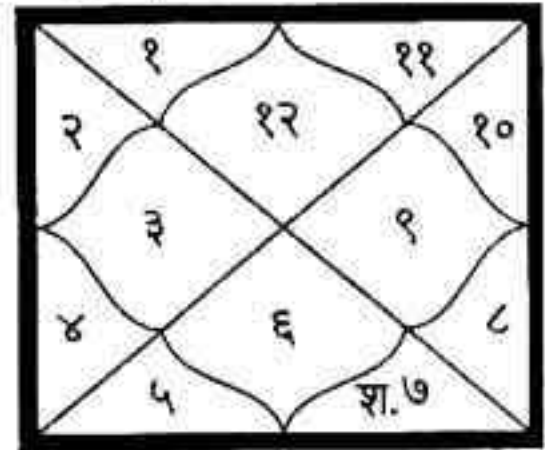
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के संबंध से अपने भाग्य की उन्नति तो करता है, परंतु उससे कुछ कठिनाइयां भी आती रहती हैं। इसी प्रकार धर्म-पालन में भी कमी रहती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक की आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहनों के सुख में कुछ कमी रहती है एवं दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होती है।
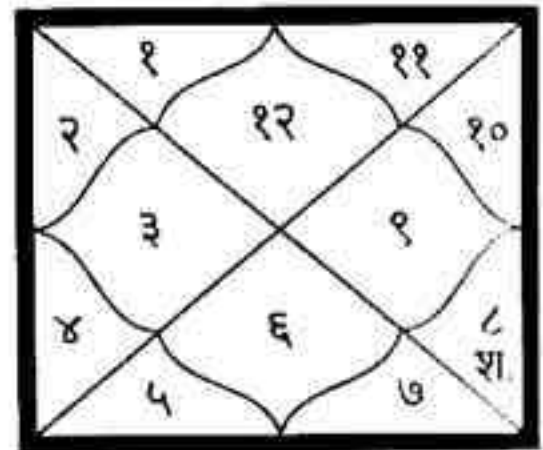
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में हानि, व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाई एवं राज्य के पक्ष में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परंतु उसकी आमदनी अच्छी रहती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च शानदार रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा मकान
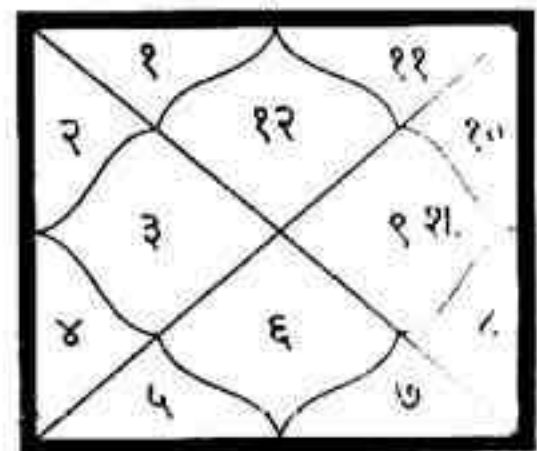
आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा स्थानीय व्यवसाय में हानि-लाभ दोनों का ही योग बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: एकादशभाव: शनि

१४०४

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह बाहरी स्थानों के संबंध से खूब धन पैदा करता है। खर्च भी शानदार रहता है, परंतु आमदनी बढ़ाने के लिए उसे कुछ कठिनाइयां भी उठानी पड़ती हैं। यहां से शनि अपनी तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी रहती है तथा धन कमाने के लिए बहुत दौड़-धूप करनी पड़ती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष की कुछ हानि होती है तथा विद्या के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है। ऐसे व्यक्ति की वाणी में कुछ रूखापन रहता है और वह अधिक स्वार्थी भी होता है।
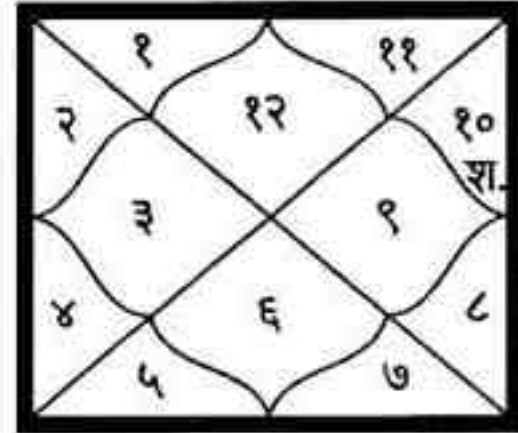
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्न: द्वादशभाव: शनि

१४०५

बारहवें व्यय-स्थान में अपनी ही कुंभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक का खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से उस खर्च को चलाने की शक्ति प्राप्त होती है। यहां से शनि अपनी तीसरी नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को शत्रु की राशि में देखता है, अत: धन तथा कुटुंब की ओर से जातक चिंतित बना रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त करता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयां आती हैं तथा धर्म और यश की उन्नति कम ही हो पाती है।
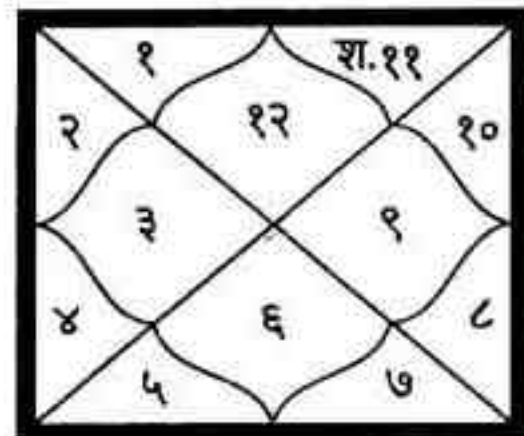
'मीन' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः प्रथमभावः राहु

१४०६

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है, परंतु वह विशेष युक्तियों द्वारा सम्मान तथा प्रभाव को अवश्य प्राप्त कर लेता है। मन के भीतर कुछ कमी का अनुभव होने पर भी वह गुप्त युक्तियों, चातुर्य तथा बुद्धि-बल से अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा अंत में अपनी सभी कठिनाइयों पर विजय भी प्राप्त कर लेता है और जीवन को उन्नत तथा प्रभावशाली बनाता है।
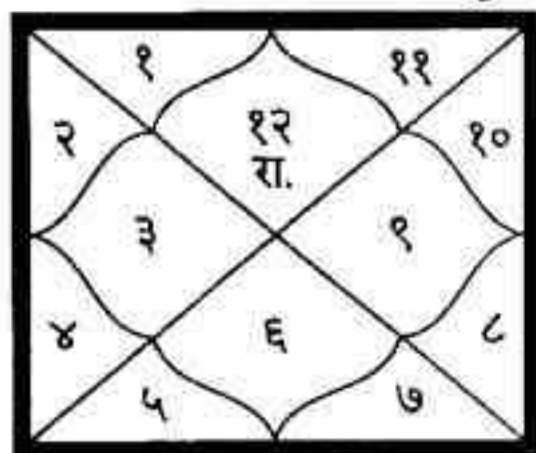
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः द्वितीयभावः राहु

१४०७

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन की कमी का विशेष रूप से अनुभव करता है और उसे कुटुंब का सुख भी प्राप्त नहीं होता। वह गुप्त युक्तियों के बल पर धन की उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा बड़ी कठिनाइयों के बाद थोड़ी बहुत सफलता भी पा लेता है, परंतु उसे कभी-कभी आर्थिक कष्ट अत्यधिक परेशान करते रहते हैं।
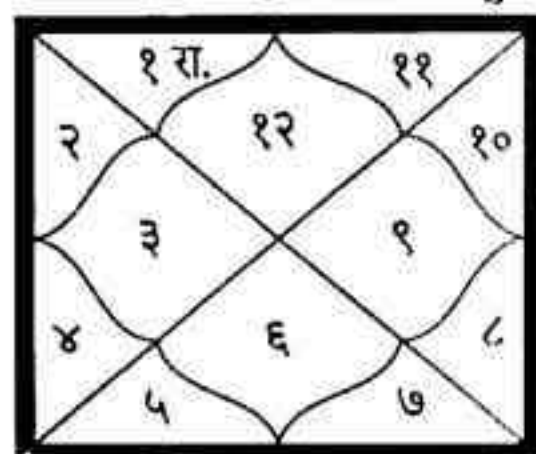
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः तृतीयभावः राहु

१४०८

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह अपनी गुप्त कमजोरियों को छिपाने में कुशल होता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि एवं जीवन के लिए आवश्यक सफलताओं को प्राप्त करने के लिए बड़ी हिम्मत तथा बहादुरी से काम लेता है। उसे भाई-बहनों की ओर से कुछ कमी तथा कष्ट का अनुभव भी होता है।
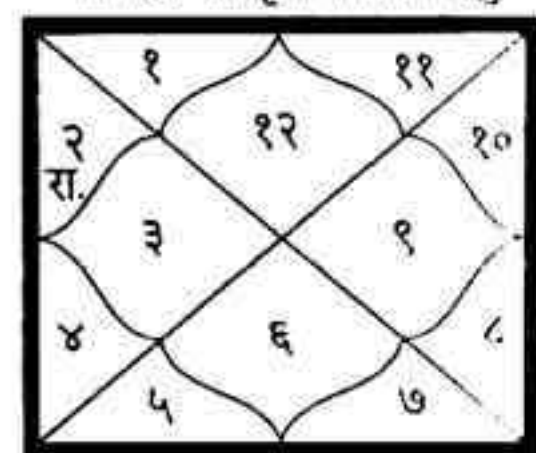
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अपनी माता का विशेष सुख एवं सहयोग प्राप्त करता है तथा भूमि, मकान एवं घरेलू सुख की अपनी गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति करता है। कभी-कभी उसे सुख के साधनों की आकस्मिक प्राप्ति भी हो जाती है। वह बड़ी शान-शौकत का जीवन बिताता है, परंतु मन के भीतर कभी-कभी अशांति का अनुभव भी करता है।

मीन लग्न: चतुर्थभाव: राहु
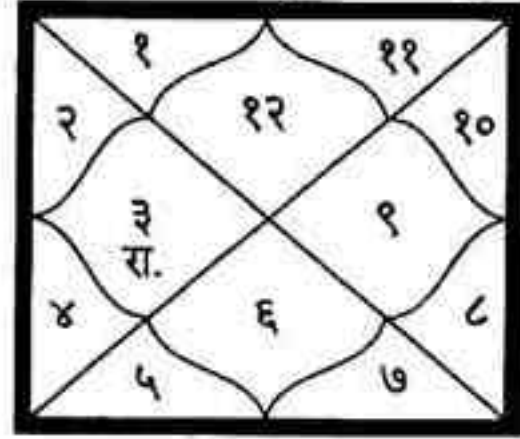
१४०९

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं, तथा संतानपक्ष से भी कष्ट का अनुभव होता है। ऐसे व्यक्ति की बोली में रूखापन होता है तथा मस्तिष्क में चिंताएं घर किए रहती हैं। वह सत्यासत्य एवं उचित-अनुचित का विचार किए बिना अपनी सुख-वृद्धि का प्रयत्न करता है तथा मन को प्रसन्न रखना चाहता है, परंतु कभी-कभी उसे संतानपक्ष से विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा चिंताएं भी परेशान करती हैं।

मीन लग्न: पंचमभाव: राहु
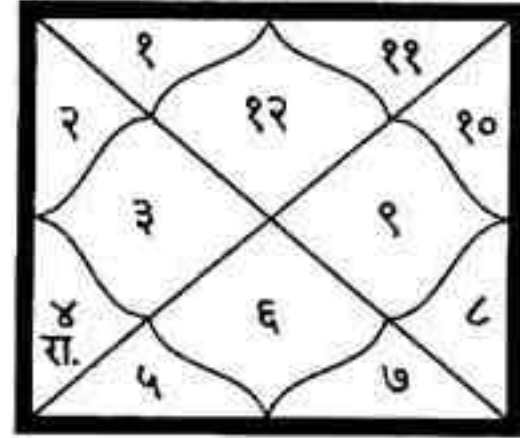
१४१०

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु-भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा भारी प्रभाव रखता है। वह अपने युक्ति-बल से शत्रुओं को परास्त तो करता है, परंतु शत्रु पक्ष द्वारा उसे बार-बार परेशान भी किया जाता है। ऐसे व्यक्ति को ननिहाल-पक्ष से भी कुछ हानि होती है। प्रत्येक स्थिति में ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, धैर्यवान, साहसी, चतुर तथा सावधान रहने वाला होता है।

मीन लग्न: षष्ठभाव: राहु
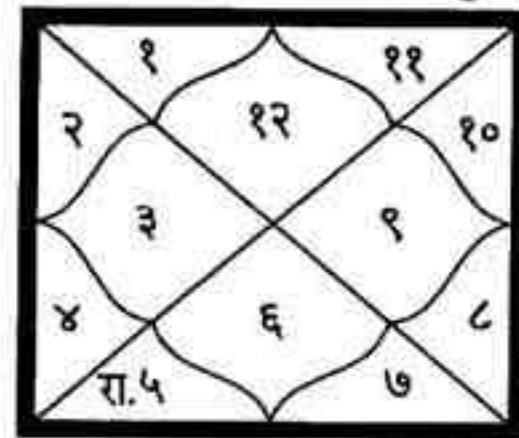
१४११

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है, परंतु अपनी गुप्त युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि के बल से ऐसा व्यक्ति उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। उसके गृहस्थ-जीवन में अनेक बार संकट के अवसर उपस्थित होते हैं, परंतु वह बार-बार उन सब पर विजय पाकर अपनी उन्नति करता है।

मीन लग्न: सप्तमभाव: राहु
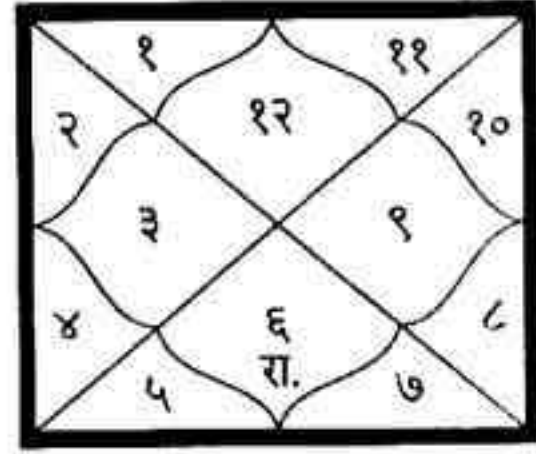
१४१२

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु (जीवन) के संबंध में अनेक बार चिंताओं तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है, परंतु उसकी आयु में वृद्धि होती रहती है। इसी प्रकार उसे पुरातत्त्व में भी हानि एवं कठिनाई के योग उपस्थित होते हैं, परंतु वह अपनी चतुराई के बल पर उन सबका निराकरण कर लाभ उठाता है।

मीन लग्न: अष्टमभाव: राहु
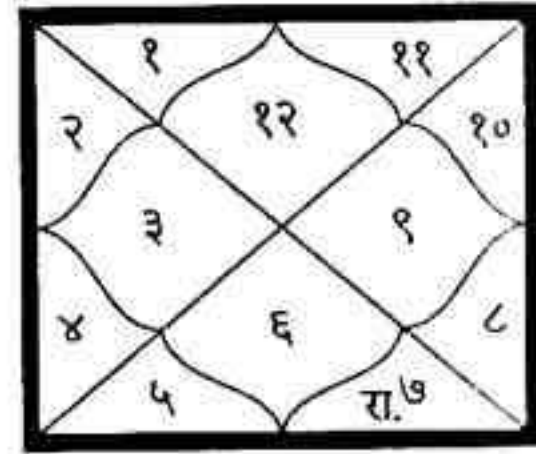
१४१३

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति तथा धर्मोन्नति में बाधाएं आती रहती हैं तथा यश की प्राप्ति नहीं हो पाती। परंतु ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत, गुप्त-युक्ति बल, बुद्धि बल तथा परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति के लिए कठिन प्रयत्न करता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी हो जाता है, तो कभी-कभी अत्यधिक कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अनेक संघर्षों को पार करने के बाद ही अपनी भाग्योन्नति कर पाता है।

मीन लग्न: नवमभाव: राहु
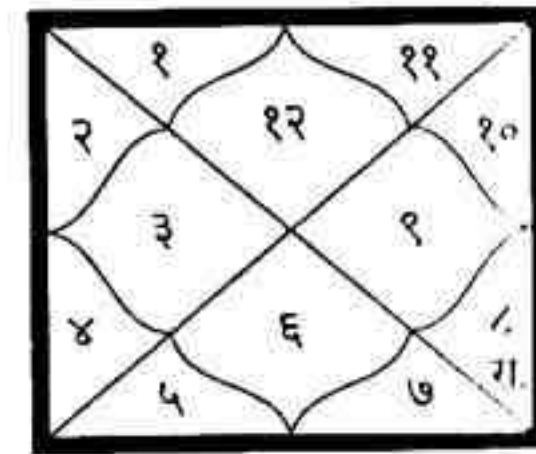
१४१४

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष में महान कष्ट, राज्य से परेशानी तथा व्यवसाय में बारंबार हानि का सामना करना पड़ता है, उसके मान-सम्मान में भी कमी बनी रहती है। परंतु ऐसा व्यक्ति अपने युक्ति-बल तथा परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता रहता है तथा संघर्षों के बावजूद भी अपनी उन्नति करने में कुछ सफलता प्राप्त कर लेता है।

मीन लग्न: दशमभाव: राहु
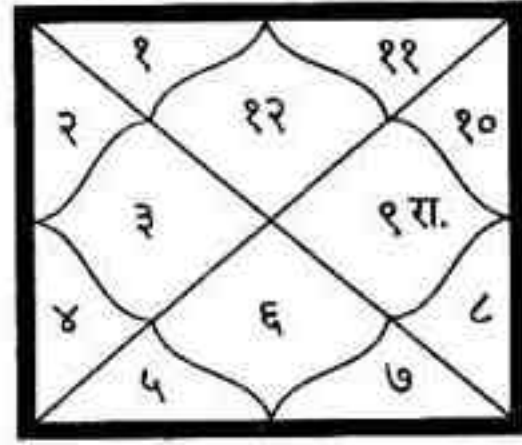
१४१५

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। वह अधिक मुनाफा कमाता है। यद्यपि उसे धनोपार्जन के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी वह उनसे अपनी हिम्मत नहीं हारता तथा धैर्य, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी होता है। वह बड़ी पैनी सूझ-बूझ तथा हिम्मत वाला होता है।

मीन लग्न: एकादशभाव: राहु
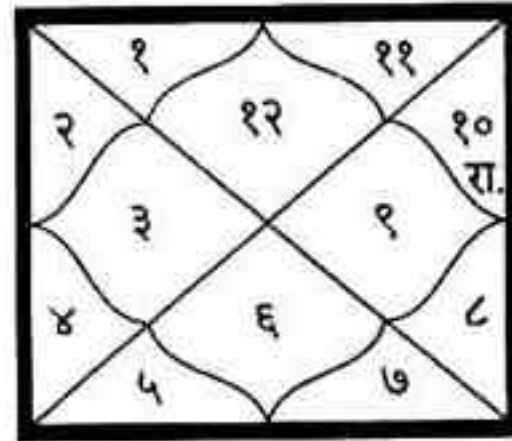
१४१६

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपना खर्च चलाने के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्ति-बल तथा बुद्धि-बल का आश्रय लेता है। कभी-कभी उसे खर्च के कारण बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं, परंतु वह उन सब पर अपने प्रयत्नों से विजय पाता है। बाहरी स्थानों के संबंधों से भी उसे परेशानियों का अनुभव होता है।

मीन लग्न: द्वादशभाव: राहु
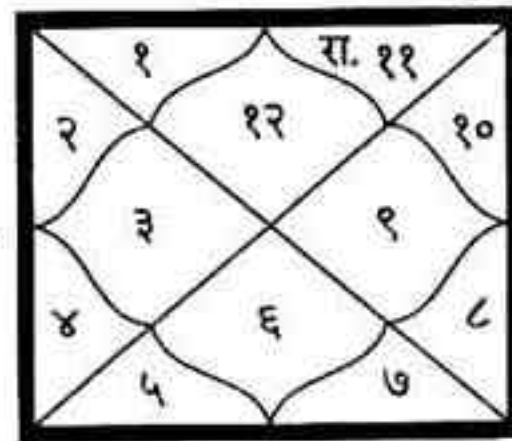
१४१७

'मीन' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर सांघातिक चोट लगती है और किसी समय उसे मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। उसके शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर व्यक्तित्व एवं प्रभाव का विकास करता है तथा बड़ी हिम्मत के साथ अपने संघर्षपूर्ण जीवन को बिताता है।

मीन लग्न: प्रथमभाव: केतु
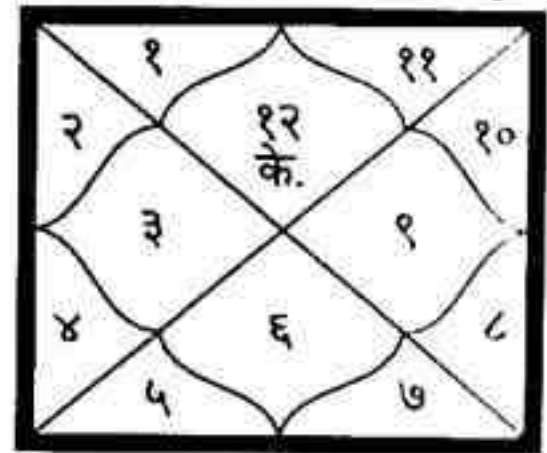
१४१८

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक धन का संग्रह कर पाने में सफल नहीं हो पाता तथा कुटुंब-पक्ष की ओर से भी उसे कष्ट का अनुभव होता रहता है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम, हिम्मत तथा गुप्त युक्तियों के बल पर अपनी परेशानियों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है तथा थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप में भी धन का लाभ हो जाता है, परंतु अन्य लोगों की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति धनवान तथा कौटुंबिक सुख से संपन्न प्रतीत होता है।

मीन लग्न: द्वितीयभाव: केतु
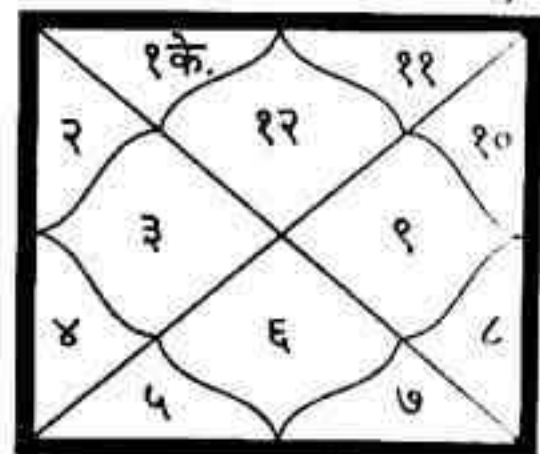
१४१९

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई-बहन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, परिश्रमी, चतुर तथा गुप्त-युक्तियों का माहिर होता है। उसे अपने भाई-बहनों की ओर से कुछ कष्ट मिलता है, जिसके कारण वह अपने मन में दुःख एवं चिंताओं का अनुभव करता है, परंतु बाहरी लोगों के समक्ष वह अपनी परेशानियों को प्रकट नहीं होने देता तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में अनेक प्रकार की सफलताएं प्राप्त करता है।

मीन लग्न: तृतीयभाव: केतु
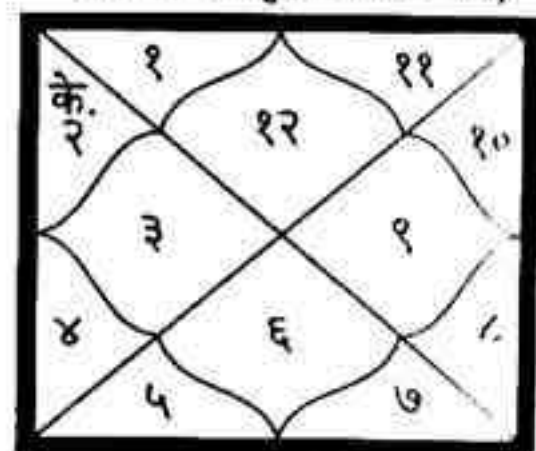
१४२०

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को माता के पक्ष में बहुत कष्ट प्राप्त होता है, तथा भूमि, मकान एवं घरेलू सुख में भी कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा चतुराई के बल पर सुख के साधनों को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। कभी-कभी घोर संकट उपस्थित हो जाने पर भी वह विचलित नहीं होता और हिम्मत के साथ उसका मुकाबला करके सफलता प्राप्त करता है।

मीन लग्न: चतुर्थभाव: केतु
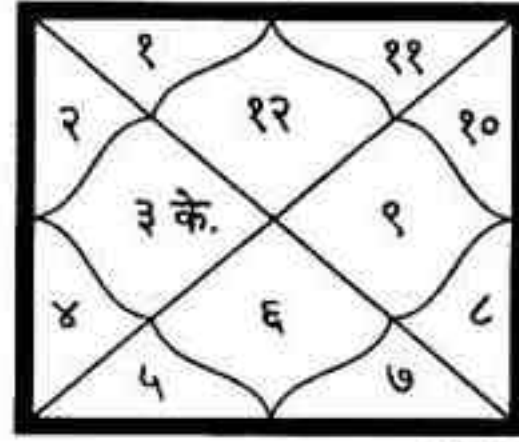
१४२१

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एंव संतान के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से बड़े कष्ट तथा कमी का योग प्राप्त होता है। उसके मस्तिष्क में चिंताएं घर किए रहती हैं तथा मन अशांत बना रहता है। विद्याध्ययन के क्षेत्र में उसे अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों, परिश्रम एवं हिम्मत के बल पर विद्या तथा संतानपक्ष की कमियों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

मीन लग्न: पंचमभाव: केतु
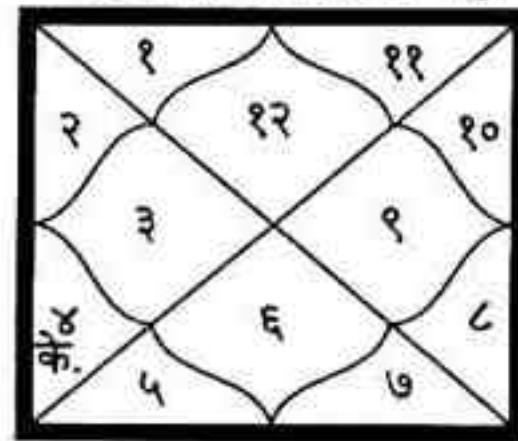
१४२२

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे रोग एवं शत्रु भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर निरंतर विजय प्राप्त करने वाला होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता एवं लाभ प्राप्त करता है। शत्रु-पक्ष से भीतरी रूप में परेशानी का अनुभव करने पर भी वह प्रकट रूप में अपना हौसला बनाए रखता है तथा हिम्मत एवं बहादुरी से काम लेकर उन सब पर प्रभाव स्थापित करता है।

मीन लग्न: षष्ठभाव: केतु
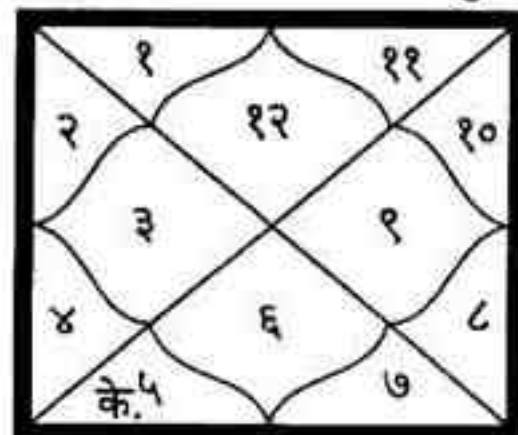
१४२३

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः सप्तमभावः केतु

१४२८

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अशांति एवं कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होती है। कभी-कभी वह स्त्री-पक्ष से घोर कष्ट का अनुभव भी करता है, परंतु फिर उसी से सुख तथा आनंद भी पाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान, साहसी तथा गुप्त युक्तियों वाला चतुर होता है। वह अपनी उन्नति के लिए निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है तथा परिश्रम द्वारा सफलता भी प्राप्त करता है।
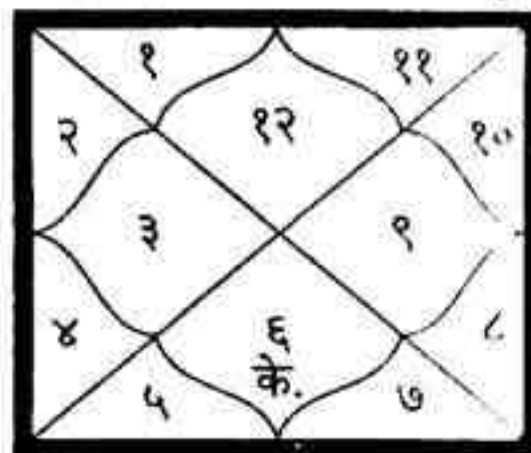
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः अष्टमभावः केतु

१४२९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के पक्ष में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु जीवन की रक्षा हो जाती है। उसके पुरातत्त्व के पक्ष में भी हानि के योग उपस्थित होते रहते हैं, परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों परिश्रम एवं चतुराई के बल पर लाभ उठाता है। वह चिंता, संघर्ष एवं परेशानियों का मुकाबला करता हुआ धैर्यपूर्वक अपनी उन्नति करता रहता है।
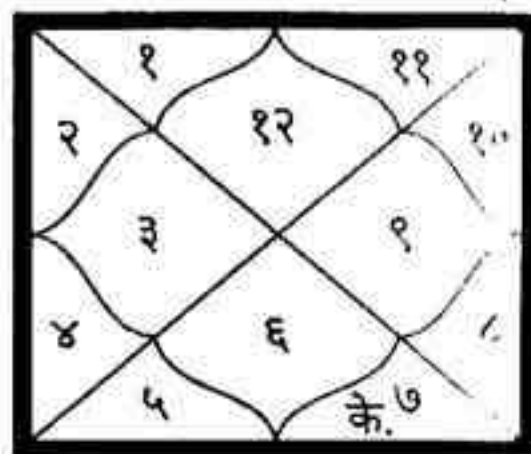
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मीन लग्नः नवमभावः केतु

१४३०

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है तथा धर्म का पालन भी ठीक ढंग से नहीं हो पाता, परंतु ऐसा व्यक्ति अपने गुप्त युक्ति बल, परिश्रम, चातुर्य एवं साहस के द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता हुआ अपनी उन्नति का मार्ग बनाता है। अनेक बार घोर संकट उपस्थित होने पर भी वह विचलित नहीं होता तथा भाग्य एवं धर्म की थोड़ी-बहुत उन्नति करता है। फिर भी उसके यश में कुछ कमी बनी रहती है।
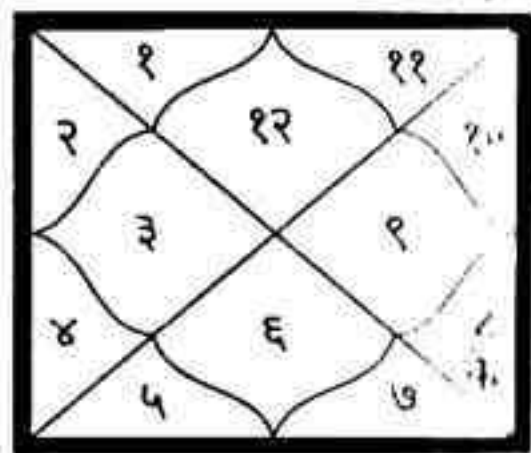
जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है। कभी-कभी घोर संकट उपस्थित हो जाने पर भी वह विचलित नहीं होता तथा धैर्य और साहस के साथ उसका निराकरण करता है।

मीन लग्न: दशमभाव: केतु
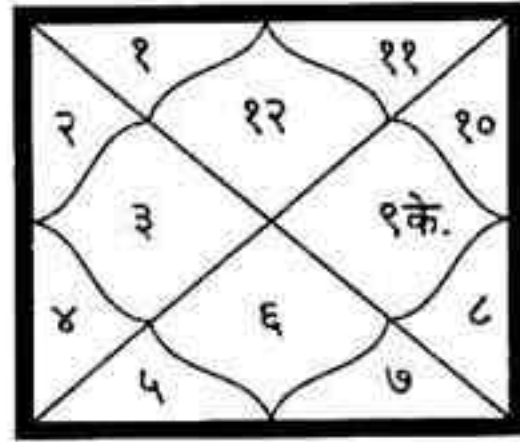
१४२७

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को बहुत अच्छी आमदनी होती है और वह अपने लाभ को बढ़ाने के लिए कठोर परिश्रम भी करता रहता है। ऐसे व्यक्ति को कभी कभी आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों एवं कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु वह उनसे घबराता नहीं है तथा साहस के साथ मुसीबतों को पार करता हुआ आगे बढ़ता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक स्वार्थी, हिम्मती, धैर्यवान तथा बहादुर भी होता है।

मीन लग्न: एकादशभाव: केतु
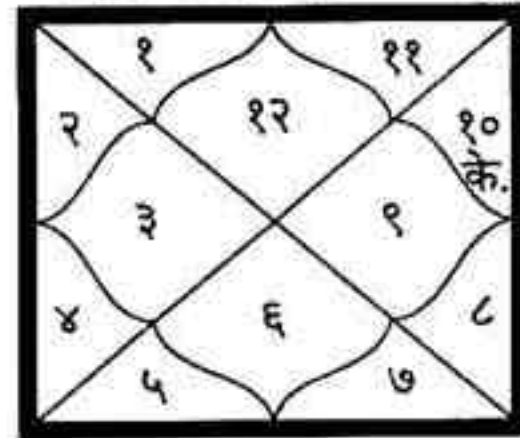
१४२८

जिस जातक का जन्म 'मीन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के संबंध में कुछ कमी तथा कष्टों का अनुभव होता है। साथ ही बाहरी स्थानों के संबंध से भी असंतोष एवं कठिनाइयां रहती हैं। परंतु ऐसा व्यक्ति अपने धैर्य, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर उन सब कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है तथा उन पर विजय पाकर अपने जीवन को उन्नत बनाता है।

मीन लग्न: द्वादशभाव: केतु
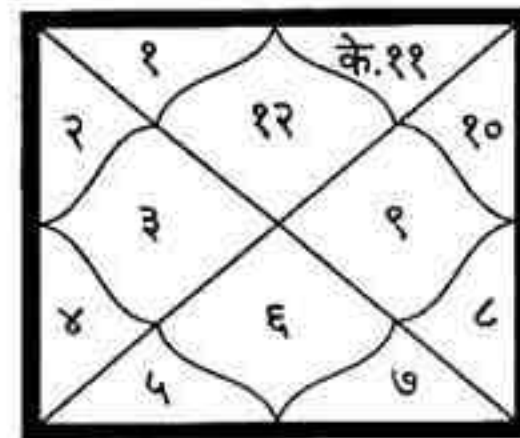
१४२९

'मीन' लग्न का फलादेश समाप्त

•
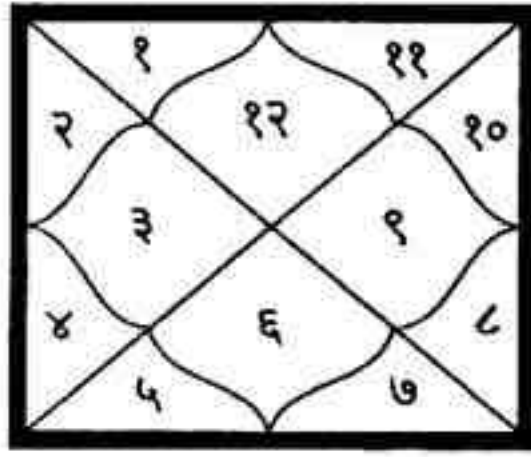
भृगु-संहिता

फलित-प्रकाश
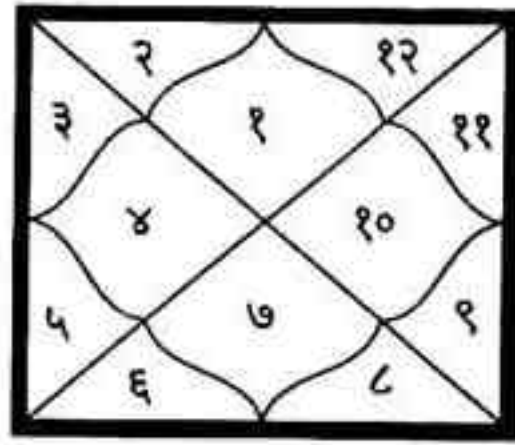
१४३१

तृतीय प्रकरण

ग्रहों की युति, उच्च-नीच आदि की स्थिति, भावेश की स्थिति, स्त्री-जातक, ग्रहों की महादशा एवं विशिष्ट-योग-संबंधी फलादेश आदि

विषय

(१) ग्रहों की युति का फल।

(२) उच्च, नीच, स्वराशिस्थ, मूल त्रिकोणस्थ, मित्रक्षेत्रस्थित तथा शत्रु गृहक्षेत्रस्थित ग्रहों का फल।

(३) राशीश्वर की विभिन्न भावों में स्थिति का प्रभाव।

(४) स्त्री-जातक।

(५) विंशोत्तरी महादशा के अनुसार विभिन्न ग्रहों की दशा तथा अंतर्दशाओं का फलादेश।

(६) विशिष्ट योग।

(७) आवश्यक चक्र एवं कोष्ठक आदि।

ग्रहों की युति का फल

किस जन्म-लग्न के किस भाव में, किस राशि पर कौन-सा ग्रह स्थित हो, तो उसका क्या फलादेश होता है—इसका विस्तृत वर्णन किया जा चुका है। अब हम विविध ज्योतिष ग्रंथों के आधार पर ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन करते हैं। अर्थात् जन्म-कुंडली के एक ही भाव में यदि दो, तीन, चार, पांच, छः अथवा सात ग्रह एक साथ बैठे हों, तो वे जातक के जीवन पर अपना क्या विशेष प्रभाव डालते हैं—इसकी जानकारी प्रस्तुत प्रकरण में दी जा रही है।

स्मरणीय है कि यहां ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन करते समय विभिन्न भावों अथवा राशियों में उनकी स्थिति का वर्णन नहीं किया गया है, केवल उनके विशिष्ट प्रभाव के विषय में ही लिखा गया है। अस्तु, ग्रहों की युति के विशिष्ट प्रभाव संबंधी फलादेश की जानकारी करने के साथ ही, जन्म-कुंडली के जिस भाव में ग्रहों की युति हो, उस भाव पर किन-किन ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हैं, वे ग्रह उच्च के हैं अथवा नीच के, मित्र की राशि में बैठे हैं अथवा शत्रु की राशि में, वे किस भाव के स्वामी होकर कहां बैठे हैं, आदि बातों का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिए, तभी यथार्थ फलादेश का ज्ञान हो सकेगा। इन सब विषयों पर इस पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला जा चुका है।

ग्रहों की युति से संबंधित आगे जो उदाहरण-कुंडलियां दी गई हैं, वे सभी मेष लग्न की हैं, अतः उन्हें केवल उदाहरण के रूप में ही समझना चाहिए। विभिन्न व्यक्तियों की जन्म-कुंडलियां विभिन्न लग्नों की होती हैं, इसी प्रकार विभिन्न ग्रहों की युति भी विभिन्न भावों में होती है। अस्तु, इन उदाहरण-कुंडलियों को मात्र आधार मानकर अपनी जन्म-कुंडली की लग्न, भाव तथा राशि का विचार करते हुए युति के प्रभाव का निष्कर्ष निकालना चाहिए।

दो ग्रह, तीन ग्रह, चार ग्रह, पांच ग्रह, छः ग्रह तथा सात ग्रहों की युति के प्रभाव का वर्णन क्रमशः अलग-अलग किया गया है। स्मरणीय है कि युति वाले ग्रहों में राहु-केतु को स्थान नहीं दिया गया है। इन दोनों ग्रहों के संबंध में सामान्य सिद्धांत यह है कि ये ग्रह यदि अपने मित्र-ग्रह के साथ बैठे होते हैं, तो उसके प्रभाव को बढ़ाते हैं और शत्रु ग्रह के साथ बैठते हैं, तो उसके प्रभाव को घटाते हैं। राहु-केतु स्वयं कभी एक साथ नहीं बैठते। ये सदैव एक-दूसरे से सातवें स्थान पर ही रहते हैं।

दो ग्रहों की युति

दो ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य और चंद्रमा

२ १२ ३ सू. १ चं. ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

१४३२

यदि जन्म-काल में सूर्य और चंद्रमा की युति हो (अर्थात् ये दोनों ग्रह किसी एक ही भाव में बैठे हों), तो ऐसा जातक अभिमानी, दुष्ट क्रियाओं को करने में चतुर, कपटी, विनय रहित, पराक्रमी, क्षुद्र हृदयवाला, कार्य करने में दक्ष, स्त्री के वश में रहने वाला, विषयासक्त तथा पत्थर की वस्तुओं का क्रय-विक्रय करने वाला होता है।

सूर्य और मंगल

यदि जन्म-काल में सूर्य और मंगल की युति हो, तो जातक तेजस्वी, श्रेष्ठ कर्म, धर्म तथा धन से रहित, सदैव क्लेश करने वाला, क्रोधी, पापबुद्धि, मिथ्यावादी, मूर्ख, बलवान, परंतु अपने बंधु-बांधवों से प्रेम रखने वाला होता है।

२ १२ ३ सू. १ मं. ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८
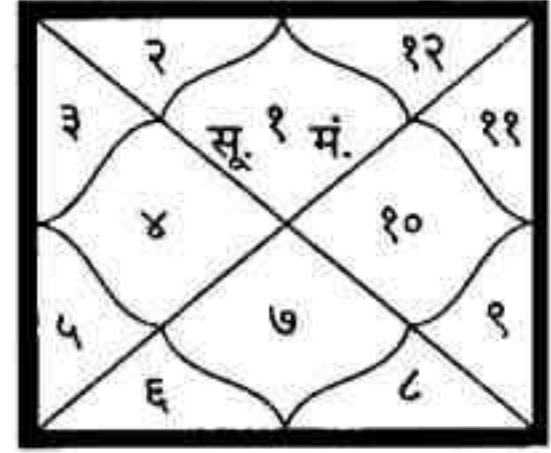
१४३३

सूर्य और बुध

यदि जन्म-काल में सूर्य और बुध की युति हो, तो जातक श्रेष्ठ, बुद्धिमान, विद्वान, यशस्वी, राज्य द्वारा सम्मान-प्राप्त, स्थिर धन वाला, सेवा-कर्म करने में पटु, प्रियवादी, मंत्री तथा राजा की सेवा द्वारा धन कमाने वाला, वेदज्ञ, गीति-वाद्य तथा काव्य आदि कलाओं में कुशल होता है।
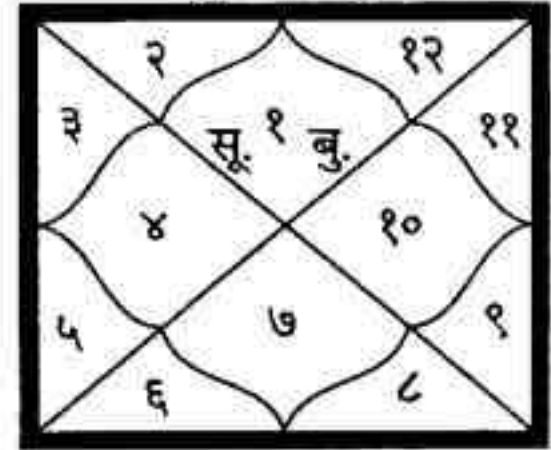
१४३४

सूर्य और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य और बुध की युति हो, तो जातक धर्मात्मा, धनवान, शास्त्रज्ञ, लोक में प्रसिद्ध, मित्रवान, राजमान्य, राजा का मंत्री, पुरोहित कर्म करने में कुशल, चतुर तथा परोपकारी होता है।
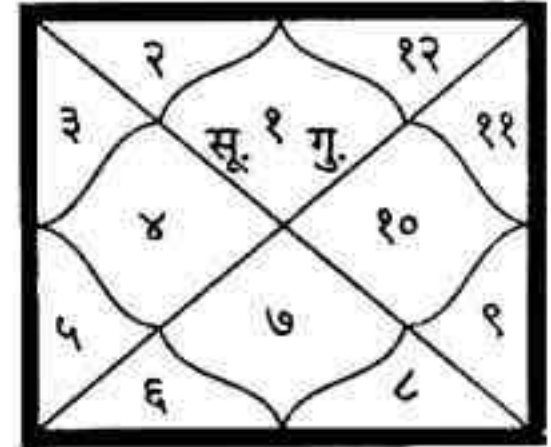
१४३५

सूर्य और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य और शुक्र की युति हो, तो जातक बुद्धिमान, मनुष्यों में श्रेष्ठ, बलवान, नाट्यकार, संगीत-वाद्य तथा शस्त्र विद्या में कुशल, स्त्रियों का प्रिय, मित्रवान, क्षीण दृष्टि वाला, कार्यक्षम तथा स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।
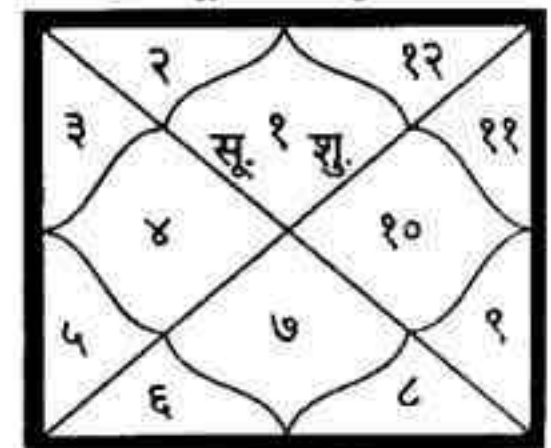
१४३६

यदि जन्म-काल में सूर्य और शनि की युति हो, तो जातक विद्वान, कार्य-कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, गुणवान, धातु का काम करने में कुशल, धर्म में प्रीति रखने वाला तथा वृद्ध के समान आचरण करने वाला होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति स्त्री-पुत्रों का सुख पाने वाला तथा कुछ के मत से स्त्री-पुत्रों के सुख से रहित होता है।

सूर्य और शनि
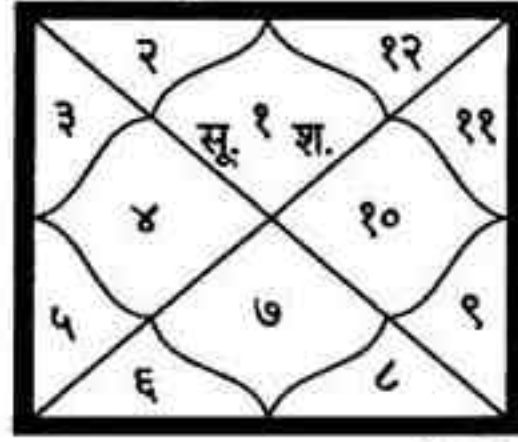
१४३७

यदि जन्म-काल में चंद्रमा और मंगल की युति हो, तो जातक मिट्टी, चमड़ा अथवा धातुओं के शिल्प में कुशल (कारीगर), धनी, युद्ध-कुशल, प्रतापी, आचारहीन, कलह-प्रेमी, माता से शत्रुता रखने वाला, व्यवसाय द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला तथा रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रस्त रहता है।

चंद्रमा और मंगल
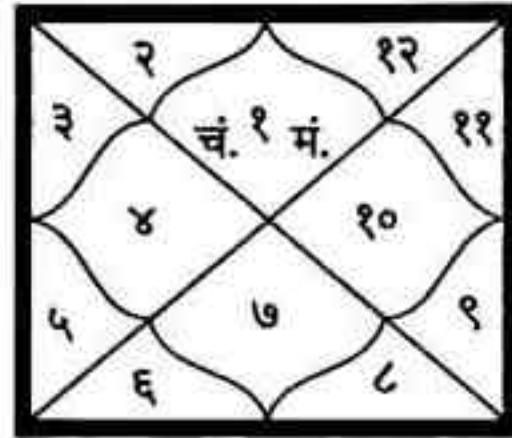
१४३८

यदि जन्म-काल में चंद्रमा और बुध की युति हो, तो जातक धनी, गुणी, कवि, सुंदर, हंसमुख, कुल-धर्म का पालन करने वाला, स्त्री में आसक्त, बहुत बोलने वाला, प्रियवादी, दयालु हृदय परंतु दुर्बल शरीर वाला होता है।

चंद्रमा और बुध
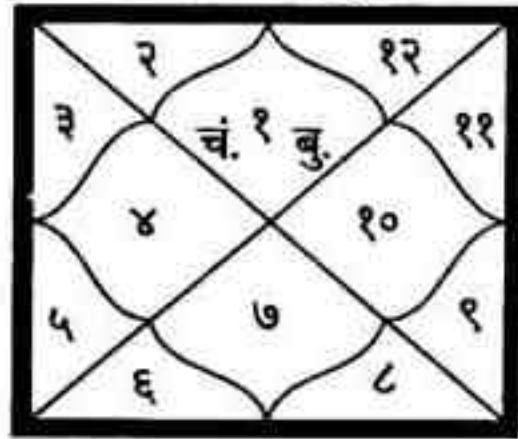
१४३९

यदि जन्म-काल में चंद्रमा और गुरु की युति हो, तो जातक देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त, भाई-बहनों से स्नेह रखने वाला, दृढ़ मैत्री का निर्वाह करने वाला, सुशील, धनी, विनम्र, परोपकारी, धर्मात्मा तथा गुप्त मंत्र वाला होता है।

चंद्रमा और गुरु
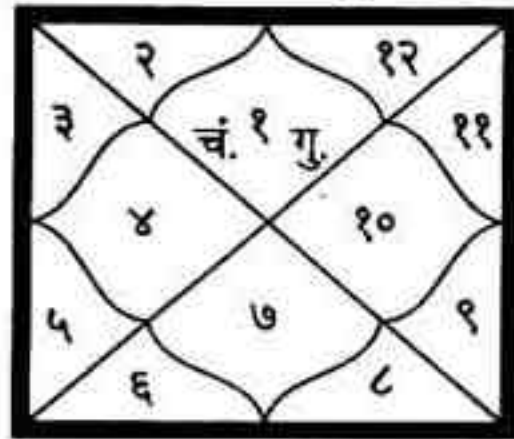
१४४०

यदि जन्म-काल में चंद्रमा और शुक्र की युति हो, तो जातक किसी वस्तु की बिक्री करने के कार्य में कुशल, शूद्रों के समान आचरण करने वाला, झगड़ालू, अल्प वस्त्राभूषणों वाला, अनेक प्रकार के व्यसनों में लिप्त, अनेक प्रकार की कार्य-विधियों का जानकार तथा सुगंधित वस्तुओं में रुचि रखने वाला होता है।

चंद्रमा और शुक्र
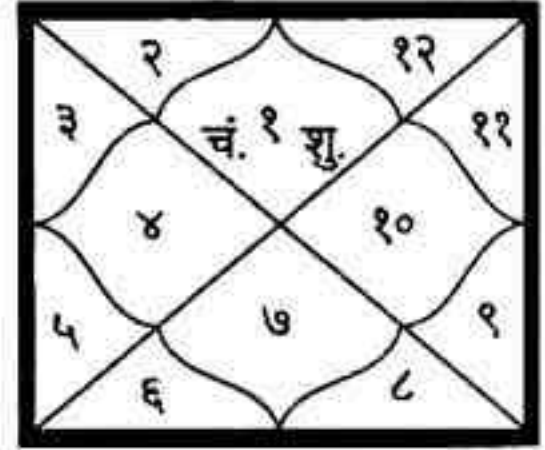
१४४१

यदि जन्म-काल में चंद्रमा और शनि की युति हो, तो जातक व्यवसाय द्वारा आजीविका का उपार्जन करने वाला, पर-स्त्रियों से प्रेम करने वाला, आचारहीन, पुरुषार्थहीन, हाथी-घोड़ों को पालने वाला, वृद्धा स्त्री में आसक्त, अल्प संततिवान तथा वेश्या द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

चंद्रमा और शनि
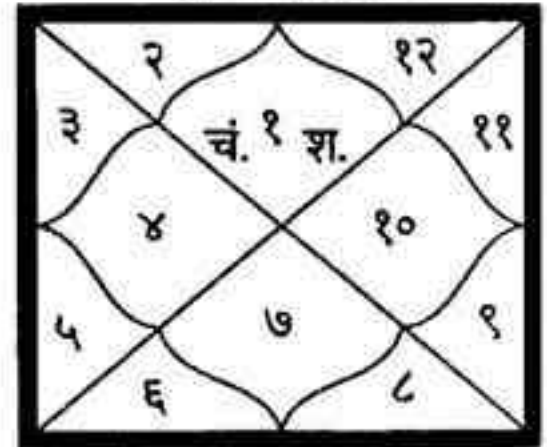
१४४२

यदि जन्म-काल में मंगल और बुध की युति हो, तो जातक धनहीन, कुरूप, कृपण, सोने अथवा लोहे का व्यवसाय करने वाला, विधवा स्त्री से विवाह करने वाला, मल्लयुद्ध में कुशल, अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला तथा अनेक प्रकार की औषधियों का सेवन करने वाला होता है।

मंगल और बुध
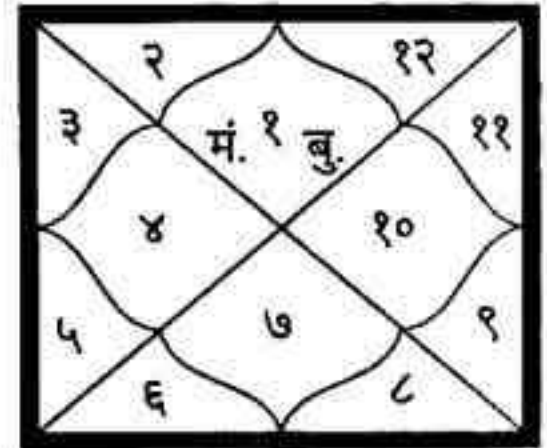
१४४३

यदि जन्म-काल में मंगल और गुरु की युति हो, तो जातक शिल्प-शास्त्रज्ञ, घोड़ों से प्रीति रखने वाला, बोलने में चतुर, मेधावी, मनुष्य समाज में प्रधान पद पाने वाला, मंत्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, शस्त्रज्ञ, अर्थ-साधन करने में निपुण, चतुर, शीलवान, सेना का अधिकारी अथवा कोई अन्य उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल और गुरु
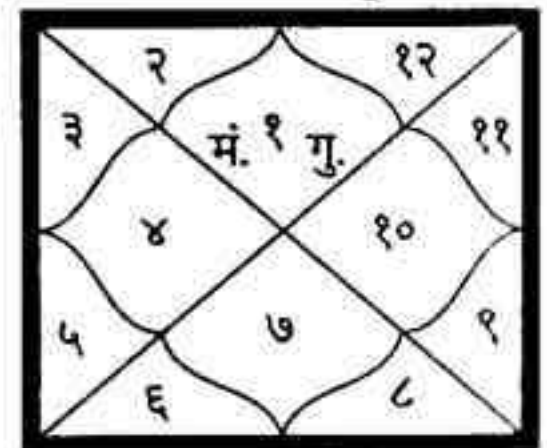
१४४४

मंगल और शुक्र

१४४५

यदि जन्म-काल में मंगल और शुक्र की युति हो, तो जातक गणितज्ञ, गुणी, मिथ्यावादी, जुआरी, शठ, पर-स्त्रीगामी, प्रपंची पापी, अभिमानी, सबसे शत्रुता रखने वाला, भोगी परंतु समाज में सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल और शनि

१४४६

यदि जन्म-काल में मंगल और शनि की युति हो, तो जातक उचित बोलने वाला, अपने धर्म को छोड़कर पराये धर्म को ग्रहण करने वाला, जादू एवं इंद्रजाल आदि विद्याओं का ज्ञाता, कलह-प्रिय, विष तथा मदिरा बनाने एवं बेचने में तत्पर, चोर, मिथ्यावादी, अल्प धन वाला, झगड़ालू, शस्त्र और शास्त्र का ज्ञाता, मित्रों से रहित, सुख से रहित तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।
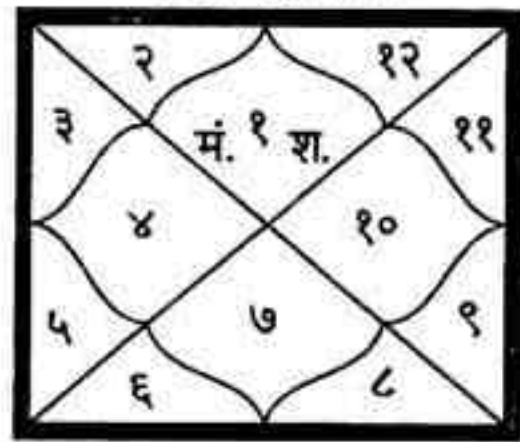
बुध और गुरु

१४४७

यदि जन्म-काल में बुध और गुरु की युति हो, तो जातक नृत्य-वाद्य में कुशल धैर्यवान, सुखी, पंडित, नीतिज्ञ, विनयी, धैर्यवान, उदार, श्रेष्ठ गुणों से युक्त तथा सुगंधित वस्तुओं से प्रेम रखने वाला होता है।

बुध और शुक्र

१४४८

यदि जन्म-काल में बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक शिल्पकला में कुशल, वेदज्ञ, संगीतज्ञ, नीतिज्ञ, धनी, प्रियवादी, हास्यप्रिय, सुखी प्रतापी, चतुर, सदैव, आनंदित रहने वाला, श्रेष्ठ स्वरूप वाला तथा अनेक मनुष्यों का स्वामी होता है।

बुध और शनि
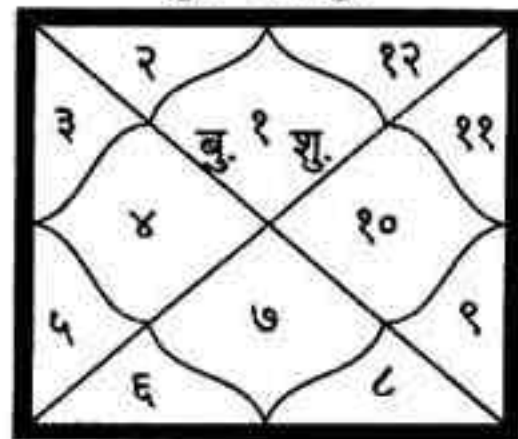
१४४९

यदि जन्म-काल में बुध और शनि की युति हो, तो जातक कलह-प्रिय, चंचल चित्त वाला, संगीत, काव्य आदि में कुशल, भ्रमणशील, उद्योगहीन, उचित बात बोलने वाला तथा दुर्बल शरीर वाला होता है।
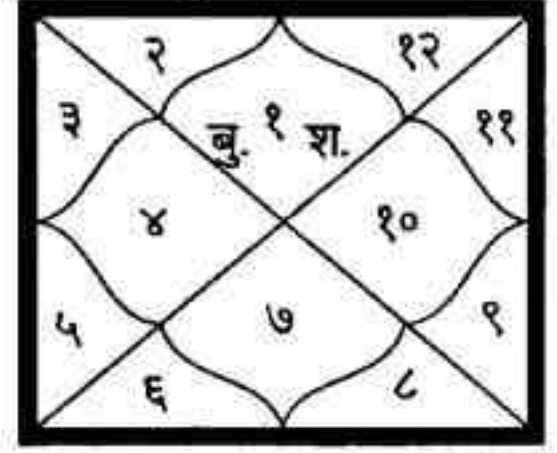
गुरु और शुक्र

१४५०

यदि जन्म-काल में गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक धन, मित्र, पुत्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त, विद्वान, बुद्धिमान, गुणवान, धर्मात्मा, विद्या द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला, सुंदर स्त्री का पति, शास्त्रज्ञ तथा पंडितजनों से शास्त्रार्थ करने वाला, बड़ा सुखी और यशस्वी होता है।

गुरु और शनि
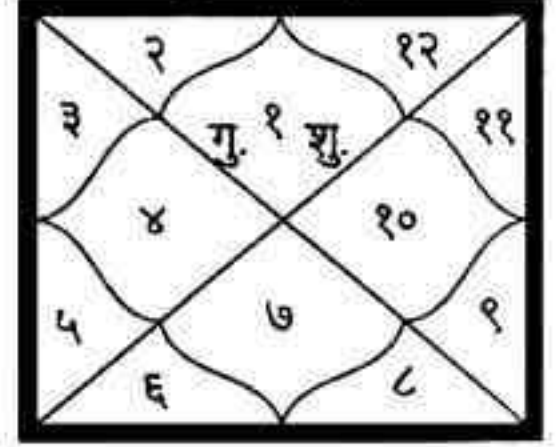
१४५१

यदि जन्म-काल में गुरु और शनि की युति हो, तो जातक शूरवीर, यशस्वी, जन्म-समूह का प्रधान, सेनापति, धनवान, संपूर्ण कलाओं में कुशल तथा स्त्री द्वारा मनोवांछित फल को प्राप्त करने वाला होता है।

•
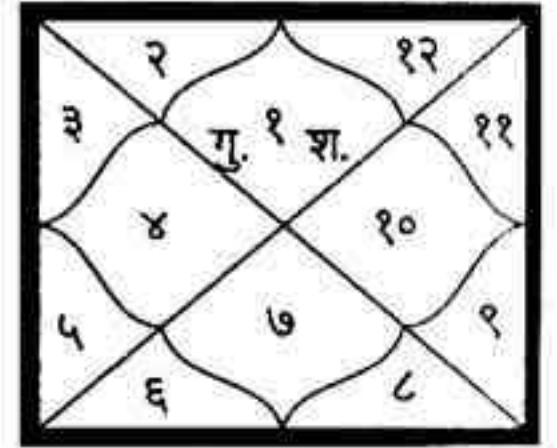
शुक्र और शनि

१४५२

यदि जन्म-काल में शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक शिल्प-लेख, मकान आदि पर चित्रकारी करने तथा पत्थर आदि की वस्तुएं बनाने में कुशल, चंचल बुद्धि वाला, दारुण संग्राम करने वाला, आनंद से युक्त, पशुओं को पालने वाला, लकड़ी चीरने में कुशल, लवण तथा अम्ल रस का प्रेमी तथा उन्मत्त प्रकृति का होता है।
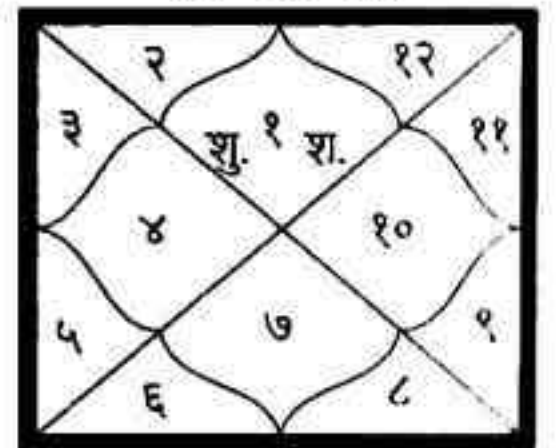
तीनों ग्रहों की युति

तीनों ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य, चंद्र और मंगल

१४५३

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र और मंगल की युति हो तो जातक यंत्र (मशीन) बनाने में कुशल, शूरवीर, दयाहीन, अश्व-विद्या में निपुण, स्त्रीहीन, संतानहीन, तथा रक्त विकार से पीड़ित होता है।

सूर्य, चंद्र और बुध
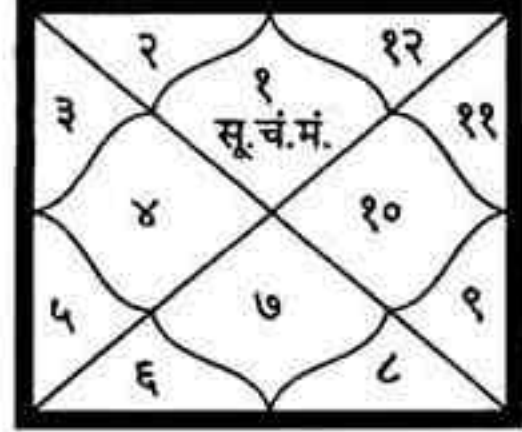
१४५४

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र और बुध की युति हो, तो जातक धनवान, विद्वान, श्रेष्ठ कवि अथवा कथाकार, सभा-प्रिय, चतुर, प्रियवादी, राजा का सेवक, प्रतापी, अच्छे कामों को करने वाला, वार्त्तालाप करने में पटु तथा समस्त शास्त्रों एवं कलाओं का जानकार होता है।

सूर्य, चंद्र और गुरु

१४५५

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र और गुरु की युति हो, तो जातक राजा का मंत्री, स्थिर बुद्धि वाला, धर्मात्मा, बंधु-बांधवों का आदर करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का पूजक, चंचल, चतुर, धूर्त, पर्यटन-प्रेमी, सेवा करने में कुशल तथा विद्वान होता है।

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र और शुक्र की युति हो, तो जातक सुंदर शरीर वाला, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, परम तेजस्वी, राजा के समान प्रतापी और भाग्यवान धर्म में प्रीति न रखने वाला, पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी तथा दांतों में विकार वाला होता है।

सूर्य, चंद्र और शुक्र
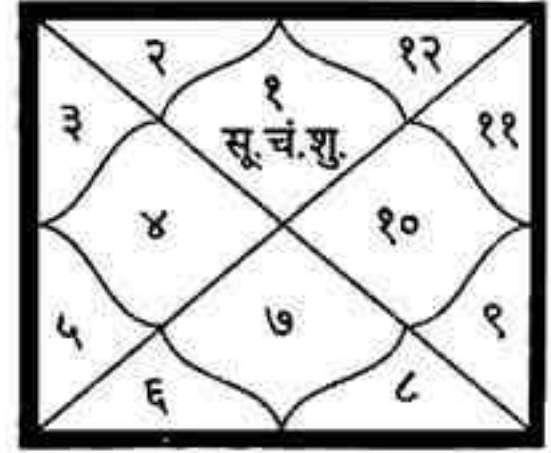
१४५६

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र और शनि की युति हो, तो जातक ब्राह्मणों तथा देवताओं का भक्त, धातु-कर्म करने में कुशल, वेश्याप्रेमी, व्यर्थ परिश्रम करने वाला, अत्यंत धूर्त, धर्म का पालन करने वाला, शीलविहीन, धनहीन, हाथी-घोड़ों का पालन करने वाला तथा सत्कर्म करने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र और शनि
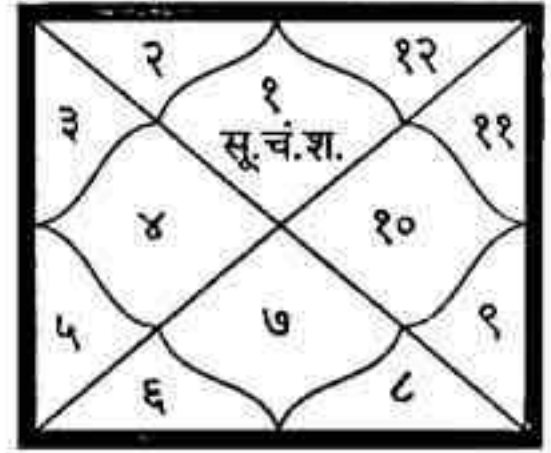
१४५७

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और बुध की युति हो, तो जातक कठोर चित्तवृत्ति वाला, प्रसिद्ध, पराक्रमी, साहसी, निर्लज्ज, धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से युक्त तथा सलाह देने में चतुर होता है।

सूर्य, मंगल और बुध

१४५८

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और गुरु की युति हो, तो जातक श्रेष्ठ वक्ता, धनी राजा का मंत्री, सेनापति, नीतिशास्त्रज्ञ, सत्यवादी, उदार हृदय वाला, प्रियभाषी, उग्र प्रकृति वाला तथा सब कार्यों को करने में कुशल होता है।

सूर्य, मंगल और गुरु
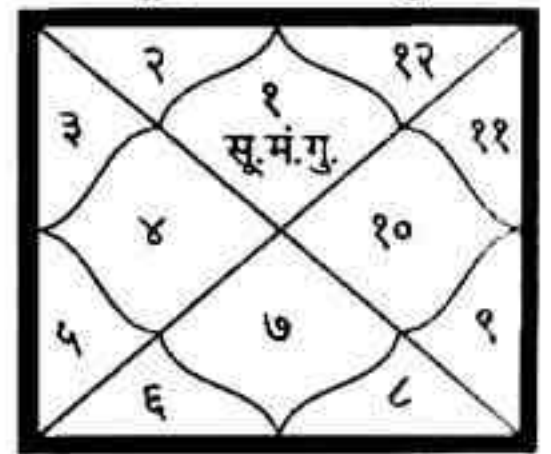
१४५९

सूर्य, मंगल और शुक्र

१४६०

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और शुक्र की युति हो, तो जातक सुंदर, नेत्ररोगी, दयालु, विषयासक्त, कार्यकुशल, धनी, विनम्र, अत्यंत चतुर, बहुत बोलने वाला, गुणवान, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुशील अथवा कुलशीलवान् होता है।

सूर्य, मंगल और शनि

१४६१

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल और शनि की युति हो, तो जातक मूर्ख, धन तथा पशुओं से रहित, रोगी, स्वजनों से तिरस्कृत अथवा स्वजन-विहीन, विकल, कलह से व्याकुल तथा सघन रोमों वाला होता है।

सूर्य, बुध और गुरु
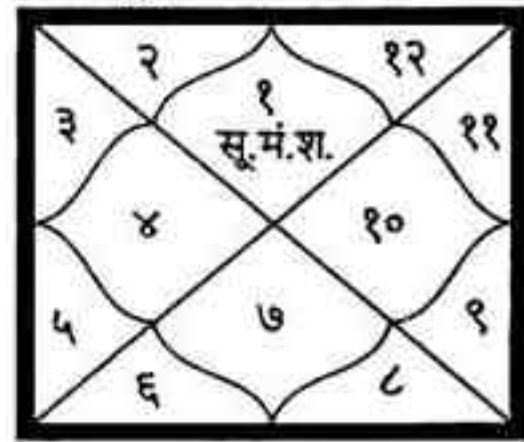
१४६२

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक नेत्र रोगी, बड़ा धनी, शास्त्रज्ञ, शस्त्र-विद्या का ज्ञाता, लेखक तथा संग्रहशील स्वभाव का चतुर व्यक्ति होता है।

सूर्य, बुध और शुक्र

१४६३

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक आचार-विहीन, विदेशवासी, सबसे शत्रुता रखने वाला, दुर्बुद्धि, माता-पिता आदि गुरुजनों से तिरस्कृत तथा स्त्री के कारण दुःखी रहने वाला होता है।

सूर्य, बुध और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध और शनि की युति हो, तो जातक दुराचारी, बंधु-बांधवों से परित्यक्त, सबसे शत्रुता रखने वाला, शत्रु द्वारा पराजित, नपुंसकों जैसे स्वभाव वाला, परम दुष्ट तथा नीच मनुष्यों का संग करने वाला होता है।

१४६४

सूर्य, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक राजा का आश्रित, नेत्र-रोगी, पंडित, शूरवीर, परोपकारी, कम बोलने वाला, दुष्ट स्वभाव वाला, पराये कामों में अधिक रुचि रखने वाला तथा धन से रहित होता है।
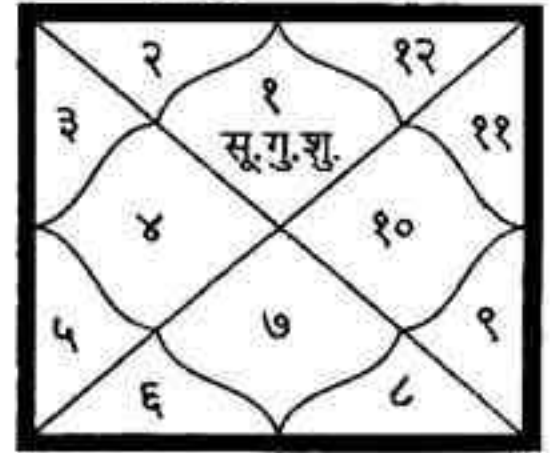
१४६५

सूर्य, गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक राजाओं को प्रिय, मित्र, स्त्री तथा पुत्रादि से युक्त, सुंदर शरीर वाला, प्रगल्भ, बहुत सोच-विचार कर खर्च करने वाला, निर्भय, अपने बंधुओं का हित करने वाला तथा मित्रों से युक्त होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा ग्रह-स्थिति वाला व्यक्ति राजाओं से द्वेष रखता है।
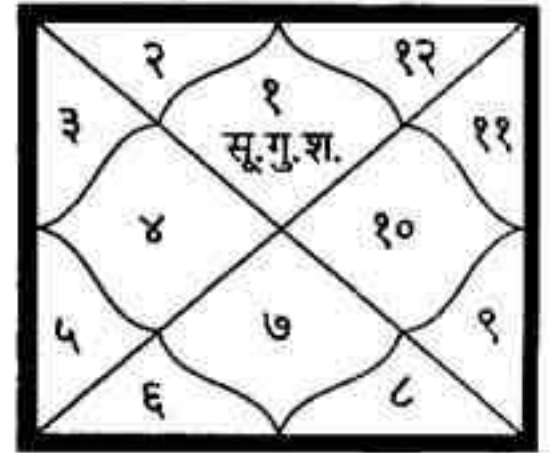
१४६६

सूर्य, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक कला विहीन, मानहीन, खुजली अथवा कुष्ठ-रोग का रोगी, शत्रुओं से भयभीत रहने वाला, दुराचारी, भाई-बंधुओं से रहित तथा अनेक प्रकार के कुकर्म करने वाला होता है।
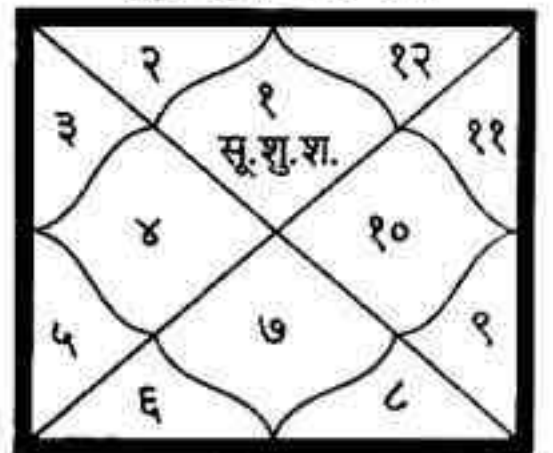
१४६७

चंद्र, मंगल और बुध

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल और बुध की युति हो, तो जातक दुराचारी, पापी, बंधु-बांधवों से हीन, जीविका-विहीन, अपमानित, अत्यंत दीन तथा नीच मनुष्यों की संगति करने वाला होता है।
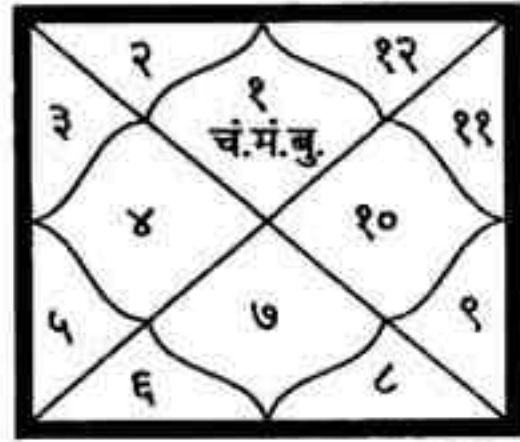
१४६८

चंद्र, मंगल और गुरु

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल और गुरु की युति हो, तो जातक क्रोधी, स्त्री में आसक्त, फोड़ा-फुंसी से युक्त, सुंदर शरीर वाला, अपहरणकर्त्ता, बलवान, स्त्रियों को प्रिय, परस्त्रीगामी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।
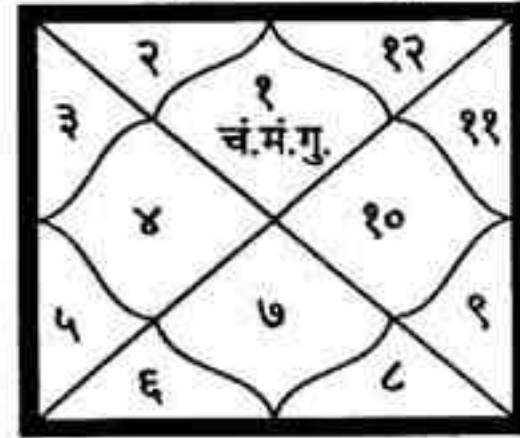
१४६९

चंद्र, मंगल और शुक्र

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल और शुक्र की युति हो, तो जातक की माता और स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली होती है। ऐसा व्यक्ति शीत से डरने वाला, निरंतर भ्रमणशील, चंचल स्वभाव वाला तथा कुशल होता है, परंतु उसका पुत्र शीलवान होता है।
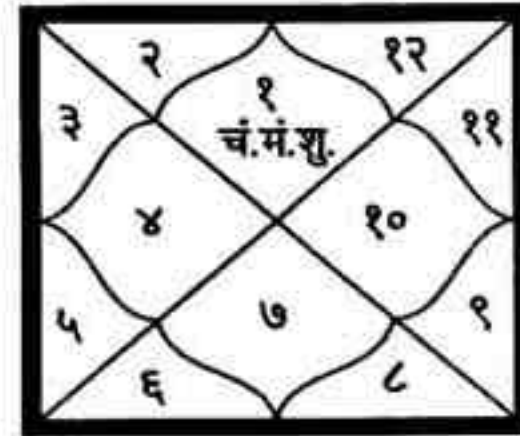
१४७०

चंद्र, मंगल और शनि

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल और शनि की युति हो, तो जातक की माता उसके बाल्यकाल में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। ऐसा व्यक्ति क्षुद्र स्वभाव वाला, कुटिल, लोकद्वेषी तथा कलह-प्रिय होता है। वह सदैव दुःखी बना रहता है।
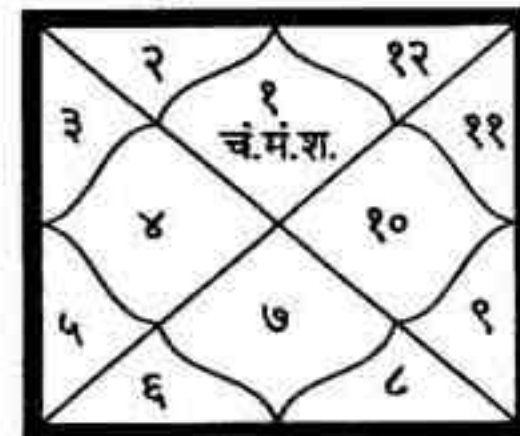
१४७१

चंद्र, बुध और गुरु

१४७२

यदि जन्म-काल में चंद्र, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक बुद्धिमान, भाग्यवान श्रेष्ठ मनोवृत्ति वाला, यशस्वी, परम प्रसिद्ध, श्रेष्ठ मित्रों वाला, तेजस्वी, धनवान, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के सुख से युक्त तथा कुशल वक्ता होता है।

चंद्र, बुध और शुक्र

१४७३

यदि जन्म-काल में चंद्र, बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक बड़ा विद्वान होता है, ईर्ष्यालु, धन का लोभी, दुराचारी तथा नीचवृत्ति द्वारा आजीविका का उपार्जन करने वाला होता है। वह श्राद्ध के संबंध में विशेष श्रद्धालु रहता है।

चंद्र, बुध और शनि

१४७४

यदि जन्म-काल में चंद्र, बुध और शनि की युति हो, तो जातक विनम्र, संपूर्ण कलाओं में कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, विश्वप्रसिद्ध, राजाओं को प्रिय, नगर अथवा ग्राम पर आधिपत्य रखने वाला, महा विद्वान, प्रियवादी, पंडित तथा लंबे शरीर वाला होता है।

चंद्र, गुरु और शुक्र
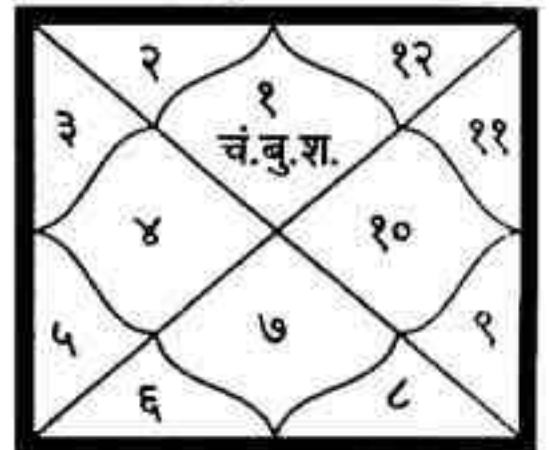
१४७५

यदि जन्म-काल में चंद्र, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक की माता अत्यंत सुशील होती है। वह विद्वान, सब कलाओं का ज्ञाता, मंत्रज्ञ एवं शास्त्रज्ञ, सुंदर शरीर वाला, चतुर तथा राजाओं को प्रिय होता है।
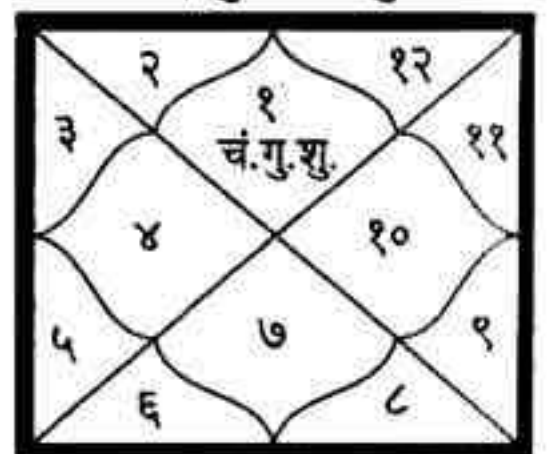
यदि जन्म-काल में चंद्र, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक स्वस्थ शरीर वाला, शास्त्रज्ञ, व्यवहार-कुशल, स्त्रियों को प्रिय, राजा द्वारा सम्मानित अत्यंत चतुर तथा उच्च अधिकारी होता है।

चंद्र, गुरु और शनि
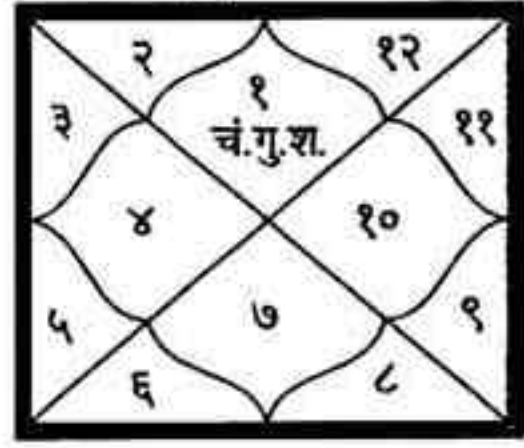
१४७६

यदि जन्म-काल में चंद्र, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक वेदज्ञ, चित्रकार, लेखक, धनी, धर्मात्मा, सुंदर शरीर वाला तथा पुरोहितों में श्रेष्ठ होता है।

चंद्र, शुक्र और शनि
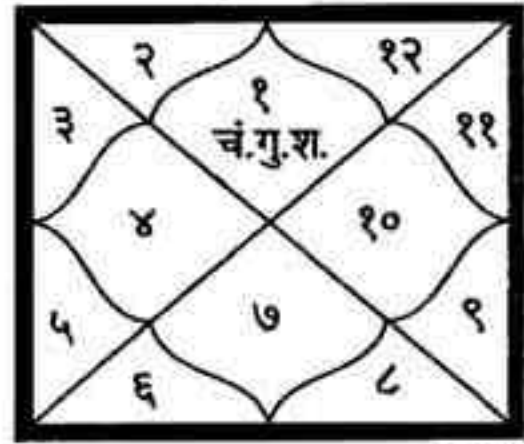
१४७७

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक प्रतापी, संगीतज्ञ, परोपकारी, श्रेष्ठ कवि, चतुर, स्त्रियों को प्रिय, परहित साधन करने वाला तथा अपने कुल में राजा के समान होता है।

मंगल, बुध और गुरु

१४७८

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक दुर्बल शरीर वाला, अत्यंत उत्साही, बहुत बोलने वाला, ढीठ, धनी, चंचल, हीन कुल में उत्पन्न, संतुष्ट तथा अंगहीन होता है।

मंगल, बुध और शुक्र
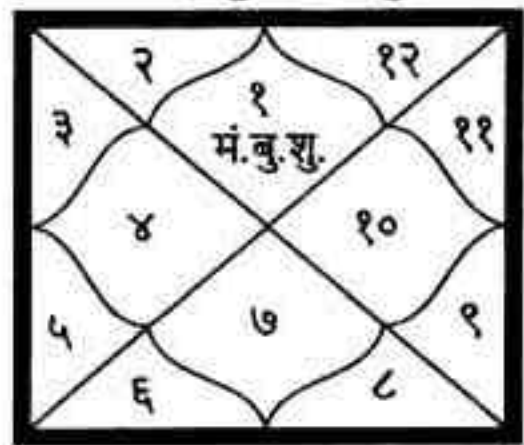
१४७९

मंगल, बुध और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध और शनि की युति हो, तो जातक डरपोक एवं दुर्बल शरीर, परदेश में रहने वाला, वन में रहने की इच्छा रखने वाला, बुरे नेत्रों वाला, सहिष्णु, अत्यधिक कष्ट भोगने वाला, नेत्र-रोगी, मुख-रोगी, हास्य-प्रिय तथा दूतकर्म करने वाला होता है।
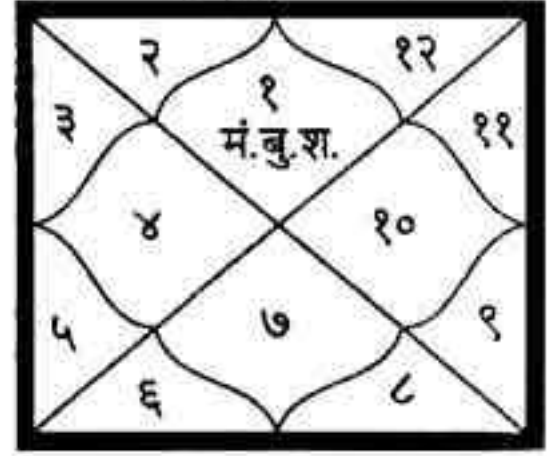
१४८०

मंगल, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक सुखी, सबको प्रसन्न करने वाला, राजा का प्रिय, उत्तम स्त्री तथा पुत्रों वाला एवं श्रेष्ठ जनों द्वारा सम्मानित होता है।
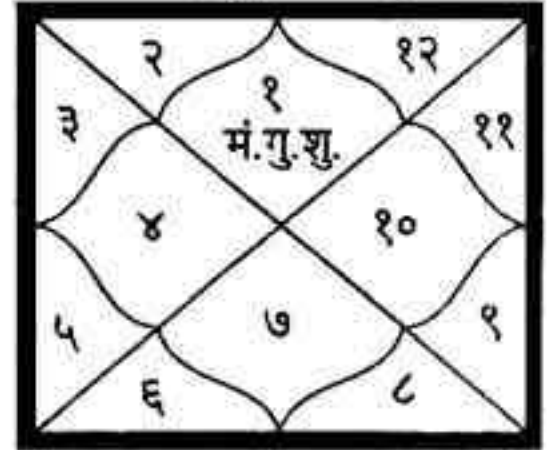
१४८१

मंगल, गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक कृश शरीर, दुराचारी, निर्धन, मित्रों द्वारा निंदित, परंतु राज्य द्वारा कृपापात्र तथा बुरे कर्म करने वाला होता है।
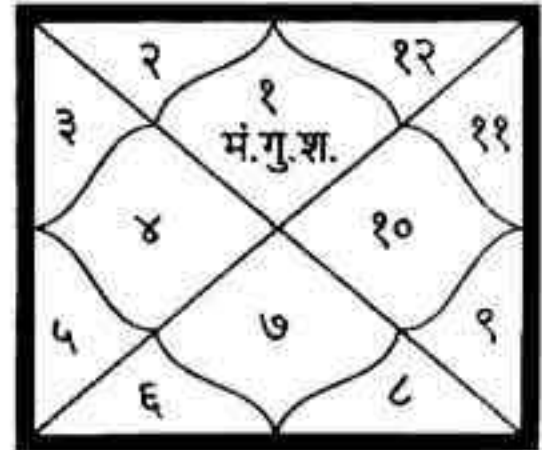
१४८२

मंगल, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक स्त्री के सुख से रहित, परदेश में रहने वाला, सदैव दुःख भोगने वाला, परंतु स्वयं अच्छे स्वभाव वाला होता है।

१४८३

बुध, गुरु और शुक्र

१४८४
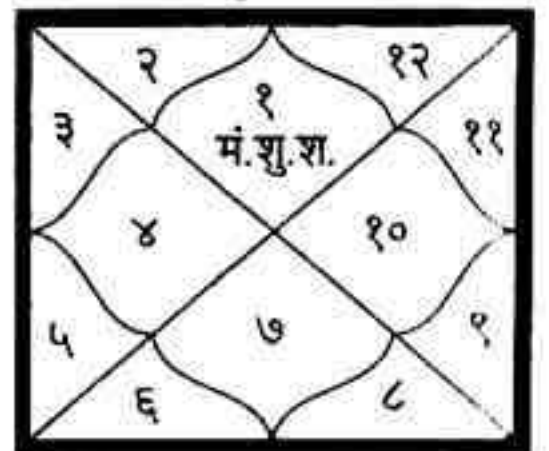
यदि जन्म-काल में बुध, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक सुंदर शरीर वाला, राजा द्वारा सम्मानित, शत्रुओं को परास्त करने वाला, परम यशस्वी, सत्यवादी तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

बुध, गुरु और शनि

१४८५

यदि जन्म-काल में बुध, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक बड़ा धनी, शीलवान, श्रेष्ठ वस्त्राभूषण वाला सेवक एवं वाहनों से युक्त, भाग्यवान, पंडित, सुखी, धैर्यवान तथा उत्तम स्त्री का पति होता है।

बुध, शुक्र और शनि

१४८६

यदि जन्म-काल में बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक चुगलखोर, नीच लोगों के साथ रहने वाला, पर-स्त्रीगामी, कलाओं का जानकार, मिथ्यावादी, धूर्त, आचार-रहित, दूर देशों की यात्रा करने वाला, धैर्यवान तथा स्वदेश-प्रेमी होता है।

गुरु, शुक्र और शनि

१४८७

यदि जन्म-काल में गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक नीच कुल में जन्म लेने पर भी सुशील, राजा के समान प्रतापी, धनी, यशस्वी तथा निर्मल चित्त वाला होता है। वह अत्यंत कीर्ति अर्जित करता है तथा भूमि का स्वामी होता है।

चार ग्रहों की युति

चार ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध

१४८८

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध की युति हो, तो जातक चुगलखोर, चोरी करने वाला, व्यर्थ बोलने वाला, मायावी, सब काम करने में सक्षम, चित्रकार, लेखक, मुखरोगी तथा भाषा पर अधिकार रखने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और गुरु

२ सू. १२
३ चं. १ मं. ११
गु.
४ १०
५ ७ ९
६ ८

१४८९

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और गुरु की युति हो, तो जातक शिल्पशास्त्र का ज्ञाता, बड़े नेत्रों वाला, स्वर्ण के समान कांतिमान शरीर वाला, बलवान, सब काम करने में कुशल, तेजस्वी, धनवान, शोक-रहित तथा नीतिज्ञ होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और शुक्र

१४९०

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और शुक्र की युति हो, तो जातक शास्त्र के अर्थ को जानने वाला, पुत्र तथा स्त्री के सुख से संपन्न, बहुत बोलने वाला, विद्वान, धनवान तथा भाषण, वाक्पटुता, वकालत आदि वाणी से संबंधित कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है। परंतु कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति चोर, खोटे चित्त वाला, निर्लज्ज, परस्त्री-गामी तथा धनहीन होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और शनि की युति हो, तो जातक बौने अथवा विषम शरीर वाला, धनहीन, मूर्ख, भिक्षा द्वारा आजीविका करने वाला, दुर्बल शरीर वाला तथा दरिद्र होता है।

१४९१

सूर्य, चंद्र, बुध और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक शोक-रहित, तेजस्वी, परमधनी, नीतिशास्त्र में कुशल, शिल्पज्ञ, रोगहीन, सुंदर नेत्रों वाला तथा गौर वर्ण शरीर वाला होता है।

१४९२

सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक छोटे कद वाला, सुंदर, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, सुवक्ता, कांतिमान, परंतु विकल बना रहने वाला होता है।

१४९३

सूर्य, चंद्र, बुध और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध और शनि की युति हो, तो जातक माता-पिता से हीन, निर्धन, दरिद्र, भिक्षुक, नेत्र-रोगी तथा कुटुंब-रहित होता है।

१४९४

चार ग्रहों की युति

चार ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध

१४८८

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध की युति हो, तो जातक चुगलखोर, चोरी करने वाला, व्यर्थ बोलने वाला, मायावी, सब काम करने में सक्षम, चित्रकार, लेखक, मुखरोगी तथा भाषा पर अधिकार रखने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और गुरु

१४८९

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और गुरु की युति हो, तो जातक शिल्पशास्त्र का ज्ञाता, बड़े नेत्रों वाला, स्वर्ण के समान कांतिमान शरीर वाला, बलवान, सब काम करने में कुशल, तेजस्वी, धनवान, शोक-रहित तथा नीतिज्ञ होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल और शुक्र

१४९०

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और शुक्र की युति हो, तो जातक शास्त्र के अर्थ को जानने वाला, पुत्र तथा स्त्री के सुख से संपन्न, बहुत बोलने वाला, विद्वान, धनवान तथा भाषण, वाक्पटुता, वकालत आदि वाणी से संबंधित कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है। परंतु कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति चोर, खोटे चित्त वाला, निर्लज्ज, परस्त्री-गामी तथा धनहीन होता है।
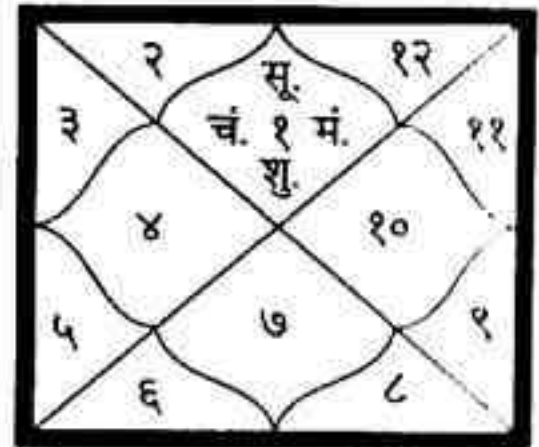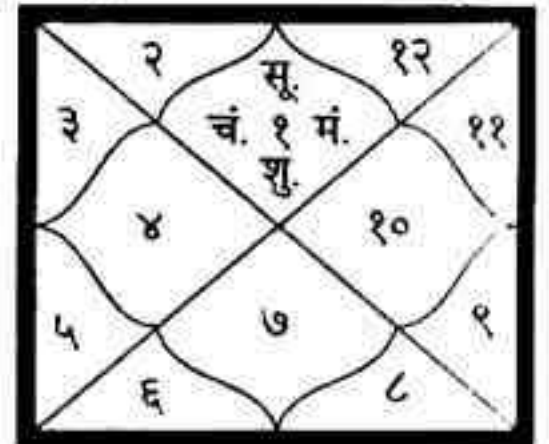
सूर्य, चंद्र, मंगल और शनि

१४९१

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल और शनि की युति हो, तो जातक बौने अथवा विषम शरीर वाला, धनहीन, मूर्ख, भिक्षा द्वारा आजीविका करने वाला, दुर्बल शरीर वाला तथा दरिद्र होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और गुरु

१४९२

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक शोक-रहित, तेजस्वी, परमधनी, नीतिशास्त्र में कुशल, शिल्पज्ञ, रोगहीन, सुंदर नेत्रों वाला तथा गौर वर्ण शरीर वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र
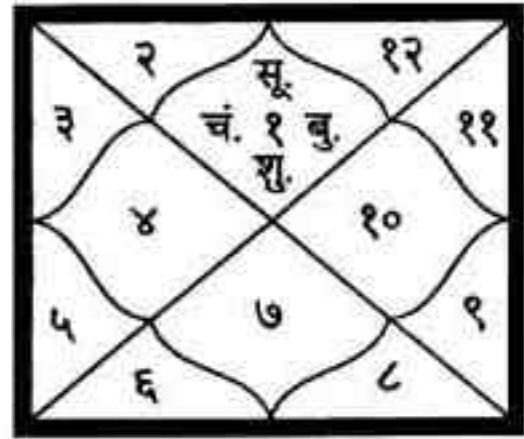
१४९३

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक छोटे कद वाला, सुंदर, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, सुवक्ता, कांतिमान, परंतु विकल बना रहने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध और शनि

१४९४

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध और शनि की युति हो, तो जातक माता-पिता से हीन, निर्धन, दरिद्र, भिक्षुक, नेत्र-रोगी तथा कुटुंब-रहित होता है।

सूर्य, चंद्र, गुरु और शुक्र
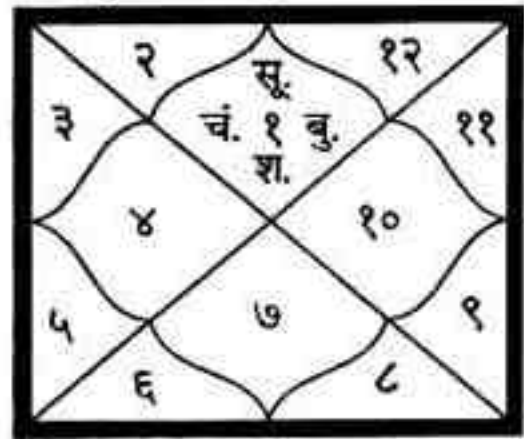
यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक जल, मृग एवं वन में प्रीति रखने वाला, सुखी, गुणी तथा राजाओं द्वारा सम्मानित होता है।
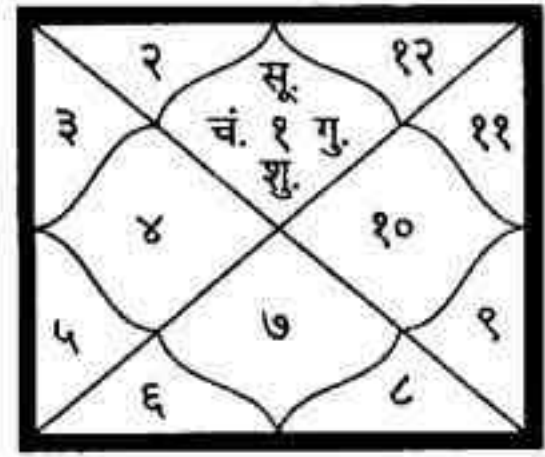
१४९५

सूर्य, चंद्र, गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक बहुत पुत्रों वाला, पतले शरीर तथा सुंदर नेत्रों वाला, धनी, स्त्री का प्रिय, यशस्वी, प्रतापी तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।
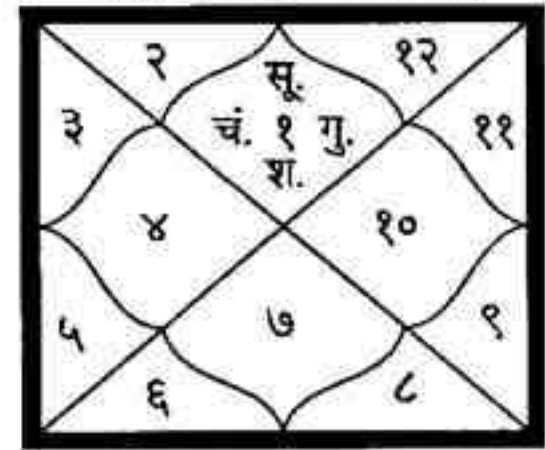
१४९६

सूर्य, चंद्र, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक अत्यंत दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों के समान आचरण करने वाला, डरपोक परंतु लोगों का अगुआ होता है।
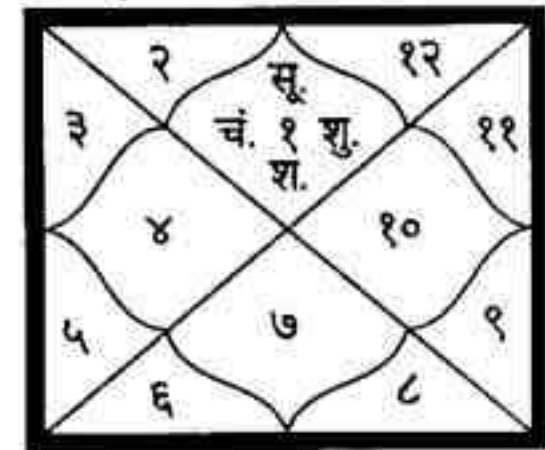
१४९७

सूर्य, मंगल, बुध और गुरु

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक पराई स्त्रियों में रमण करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का सेवक, विजयी, शूर-वीर, चक्रधारी तथा सूत बनाने में कुशल अथवा सूत का व्यवसाय करने वाला होता है।
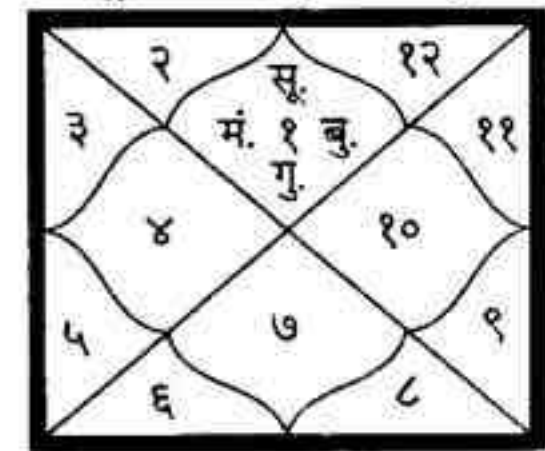
१४९८

सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक निर्लज्ज, चोर, दुर्जन, विषम अंगों वाला, परस्त्री-गामी, देवता तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला तथा सदैव विजय प्राप्त करने वाला होता है।
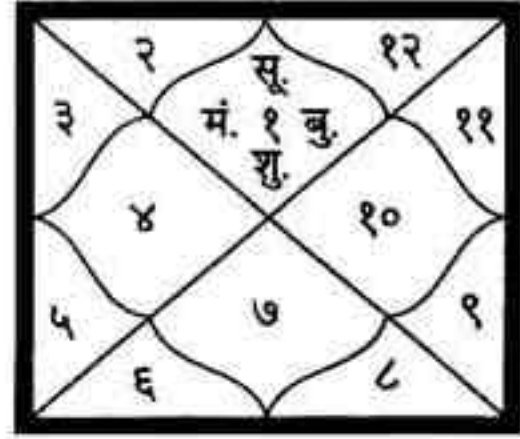
१४९९

सूर्य, मंगल, बुध और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध और शनि की युति हो, तो जातक कवि, योद्धा, राजा अथवा मंत्री, प्रतापी, नीच आचरण करने वाला, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता तथा नीच पुरुषों की संगति में रहने वाला होता है।
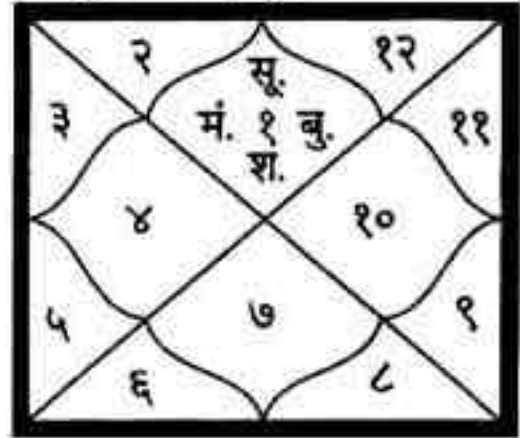
१५००

सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक राजा द्वारा सम्मान प्राप्त, अत्यंत धनी, यशस्वी, सुंदर शरीर वाला, नीतिज्ञ तथा मनुष्यों का पालन करने वाला होता है।
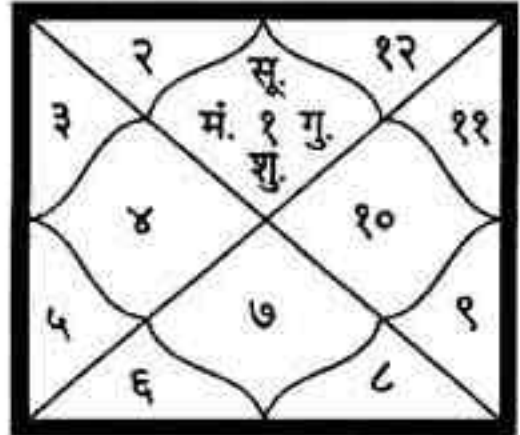
१५०१

सूर्य, मंगल, गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ, राजा द्वारा पूजित, सब कामों में सफलता पाने वाला, सुप्रसिद्ध सेनापति, मंत्री, धनी, अन्न का संचय करने वाला तथा दयालु स्वभाव का होता है।

१५०२
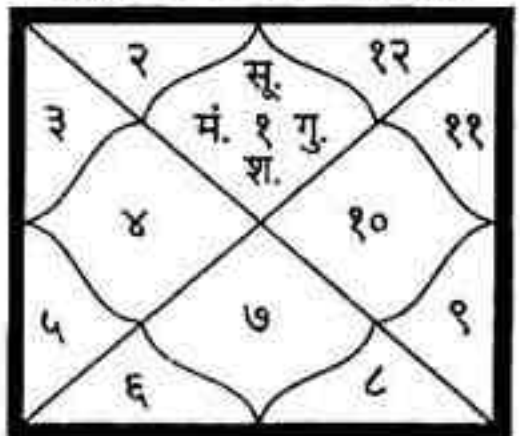
सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि

१५०३

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक नीच जाति के मनुष्यों को अपने साथ रखने वाला, जनद्रोही, दुराचारी, मूर्ख, कटुभाषी, मांसाहारी तथा नीच कर्म करने वाला होता है।

सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र
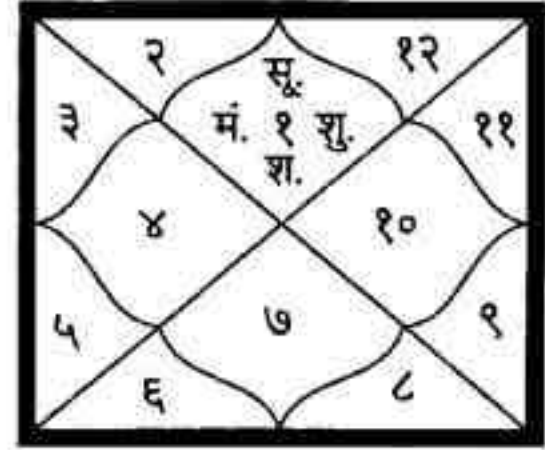
१५०४

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक धनवान, सुखी, प्रसन्न रहने वाला, बुद्धिमान, सब कामों में सफलता पाने वाला, विनयी, मानी, राजा के समान सुख भोगने वाला तथा स्त्री-पुत्रादि से युक्त होता है।

सूर्य, बुध, गुरु और शनि

१५०५

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक बहुत भाइयों वाला, नपुंसक के समान, झगड़ालू, उद्योगहीन, निंदित कर्म करने वाला तथा मानी होता है।

सूर्य, बुध, शुक्र और शनि
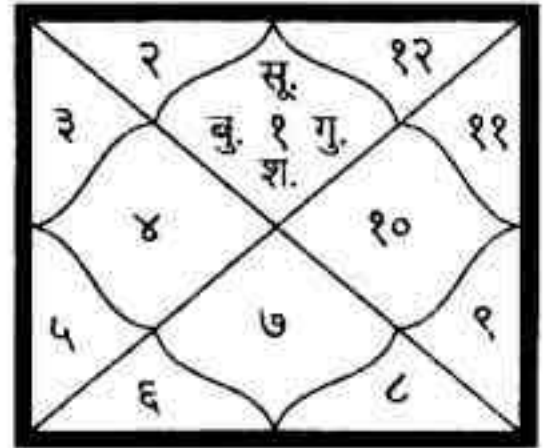
१५०६

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक पवित्र हृदय वाला, सवक्ता, मित्रों वाला, सुंदर, पंडित, विद्वान, भाइयों द्वारा सम्मानित, पुत्र तथा स्त्री के सुख को प्राप्त करने वाला, पवित्र विचारों वाला, भाग्यशाली तथा सुखी होता है।
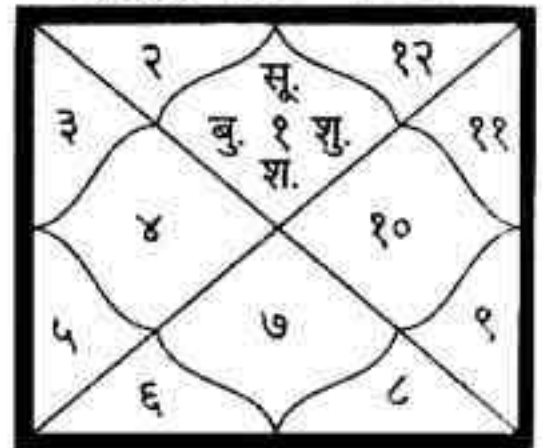
यदि जन्म-काल में सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक लोभी, सुखी, शिल्पज्ञ, कवि, राजा का प्रिय, परम कृपण, परंतु करुणा से पूर्ण हृदय वाला होता है।

सूर्य, गुरु, शुक्र और शनि

१५०७

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक शास्त्रज्ञ, मनुष्यों में श्रेष्ठ, परम विद्वान, बुद्धिमान, लोकपूजित, सत्यवादी, राजा का कृपा-पात्र तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध और गुरु

१५०८

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो तो जातक की स्त्री कुलटा होती है, वह नींद में समय बिताने वाला झगड़ालू, नीच प्रकृति का, बंधु-द्वेषी, वेद तथा शास्त्रों का निंदक, भाइयों से द्रोह करने वाला तथा नीच मनुष्यों से प्रेम करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र

१५०९

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो, तो जातक वीर-वंश में जन्म लेने वाला, दो माताओं वाला, स्त्री-पुत्र तथा मित्रादि से युक्त, सुखी जीवन व्यतीत करने वाला तथा साहसी होता है।

चंद्र, मंगल, बुध और शनि

१५१०

चंद्र, मंगल, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक अंगहीन, साहसी, धनी, मानी, पंडित, पुत्रवान, नीतिज्ञ परंतु विकल बना रहने वाला होता है।
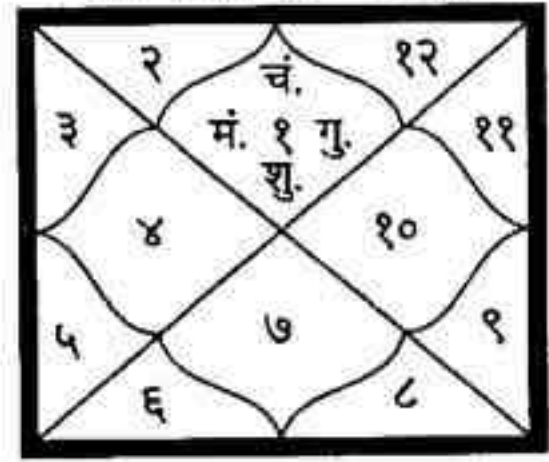
१५११

चंद्र, मंगल, गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक बहरा, उन्मादी, धनवान, अपने वचन का पालन करने वाला, शूर-वीर, पंडित, सत्यवादी, सदैव आनंदित रहने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित दयालु, परंतु नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है।
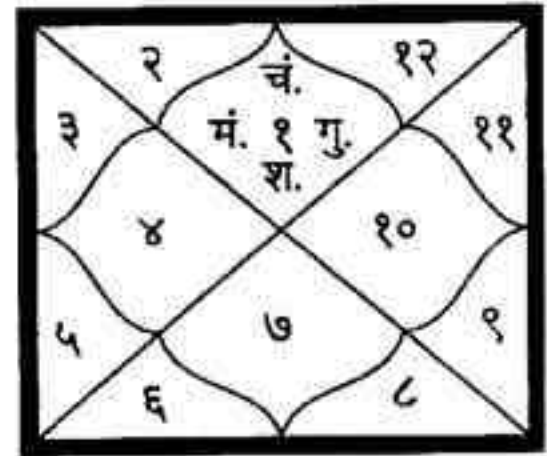
१५१२

चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक मलिन, कुलटा स्त्री का पति, उद्वेगी, जुआरी, मद्य-मांस का सेवन करने वाला, सर्प जैसी आंखों वाला, महा ढीठ, कुल का वंचक, सबका शत्रु तथा दरिद्री होता है। वह वीर वंश में जन्म लेकर भी वीर नहीं होता।
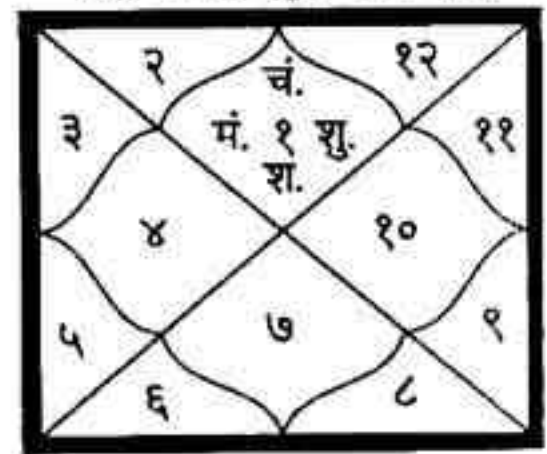
१५१३

चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चंद्र, गुरु, शुक्र और बुध की युति हो, तो जातक सुंदर शरीर वाला, धनी, मात-पिता से रहित, शत्रु-विहीन, पंडित, दयालु, चतुर, दानी तथा शास्त्रज्ञ होता है।
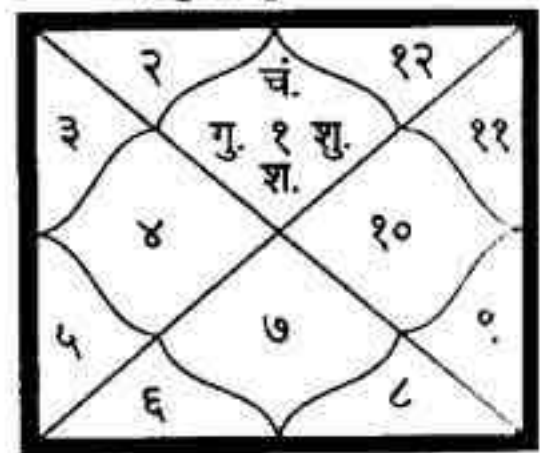
१५१४

यदि जन्म-काल में चंद्र, गुरु, शनि और बुध की युति हो, तो जातक कवि, तेजस्वी, बंधु-बांधवों का प्रिय, राज्य-मंत्री, धर्मात्मा, यशस्वी, ज्ञानी, इंद्रियजित तथा सब लोगों को प्रिय होता है।

चंद्र, गुरु, शनि और बुध
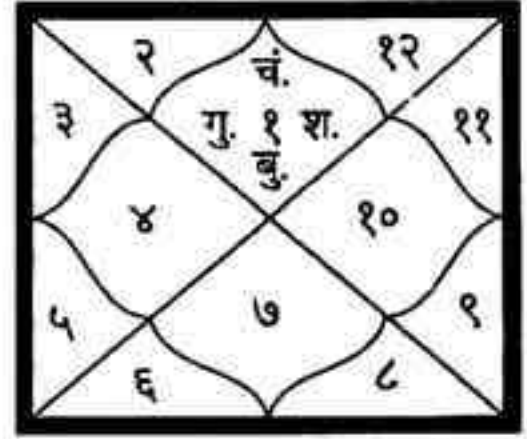
१५१५

यदि जन्म-काल में चंद्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक नेत्र-रोगी, राजा द्वारा सम्मानित, धनी, गांव का स्वामी तथा अनेक पत्नियों वाला होता है।

चंद्र, बुध, शुक्र और शनि
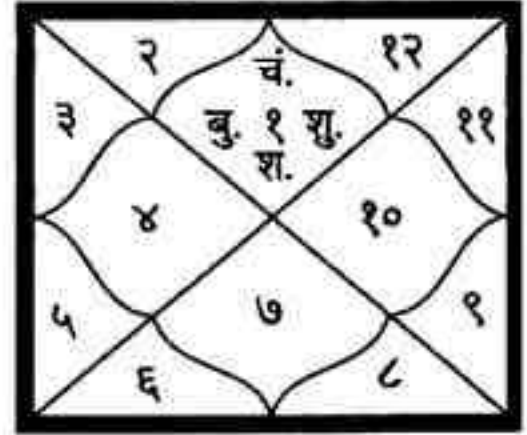
१५१६

यदि जन्म-काल में चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक पंडित, पर-स्त्रीगामी, दूसरों की सहायता करने वाला पुरुषों में श्रेष्ठ तथा धनहीन होता है। उसकी पत्नी का शरीर मोटा होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार वह स्वयं ही स्थूल देह वाला, चतुर तथा धर्मात्मा होता है।

चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि
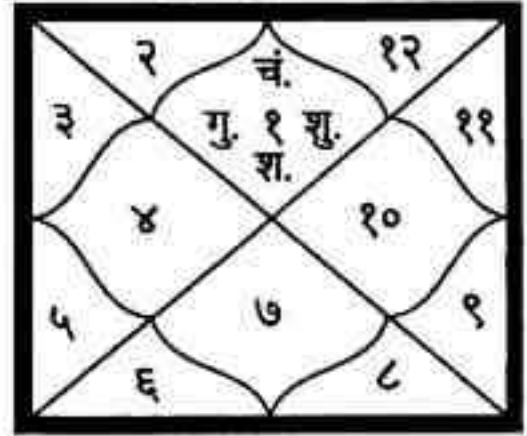
१५१७

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक स्त्री से कलह करने वाला, सुशील, धनी, दयालु, राजमान्य, स्वस्थ शरीर वाला तथा लोकप्रिय होता है।

मंगल, बुध, गुरु और शुक्र
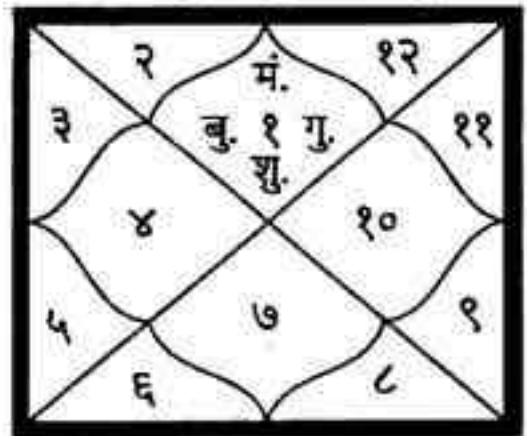
१५१८

मंगल, बुध, गुरु और शनि

१५१९

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक शूर-वीर, सत्यवादी, पवित्र हृदय वाला, धैर्यवान, सुवक्ता, विद्वान, विनम्र, परंतु धन-हीन होता है।

मंगल, बुध, शुक्र और शनि

१५२०

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक पुष्ट शरीर वाला, मधुर-भाषी, मल्ल-विद्या में निपुण, धनहीन, कुत्तों को पालने वाला तथा लोक में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

मंगल, गुरु, शुक्र और शनि
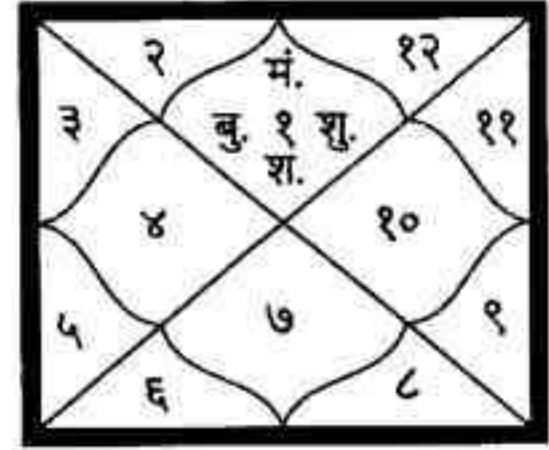
१५२१

यदि जन्म-काल में मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक मानी, धूर्त, विषयी, परस्त्री-गामी, धनी, विनम्र, साहसी, विद्वान तथा श्रेष्ठ मनुष्यों का प्रिय होता है।
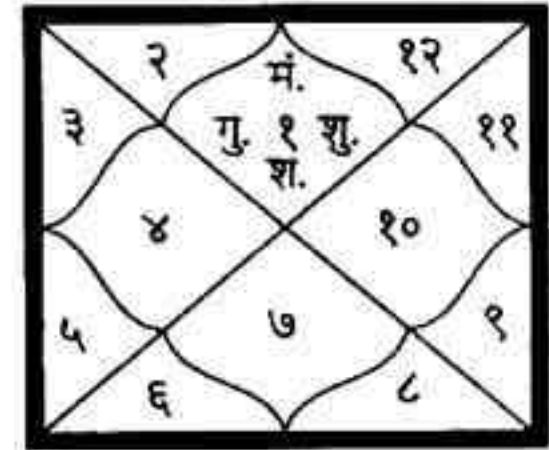
बुध, गुरु, शुक्र और शनि

१५२२

यदि जन्म-काल में बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक वेद-वेदांग का ज्ञाता, मेधावी, शस्त्र विद्या में स्नेह रखने वाला तथा विषय वासना में लीन रहने वाला कामी पुरुष होता है।
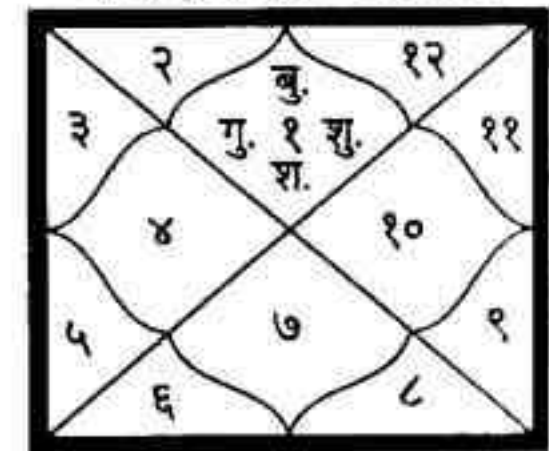
पांचों ग्रहों की युति

पांच ग्रहों की युति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और गुरु

१५२३

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और गुरु की युति हो, तो जातक की पत्नी दुष्ट स्वभाव वाली होती है, जिसके कारण वह सदैव उद्विग्न बना रहता है। ऐसा व्यक्ति स्त्रीहीन भी हो सकता है। साथ ही वह दुष्ट, क्रोधी, छली तथा सदैव दु:खी रहने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र
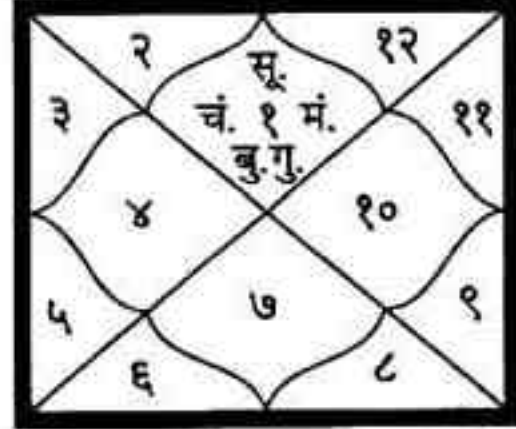
१५२४

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शुक्र की युति हो, तो जातक बंधु-हीन, असत्य बोलने वाला, दूसरों का काम करने वाला, हिजड़ों के समान आकृति वाला, परंतु दयालु स्वभाव का होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शनि
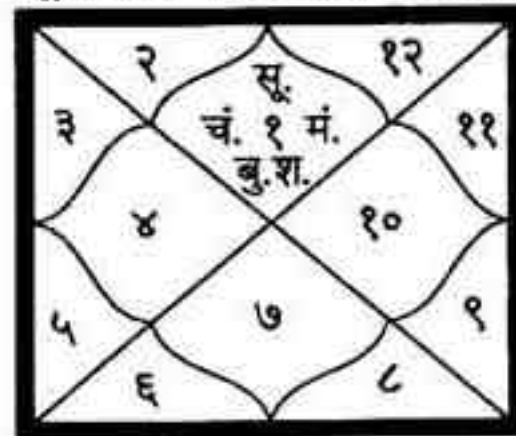
१५२५

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और शनि की युति हो, तो जातक स्त्री-पुत्रादि से रहित, चोर, सदैव दु:ख भोगने वाला, वंधन (कैद) को प्राप्त करने वाला और प्राय: थोड़ी आयु तक ही जीवित रहने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु और शुक्र
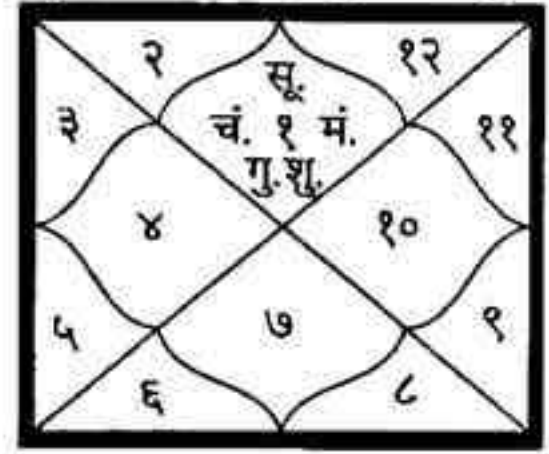
१५२६

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक माता-पिता के सुख से रहित, नेत्र रोगी, दुःखी, हाथी से प्रेम रखने वाला, संगीतज्ञ अथवा जन्मांध होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु और शनि
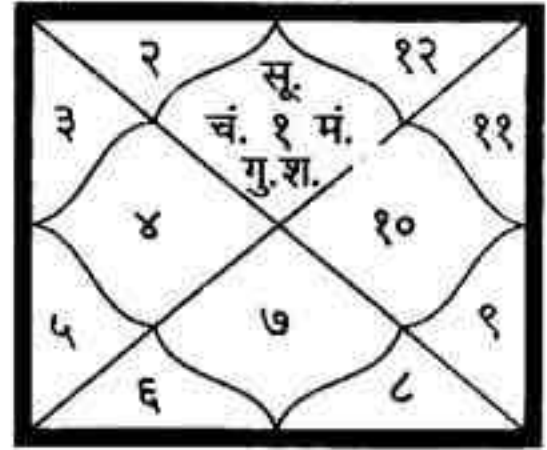
१५२७

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक पराये धन का अपहरण करने वाला, व्यसनी, सज्जनों का वैरी, वृक्ष के समान आकृति वाला, दुष्ट, झगड़ालू, डरपोक तथा दूसरों को दुःख देने वाला होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि
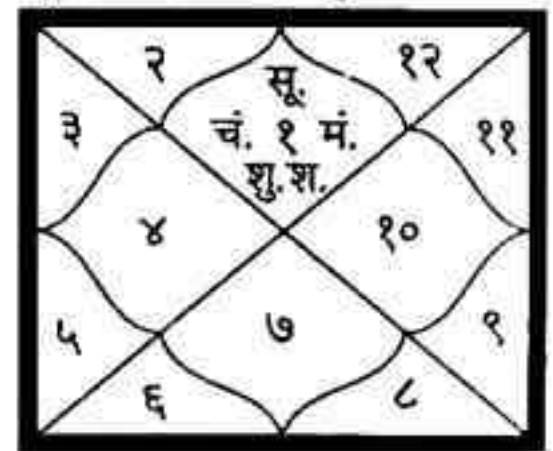
१५२८

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक सबका द्वेषी, धन-हीन, अधर्मी, आचार-विचार-रहित तथा परस्त्री-गामी होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शुक्र
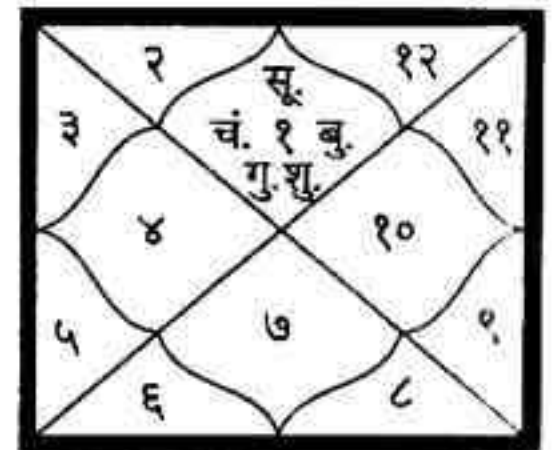
१५२९

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक न्यायाधीश, राजमंत्री, धनी, यशस्वी, चतुर, राजा द्वारा सम्मानित तथा सर्वत्र प्रशंसित होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शनि
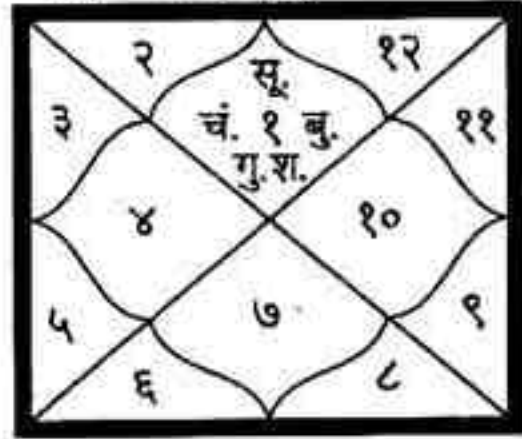
१५३०

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक पराए अन्न पर निर्वाह करने वाला, ऋण-ग्रस्त, दुष्टकर्मों को करने वाला, धर्म-द्वेष, कायर, वेश्यागामी, उन्मादी, उग्र स्वभाव वाला, अपने मित्रों के कारण दुःखी तथा धूर्त होता है।

सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र और शनि
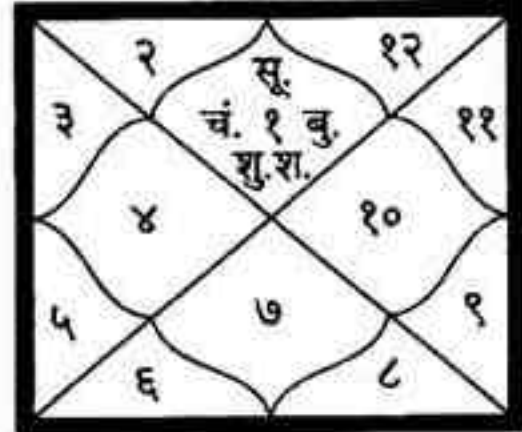
१५३१

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक धन, संतान, मित्र तथा सुख से हीन, उत्साही तथा रोगी शरीर वाला होता है। उसका कद लंबा होता है तथा शरीर पर रोयें अधिक होते हैं।

सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि

१५३२

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक इंद्रजाल-विद्या का जानकार, पंडित, समर्थ, निर्भय, चंचल स्वभाव वाला, सुवक्ता, स्त्रियों का प्रिय, पापी, वाक्छल में प्रवीण तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।
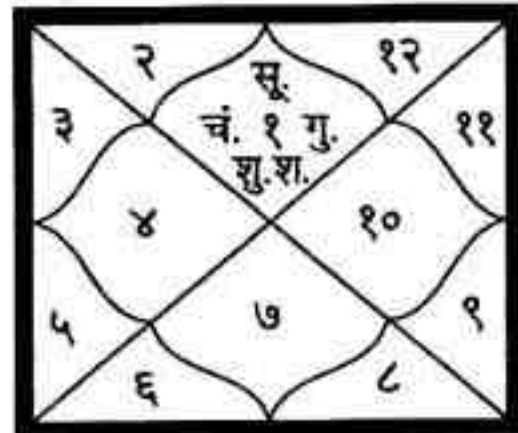
सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र

१५३३

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक स्वच्छ एवं सुंदर शरीर वाला, समर्थ, कामी, धीर, राजा का प्रिय, सेनापति, बहुत से घोड़े रखने वाला, यशस्वी, धन-धान्य तथा सेवकों से युक्त होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि

१५३४

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक रोगी, मलिन, उद्विग्न चित्त वाला, जर्जर शरीर वाला, भिक्षुक, जड़, पुत्रवान तथा अल्प धन वाला होता है।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

१५३५

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक रोग तथा शत्रुओं से ग्रस्त, स्थान-भ्रष्ट, विकल, बुभुक्षित, दुःखी तथा दरिद्र होता है।

सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

१५३६

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक धातु, यंत्र एवं रसायन के कामों में प्रवीण तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला, विद्वान, विचारवान, धनी, भाई-बंधुओं से युक्त तथा तपस्वी होता है।
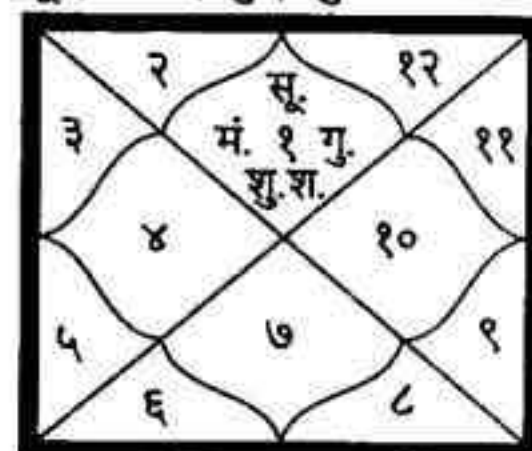
सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

१५३७

यदि जन्म-काल में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक मित्रों का प्रिय, माता, पिता तथा गुरुजनों का भक्त, दयालु, धर्मात्मा, शस्त्रज्ञ, सुवक्ता, धनी तथा सेनापति होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र
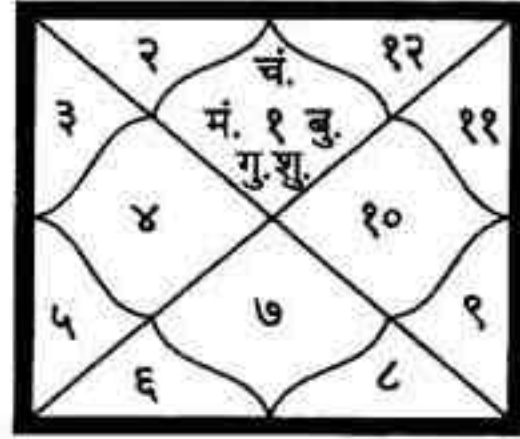
१५३८

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक सज्जन, विद्वान, बहुत पुत्रों वाला, मित्रवान, धनवान, अच्छे स्वभाव वाला, निष्पाप तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि
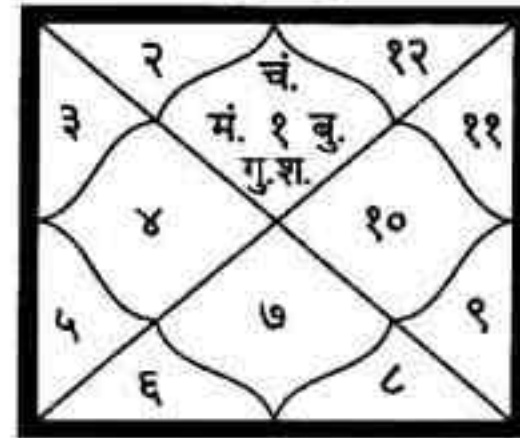
१५३९

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक दूसरों से अन्न की याचना करने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला ब्राह्मण तथा रतौंधी रोग से युक्त होता है।

चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

१५४०

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक कुरूप, मलिन, मूर्ख, नपुंसक, निर्धन, मित्रों से वैर रखने वाला, दुष्टकर्म तथा पराई निंदा करने वाला तथा कठोर हृदय वाला होता है।

चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

१५४१

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक के बहुत से मित्र तथा बहुत से शत्रु होते हैं। वह दुष्ट स्वभाव वाला, दूसरों को कष्ट देने वाला, मलिन, पराई सेवा करने वाला, परंतु विद्वान होता है।
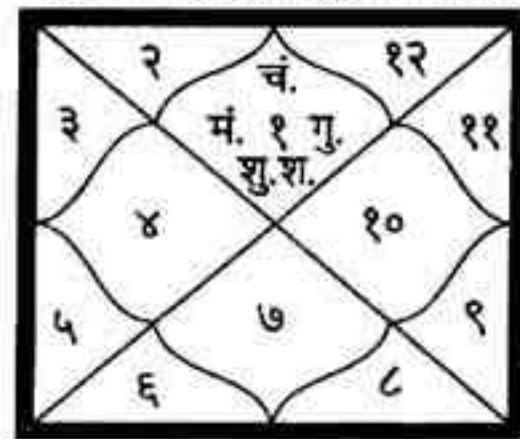
चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक राजा का मंत्री, लोक में पूजित, अत्यंत गुणवान, गणाधीश, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।
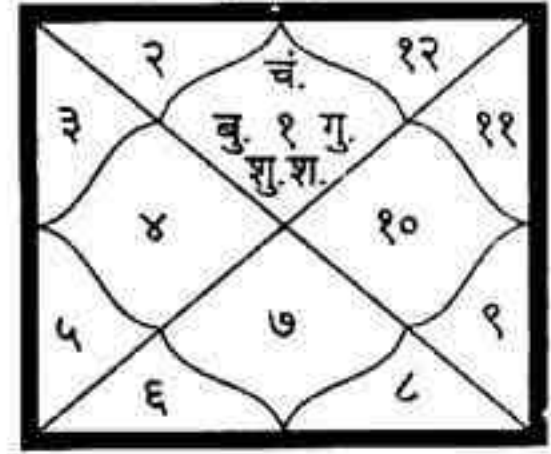
१५४२

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक तामसी स्वभाव वाला, चंचल, आलसी, अधिक सोने वाला, पवित्र-वक्ता, दीर्घायु राजा तथा अन्य मनुष्यों को प्रिय, धनी तथा सुखी होता है।
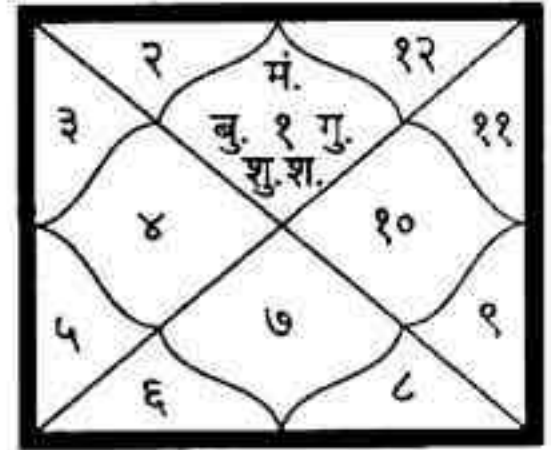
१५४३

छः ग्रहों की युति

छः ग्रहों की युति का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

•

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र की युति हो, तो जातक धन-धान्य, विद्या तथा धर्म से युक्त, कम बोलने वाला, अत्यंत भोगी, भाग्यवान, यशस्वी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

१५४४
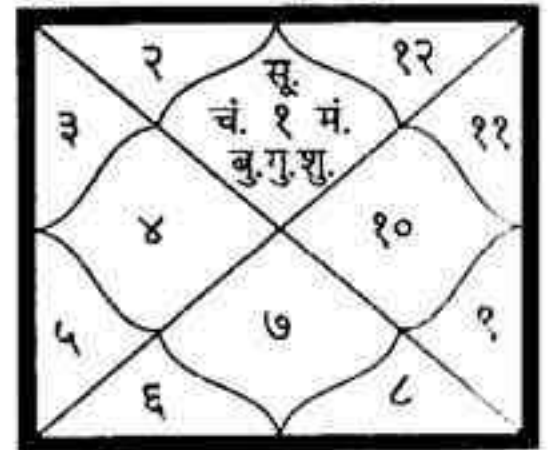
सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि की युति हो, तो जातक दयालु, चंचल स्वभाव का, शुद्ध अंत:करण वाला, परोपकारी, वन में विचरण करने वाला तथा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला होता है।

१५४५

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक प्रत्येक काम में संशय करने वाला, मानी, सुप्रसिद्ध, संग्राम अथवा विवाद में विजय प्राप्त करने वाला, चिंतित, वनों तथा पर्वतों में विचरण करने वाला एवं घातक स्वभाव वाला होता है।

१५४६
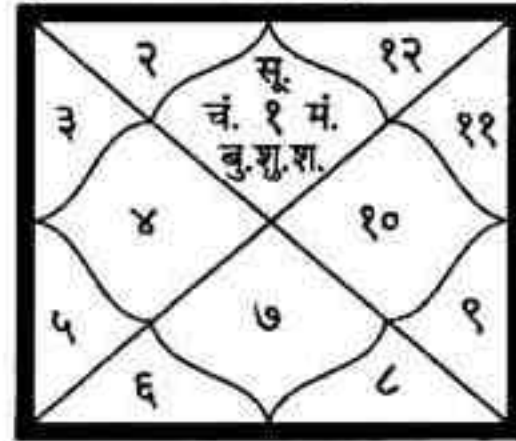
सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक युद्ध करने के लिए उद्यत, क्रोधी, कृपण, धनी, सुखी, राजाओं का कृपापात्र, ग्राम का पूज्य, लोभी, सुंदर, तथा स्त्रियों को प्रिय होता है।

१५४७
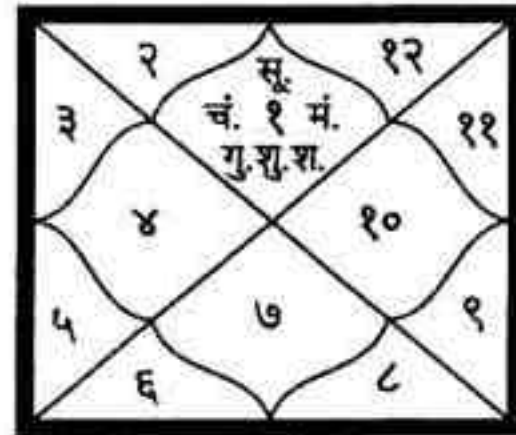
सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक स्त्रीविहीन, धनहीन, राजमंत्री, क्षमाशील, धर्मज्ञ, वेदज्ञ, राजा द्वारा सम्मानित, दयालु तथा सुप्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

१५४८

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक धन, स्त्री तथा पुत्र से रहित, तीर्थ-यात्रा करने वाला, वनवासी, ब्रह्म-विद्या का ज्ञाता, क्षमाशील तथा भिक्षुक होता है।

१५४९
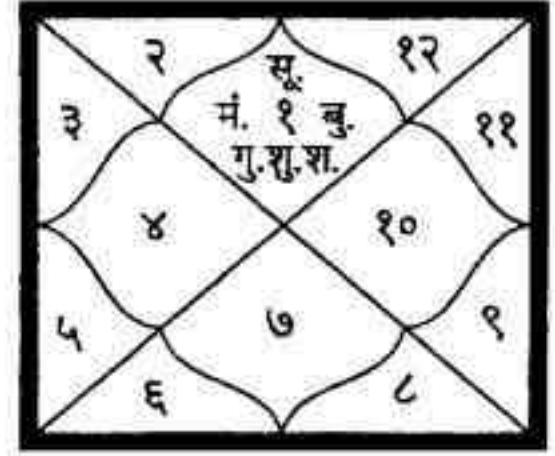
चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि

यदि जन्म-काल में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की युति हो, तो जातक राजमान्य, धनी, गुणवान, विश्वप्रसिद्ध, अनेक स्त्रियों वाला, राजा का मंत्री, पवित्र हृदय वाला, आलसी तथा यशस्वी होता है।
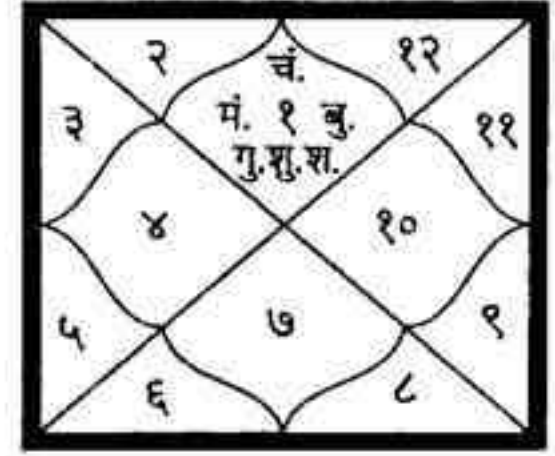
१५५०

सात ग्रहों की युति

सात ग्रहों की युति का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

यदि जन्म-काल में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन सातों ग्रहों की युति हो, तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, राजाओं द्वारा सम्मानित, दानी, धनी तथा शिवजी का भक्त होता है।
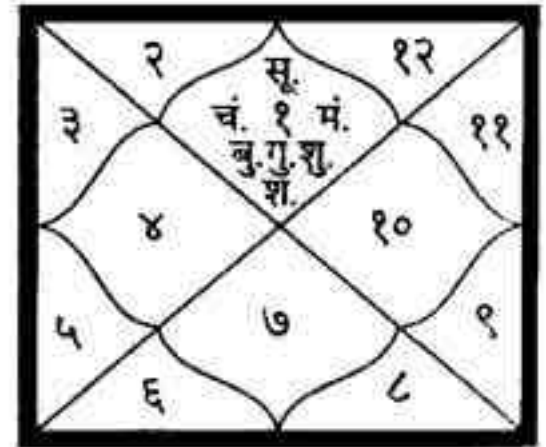
१५५१

विशेष ज्ञातव्य

(१) तीन ग्रहों की युति वाली जन्म-कुंडली में, जन्म के समय चंद्रमा किसी पाप ग्र के साथ हो, तो जातक की माता की मृत्यु होने की संभावना रहती है। इसी प्रकार यदि गु

पाप ग्रहों से युक्त हो, तो पिता की मृत्यु की संभावना रहती है। यदि चंद्रमा शुभ ग्रहों के साथ बैठा हो, तो वह शुभ फल देता है और यदि शुभ ग्रह तथा पाप ग्रह दोनों के साथ बैठा हो, तो मिश्रित फल देता है। यही बात सूर्य के विषय में भी समझ लेनी चाहिए।

(२) यदि जन्म के समय तीन शुभ ग्रहों की युति हो तो जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है। परंतु यदि तीन पाप ग्रह एक साथ बैठे हों, तो जातक का संपूर्ण जीवन दुःखी बना रहता है और वह सर्वत्र निंदित होता है।

(३) जन्म-समय में यदि ५ अथवा ६ ग्रह एक ही भाव में बैठे हों, तो ऐसा जातक प्रायः दरिद्र और मूर्ख होता है।

(४) जिस प्रकार दो-तीन आदि ग्रहों की युति का फलादेश कहा गया है, उसी प्रकार यदि जन्म-कुंडली के किसी भाव में बैठे हुए ग्रह को दो-तीन अथवा अधिक ग्रह एक साथ देख रहे हों, अर्थात् उन सबकी दृष्टि उस ग्रह पर पड़ रही हो, तो वह ग्रह भी युति वाले ग्रह के समान ही अपना फल देने लगता है।

राशीश्वर की विभिन्न भावों में स्थिति का प्रभाव

किस राशि का स्वामी कौन-सा ग्रह होता है—यह बात पहले प्रकरण में बताई जा चुकी है। जन्म-कुंडली के जिस भाव में जो राशि हो, उस राशि का स्वामी ही उस भाव का भी स्वामी होता है। जैसे तृतीयभाव में 'वृष' राशि हो, तो 'वृष' राशि का स्वामी 'शुक्र' ही तृतीयभाव का भी स्वामी माना जाएगा। यदि तृतीयभाव में 'सिंह' राशि हो, तो 'सिंह' राशि के स्वामी 'सूर्य' को ही तृतीयभाव का स्वामी माना जाएगा। इसी प्रकार अन्य भावों तथा अन्य राशियों के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

जन्म-कुंडली में प्रत्येक राशि का स्वामी अपनी ही राशि पर स्थित हो—यह आवश्यक नहीं है। वह किसी भी अन्य राशि पर स्थित हो सकता है। जैसे तृतीयभाव में स्थित 'वृष' राशि के स्वामी 'शुक्र' की स्थिति जन्म-कुंडली के प्रथम से लेकर द्वादश तक किसी भी भाव में हो सकती है। यदि तृतीयभाव में 'वृष' राशि हो और उसका स्वामी अर्थात् तृतीयेश जन्म-कुंडली के पंचमभाव में बैठा हो, तो उस स्थिति में 'तृतीयेश पंचमभाव में बैठा है'—यह कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य प्रत्येक ग्रह, राशि एवं भावों के संबंध में समझ लेना चाहिए।

यहां पर विभिन्न भावों के स्वामियों की विभिन्न भावों में स्थिति संबंधी फलादेश का वर्णन किया जा रहा है। उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

प्रथम भाव का स्वामी 'लग्नेश' अथवा 'प्रथमेश'

(१) प्रथमभाव अर्थात् लग्न का स्वामी लग्नेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में ही बैठा हो, तो जातक दीर्घायु, स्वस्थ, नीरोग, अत्यंत बलवान, राजा अथवा भूमि का स्वामी होता है।

(२) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो, तो जातक स्थूल शरीर वाला, बलवान, दीर्घजीवी, धनवान, अत्यंत धर्मात्मा, राजा अथवा भूस्वामी होता है।

(३) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक शूर-वीर, बलवान, श्रेष्ठ मित्रों वाला, दानी, धर्मात्मा तथा अच्छे भाई-बहनों वाला होता है।

(४) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक अल्पभोजी, दीर्घायु, माता-पिता का भक्त, पिता द्वारा धन प्राप्त करने वाला, धनी, सुखी तथा राजा का प्रिय होता है।

(५) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि पंचमभाव में हो, तो जातक दानी, दीर्घजीवी, धर्मात्मा, यशस्वी, सुखी, धनी, श्रेष्ठ पुत्रों वाला, राजा अथवा राजा के ही समान ऐश्वर्यशाली होता है।

(६) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि षष्ठभाव में हो, तो जातक स्वस्थ, बलवान, धनी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, भूमि का स्वामी, प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(७) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि सप्तमभाव में हो, तो जातक तेजस्वी, परंतु शोकाकुल होता है। उसकी पत्नी अत्यंत सुंदरी, तेजस्विनी तथा सुशील होती है। ऐसे व्यक्ति के गार्हस्थ्य-जीवन में कुछ परेशानियां आती रहती हैं।

(८) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि अष्टमभाव में हो, तो जातक दीर्घायु, कृपण तथा धन का संचय करने वाला होता है। यदि अष्टमभाव में स्थित लग्नेश स्वयं पाप ग्रह हो अथवा किसी पाप ग्रह के साथ बैठा हो, तो जातक एक आंख का काना होता है। यदि शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह के साथ बैठा हो, तो जातक सौम्य पुरुष होता है।

(९) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि नवमभाव में हो, तो जातक अधिक कुटुंब वाला, सामान्य मित्रों वाला, विद्वान, यशस्वी तथा सुखी एवं सम्मानित जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(१०) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि दशमभाव में हो, तो जातक राजा द्वारा धन एवं सम्मान का लाभ प्राप्त करने वाला, विद्वान, सुशील, गुरु एवं माता-पिता का भक्त, यशस्वी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है।

(११) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि एकादशभाव में हो तो जातक तेजस्वी, प्रसिद्धि-प्राप्त, पुत्रवान, बलवान, दीर्घायु, श्रेष्ठ वाहन रखने वाला, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(१२) प्रथमभाव का स्वामी लग्नेश यदि द्वादशभाव में हो, तो जातक पापी, नीच प्रकृति वाला, लोगों के विरुद्ध आचरण करने वाला, विदेशवासी, मानी तथा अधिक खर्च करने वाला होता है।

द्वितीय भाव का स्वामी 'धनेश' अथवा 'द्वितीयेश'

(१) द्वितीयभाव अर्थात् धन एवं कुटुंब-स्थान का स्वामी धनेश अथवा द्वितीयेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक कृपण, व्यवसायी, धनी, सुखी, यशस्वी, भोगी तथा सत्कर्म करने वाला होता है।

(२) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि द्वितीयभाव अर्थात् अपने ही भवन में बैठा हो तो जातक व्यवसाय द्वारा लाभ कमाने वाला, सुखी, प्रसिद्ध उद्वेगयुक्त, नीच प्रकृति वाला तथा अप्रिय कार्य करने वाला होता है।

(३) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो और यदि वह शुभ ग्रह हो, तो जातक अपने भाइयों से मिलकर रहने वाला होता है। यदि पाप ग्रह हो, तो वह उद्वेगी एवं राजा का विरोधी होता है। धनेश यदि मंगल हो और वह तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक चोर होता है।

(४) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो और वह शुभ ग्रह हो, तो जातक पिता से लाभ प्राप्त करने वाला, सत्य-वक्ता, दयालु एवं दीर्घायु होता है। यदि पाप ग्रह हो तो जातक की माता की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

(५) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि पंचमभाव में बैठा हो, तो जातक अपने पुत्रों द्वारा उपार्जित धन का उपभोग करने वाला, कृपण, दु:खी तथा कठिन कार्यों को करने में कुशल एवं प्रसिद्ध होता है।

(६) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक धन का संचय करने वाला, शत्रुओं पर विजय पाने वाला तथा भूमि का उपार्जन करने वाला होता है। यदि धनेश पाप ग्रह हो, तो जातक धनहीन होता है।

(७) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि सप्तम भाव में बैठा हो, तो जातक की पत्नी बुद्धिमती, विलासिनी, भोगवती तथा धन का संचय करने वाली होती है। यदि धनेश पाप ग्रह हो, तो वह बंध्या होती है।

(८) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि अष्टम भाव में बैठा हो, तो जातक आत्मघाती, भिक्षुक, अपने तथा पराये धन को नष्ट करने वाला, दरिद्र तथा भाग्यवादी होता है।

(९) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि नवम भाव में बैठा हो और वह शुभ ग्रह हो तो जातक दानी एवं प्रशस्त वचन बोलने वाला होता है। यदि वह पाप ग्रह हो, तो भिक्षुक तथा विडंबना से पूर्ण होता है।

(१०) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि दशमभाव में बैठा हो, तो जातक राजा द्वारा सम्मानित और राज्य से संपत्ति प्राप्त करने वाला होता है। यदि धनेश शुभ ग्रह हो तो जातक माता-पिता का पालन करने वाला भी होता है।

(११) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक पक्षियों के व्यवसाय से धन कमाने वाला, बहुत से लोगों का पालन करने वाला तथा प्रसिद्धि पाने वाला यशस्वी पुरुष होता है।

(१२) द्वितीयभाव का स्वामी धनेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक कृपण और धनहीन होता है। यदि वह शुभ ग्रह हो तो कभी लाभ तथा कभी हानि प्राप्त करने वाला प्रसिद्ध पुरुष होता है।

तृतीयभाव का स्वामी 'पराक्रमेश' अथवा 'तृतीयेश'

(१) तृतीयभाव अर्थात् भाई-बंधु एवं पराक्रम स्थान का स्वामी पराक्रमेश अथवा तृतीयेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक वाद-विवाद करने वाला, कामी, सेवावृत्ति करने वाला, अपने लोगों से मतभेद रखने वाला, दुष्ट मित्रों वाला, कूटनीतिज्ञ तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।

(२) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक अल्पायु, दरिद्र, भिक्षुक, निर्धन तथा भाई-बंधुओं का विरोधी होता है। यदि पराक्रमेश शुभ ग्रह हो, तो जातक राजा अथवा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है।

(३) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक मध्यम बल वाला, श्रेष्ठ मित्र तथा बंधु-बांधवों वाला, देवता एवं गुरु का भक्त तथा राजा द्वारा लाभ एवं सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

(४) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक अपने पिता, भाई-बहन एवं कुटंबियों द्वारा सुख प्राप्त करने वाला, माता का विरोधी एवं पैतृक-धन को नष्ट करने वाला होता है।

(५) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि पंचमभाव में बैठा हो, तो जातक अपने पुत्र, भ्रातृ-पुत्र (भतीजे) अथवा भाइयों द्वारा पालित, दीर्घायु तथा परोपकारी होता है।

(६) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक नेत्र-रोगी, भूमि का लाभ प्राप्त करने वाला, भाई-बंधुओं का विरोधी तथा किसी रोग विशेष से पीड़ित रहने वाला होता है।

(७) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक की स्त्री सौभाग्यवती, सुशील तथा पतिव्रता होती है। यदि तृतीयेश पाप ग्रह हो, तो जातक की स्त्री अपने देवर से प्रेम करने वाली होती है।

(८) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक भाई-बहनों से रहित होता है। यदि तृतीयेश पाप ग्रह हो, तो वह बाहु-हीन होता है और यदि जीवित रहता है, तो उसकी आयु केवल आठ वर्ष की होती है।

(९) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि नवमभाव में बैठा हो और यदि वह शुभ ग्रह हो, तो जातक विद्वान तथा भाई-बहनों से प्रेम रखने वाला होता है। यदि पराक्रमेश पाप ग्रह हो, तो जातक अपने बंधुओं से परित्यक्त होता है।

(१०) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि दशमभाव में बैठा हो, तो जातक माता पिता का भक्त, भाइयों से विशेष प्रेम रखने वाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है।

(११) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक श्रेष्ठ बंधुओं वाला, भाई-बहनों का पालन करने वाला, भोगी तथा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है।

(१२) तृतीयभाव का स्वामी पराक्रमेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक मित्रों का विरोधी, भाई-बहनों को संताप देने वाला, आलसी तथा उद्योग-हीन होता है।

चतुर्थभाव का स्वामी 'सुखेश' अथवा 'चतुर्थेश'

(१) चतुर्थभाव अर्थात् माता, भूमि एवं सुख-स्थान का स्वामी सुखेश अथवा चतुर्थेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक पिता से स्नेह रखने वाला, मातृकुल से शत्रुता रखने वाला तथा पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

(२) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि पाप ग्रह हो और द्वितीयभाव में बैठा हो तो जातक पिता का विरोधी होता है, परंतु यदि शुभ ग्रह हो, तो पिता का पालन करने वाला होता है और उसके द्वारा उपार्जित धन से पिता को सुख प्राप्त होता है।

(३) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक माता-पिता को कष्ट देने वाला, अन्य लोगों से भी कलह करने वाला तथा पिता के बंधुओं को हानि पहुंचाने वाला होता है।

(४) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि चतुर्थभाव में ही बैठा हो, तो जातक भूमि, भवन तथा वाहनों से युक्त, पिता-माता को सुख देने वाला, धर्मात्मा, सुखी, धनी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है।

(५) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि पंचमभाव में बैठा हो, तो जातक पिता द्वारा सुख प्राप्त करने वाला, दीर्घजीवी, शुभकर्म करने वाला, यशस्वी, संततिवान एवं पुत्रों को सुख देने वाला होता है।

(६) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक माता के धन को नष्ट करने वाला एवं पिता के दोषों को देखने वाला होता है। यदि सुखेश शुभ ग्रह हो, तो वह धन का संचय करने वाला व्यक्ति होता है।

(७) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक की पत्नी अपने श्वसुर (ज़ातक के पिता) की सेवा नहीं करती। परंतु यदि सुखेश शुभ ग्रह हो, तो वह सास-श्वसुर की सेवा करने वाली होती है। यदि मंगल अथवा शुक्र चतुर्थेश होकर सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक की पत्नी विविध कलाओं की जानकार होती है।

(८) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक क्रूर स्वभाव वाला, रोगी अथवा दरिद्र, कुकर्म करने वाला तथा निरंतर मृत्यु की इच्छा रखने वाला होता है।

(९) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि नवमभाव में बैठा हो, तो जातक पिता से अलग रहने वाला, सब विद्याओं का जानकर, कुल-धर्म का पालन करने वाला तथा पिता की अपेक्षा न रखने वाला होता है।

(१०) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि दशमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो उसका पिता उसकी माता को छोड़कर दूसरी पत्नी कर लेता है और यदि सुखेश शुभ ग्रह हो, तो जातक परोपकारी होता है।

(११) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक पिता का भक्त, सत्कर्म करने वाला, धर्मात्मा, स्वस्थ एवं दीर्घायु प्राप्त करने वाला होता है।

(१२) चतुर्थभाव का स्वामी सुखेश यदि द्वादशभाव में हो, तो जातक का पिता शीघ्र ही मर जाता है अथवा वह परदेश में रहने वाला होता है। यदि वह पाप ग्रह हो, तो जातक को अपने पिता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष से उत्पन्न (जारज) समझना चाहिए।

पंचमभाव का स्वामी 'संतानेश' अथवा 'पंचमेश'

(१) पंचमभाव अर्थात् संतान, विद्या एवं बुद्धि-स्थान का स्वामी संतानेश अथवा पंचमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक अल्पसंततिवान, लोक प्रसिद्ध, सत्कर्म करने वाला तथा वेद-शास्त्रों का ज्ञाता होता है।

(२) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक धनहीन, दरिद्र होता है, परंतु यदि वह शुभ ग्रह हो, तो जातक धनवान होता है।

(३) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक प्रिय वचन बोलने वाला और अपने भाइयों में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है। उसके पुत्र उसके परिवार का पालन-पोषण करने वाले होते हैं।

(४) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक अपने पैतृक कर्म को करने वाला, पिता द्वारा पालित और माता का भक्त होता है। यदि पंचमेश पाप ग्रह हो, तो जातक अपने माता-पिता का विरोधी होता है।

(५) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि अपने ही घर पंचमभाव में बैठा हो, तो जातक बुद्धिमान, गुणवान, मानी, संततिवान तथा प्रसिद्ध पुरुषों में भी प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला, लोक विख्यात तथा यशस्वी होता है।

(६) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक मान-हीन, रोगी, धनहीन तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ित रहने वाला होता है। यदि पंचमेश पाप ग्रह हो, तो यह अशुभ-फल और भी अधिक होगा ऐसा समझना चाहिए।

(७) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक के पुत्र सुंदर, सुशील, देवता एवं गुरु के भक्त होते हैं। साथ ही उसकी पत्नी भी सुशील होती है।

(८) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक विद्याविवेक से हीन तथा कटुभाषी होता है। उसकी स्त्री भी क्रूर स्वभाव वाली होती है और भाई तथा पुत्र भी वैसे ही दुष्ट स्वभाव के होते हैं।

(९) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि नवमभाव में बैठा हो, तो जातक कवि, संगीतज्ञ, नाटककार, विद्वान, बुद्धिमान राजमान्य तथा सुंदर स्वरूप वाला होता है।

(१०) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि दशमभाव में बैठा हो, तो जातक राजा का प्रिय, राजा का काम करने वाला, सत्कर्म करने वाला, माता को सुख पहुंचाने वाला तथा सज्जनों में श्रेष्ठ होता है।

(११) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक पुत्र-संततिवान, सत्यवादी, शूरवीर, संगीत आदि कलाओं का जानकार तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(१२) पंचमभाव का स्वामी पंचमेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो तो जातक संतानहीन होता है। यदि शुभ ग्रह हो, तो पुत्रवान होता है, परंतु वह पुत्रसुख से हीन तथा विदेशवासी होता है।

षष्ठभाव का स्वामी 'रोगेश' अथवा 'षष्ठेश'

(१) षष्ठभाव अर्थात् रोग एवं शत्रु-स्थान का स्वामी 'रोगेश' अथवा षष्ठेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक स्वस्थ, बलवान, शत्रुजयी, स्वच्छन्द प्रकृति का, अधिक बोलने वाला, धनी, कुटुंबियों को कष्ट देने वाला तथा अनेक व्यक्तियों से अपेक्षा रखने वाला होता है।

(२) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो, तो जातक चतुर, रोगी, धन-संचयी, प्रसिद्ध, अच्छे स्थान में रहने वाला, दुष्ट प्रकृति का तथा मित्रों के धन को नष्ट करने वाला होता है।

(३) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक लोगों को कष्ट देने वाला, अपने परिजनों को मारने वाला तथा युद्ध एवं झगड़ों के मामले में स्वयं दु:ख भोगने वाला होता है।

(४) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है और उसका पिता चिर-रोगी होता है। ऐसा व्यक्ति स्थिर-संपत्ति प्राप्त करने वाला होता है।

(५) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि पंचमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो पिता-पुत्र में शत्रुता रहती है तथा जातक की मृत्यु पुत्र के द्वारा होती है। परंतु यदि षष्ठेश शुभ ग्रह हो, तो पिता-पुत्र में शत्रुता नहीं होती, परंतु ऐसा जातक दूसरों से द्वेष रखने वाला एवं कपटी स्वभाव का होता है।

(६) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि अपने ही घर षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक रोग तथा शत्रुओं से रहित होता है। वह कृपण, सुखी, धैर्यवान परंतु खराब जगह में रहने वाला होता है।

(७) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक की स्त्री दुष्ट, पति से विरोध रखने वाली तथा संताप देने वाली होती है। यदि षष्ठेश शुभ ग्रह हो, तो स्त्री दुष्टा तो नहीं होती, अपितु वह बंध्या अथवा नष्टगर्भा होती है।

(८) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि शनि हो और वह अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक की संग्रहणी रोग से, मंगल हो तो सर्प के काटने से, बुध हो तो विषदोष से, चंद्रमा हो तो बालारिष्ट दोष से, सूर्य हो तो सिंह-व्याघ्र आदि से, गुरु हो तो कुबुद्धि से और शुक्र हो तो नेत्र-रोग से मृत्यु होती है।

(९) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि नवमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक लंगड़ा, बंधु-विरोधी, क्रूर, शास्त्र-पुराणादि को न मानने वाला तथा भिक्षुक होता है।

(१०) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि दशमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक अपनी माता का शत्रु तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है। यदि शुभ ग्रह हो, तो पिता का पालन करने वाला, परंतु अन्य परिवारीजनों का शत्रु होता है।

(११) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि एकादशभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक की मृत्यु शत्रु के द्वारा होती है। यदि शुभ ग्रह हो तो चोरों के द्वारा धन की हानि होती है तथा चतुष्पदों (जानवरों) के द्वारा लाभ होता है।

(१२) षष्ठभाव का स्वामी षष्ठेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक को पशुओं से धन की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति विदेश के आवागमन से धन प्राप्त करता है तथा भाग्यवादी होता है।

सप्तमभाव का स्वामी 'सप्तमेश'

(१) सप्तमभाव अर्थात् स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के स्थान का स्वामी सप्तमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक अपनी स्त्री में विशेष स्नेह रखने वाला, परंतु अन्य स्त्रियों में भी कुछ स्नेह रखने वाला, भोगी तथा स्वरूपवान होता है।

(२) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो, तो जातक की स्त्री दुष्ट-स्वभाव वाली तथा पुत्र की इच्छा रखने वाली होती है। उसे स्त्री के द्वारा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं एकांतवास का प्रेमी होता है।

(३) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक आत्मबली, भाई-बंधुओं से प्रेम रखने वाला तथा स्वयं दुःखी रहने वाला होता है। यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो, तो उसकी स्त्री अपने देवर तथा पति के मित्रों से प्रेम करने वाली होती है।

(४) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक चंचल स्वभाव का, अपने पिता के शत्रुओं से प्रेम रखने वाला होता है। उसका पिता कटुभाषी होता है। उसकी स्त्री का पालन-पोषण पिता के घर (जातक की ससुराल) में होता है।

(५) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि पंचमभाव में बैठा हो, तो जातक भाग्यवान, पुत्रवान, साहसी तथा दुष्ट स्वभाव का होता है। उसकी स्त्री का पालन उसके पुत्र द्वारा होता है।

(६) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक अपनी स्त्री से वैर रखने वाला, रोगिणी स्त्री वाला तथा स्त्री-संग से क्षय-रोग का शिकार बनने वाला होता है। यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो तो स्त्री-संगजन्य दोष के कारण जातक की मृत्यु हो जाती है।

(७) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि अपने ही घर अर्थात् सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक दीर्घायु, तेजस्वी निर्मल स्वभाव का तथा सबसे प्रेम रखने वाला होता है।

(८) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक अपना विवाह न करके वेश्याओं के साथ रमण करता है और प्रतिदिन चिंतायुक्त एवं दु:खी बना रहता है।

(९) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि नवमभाव में बैठा हो, तो जातक सुशील और तेजस्वी होता है। उसकी पत्नी भी सुशील होती है। यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो, तो जातक नपुंसक और कुरूप होता है। यदि उसके ऊपर लग्नेश की दृष्टि हो, तो वह नीतिशास्त्र का विशेषज्ञ होता है।

(१०) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि दशमभाव में बैठा हो, तो जातक कपटी, लंपट, राजदोष से युक्त होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो, तो वह दु:ख से पीड़ित एवं शत्रुओं के वश में रहने वाला होता है।

(११) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक की पत्नी सुंदर, पतिव्रता एवं श्रेष्ठ स्वभाव वाली होती है।

(१२) सप्तमभाव का स्वामी सप्तमेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक की पत्नी उसके भाइयों तथा मित्रों से प्रेम करती है। वह दुष्ट लोगों से प्रेम करने वाली, पिता से दूर रहने वाली तथा चंचल स्वभाव वाली होती है।

अष्टमभाव का स्वामी 'अष्टमेश'

(१) अष्टमभाव अर्थात आयु, मृत्यु एवं पुरातत्त्व-स्थान का स्वामी अष्टमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक दीर्घकालीन रोगी, विद्वान, अपने हित की बात करने वाला, राजा की आज्ञा का पालन करके धन प्राप्त करने वाला तथा अनेक प्रकार के विघ्नों में पड़ने वाला होता है।

(२) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक अल्पायु, चोर तथा शत्रुओं से पीड़ित होता है। यदि शुभ ग्रह हो, तो वह शुभ फल देने वाला होता है, परंतु उसकी मृत्यु राजा द्वारा होती है।

(३) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक मित्रों तथा भाइयों का विरोधी, कटुभाषी, अंगहीन, चंचल स्वभाव का अथवा भाइयों से रहित होता है।

(४) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक अपने पिता का शत्रु होता है। पिता-पुत्र में झगड़ा होता है तथा पिता रोगी भी बना रहता है, परंतु ऐसा व्यक्ति अपनी माता से धन प्राप्त करता है।

(५) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि पंचमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक पुत्रहीन होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो पुत्रवान होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्राय: जीवित नहीं रहता और यदि जीवित रहता है, तो वह महाधूर्त होता है।

(६) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक राजा का विरोधी होता है, गुरु हो तो अंगहीन, शुक्र हो तो नेत्र-रोगी, चंद्रमा हो तो रोगी, मंगल हो तो क्रोधी, बुध हो तो कायर, शनि हो तो तृष्णाकुल एवं कष्ट पाने वाला होता है। यदि चंद्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो उक्त अशुभ फल नहीं होता।

(७) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि सप्तमभाव में हो, तो जातक उदर-रोग से युक्त, दुष्ट स्वभाव वाला तथा कुशीला स्त्री का पति होता है। अष्टमेश यदि पाप ग्रह हो, तो जातक स्त्री का द्वेषी होता है और स्त्री के द्वारा ही उसकी मृत्यु होती है।

(८) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि अपने ही घर अष्टमभाव में हो, तो जातक बलवान, निरोग, कपटी तथा व्यवसायी होता है। वह कपटी तथा कुल में अत्यंत प्रसिद्ध होता है।

(९) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि नवमभाव में हो, तो जातक सहायकों से हीन, जीवघातक, पापी, बंधु-हीन, स्नेह-हीन, कुल के शत्रुओं द्वारा पूज्य तथा कांतिहीन मुख वाला होता है।

(१०) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि दशमभाव में हो तो जातक राज्य-कर्मचारी, नीच कर्म करने वाला तथा आलसी होता है। यदि अष्टमेश पाप ग्रह हो, तो जातक पुत्र-हीन तथा मातृहीन होता है।

(११) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि एकादशभाव में हो, तो जातक बाल्यावस्था में दुःखी, परंतु बाद में सुखी और दीर्घायु होता है। यदि अष्टमेश पाप ग्रह हो, तो जातक अल्पायु होता है।

(१२) अष्टमभाव का स्वामी अष्टमेश यदि द्वादशभाव में हो, तो जातक कटुभाषी, चोर, शठ, निर्दय इच्छागामी तथा अंगहीन होता है। मृत्यु के उपरांत उसका शरीर कौआ-गिद्ध आदि पक्षियों का भक्ष्य बनता है।

नवमभाव का स्वामी 'भाग्येश' अथवा 'नवमेश'

(१) नवमभाव अर्थात् भाग्य एवं धर्म-स्थान का स्वामी भाग्येश अथवा नवमेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक अत्यंत शूर-वीर, कृपण, अल्पभोजी, बुद्धिमान, राज कर्मचारी एवं देवता तथा ब्राह्मणों को न मानने वाला होता है।

(२) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो, तो जातक सुशील, पुण्यात्मा, कांतिहीन मुख वाला, वात्सल्य युक्त, बैलों का व्यवसाय करने में चतुर तथा चतुष्पदों से पीड़ा पाने वाला होता है।

(३) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक की पत्नी सुंदर होती है। वह भाई-बंधुओं से युक्त तथा उनसे स्नेह रखने वाला होता है।

(४) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक पिता का भक्त, माता का पालन करने वाला, पिता के कार्य में लगा रहने वाला, पुण्यात्मा तथा लोक में प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

(५) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि पंचमभाव में बैठा हो तो जातक पुण्यात्मा, सुंदर स्वरूप वाला एवं देवताओं तथा ब्राह्मणों की पूजा करने वाला होता है। उसके पुत्र भी पुण्यात्मा होते हैं।

(६) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक अधूरा काम करने वाला, शत्रुओं के प्रति भी विनम्र बना रहने वाला एवं वेदांत आदि दर्शन-शास्त्रों की निंदा करने वाला होता है।

(७) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक की पत्नी सत्य बोलने वाली, सुशील, सुंदर स्वरूपवती तथा लक्ष्मीवती होती है।

(८) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक दुष्ट स्वभाव वाला, जीवों का हिंसक, पुण्यहीन, ग्रह-विहीन तथा बंधु-विहीन होता है। यदि भाग्येश पाप ग्रह हो तो जातक नपुंसक होता है।

(९) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि नवमभाव में बैठा हो, तो जातक अपने भाई-बंधुओं से अत्यधिक प्रेम रखने वाला, दानी, देवता, गुरु, कुटुंबी तथा पत्नी आदि से स्नेह करने वाला होता है।

(१०) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि दशमभाव में बैठा हो तो जातक राज्य-कर्मचारी, माता-पिता का भक्त, शूर-वीर, धर्मात्मा तथा प्रसिद्ध-पुरुष होता है।

(११) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक धर्मात्मा, धनी, दीर्घायु, सबसे प्रेम रखने वाला, सुपुत्रवान, पुण्यात्मा तथा राजा द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

(१२) नवमभाव का स्वामी भाग्येश यदि द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक सुंदर शरीर वाला, विद्वान तथा विदेशों में आदर प्राप्त करने वाला होता है। यदि नवमेश पाप ग्रह हो, तो जातक धूर्त होता है।

दशमभाव का स्वामी 'राज्येश' अथवा 'दशमेश'

(१) दशमभाव अर्थात् पिता, राज्य एवं व्यवसाय-स्थान का स्वामी 'राज्येश' अथवा 'दशमेश' यदि लग्न अर्थात प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक अपनी माता का शत्रु, परंतु पिता का भक्त होता है। यदि दशमेश पाप ग्रह हो, तो जातक के पिता के मरने के बाद उसकी माता दूसरे पुरुष के साथ रहने लगती है।

(२) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो, तो जातक माता का भक्त, माता का स्नेह प्राप्त करने वाला, स्वल्पभोजी तथा शास्त्र विहित कार्यों को करने वाला होता है।

(३) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक माता, गुरुजनों एवं परिजनों की सेवा करने वाला, सत्कर्म करने में कुशल, पराक्रमी तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है।

(४) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक सदाचारी, माता-पिता का भक्त, राजमान्य एवं सदैव सुख भोगने वाला होता है।

(५) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि पंचमभाव में बैठा हो, तो जातक शुभ कर्म करने वाला, गीत-वाद्य आदि कलाओं में निपुण, राजा द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला तथा विडंबना में पड़ने वाला होता है। उसकी संतान का पालन-पोषण भी उसकी माता ही करती है।

(६) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक शत्रुओं से भयभीत रहने वाला, कायर, दयाहीन, रोगी तथा झगड़ालू स्वभाव का होता है।

(७) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक की स्त्री सुंदर, पुत्रवती, पतिव्रता तथा अपने पति को सदैव सुख देने वाली होती है।

(८) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक शूर-वीर, क्रूर, मिथ्यावादी, दुष्ट स्वभाव वाला, धूर्त, अल्पायु एवं अपनी माता को संताप देने वाला होता है।

(९) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि नवमभाव में बैठा हो, तो जातक सुशील स्वभाव का एवं अच्छे मित्रों तथा भाइयों वाला होता है। उसकी माता पुण्यवती, परम सुशील तथा सदैव सत्य बोलने वाली होती है।

(१०) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि अपने ही घर में अर्थात् दशमभाव में बैठा हो, तो जातक अपनी माता को सुख देने वाला, मातृकुल से अनेक प्रकार के सुख पाने वाला तथा समयानुकूल प्रासंगिक वचन बोलने वाला चतुर व्यक्ति होता है।

(११) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक धनवान, मानी, दीर्घायु तथा माता से सुख पाने वाला होता है। उसकी माता सुखभागिनी तथा उसकी रक्षा करने वाली होती है।

(१२) दशमभाव का स्वामी राज्येश यदि द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक अपनी माता द्वारा परित्यक्त, आत्मबली, राज्य-कर्मचारी तथा शुभ कर्म करने वाला होता है। यदि राज्येश पाप ग्रह हो तो वह परदेश में निवास करने वाला होता है।

एकादशभाव का स्वामी 'लाभेश' अथवा 'एकादशेश'

(१) एकादशभाव अर्थात् लाभ-स्थान का स्वामी लाभेश अथवा एकादशेश यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक शूर-वीर, बलवान, दानी, सुंदर तथा सबका प्रिय होता है। तृष्णा-दोष से उसकी अल्पायु में ही मृत्यु हो जाती है।

(२) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक अल्पभोगी, अल्पायु, अल्पसुखी, रोगी तथा खोटे भाग्य वाला होता है। लाभेश शुभ ग्रह हो, तो जातक धनी होता है।

(३) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो, तो जातक भाई तथा स्त्री का पालक, उनमें प्रेम रखने वाला, भाई के शत्रुओं का नाशक तथा सुंदर स्वरूप वाला होता है।

(४) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक दीर्घजीवी,

पिता में भक्ति रखने वाला, अपने धर्म का पालन करने वाला, समयानुसार कार्य करने वाला तथा सब कामों से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

(५) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि पंचमभाव में बैठा हो, तो जातक पिता-पुत्र में प्रेम रखने वाला, समान गुणों वाला तथा अल्पायु होता है।

(६) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो, तो जातक शत्रुओं से युक्त एवं दीर्घ रोगी होता है। यदि लाभेश पाप ग्रह हो, तो उसकी मृत्यु परदेश में शत्रुओं के हाथ से होती है।

(७) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक सुशील, धनी, तेजस्वी, अधिकार-संपन्न, दीर्घायु तथा एक पत्नी वाला होता है।

(८) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो, तो जातक रोगी, मृतप्राय, दु:खी तथा अल्पायु होता है। यदि लाभेश शुभ ग्रह हो, तो जातक स्वस्थ बना रहता है।

(९) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि नवमभाव में बैठा हो, तो जातक अनेक विषयों तथा अनेक शास्त्रों का जानकार, धर्म-कार्य करने में प्रसिद्ध और देवता तथा गुरुजनों का भक्त होता है। यदि लाभेश पाप ग्रह हो, तो जातक बंधुविहीन होता है।

(१०) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि दशमभाव में बैठा हो, तो जातक माता का भक्त, परंतु पिता से द्वेष रखने वाला, धनी, पंडित, दीर्घायु एवं परिजनों का पालन करने वाला होता है।

(११) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि अपने ही घर अर्थात् एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक दीर्घायु, बहुत से पुत्र-पौत्रों वाला, सत्कर्म करने वाला, सुंदर, सुशील, लोगों में प्रधान पद प्राप्त करने वाला, पुष्ट शरीर वाला तथा मनोवैज्ञानिक होता है।

(१२) एकादशभाव का स्वामी लाभेश यदि द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक उपलब्ध वस्तुओं का भोग करने वाला, स्थिर चित्त वाला, उत्पाती, रोगी, मानी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

द्वादशभाव का स्वामी 'व्ययेश' अथवा 'द्वादशेश'

(१) द्वादशभाव अर्थात् व्यय-स्थान का स्वामी 'व्ययेश' अथवा 'द्वादशेश' यदि लग्न अर्थात् प्रथमभाव में बैठा हो, तो जातक प्रियभाषी, सुंदर शरीर वाला, विदेश में रहने वाला, अपव्ययी, सदैव अविवाहित रहने वाला अथवा नपुंसक होता है।

(२) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि द्वितीयभाव में बैठा हो, तो जातक कटुभाषी, कृपण, धन-धान्य-विहीन, राजा, चोर तथा अग्नि से भय पाने वाला तथा किसी तीर्थस्थान में मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

(३) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि तृतीयभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक बंधुहीन होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो जातक धनी, थोड़े भाइयों वाला तथा भाइयों से दूर रहने वाला होता है।

(४) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि चतुर्थभाव में बैठा हो, तो जातक रोगी, कृपण, दु:खी, सत्कर्म करने वाला तथा पुत्रों द्वारा मृत्यु पाने वाला होता है।

(५) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि पंचमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक संतति-विहीन होता है। यदि शुभ ग्रह हो, तो पिता के धन से धनी, पुत्रवान एवं स्वयं की सामर्थ्य से रहित होता है।

(६) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि षष्ठभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक नेत्र-रोगी, कृपण तथा किसी निंद्य स्थान में मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है। यदि द्वादशेश शुक्र हो, तो जातक नेत्रविहीन होता है।

(७) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि सप्तमभाव में बैठा हो, तो जातक दुराचारी, दुष्ट एवं बोलने में चतुर होता है। यदि द्वादशेश पाप ग्रह हो, तो उसकी मृत्यु अपनी स्त्री के द्वारा होती है और यदि शुभ ग्रह हो, तो वह वेश्या के द्वारा मृत्यु प्राप्त करता है।

(८) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि अष्टमभाव में बैठा हो और वह पाप ग्रह हो, तो जातक अल्पायु, लोगों का द्वेषी तथा कार्य-साधनों से रहित होता है। यदि द्वादशेश शुभ ग्रह हो, तो धन का संग्रह करने वाला होता है।

(९) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि नवमभाव में बैठा हो और वह शुभ ग्रह हो तो जातक तीर्थाटन करने वाला होता है। यदि द्वादशेश पाप ग्रह हो, तो उसका संपूर्ण धन व्यर्थ चला जाता है।

(१०) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि दशमभाव में बैठा हो, तो जातक पवित्रात्मा, पुण्य की कमाई करने वाला तथा पर-स्त्रियों से दूर रहने वाला होता है। उसकी माता कटुभाषिणी होती है।

(११) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि एकादशभाव में बैठा हो, तो जातक धनी, दीर्घजीवी, श्रेष्ठ स्थान का स्वामी, दानी, सत्यवादी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है।

(१२) द्वादशभाव का स्वामी व्ययेश यदि अपने ही घर द्वादशभाव में बैठा हो, तो जातक धनवान, कृपण, पशुओं का संग्रह करने वाला तथा अल्पायु होता है। यदि वह जीवित रह जाय, तो ग्राम का स्वामी होता है।

स्त्री-जातक

यों तो पुरुष अथवा स्त्री की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश लगभग एक जैसा ही माना जाता है, परंतु स्त्री की जन्म-कुंडली में कुछ ग्रहों के विभिन्न भावों में स्थित होने से उनके फलादेश में भी भिन्नता आ जाती है। इस अध्याय में उन्हीं का वर्णन किया जा रहा है।

स्त्री-जातक में कई स्थानों पर नवांश एवं त्रिशांश का वर्णन आया है। अस्तु, 'नवांश' एवं 'त्रिशांश' के विषय में पहले नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

नवांश-ज्ञान

चिर राशियों में उसी राशि से, स्थिर राशियों में उस राशि से आरंभ करके नवम राशि से तथा द्विस्वभाव राशियों में उस राशि से आरंभ करके राशि से नवांश की गणना की जाती है। चिर, स्थिर तथा द्विस्वभाव राशियों के देव, मनुष्य तथा राक्षस—ये क्रमशः स्वामी होते हैं।

एक राशि का नवांश ३ अंश २० कला का होता है। इसका हिसाब मेषादि राशियों की टेबिल में सामने दिए गए नवांश चक्र के अनुसार समझना चाहिए—

नवांश चक्र

खण्ड		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
३	२०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६	४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०	०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३	२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६	४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०	०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३	२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६	४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
३०	०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

नवांश का फल

राशि के किस नवांश में जन्म लेने वाले जातक के संबंध में नवांश का फलादेश क्या होता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) राशि के प्रथम नवांश (चरण) में जन्म लेने वाला जातक चंचल स्वभाव वाला, दुष्ट, पापी, कुरूप, चुगलखोर तथा व्यसनी होता है।

(२) राशि के द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला जातक धनी, भोगी, कलह से विमुख तथा नर्तकियों से प्रेम करने वाला होता है।

(३) राशि के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला जातक धर्मात्मा, गुणी, देवभक्त, सब पदार्थों के तत्त्वों का जानकार तथा चिर-रोगी होता है।

(४) राशि के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला जातक गुरु का भक्त, दीक्षा ग्रहण करने वाला तथा सभी पदार्थों को प्राप्त करने वाला होता है।

(५) राशि के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला जातक दीर्घायु, बहुसंततिवान, समस्त राजलक्षणों से युक्त तथा प्रसिद्ध राजा होता है।

(६) राशि के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला जातक सत्कर्म-विहीन, अभिमानी, धन को नष्ट करने वाला, कामी, स्त्री से पराजित तथा नपुंसक होता है।

(७) राशि के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला जातक शूर-वीर, साहसी, संग्रामजयी, पराक्रमी, बुद्धिमान, उत्साही, संतोषी तथा विजयी होता है।

(८) राशि के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला जातक परद्वेषी, क्रूर, कुटिल, कृतघ्न, कष्ट भोगने वाला, बहुसंततिवान तथा कार्य के फल से वंचित रहने वाला होता है।

(९) राशि के नवम नवांश में जन्म लेने वाला जातक प्रतापी, जितेंद्रिय, समर्थ, कार्यकुशल तथा अनेक सेवकों को रखने वाला होता है।

त्रिशांश ज्ञान

मेष, मिथुन आदि विषम राशियों में ५, ५, ८, ७, ५ अंश क्रम से मंगल, शनि, गुरु, बुध तथा शुक्र के त्रिशांश होते हैं एवं वृष, कर्क आदि समराशियों में ५, ७, ८, ५, ५ के क्रम से शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मंगल के त्रिशांश होते हैं।

पृष्ठ ७३८ पर दिए गए चक्र के आधार पर त्रिशांश का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

त्रिशांश चक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०	५ मं०	५ शु०
१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०	१० श०	१२ बु०
१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०	१८ गु०	२० गु०
२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०	२५ बु०	२५ श०
३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०	३० शु०	३० मं०

स्त्री-जातक

१५५२

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न और चंद्रमा सम राशि में हों, (चित्र संख्या १५५२) वह स्त्री, स्त्रियों के आकार वाली होती है।

यदि उसी लग्न और चंद्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों, तो वह स्त्री सुंदर वस्त्राभूषणों को धारण करने वाली तथा श्रेष्ठ शीलवती होती है।
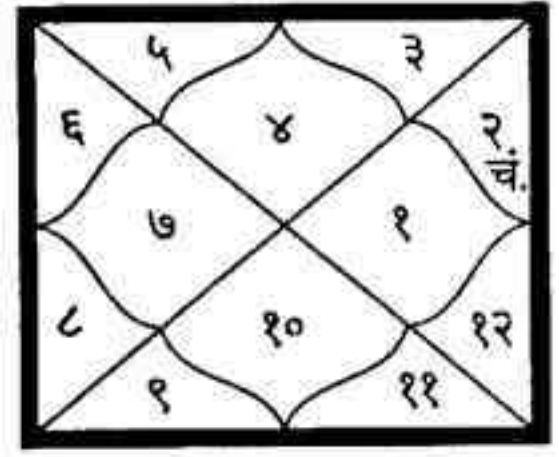
१५५३

जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न और चंद्रमा विषम राशि में हों, (चित्र संख्या १५५३), वह स्त्री पुरुषों के समान आकार वाली होती है।

यदि वे ही लग्न और चंद्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो वह स्त्री पापिनी तथा बुरे कर्म करने वाली होती है। यदि लग्न और चंद्रमा विषम राशि में हों और उन्हें शुभ ग्रह देखते हों, तो मध्यम स्वभाव समझना चाहिए। यदि लग्न और चंद्रमा सम राशि में हों तथा पाप ग्रह देखते हों, तो भी मध्यम स्वभाव कहना चाहिए। जो ग्रह अधिक बली हों, उन्हीं के अनुसार स्त्री का स्वभाव समझना चाहिए।
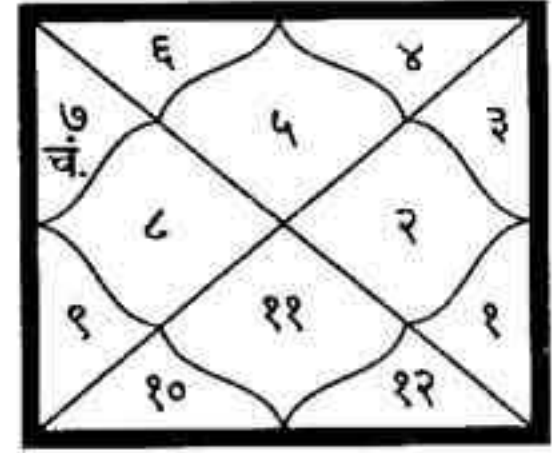
त्रिशांशानुसार स्त्रियों के संबंध में ग्रहों का विशेष फलादेश

(१) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न अथवा चंद्रमा मेष अथवा वृश्चिक राशि में हो और उसमें इन्हीं राशियों का त्रिशांश भी हो, तो ऐसी कन्या अपने विवाह से पहले ही पर-पुरुष गमन करती है।

(२) जिस स्त्री के पूर्वोक्त (मेष अथवा वृश्चिक) राशि में स्थित लग्न अथवा चंद्रमा हो और शनिश्चर का त्रिशांश हो, वह दासी होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो, तो मायाविनी होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो, तो दुष्ट कर्म करने वाली होती है।

(३) जिस स्त्री के जन्म-काल में वृष अथवा तुला, इन दोनों में से किसी में लग्न अथवा चंद्रमा हो तथा मंगल का त्रिशांश हो, तो वह स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो, तो स्त्री विवाह के बाद किसी दूसरे पुरुष के घर में जाकर रहती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो, तो गुणवती होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो, तो संगीत-वादन की कला में निपुण होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो तो गुणवती होती है।

(४) जिस स्त्री के जन्म-काल में मिथुन अथवा कन्या राशि में स्थित लग्न अथवा चंद्रमा हो और मंगल का त्रिशांश हो तो वह कपट करने वाली होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो, तो हिजड़ा होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो, तो पतिव्रता होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो तो गुणवती होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो, तो अनेक पुरुषों के साथ गमन करती है।

(५) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न अथवा चंद्रमा कर्क राशि में स्थित हो और मंगल का त्रिशांश हो, तो वह स्वेच्छाचारिणी एवं पर-पुरुष गमन करने वाली होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो तो पति को मारने वाली होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो, तो अत्यधिक गुणवती होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो, तो चित्रकारी अथवा शिल्पकारी में कुशल होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो, तो व्यभिचारिणी होती है।

(६) जिस स्त्री के जन्म-काल में लग्न अथवा चंद्रमा सिंह राशि में स्थित हो और मंगल का त्रिशांश हो, वह पुरुषों जैसे काम करती है। यदि शनि का त्रिशांश हो, तो पर-पुरुष गामिनी होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो, तो राजरानी होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो, तो पुरुषों जैसे स्वभाव वाली होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो, तो वह पिता, भाई, जेठ, देवर आदि पुरुषों के साथ सहवास करती है।

(७) जिस स्त्री के जन्म-काल में धनु अथवा मीन राशि में लग्न अथवा चंद्रमा की स्थिति हो और मंगल का त्रिशांश हो, वह स्त्री बड़ी गुणवती होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो, तो अल्परति करने वाली होती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो, तो अनेक गुणों से युक्त होती हैं। यदि बुध का त्रिशांश हो, तो ज्ञानवती होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो, तो पर-पुरुषों से प्रेम करने वाली होती है।

(८) जिस स्त्री का जन्म-काल में मकर अथवा कुंभ राशि में लग्न अथवा चंद्रमा की स्थिति हो और मंगल का त्रिशांश हो, वह स्त्री दासी होती है। यदि शनि का त्रिशांश हो, तो वह नीच पुरुष के साथ सहवास करती है। यदि गुरु का त्रिशांश हो, तो अपने पति से प्रेम करने वाली होती है। यदि बुध का त्रिशांश हो, तो खोटी बुद्धि वाली होती है और यदि शुक्र का त्रिशांश हो, तो बांझ होती है।

टिप्पणी—त्रिशांश का फल लग्न तथा चंद्रमा इन दोनों से कहा गया है। लग्न अथवा चंद्रमा में जो भी बलवान हो, उसके बलाबल का विचार करके तदनुसार ही फलादेश समझना चाहिए।

नवांशानुसार स्त्रियों के संबंध में ग्रहों का विशेष फलादेश

(१) जिस स्त्री के जन्म-काल में शनि शुक्र के नवांश में हो, शुक्र शनि के नवांश में हो और दोनों एक-दूसरे को देखते हों अथवा जन्म लग्न वृष या तुला हो और उसमें कुंभ के नवांश का उदय हो, तो ऐसी स्त्री किसी अन्य स्त्री के साथ ही पुरुषाकार जननेंद्रिय बनाकर अपनी कामाग्नि को शांत करती है।

(२) यदि स्त्री की जन्म-कुंडली के किसी घर में शुक्र के नवांश में मंगल हो और मंगल के नवांश में शुक्र हो, तो वह पर-पुरुष गमन करती है।

(३) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में मंगल का नवांश हो और उसे शनि देखता हो, तो उस स्त्री के गुप्तांग में रोग होता है।

(४) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में शुभ ग्रह का नवांश हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, तो उस स्त्री का गुप्तांग अत्यंत सुंदर होता है और वह पति को विशेष प्रिय होती है।

(५) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में जन्म-लग्न से सातवें घर में मकर, कुंभ के नवांश का उदय हो तथा सातवें घर में मकर, कुंभ राशि ही हो, उसका पति वृद्ध अथवा मूर्ख होता है।

(६) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में सातवें घर में वृष अथवा तुला राशि हो और शुक्र के नवांश का उदय हो, उस स्त्री का पति सुंदर तथा सबको प्रिय होता है।

(७) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में सातवें घर में मिथुन अथवा कन्या राशि हो और बुध का नवांश हो, उस स्त्री का पति विद्वान अथवा अत्यंत चतुर होता है।

(८) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में सातवें घर में कर्क राशि हो और कर्क का ही नवांश हो, उसका पति अत्यंत कामी तथा कोमल स्वभाव का होता है।

(९) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में सातवें घर में धनु अथवा मीन राशि हो और गुरु का नवांश हो, उसका पति गुणवान तथा जितेंद्रिय होता है।

(१०) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में सातवें घर मे सिंह राशि हो और सिंह का ही नवांश हो, उसका पति अत्यंत कोमल स्वभाव वाला व्यवसायी होता है।

(११) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में आठवें घर में पाप ग्रह बैठे हों, तो आठवें घर का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में बैठा हो, उस ग्रह की दशा अथवा अंतर्दशा में ही वह स्त्री विधवा होती है।

विविध योग

(१) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में जन्म-लग्न अथवा चंद्रमा से सातवें घर में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हो (चित्र संख्या १५५४) अथवा निर्बल ग्रह बैठा हो अथवा सातवें घर पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, उसका पति निरुद्यमी होता है।

१५५४

(२) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में बुध तथा शनि बैठे हों (चित्र संख्या १५५५), उसका पति नपुंसक होता है। यदि सातवें घर में चर राशि हो, तो उस स्त्री का पति सदैव परदेश में रहता है। यदि स्थिर राशि हो, तो घर में ही रहता है और यदि द्विस्वभाव राशि हो, तो वह घर तथा परदेश दोनों ही स्थानों में रहता है।
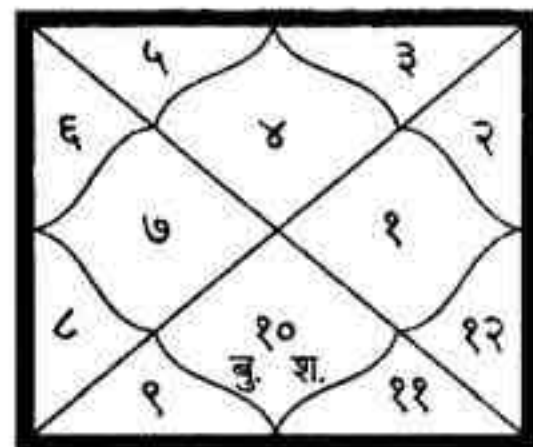
१५५५

(३) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में सूर्य की स्थिति हो (चित्र संख्या १५५६), वह स्त्री अपने पति द्वारा त्याग दी जाती है।
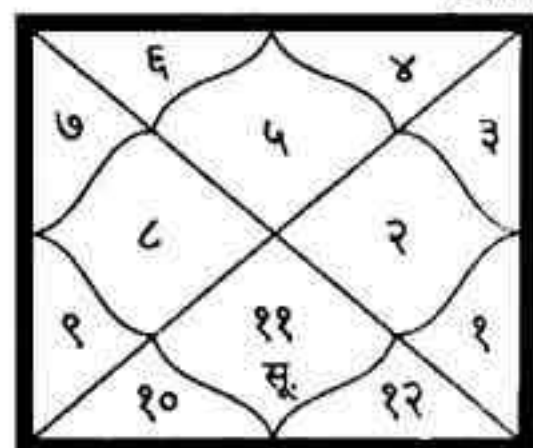
१५५६

(४) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में मंगल बैठा हो (चित्र संख्या १५५७), वह बाल-विधवा होती है।
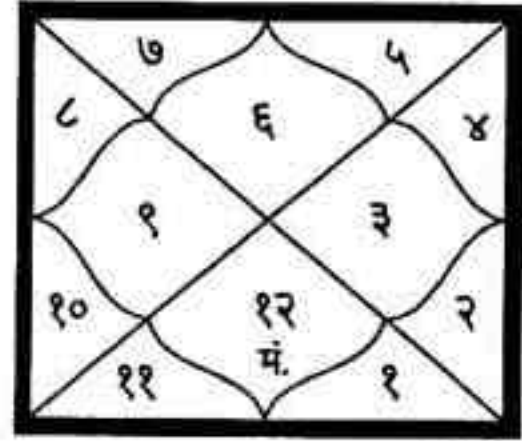
१५५७

(५) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में शनि बैठा हो (चित्र संख्या १५५८) तथा सभी पाप ग्रह उसे देखते हों, वह स्त्री बिना विवाह के ही रह जाती है, और यदि विवाह हो भी जाता है, तो उसके पति की मृत्यु शीघ्र ही हो जाती है।
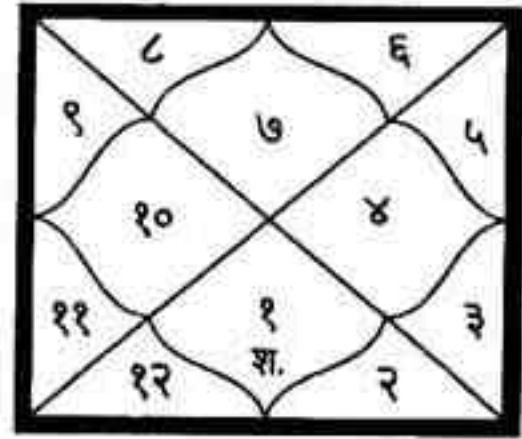
१५५८

(६) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में सभी पाप ग्रह स्थित हों (चित्र संख्या १५५९) वह अवश्य ही विधवा होती है।
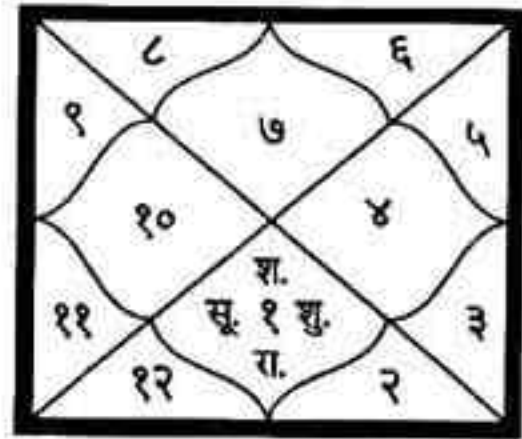
१५५९

(७) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में शुभ ग्रह बलहीन हों तथा पाप ग्रह भी हों (चित्र संख्या १५६०), वह अपने पति को छोड़कर दूसरे पति को अंगीकार करती है।
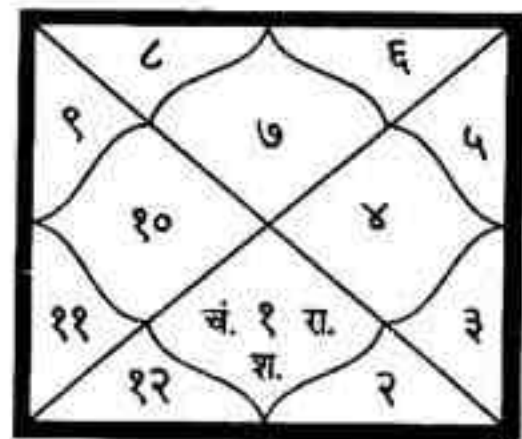
१५६०

(८) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में एक पाप ग्रह बलहीन बैठा हो (चित्र संख्या १५६१) और उसे कोई शुभ ग्रह न देखता हो, तो ऐसी स्त्री को भी उसका पति त्याग देता है।
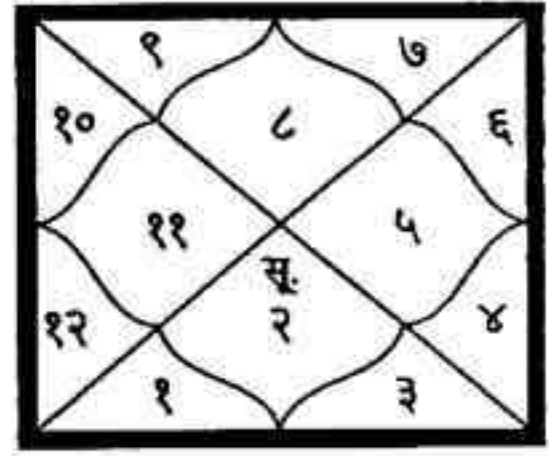
१५६१

(९) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में चंद्रमा के साथ मंगल बैठा हुआ हो (चित्र संख्या १५६२), वह स्त्री अपने पति की आज्ञा से पर-पुरुषगमन करती है।
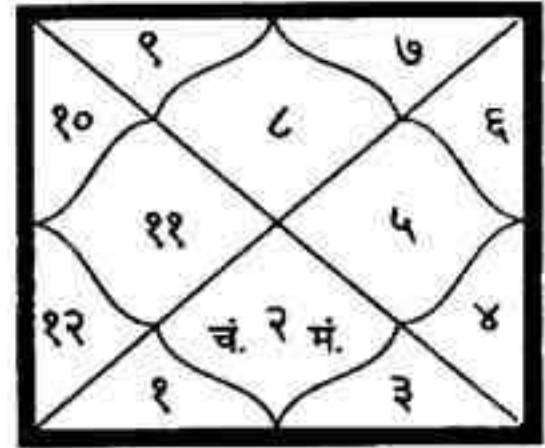
१५६२

(१०) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में मकर, कुंभ, मेष अथवा वृश्चिक में से कोई लग्न हो और वहां चंद्रमा तथा शुक्र दोनों ही बैठे हों (चित्र संख्या १५६३) और उन पर पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पर-पुरुषगमन करती है।
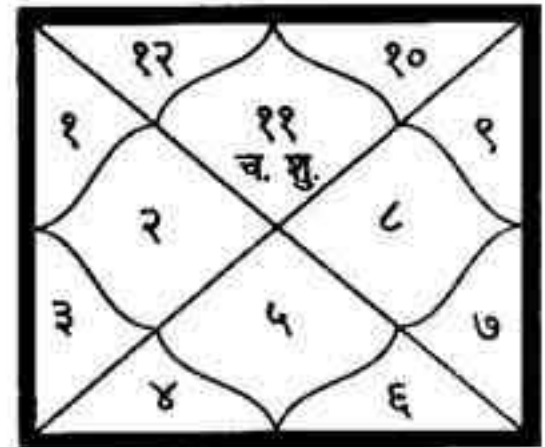
१५६३

(११) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में चंद्रमा और शुक्र दोनों ही बैठे हों (चित्र संख्या १५६४) वह स्त्री ईर्ष्यालु स्वभाव की, दूसरों को संताप देने वाली, परंतु स्वयं सदैव सुखी रहने वाली होती है।
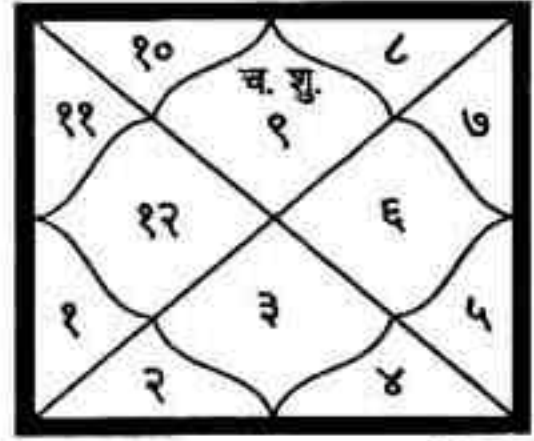
१५६४

(१२) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में बुध और चंद्रमा दोनों ही बैठे हों (चित्र संख्या १५६५), वह गायन-वादन में कुशल, सुखी, गुणवती, सुंदरी तथा सब लोगों को प्रिय होती है।

१५६५

(१३) जिस स्त्री के जन्म-लग्न में बुध, शुक्र तथा चंद्रमा—ये तीनों ही ग्रह बैठे हों (चित्र संख्या १५६६), वह अनेक प्रकार के सुखों से युक्त, धनवती एवं गुणवती होती है।

१५६६

(१४) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में लग्न से आठवें स्थान में कोई पाप ग्रह बैठा हुआ हो और दूसरे स्थान में कोई शुभ ग्रह बैठा हुआ हो (चित्र संख्या १५६७), वह अपने पति से पहले स्वयं मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।
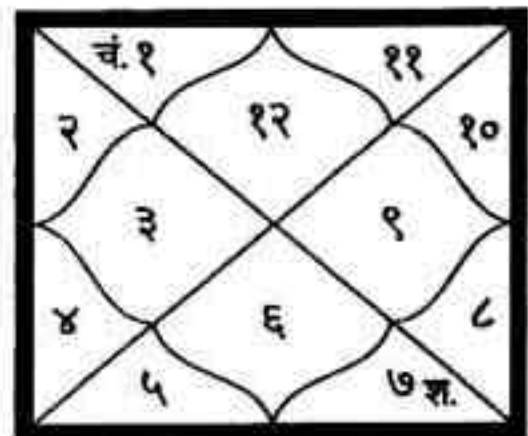
१५६७

(१५) जिस स्त्री के जन्म-काल में शनि मध्य बली हो, चंद्रमा, शुक्र तथा बुध बलहीन हों, सूर्य, मंगल, बृहस्पति बलवान हों तथा लग्न में विषम राशि हो, वह बहु-पुरुषगामिनी होती है।

(१६) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में वृष, वृश्चिक, सिंह अथवा कन्या—इनमें से किसी भी राशि पर चंद्रमा बैठा हो (चित्र संख्या १५६८), वह अल्प पुत्रवती होती है।
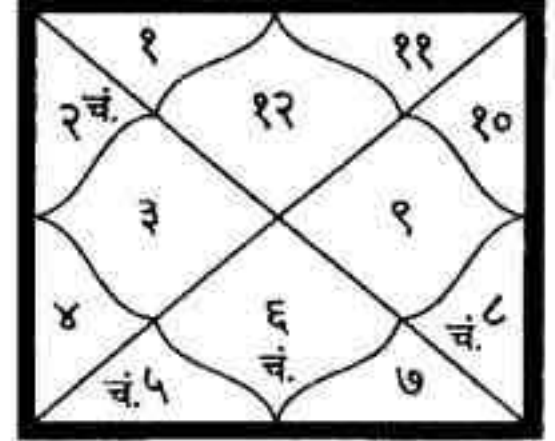
१५६८

(१७) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में मंगल, शुक्र और बुध बलवान हों तथा लग्न में सम राशि हो, वह पृथ्वी पर विख्यात, अनेक शास्त्रों की जानकार, ब्रह्मविद्या में प्रवीण ब्रह्मवादिनी होती है।

(१८) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली के सातवें घर में पाप ग्रह बैठा हो और नवें घर में कोई अन्य ग्रह बैठा हो, तो वह स्त्री संन्यासिनी होती है। नवें घर में जो ग्रह बैठा हो, उसी की प्रव्रज्या समझनी चाहिए अर्थात् यदि सूर्य बली हो, तो वह स्त्री तपस्विनी होती है, चंद्रमा से कपालिनी, मंगल से लाल वस्त्र धारण करने वाली, शुक्र से चक्र धारण करने वाली, शनि से नग्ना, बुध से दंड धारण करने वाली तथा गुरु से यति होती है।

(१९) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में केंद्र में शुभ ग्रह बैठे हों तथा पाप ग्रह ६, ९, १२वें घर में हों तथा सातवें घर में पुरुष राशि हो, वह बड़ी धनवती, ऐश्वर्यशालिनी, शांत स्वभाव वाली, पुत्रवती, रानी अथवा रानी के समान होती है।

(२०) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में, बुध जन्म लग्न में उच्च का होकर बैठा हो तथा गुरु ग्यारहवें घर में हो (चित्र संख्या १५७२) वह राजपत्नी अथवा रानी के समान ऐश्वर्यशालिनी होती है और उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में की जाती है।

१५६९
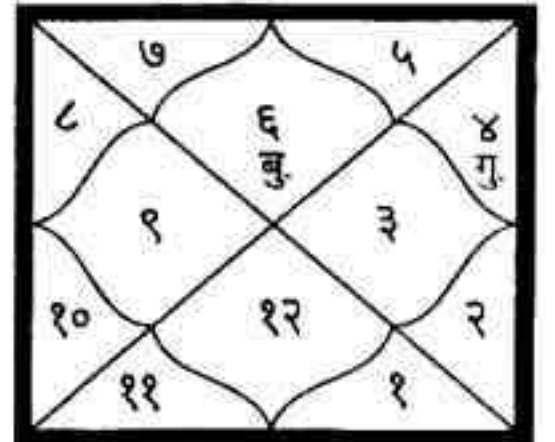
(२१) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में केवल षड्वर्ग में शुक्र केंद्र में बैठा हो और उस पर चंद्रमा की दृष्टि पड़ रही हो तो, वह स्त्री धन-पुत्रादि से संपन्न, सौंदर्यवती, स्थूल नितंबों वाली रानी के समान होती है।

(२२) जिस स्त्री की जन्म-कुंडली में कर्क लग्न का उदय हो, सातवें घर में सूर्य की स्थिति हो और उस पर गुरु की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसी स्त्री रोग रहित, पुत्र-पौत्रों से युक्त, अप्सराओं में प्रधान अथवा रानी के समान सुंदरी एवं ऐश्वर्यशालिनी होती है।

(२३) जिस स्त्री के षड्वर्ग में शुद्ध होकर तीन ग्रह केंद्र में हों, वह रानी होती है। जिसके चार ग्रह नवांश में शुद्ध होकर केंद्रवर्ती हों, वह महारानी होती है और पांच ग्रह शुद्ध होकर केंद्रवर्ती हों, तो वह विमान पर चढ़ने वाली, त्रिभुवन-पति की पत्नी होती है।

विंशोत्तरी महादशा के अनुसार विभिन्न ग्रहों की दशाओं एवं अंतर्दशाओं का फलादेश

ज्योतिष शास्त्र के आचार्यों ने कलियुग में मनुष्यों की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी है। इस आयु-अवधि में नवग्रहों की महादशाएं विभिन्न समय में भोग करती हैं और वे जातक के ऊपर उस अवधि तक अपना विशेष प्रभाव डालती हैं।

ज्योतिषी लोग जन्मपत्रियों में विंशोत्तरी महादशा का चक्र लगा दिया करते हैं। यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में विंशोत्तरी महादशा का चक्र न लगा हो, तो उसे किसी ज्योतिषी द्वारा लगवा लेना चाहिए।

सामान्यत: महादशाओं का निर्धारण इस प्रकार किया जाता है—

कृत्तिका नक्षत्र से आरंभ करके क्रमश: सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र—ये ग्रह तीन आवृत्ति-क्रम से दशाओं के स्वामी होते हैं। अत: कृत्तिका नक्षत्र से जन्म-नक्षत्र तक जो संख्या हो, उसमें ९ का भाग देकर जो संख्या शेष बचे, उससे आरंभ करके उक्त क्रम से ग्रहों की महादशा होती है। किस नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक किस ग्रह की महादशा में उत्पन्न हुआ माना जाता है, इसे सामने दिए गए चक्र के अनुसार समझ लेना चाहिए—

इस प्रकार प्रत्येक जातक के जीवन में सूर्य की महादशा ६ वर्ष, चंद्रमा की महादशा १० वर्ष, मंगल की महादशा ७ वर्ष, राहु की महादशा १८ वर्ष, गुरु की महादशा १६ वर्ष, शनि की महादशा १९ वर्ष, बुध की महादशा १७ वर्ष, केतु की महादशा ७ वर्ष तथा शुक्र की महादशा २० वर्ष तक रहती है। परंतु इन सभी ग्रहों की महादशाएं प्रत्येक जातक के जीवन में भोग करे ही, यह आवश्यक नहीं है। जातक का जन्म जिस ग्रह की महादशा में होता है, वहां से आरंभ

नक्षत्रों द्वारा ग्रहों की महादशा जानने का चक्र

दशाओं के स्वामी	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०
	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वा फाल्गुनी
नक्षत्र	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
दशाओं की अवधि	६ वर्ष	१० वर्ष	७ वर्ष	१८ वर्ष	१६ वर्ष	१९ वर्ष	१७ वर्ष	७ वर्ष	२८ वर्ष

करके जितनी अवधि तक वह जीवित रहता है, उतनी अवधि में जितने ग्रहों की महादशा का भोग संभव होता है, उतने ही ग्रहों की महादशा का भोग वह कर पाता है। शेष ग्रहों की महादशाओं का भोग जातक को अपने पूर्व अथवा बाद के जन्म में करना पड़ता है।

जिस समय जिस ग्रह की महादशा चल रही होती है, उस ग्रह की महादशा की अवधि में भी नौ ग्रहों की दशाएं विभिन्न कालावधि में अपना भोग करतीं तथा जातक के जीवन पर प्रभाव डालती रहती हैं। उन दशाओं को 'अंतरदशा' कहा जाता है। अंतरदशाओं में भी नौ ग्रहों की दशाएं क्रमशः भोग करती हैं, उन्हें 'प्रत्यंतरदशा' कहा जाता है। प्रत्यंतरदशा में भी नौ ग्रहों की दशाओं का भोग होता है, उन्हें 'सूक्ष्मांतरदशा' कहा जाता है और सूक्ष्मांतरदशा में भी नौ ग्रहों की दशाओं का भोग होता है, उन्हें 'प्राणदशा' के नाम से संबोधित किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की महादशा में प्रत्येक ग्रह की अंतरदशा, प्रत्यंतरदशा, सूक्ष्मांतरदशा एवं प्राणदशा का क्रमशः निरंतर भोग होता रहता है और वे सभी जातक के जीवन पर अपना विशिष्ट प्रभाव डालती रहती हैं। गणित के आधार पर इन सभी अंतर, प्रत्यंतर, सूक्ष्मांतर आदि दशाओं को निकालकर, उनके आधार पर जातक के प्रतिदिन के जीवन में घटने वाली घटनाओं की यथार्थ जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

ग्रहों की महादशा अंतर-प्रत्यंतरदशा आदि के गणित का वर्णन इस पुस्तक का विषय नहीं है। उसका ज्ञान ज्योतिष-संबंधी एतद्विषयक पुस्तकों एवं विद्वानों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यहां पर हम केवल महादशा एवं अंतरदशा के ग्रहों का जातक के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसके फलादेश मात्र का ही वर्णन कर रहे हैं। किस ग्रह की महादशा में किन-किन ग्रहों की अंतरदशा कितनी कालावधि तक रहती है, इसे सामने दिए गए चक्रों के अनुसार समझ लेना चाहिए—

विंशोत्तरी 'सूर्य' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

विंशोत्तरी 'चंद्रमा' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

विंशोत्तरी 'मंगल' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

विंशोत्तरी 'राहु' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

विंशोत्तरी 'गुरु' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	गु०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

विंशोत्तरी 'शनि' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

विंशोत्तरी 'बुध' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	६
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	३	९

विंशोत्तरी 'केतु' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

विंशोत्तरी 'शुक्र' की महादशा में अंतर्दशा

अवधि	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	३
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

विंशोत्तरी महादशा के ग्रहों का फलादेश

(१) 'सूर्य' की महादशा में जातक का चित्त उद्विग्न बना रहता है। उसे परदेशवास, चोट, अनेक प्रकार के क्लेश, क्षोभ, धन का नाश, भाई-बंधुओं से वियोग तथा राजकुल से भय आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है।

(२) 'चंद्रमा' की महादशा में जातक के बल, वीर्य, प्रताप, सुख, धन, भोजन आदि की वृद्धि होती है। उसे मिष्टान्न-भोजन, दिव्य-शय्या, आसन, छत्र, वाहन, स्वर्ण, भूमि तथा अन्य अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

(३) 'मंगल' की महादशा में जातक को शस्त्र के द्वारा चोट, अग्नि अथवा रोगों का भय, धन की हानि, चोरी, व्यवसाय में हानि, दैन्य, दु:ख आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

(४) 'राहु' की महादशा में जातक को मति-भ्रम, सर्व-शून्य, विपत्ति, कष्ट, रोग, धन-नाश, प्रिय-वियोग, मृत्यु-तुल्य कष्ट तथा अन्य अनेक प्रकार के दु:खों का सामना करना पड़ता है।

(५) 'गुरु' की महादशा में जातक को राजा से सम्मान, मित्र एवं रत्नों का लाभ, शत्रुओं पर विजय, आरोग्य, शारीरिक बल तथा अनेक प्रकार के सुखों का लाभ होता है। उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

(६) 'शनि' की महादशा में जातक को मिथ्या-अपवाद, बंधन, आश्रय का नाश, धन-धान्य तथा स्त्री से दु:ख, सब कामों में हानि तथा असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

(७) 'बुध' की महादशा में जातक को अनेक प्रकार के भोग, सुख, धन, वैभव तथा दिव्य-स्त्रियों की प्राप्ति होती है। उसके आनंद तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

(८) 'केतु' की महादशा में जातक को अनेक प्रकार की आपत्ति-विपत्ति, भय, रोग, संकट, हानि, विषाद एवं अनर्थों का सामना करना पड़ता है। उसके प्राणों पर भी संकट बना रहता है।

(९) 'शुक्र' की महादशा में जातक को मित्रों द्वारा उत्तम वस्तुओं की प्राप्ति, स्त्रियों द्वारा विलास, धन, हाथी, घोड़ा, वाहन, छत्र, राज्य, संपत्ति आदि की प्राप्ति होती है तथा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं।

आवश्यक टिप्पणी—ग्रहों की महादशा का उक्त फलादेश सामान्य स्थिति में समझना चाहिए। यदि जन्म-कुंडली में राहु, केतु, शनि, मंगल आदि क्रूर अथवा अशुभ फल देने वाले ग्रह उच्च राशि में स्वक्षेत्रगत अथवा शुभ फल देने की स्थिति में बैठे हों, तो उस परिस्थिति में इन अशुभ फल देने वाले ग्रहों की महादशा भी शुभ फलदायक बन जाती है। इसी प्रकार यदि जन्म-कुंडली में चंद्रमा, गुरु, शुक्र आदि शुभ फल देने वाले ग्रह नीच के शत्रु की राशि में अथवा अशुभ फल देने की स्थिति में बैठे हों, तो उस परिस्थिति में इन शुभ फल देने वाले ग्रहों की महादशा में भी अशुभ फल प्राप्त होता है। अंतर केवल यही है कि जन्म-कुंडली स्थित शुभ फलदायक क्रूर ग्रहों की महादशा में अशुभ फल कम मात्रा में मिलता है। इसी प्रकार जन्म-कुंडली स्थित अशुभ फलदायक शुभ ग्रहों की महादशा में जातक को शुभ फल भी कम मात्रा में ही प्राप्त होता है। यही बात अंतरदशा एवं प्रत्यंतरदशा आदि में ग्रहों के फलादेश का निर्णय करते समय भी ध्यान में रखनी चाहिए।

ग्रहों की महादशा के सामान्य फलादेश के संबंध में ऊपर कहा जा चुका है। महादशाओं के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की अंतर्दशाओं के फलादेश को आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सूर्य की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'सूर्य' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक को राजकुल से लाभ प्राप्त होता है, परंतु भाई-बंधुओं से विपत्ति, पित्त के प्रकोप से पीड़ा एवं सदैव खर्च का सामना भी करना पड़ता है।

सूर्य की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक को सुख-प्राप्ति, धनलाभ, विदेश-गमन तथा शत्रु से संधि आदि की प्राप्ति होती है।

सूर्य की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक को स्वर्ण, मणि, रत्न, सवारी, धन तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सूर्य की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को व्याधि, अपमान, शंका, धन-नाश, जनहानि आदि अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

सूर्य की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को धन, धर्म एवं पद की प्राप्ति होती है तथा शारीरिक व्याधियां दूर हो जाती हैं।

सूर्य की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक को राज्य-भंग, भाई-बंधुओं का वियोग तथा शारीरिक विकलता आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

सूर्य की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक को दरिद्रता, क्षुद्रकुष्ठ, खुजली, शिरोरोग आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा उसके शरद्‌कालीन अन्न का नाश होता है।

सूर्य की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को देश-त्याग, धन-नाश, बंधु-नाश आदि विपत्तियां घेर लेती हैं। ऐसा व्यक्ति भ्रमण अधिक करता है और लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है।

सूर्य की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

सूर्य की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक शिरोरोग, अतिसार, ज्वर, शूल आदि रोगों का शिकार बनता है। उसे अन्य प्रकार के शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

चंद्रमा की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'चंद्रमा' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक को वस्त्राभूषण, स्त्री-पुत्र आदि का लाभ होता है। उसे नींद अधिक आती है तथा उसे आत्मपक्ष में लाभ एवं कल्याण की प्राप्ति होती है।

चंद्रमा की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक मंदाग्नि एवं पित्तजन्य व्याधियों से पीड़ित होता है। उसे अग्नि-भय, पदावनति तथा अन्य प्रकार के कष्ट भी उठाने पड़ते हैं।

चंद्रमा की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शत्रु, रोग, अग्नि आदि का भय, धन का नाश, बंधु-बांधवों का नाश आदि दु:खों का सामना करना पड़ता है। उसके लिए सुख प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

चंद्रमा की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को वस्त्राभूषण की प्राप्ति होती है। वह धर्माधर्म का विचार रखता है तथा सब प्रकार से सुखी रहता है।

चंद्रमा की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक को भाई-बंधुओं से उद्वेग, हानि, भय, शोक तथा संदेह की प्राप्ति होती है। व्यसनों के कारण उसे कष्ट उठाना पड़ता है तथा और भी अनेक प्रकार के दोष उपस्थित हो जाते हैं।

चंद्रमा की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक को हाथी, घोड़ा, गाय, वाहन, धन आदि अनेक प्रकार की वस्तुएं प्राप्त होती हैं तथा सुख मिलता है।

चंद्रमा की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को मनोद्वेग, चपलता, धन-हानि, जन-हानि आदि का शिकार बनना पड़ता है।

चंद्रमा की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक के घर में कन्या का जन्म होता है। उसे मणि-मुक्ताहार आदि की प्राप्ति होती है तथा अनेक स्त्रियों के साथ संपर्क रहता है।

चंद्रमा की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

चंद्रमा की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक के शत्रुओं का नाश होता है, रोग नष्ट होते हैं, मनुष्यों में प्रभाव बढ़ता है तथा अनेक प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

मंगल की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'मंगल' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक का भाइयों से विरोध, शत्रुओं से संग्राम एवं पर-स्त्री का साथ होता है। उसे रक्त-पित्त की पीड़ा से भी पीड़ित रहना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'राहु' के अंतर का फ़ल

मंगल की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को अग्नि, शस्त्र, चोर, शत्रु तथा अनेक प्रकार की विपत्तियों से भय, धन-नाश एवं रोग के कारण शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक देवता, ब्राह्मण आदि का पूजन करता है। उसे तीर्थ-यात्रा का लाभ मिलता है, परंतु राजा के द्वारा कुछ भय भी होता है।

मंगल की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक के परिवारी जनों का नाश होता है तथा सहस्रों प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शत्रु, चोर तथा अग्नि आदि से भय होता है तथा किसी अत्यंत क्रूर मनुष्य के द्वारा कष्ट भी उठाना पड़ता है।

मंगल की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को बादल, बिजली, अग्नि, शस्त्र, चोर आदि से भय तथा कष्ट प्राप्त होता है।

मंगल की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शस्त्र-भय, शारीरिक व्याधि, उपद्रव, धन-नाश आदि संकटों का सामना करना पड़ता है तथा परदेश की यात्रा करनी पड़ती है।

मंगल की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक का प्रताप एवं प्रभाव प्रचंड बना रहता है। वह अनर्थकर कार्यों को करता है तथा राजा के साथ शर्त लगाकर विजय प्राप्त करता है।

मंगल की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

मंगल की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक को मणि-माणिक्य, धन, मित्र, राजा द्वारा सम्मान तथा धन एवं विविध प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

राहु की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'राहु' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक के भाई अथवा पिता की मृत्यु, शरीर में रोग, धन का नाश, विदेश-गमन तथा सम्मान की हानि होती है तथा अन्य प्रकार के दु:ख भी भोगने पड़ते हैं।

राहु की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक देवताओं एवं ब्राह्मणों की सेवा करने वाला, धनी तथा व्याधियों से रहित होता है।

राहु की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक को रक्तपित्त की पीड़ा, हाथ-पांव आदि शरीर के किसी अंग का टूट जाना, स्वजनों से कलह तथा मूर्खता के कारण किए हुए कर्मों को त्याग देना आदि कष्ट उठाने पड़ते हैं।

राहु की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक का मित्र एवं भाइयों के साथ स्नेह बढ़ता है। बुद्धि, धन तथा भोग की वृद्धि होती हैं, परंतु इसके साथ ही किसी मामले में थोड़ा-सा क्लेश भी भोगना पड़ता हैं।

राहु की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को ज्वर, अग्नि, शस्त्र तथा शत्रुओं से पीड़ा होती है और उसके प्राण चले जाने का भय भी होता है।

राहु की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक को मित्र के कारण संताप तथा भाई-बंधुओं से कलह एवं कष्ट भोगना पड़ता है। उसे स्त्री, भोग तथा धन का लाभ भी होता है।

राहु की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शस्त्र, रोग, चोर, अग्नि तथा राजा से भय होता है। उसके धन का भी नाश होता है।

राहु की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक को कलह, धन-नाश, बंधु-विरोध तथा अन्य अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्त्री का लाभ भी होता है।

राहु की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

राहु की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शत्रु, शस्त्र, अग्नि तथा चोरों का भय निरंतर बना रहता है। उसे अन्य अनेक प्रकार के कष्ट भी प्राप्त होते हैं।

गुरु की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'गुरु' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक को पुत्र की प्राप्ति तथा धन एवं धर्म की वृद्धि का लाभ होता है। उसे सब वर्ण के लोगों से धन प्राप्त होता है तथा अन्य प्रकार के लाभ होते हैं।

गुरु की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक वेश्या के साथ समागम करता है। वह मद्यपान करता है तथा धन, धर्म, वस्त्र एवं सुख से हीन हो जाता है।

गुरु की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक शरीर से स्वस्थ रहता है। वह गुरु, देवता तथा अग्नि-पूजन आदि सत्कर्म करता है। उसे मित्रों का तथा धन आदि अनेक प्रकार के सुखों का लाभ होता है।

गुरु की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक के पुत्र तथा भाइयों को नो

लगती है। वह स्थान-भ्रष्ट, इधर-उधर भ्रमण करने वाला तथा भोग-रहित होता है।

गुरु की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शत्रु से भय, परिवार में कलह, स्त्रियों से पीड़ा, धन की हानि तथा मानसिक चिंताओं का सामना करना पड़ता है।

गुरु की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा राजा से सम्मान मिलता है। उसके तेज-प्रताप तथा साहस में अत्यधिक वृद्धि होती है और वह अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करता है।

गुरु की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक अनेक स्त्रियों के साथ भोग करता है। उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं। वह राजा के समान प्रतापी, सुख और ऐश्वर्यशाली होता है।

गुरु की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और उसे धन, कीर्ति, स्वास्थ्य, यश एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

गुरु की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

गुरु की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को भाई-बंधुओं से घबराहट, रोग-मृत्यु एवं कलह की प्राप्ति होती है। उसके अपने स्थान का भी नाश होता है।

शनि की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'शनि' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक के शरीर में पीड़ा होती है। पुत्र से कलह, स्त्री के कारण बुद्धि का नाश, विदेश-गमन तथा अन्य अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

शनि की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक को विजय, सफलता, यश, सम्मान, सुख, सौभाग्य तथा मित्रों का लाभ होता है। उसे स्थान, भूमि तथा धन की प्राप्ति भी होती है।

शनि की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को रक्तपित्त-संबंधी पीड़ा, धन-हानि, बंधन, दु:स्वप्न, चिंता आदि अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक को अपने भाई-बंधु तथा मित्रों से स्नेह, पत्नी से प्रेम, वात्सल्य सुख, सौभाग्य, धन, विजय आदि सभी प्रकार के ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

शनि की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक के स्त्री, पुत्र तथा धन का नाश

होता है एवं प्राण बचने का भी संदेह बना रहता है। जातक को अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक को मृत्यु-तुल्य कष्ट, स्त्री-वियोग तथा भाइयों से विरोध आदि दु:ख प्राप्त होते हैं। साथ ही उसे क्रोध, वातरोग, उद्वेग, चिंता आदि का शिकार भी बनना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक अपने देश को त्याग देता है। उसे अनेक प्रकार के रोग एवं दु:खों का सामना करना होता है तथा मृत्यु-तुल्य कष्ट भी उठाना पड़ता है।

शनि की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक के शरीर में वातपीड़ा, ज्वर, अतिसार आदि विकार उत्पन्न होते हैं। वह शत्रुओं से पराजित होता है। उसके धन का नाश होता है तथा अन्य प्रकारों से भी पतन के गड्ढे में गिरता है।

शनि की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

शनि की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक ब्राह्मणों तथा देवताओं की पूजा करने वाला, स्थान, भृत्य, गुण एवं अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करने वाला, धनी तथा यशस्वी होता है।

बुध की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'बुध' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक की वृद्धि तथा धर्म की वृद्धि होती है। मित्रों तथा बंधुजनों से स्नेह प्राप्त होता है। ज्ञान एवं धर्म का लाभ होता है, परंतु शरीर में कुछ पीड़ा बनी रहती है।

बुध की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को अनेक प्रकार के दु:ख, शोक, क्लेश एवं शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

बुध की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक को श्रेष्ठ वस्त्र, आभूषण एवं धन आदि की प्राप्ति होती है तथा धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है।

बुध की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक को उत्तम वस्त्र, स्वर्ण, धन, आभूषण, यश आदि की प्राप्ति होती है, परंतु अपनी स्त्री के कारण उसके मन में उद्वेग की वृद्धि होती है।

बुध की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक को कुष्ठ, गंडमाला, क्षय, भगंदर आदि रोगों का शिकार बनना पड़ता है। हाथी आदि से गिरने का भय बना रहता है तथा अन्य प्रकार के कष्ट भी होते हैं।

बुध की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक के मस्तक तथा कंठ में रोग होता है। उसे चोरों से भय तथा अनेक प्रकार के क्लेशों का सामना करना पड़ता है।

बुध की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को शत्रु से पीड़ा तथा अग्नि से भय प्राप्त होता है। साथ ही आकस्मिक रूप से धन का नाश भी होता है।

बुध की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को व्याधि एवं शत्रुओं के भय से छुटकारा मिल जाता है। उसे राजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। धर्म में प्रवृत्ति होती है। आध्यात्म की वृद्धि होती है तथा स्नेह, पवित्रता आदि सभी सद्गुणों की प्राप्ति होती है।

बुध की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

बुध की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक धन तथा धर्म का उपभोग करता है। उसे मित्रों द्वारा भी धन का लाभ होता है। वह बड़ा गंभीर, धन का उपभोग करने वाला, किसी भी काम को करने में उत्साह न रखने वाला तथा नपुंसक होता है।

केतु की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'केतु' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक को पुत्र-पुत्री की मृत्यु, धन का नाश, अग्नि का भय, दुष्ट स्त्रियों से कलह, रोग आदि अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है।

केतु की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'शुक्र' की अंतर्दशा हो, तो जातक को अग्नि से दाह, तीव्र ज्वर, स्त्री से कलह, स्त्री-त्याग आदि के दु:ख भोगने पड़ते हैं और उसके घर में कन्या का जन्म होता है।

केतु की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक को राजा द्वारा पीड़ा, शत्रुओं से विरोध, अग्नि-दाह, तीव्र ज्वर, विदेश-गमन आदि कष्टों का सामना करना पड़ता है।

केतु की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक को धन की लाभ-हानि, सुख-दु:ख की प्राप्ति, स्त्री का लाभ, यश का नाश आदि दोनों ही प्रकार के शुभ एवं अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

केतु की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक का अपने गांव के लोगों से झगड़ा होता है। उसे चोरों के भय तथा शारीरिक पीड़ा का सामना भी करना पड़ता है।

केतु की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को चोरों का भय, शत्रुओं से

विरोध तथा अन्य प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। उसके अंग-भंग हो जाने की संभावना भी रहती है।

केतु की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक का दुर्जनों अथवा राजमान्य लोगों से संपर्क होता है। उसके घर में पुत्र का जन्म होता है तथा भूमि, धन आदि का लाभ भी होता है।

केतु की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक को स्वजनों से कलह तथा वात-पित्त की पीड़ा का शिकार होना पड़ता है तथा परदेश-गमन भी करना होता है।

केतु की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

केतु की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक को भाई-बंधुओं का स्नेह-संयोग, बुद्धि-लाभ, धन-प्राप्ति आदि अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं और किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं उठाना पड़ता है।

शुक्र की महादशा में 'शुक्र' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'शुक्र' की ही अंतर्दशा हो, तो जातक को निधि, स्त्री-समागम, धर्म, अर्थ, यश, काम तथा अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

शुक्र की महादशा में 'सूर्य' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'सूर्य' की अंतर्दशा हो, तो जातक को उदर रोग, क्षय तथा गंड-रोग आदि का शिकार बनना पड़ता है। उसे राजा, वंध्या स्त्री तथा कपटी मनुष्यों द्वारा भी दुःख भोगना पड़ता है।

शुक्र की महादशा में 'चंद्रमा' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'चंद्रमा' की अंतर्दशा हो, तो जातक को पांडुरोग, शिरोरोग, नखरोग तथा अस्थि संबंधी रोगों का शिकार होना पड़ता है तथा स्वास्थ्य की हानि होती है।

शुक्र की महादशा में 'मंगल' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'मंगल' की अंतर्दशा हो, तो जातक को क्षयरोग तथा पितजन्य रोग होते हैं। उसे पद, उत्साह एवं भूमि का लाभ होता है।

शुक्र की महादशा में 'राहु' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'राहु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को चांडाल मनुष्यों से क्लेश, भाई-बंधुओं से उद्वेग तथा आकस्मिक रूप से भय की प्राप्ति होती है। उसके सुहृद्‌जनों के वध की संभावना भी रहती है।

शुक्र की महादशा में 'गुरु' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'गुरु' की अंतर्दशा हो, तो जातक को धन-धान्य, रत्न, भूमि, पुत्र, स्त्री, ऐश्वर्य एवं प्रभुत्व का लाभ होता है और वह सब प्रकार से सुखी रहता है।

शुक्र की महादशा में 'शनि' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'शनि' की अंतर्दशा हो, तो जातक वृद्धा स्त्रियों के साथ मैथुन

करता है। उसके पुत्रों एवं शत्रुओं का नाश होता है तथा अनेक प्रकार की विपत्तियां उठ खड़ी होती हैं। अंत में जाकर उसे सुख भी प्राप्त होता है।

शुक्र की महादशा में 'बुध' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'बुध' की अंतर्दशा हो, तो जातक को धनागम, राजा द्वारा स्नेह, सम्मान, शौर्य, तेजस्विता, लक्ष्मी, सुख-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती है तथा उसके सभी मनोरथ पूरे होते हैं।

शुक्र की महादशा में 'केतु' के अंतर का फल

शुक्र की महादशा में 'केतु' की अंतर्दशा हो, तो जातक भाइयों से कलह एवं शत्रुओं का नाश करता है। कभी-कभी उसे शत्रुओं द्वारा पीड़ित भी होना पड़ता है। इस प्रकार उसे सुख-दु:ख, हानि-लाभ, जय एवं पराजय, दोनों की ही प्राप्ति होती रहती है।

विशिष्ट योग

जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में विभिन्न ग्रहों की विशिष्ट-स्थिति के कारण कुछ विशेष प्रकार के योग बनते हैं, जो जातक के जीवन पर अपना विशिष्ट प्रभाव डालते हैं। इस अध्याय में उन्हीं विशिष्ट योगों का वर्णन किया जा रहा है।

सिंहासन योग—यदि जन्म-कुंडली के छठे, आठवें दूसरे, तीसरे तथा बारहवें घर में सभी ग्रह विद्यमान हों (चित्र-संख्या १५७०) तो ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक राजसिंहासन पर बैठता है। इसे 'सिंहासन-योग' कहा जाता है।

१५७०

ध्वज योग—यदि जन्म-कुंडली के अष्टमभाव में पाप ग्रह हों तथा अन्य शुभ ग्रह लग्न में हों (चित्र-संख्या १५७१), तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक समाज का नेता होता है। इसे 'ध्वज-योग' कहा जाता है।
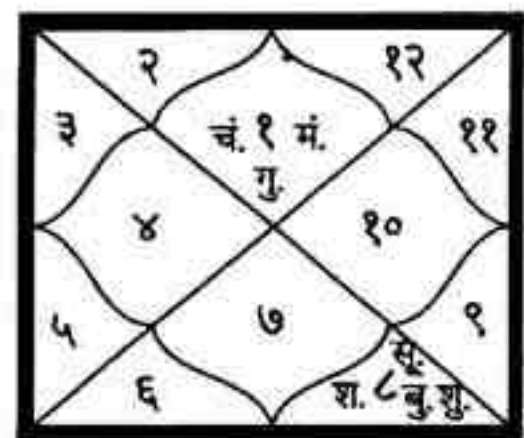
१५७१

हंस योग (१)—यदि जन्म-कुंडली के पांचवें, नवें, सातवें तथा लग्न में सभी ग्रह हों (चित्र-संख्या, १५७२), तो ऐसा जातक अपने कुल को पालने वाला होता है। इसे 'हंस-योग' कहा जाता है।
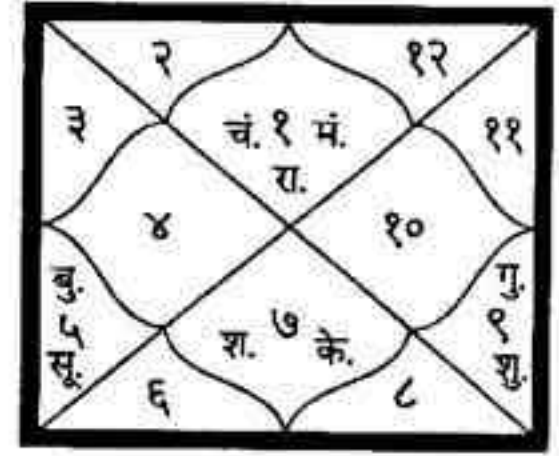
१५७२

कारिका योग—यदि सूर्य आदि सातों ग्रह जन्म-कुंडली के दसवें तथा ग्यारहवें भाव में हों अथवा लग्न और सप्तमभाव में हों, तो (चित्र-संख्या १५७३) ऐसा जातक यदि नीच कुल में जन्मा हो, तो भी राजा होता है। इसे 'कारिका योग' कहा जाता है।
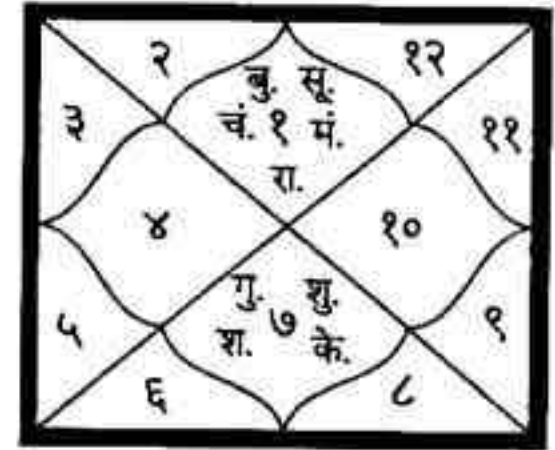
१५७३

एकावली योग—यदि जन्म-कुंडली में लग्न से अथवा किसी स्थान से प्रारंभ करके क्रम से सात भावों में सातों ग्रह हों (चित्र संख्या १५७४), तो ऐसा जातक महाराजा होता है। इसे 'एकावली योग' कहा जाता है।

१५७४

चतु:सार योग (१)—यदि जन्म-कुंडली में सभी ग्रह चारों केंद्रों में हों (चित्र संख्या १५७५), तो ऐसा जातक, महाधनी राजा होता है। इसे 'चतु:सार योग' कहा जाता है।

१५७५

चतु:सार योग (२)—यदि जन्म-कुंडली में सभी ग्रह मेष, कर्क, तुला और मकर—इन चारों राशियों वाले घरों में हों (चित्र संख्या १५७६), तो द्वितीय प्रकार का 'चतु:सार योग' होता है। ऐसा जातक महाधनी राजा होता है और उसके सभी अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं।
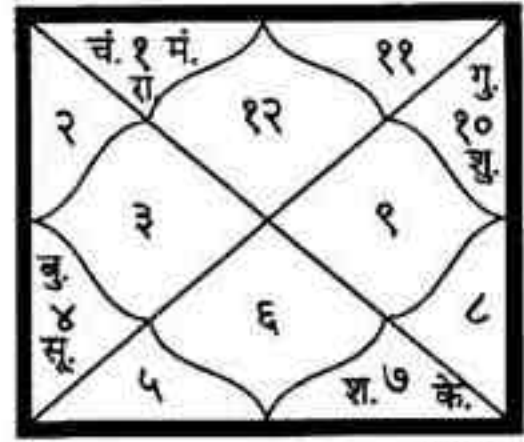
१५७६

अमर योग—यदि जन्म-कुंडली में सभी पाप ग्रह केंद्र में हों (चित्र संख्या १५७७) अथवा सभी शुभ ग्रह केंद्र में हों, तो इन दोनों प्रकार से 'अमर योग' होता है। पाप ग्रहों के 'अमर योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति क्रूर-स्वभाव का राजा होता है तथा शुभ ग्रहों के 'अमर योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य-स्वभाव वाला राजा होता है।

१५७७

चाप योग (१)—यदि जन्म-कुंडली में शुक्र तुला राशि में, मंगल मेष राशि में तथा गुरु अपनी राशि में हों (चित्र संख्या १५७८), तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक राजा होता है। इसे 'चाप योग' कहा जाता है।
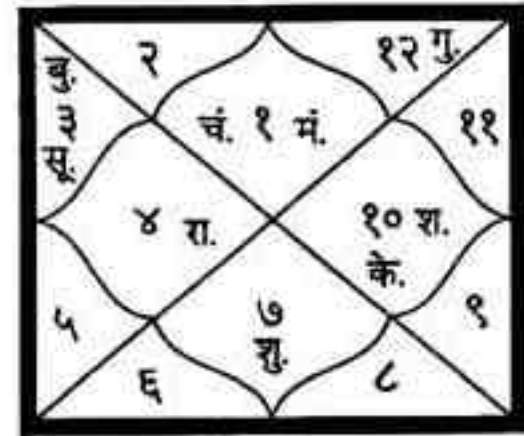
१५७८

दंड योग—यदि जन्म-कुंडली में सभी ग्रह कर्क, मिथुन, मीन, कन्या तथा धनु राशि में स्थित हों (चित्र संख्या १५७९), तो ऐसा व्यक्ति राज्य सिंहासन पर बैठता है। इसे 'दंड योग' कहा जाता है।
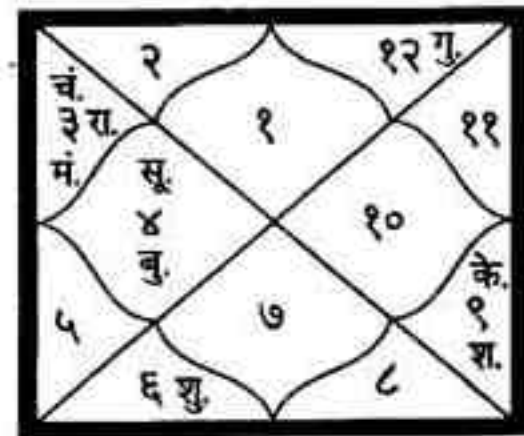
१५७९

हंस योग (२)—यदि जन्म-कुंडली में सभी ग्रह मेष, कुंभ, धनु, तुला, मकर तथा वृश्चिक राशि में हों (चित्र संख्या १५८०)। तो ऐसा जातक राजा अथवा राजा द्वारा पूजित, सब प्रकार के सुखों एवं ऐश्वर्यों का स्वामी होता है। यह भी द्वितीय प्रकार का 'हंस योग' कहा जाता है।
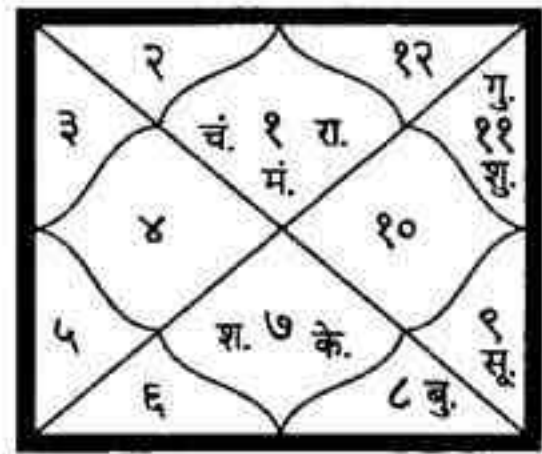
१५८०

वापी योग—यदि जन्म-कुंडली में पहले, दूसरे और बारहवें भावों को छोड़कर अन्य स्थानों में सभी ग्रहों की स्थिति हो (चित्र संख्या १५८१), तो ऐसा जातक अपने कुल में प्रधान, दीर्घायु, गुणी, प्रियवादी, अत्यंत प्रतापी, धैर्यवान, धनी तथा सुखी होता है। इसे 'वापी योग' कहा जाता है। ऐसा जातक वापी-तड़ाग आदि का निर्माण भी करता है।
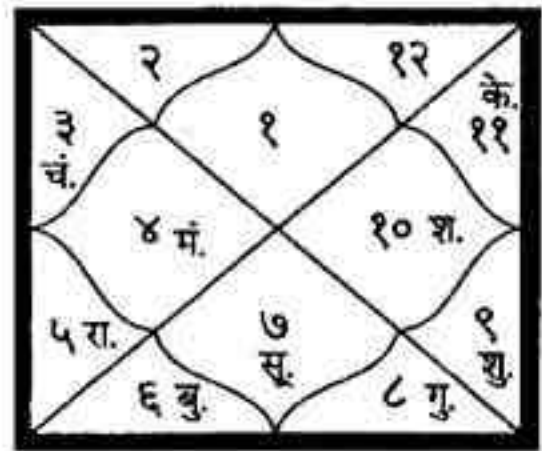
१५८१

अमर योग (२)—मेष अथवा सिंह लग्न हो, सूर्य केंद्र अथवा त्रिकोण में हो अथवा चंद्रमा वृष या कर्क का होकर बारहवें या आठवेंभाव में बैठा हो और इन पर गुरु तथा शुक्र की दृष्टि पड़ रही हो, तो यह दूसरा 'अमर योग' होता है। इस योग के प्रभाव से समस्त अरिष्ट दूर होते हैं तथा जातक दीर्घायु प्राप्त करता है।

यूप योग—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि लग्न, दूसरे, तीसरे तथा चौथे भाव में ही स्थित हों, तो उसे 'यूप योग' समझना चाहिए। 'यूप योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति धैर्यवान उदार, यज्ञ करने वाला, विद्वान, धनवान तथा मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

शर योग—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि चौथे, पांचवें, छठे एवं सातवें भाव में ही स्थित हों, तो उसे 'शर योग' समझना चाहिए। 'शर योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति बाण-विद्या में निपुण, वन-विहार में आनंद प्राप्त करने वाला, सुंदर-स्त्री पाकर भी सुखी न रहने वाला, दुःख से तप्त तथा महाहिंसक होता है।

शक्ति योग—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि सातवें, आठवें, नवें और दसवेंभाव में ही स्थित हों, तो उसे 'शक्ति योग' समझना चाहिए। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध-विद्या में कुशल, आलसी, सुखहीन, वाद-विवाद करने वाला, छोटे-बड़े सब लोगों से प्रेम रखने वाला तथा घर का अल्प सुख भोगने वाला होता है।

दंड योग (२)—सूर्य आदि सातों ग्रह यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें तथा पहले—इन चार भावों में ही स्थित हों, तो उसे दूसरे प्रकार का 'दंड योग' समझना चाहिए। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीन, दरिद्र, नीच, उन्मत्त, लोगों से सुख प्राप्त करने वाला, उद्वेगी, स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, विद्या, बुद्धि आदि से रहित तथा अपने कुल के लोगों से शत्रुता रखने वाला होता है।

नौका योग—लग्न से आरंभ करके लगातार सात भावों में सातों ग्रह हों, तो 'नौका योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति लोक-प्रसिद्ध, जल से उत्पन्न धन-धान्य से युक्त, परंतु सुख-भोग-हीन, लोभी और चंचल स्वभाव का होता है।

कूट योग—जन्म-कुंडली में चौथे घर से आरंभ करके अगले सात घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'कूट योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति धनहीन, नीच कर्म करने वाला, धर्माधर्म का विचार न करने वाला, दुष्ट, वन में बसने की इच्छा रखने वाला तथा भील आदि नीच जनों से प्रेम करने वाला होता है।

छत्र योग—जन्म-कुंडली में सप्तम घर से आरंभ करके अगले सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो छत्र योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दयालु, पंडित, धनी, छत्र-चामर आदि राज्य-चिह्नों से युक्त, राजकर्मचारी तथा बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में सुखी होता है।

चाप योग (२)—जन्म-कुंडली में दशमभाव से आरंभ करके सात भावों में सातों ग्रह स्थित हों, तो 'चाप योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यंत दुष्ट स्वभाव वाला, गर्व से उन्मत्त, धनुष-विद्या में निपुण, वन-पर्वतों में भ्रमण करने वाला तथा बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में सुखी होता है।

अर्द्ध चंद्र योग—जन्म-कुंडली में केंद्र से भिन्न किसी भी स्थान से आरंभ करके निरंतर सात भावों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'अर्द्ध चंद्र योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सेनापति, जननायक, राजा द्वारा उच्च सम्मान प्राप्त करने वाला, धन, वस्त्र, आभूषणों से युक्त तथा चंद्रमा के समान अन्य लोगों के नेत्रों को आनंद देने वाला होता है।

चक्र योग—लग्न से आरंभ करके एक-एक घर को छोड़कर, अर्थात् १, ३, ५, ७, ९, ११ भाव में लगातार सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो उसे 'चक्र योग' कहा जाता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य रूपवान, श्रीमान, अत्यंत प्रतापी, राजाओं से मान्य तथा ऐश्वर्यशाली होता है। उसकी कीर्ति संपूर्ण पृथ्वी पर फैलती है।

समुद्र योग—जन्म-कुंडली में द्वितीयभाव से आरंभ करके एक-एक घर को छोड़कर अर्थात २, ४, ६, ८, १० भावों में लगातार सातों ग्रहों की स्थिति हो तो 'समुद्र योग' कहा जाता है। इस योग में उत्पन्न जातक दयावान, कीर्तिवान, धैर्यवान, दानी, यशस्वी तथा ऐश्वर्यवान होता है। वह राजा के समान कीर्तिवान होता है और अपने कुल को धन्य करता है।

गोल योग—यदि जन्म-कुंडली के एक ही घर में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'गोल योग' होता है। इस योग में उत्पन्न जातक विद्या, बल, बुद्धि, सामर्थ्य, उदारता आदि से हीन, मिथ्यावादी, अनीति में प्रेम रखने वाला तथा दरिद्र होता है।

युग योग—यदि जन्म-कुंडली के दोनों घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'युग योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक निर्लज्ज, धन, पुत्र, धर्म-कर्म आदि से हीन तथा उचित-अनुचित का विचार न करने वाला होता है।

शूल योग—यदि जन्म-कुंडली के तीन घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'शूल योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक निंदित कर्म करने वाला, खल, निष्ठुर, निर्धन, विवाद में तत्पर, झगड़ालू स्वभाव का तथा अन्य लोगों के मन में कांटे की भांति चुभने वाला होता है।

केदार योग—यदि जन्म-कुंडली के चार घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'केदार योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक सत्यवादी, धनी, विजयी, कृतज्ञ, धीर, सदाचारी, कृषि-कर्म करने में चतुर तथा उपकार को मानने वाला होता है।

पाश योग—यदि जन्म-कुंडली के पांचों घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'पाश योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक दीन आकृति वाला, अपकारी, बंधन से दु:खी, दंभी, व्यर्थ बोलने वाला, अनेक प्रकार के अनर्थों से युक्त तथा वन से प्रेम रखने वाला होता है।

दामिनी योग—यदि जन्म-कुंडली के छ: घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'दामिनी योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति धीर, विद्वान, उदार, यशस्वी, संततिवान, सदा सुखी, शीलवान तथा क्रोधी होता है।

वीणा योग—यदि जन्म-कुंडली के सात घरों में सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'वीणा योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक धनी, शास्त्रज्ञ, सब कर्मों में कुशल, अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला तथा सब प्रकार के सुखों का उपभोग करने वाला होता है।

दारिद्रय योग—यदि जन्म-कुंडली के वामभाग में (१२वें से ८वें भाग तक), सूर्य से शनि पर्यंत सातों ग्रहों की स्थिति हो, तो 'दारिद्रय योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दरिद्र होता है।

शकट योग—यदि सूर्यादि सातों ग्रह लग्न तथा सप्तम दो ही स्थानों में हों, तो 'शकट योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य गाड़ी चलाकर अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।

नंदा योग—यदि सूर्य आदि नवग्रह जन्म-कुंडली में तीन स्थानों में दो-दो की संख्या में तथा तीन स्थानों में एक-एक की संख्या में हों, तो 'नंदा योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुखी तथा दीर्घायु होता है।

सर्वार्थदातृ योग—यदि गुरु लग्न में, शुक्र चतुर्थ में, बुध सप्तम में और मंगल दशमभाव में हो, तो वह 'सर्वार्थदातृ योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

राजहंस योग—यदि सभी ग्रह कुंभ, मेष, मिथुन, सिंह, तुला और धनु राशि में हों, तो वह 'राजहंस योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राज्य तथा सुख को प्राप्त करता है।

महापातक योग—यदि चंद्रमा राहु से युक्त हो और उस पर पाप ग्रह के साथ बैठे हुए गुरु की दृष्टि पड़ रही हो, तो वह 'महापातक योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति चाहे इंद्र के कुल में ही क्यों न उत्पन्न हुआ हो, तो भी वह महापापी होता है।

बलीवर्दहंतृ योग—यदि जन्म-लग्न पर मंगल, सूर्य, गुरु अथवा शुक्र की दृष्टि न पड़ती हो, तो वह 'बलीवर्दहंतृ योग' होता है। ऐसे जातक की मृत्यु बैल के द्वारा होती है।

हठहंतृ योग—यदि लग्न से ग्यारहवें स्थान में चंद्रमा हो और सूर्य कर्क राशि में हो, तो जातक की मृत्यु किसी काम में हठ करने के कारण होती है। यदि चंद्रमा पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि भी पड़ रही हो, तो किसी विशेष हठ के कारण मृत्यु होती है।

वृक्षहंतृ योग—यदि लग्न पर राहु की दृष्टि हो, तो 'मदन' नामक योग होता है। इसी को 'वृक्षहंतृ योग' भी कहते हैं। ऐसे जातक की मृत्यु वृक्ष से गिरकर होती है।

नासाच्छेद योग—लग्न से षष्ठभाग में शुक्र हो और लग्न में मंगल हो, तो 'नासाच्छेद योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक की नाक पर किसी शस्त्र का आघात लगता है।

कर्णच्छेद योग—यदि चंद्रमा पर शनि की दृष्टि हो और लग्न में सूर्य तथा शुक्र दोनों ही हों तो 'कर्णच्छेद योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक के कान में किसी शस्त्र का आघात लगता है।

पादखंज योग—यदि शनि अथवा वृहस्पति के साथ शुक्र बैठा हो और उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न पड़ती हो, तो 'पादखंज योग' होता। इस योग में जन्म लेने वाला जातक लंगड़ा होता है।

सर्पभय योग—यदि लग्न से सप्तमभाव में राहु के साथ शनि और सूर्य बैठे हों, तो 'सर्पभय योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को निद्रित अवस्था में अन्य प्रकार से सर्प द्वारा डंसे जाने का भय होता है।

व्याघ्रहंतृ योग—गुरु के स्थान में बुध अथवा शनि के स्थान में मंगल की स्थिति हो, तो 'व्याघ्रहंतृ योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आयु के पच्चीसवें वर्ष में बाघ का भय उपस्थित होता है।

असिघात योग—शुक्र के स्थान में चंद्रमा और चंद्रमा के स्थान में शनि की स्थिति हो, तो 'असिघात योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को आयु के अट्ठाईसवें वर्ष में अपनी तलवार से चोट लगने की संभावना रहती है।

शरहंतृ योग—यदि नवमभाव में मंगल हो और शनि, सूर्य तथा राहु तीनों एक साथ बैठे हों और उन पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न पड़ रही हो, तो 'शरहंतृ योग' होता है। ऐसे जातक की वाण लगने के कारण मृत्यु होने की संभावना रहती है।

ब्रह्महंतृ योग—यदि सूर्य और मंगल एक साथ बैठे हों और बृहस्पति के साथ शनि बैठा हो तथा उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो, तो 'ब्रह्महंतृ योग' होता है। ऐसे जातक द्वारा अपनी आयु के अट्ठाईसवें वर्ष में ब्रह्महत्या होने की संभावना रहती है।

सफल दोला योग—यदि जन्म-कुंडली में स्त्री-ग्रह मीन, मेष तथा धनु—इन तीन राशियों में हों, तो 'दोला योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक राज्य प्राप्त करता है।

राजमंत्रित्व योग—यदि पाप ग्रह से रहित बृहस्पति केंद्र में हो, तो वह 'राजमंत्रित्व योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक दानी, मानी, गुणी, कलाकार, संगीतज्ञ, नृत्य कुशल, धनी, सुखी, नीतिज्ञ तथा राजा का मंत्री होता है।

पद विच्छेद योग—यदि लग्न में मंगल हो और उस पर राहु, शनि तथा सूर्य तीनों ही दृष्टि पड़ रही हो, तो वह 'पद विच्छेद योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का पद (स्थान) विच्छेद होता है।

स्वेच्छामृत्यु योग—यदि जन्म-कुंडली में किसी केंद्र में मंगल हो और सप्तम स्थान

में राहु हो, तो 'स्वेच्छामृत्यु योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक की मृत्यु अपनी इच्छानुसार होती है।

बालारिष्ट योग—यदि लग्न से सप्तम स्थान में चंद्रमा, अष्टम स्थान में पाप ग्रह, लग्न में शुभ ग्रह तथा सूर्य हो, तो 'बालारिष्ट योग' होता है। ऐसे जातक की मृत्यु जन्म से एक वर्ष के भीतर होती है।

अनफा योग—यदि जन्म-कुंडली में चंद्रमा से बारहवें स्थान पर सूर्य को छोड़कर, कोई अन्य ग्रह स्थित हो, तो 'अनफा योग' होता है। अनफा योग का प्रभाव इस प्रकार समझना चाहिए—यदि चंद्रमा से बारहवें स्थान में मंगल हो, तो जातक चोरों का सरदार, मानी, अभिमानी, स्वतंत्र, क्रोधी, झगड़ालू, युद्धकुशल, स्वस्थ तथा सुंदर शरीर वाला, ढीठ एवं संपत्ति को बढ़ाने वाला होता है।

यदि चंद्रमा से बारहवें स्थान पर बुध हो, तो जातक संगीतज्ञ, लेखनकार्य में चतुर, कवि, प्रवचनकर्त्ता, कांतिमान, सुंदर, राजा द्वारा सम्मानित, यशस्वी एवं प्रसिद्ध कर्म करने वाला होता है।

यदि चंद्रमा से बारहवें स्थान पर गुरु हो, तो जातक मेधावी, बुद्धिमान, श्रेष्ठ कवि एवं राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला यशस्वी व्यक्ति होता है।

यदि चंद्रमा से बारहवें स्थान पर शुक्र हो, तो जातक युवतियों का अत्यंत प्रिय, बुद्धिमान, सुंदर, धनी, स्वर्ण से संपन्न, राजा का प्रेमी तथा चतुर व्यक्ति होता है।

यदि चंद्रमा से बारहवें स्थान पर शनि हो, तो जातक सुंदर स्वरूपवान, पशु-धन से धनी, अपने वचन का पालन करने वाला, लंबी भुजाओं वाला, गुणी, पुत्रवान तथा कुशीला स्त्रियों के साथ सहवास करने वाला होता है।

सुनफा योग—यदि जन्म-कुंडली में चंद्रमा से दूसरे स्थान पर, सूर्य को छोड़कर, कोई अन्य ग्रह स्थित हो, तो 'सुनफा योग' होता है। सुनफा योग का प्रभाव इस प्रकार समझना चाहिए—

यदि चंद्रमा से दूसरे स्थान में मंगल हो, तो जातक अपने पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करने वाला, कठोर वचन बोलने वाला, हिंसक, बहुत से लोगों का विरोधी, राजा अथवा प्रतापी पुरुष होता है।

यदि चंद्रमा से दूसरे स्थान पर बुध हो, तो जातक धर्मात्मा, कवि, संगीतज्ञ, शास्त्रज्ञ, मानस्वी, सबका हित चाहने वाला तथा सुंदर शरीर वाला होता है।

यदि चंद्रमा से दूसरे स्थान पर गुरु हो, तो जातक अनेक प्रकार की विद्याओं का आचार्य, राजा अथवा राजा का प्रिय एवं जन-धन, संपन्न होता है।

यदि चंद्रमा से दूसरे स्थान पर शुक्र हो, तो जातक स्त्री, खेत, भूमि एवं भवन का स्वामी, पशुओं से धनी, पराक्रमी, तेजस्वी सब कार्यों में समर्थ तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है।

यदि चंद्रमा से दूसरे स्थान पर शनि हो, तो जातक विवेकी, अत्यंत धनी, यशस्वी, कार्य को गुप्त रखने वाला, नगर एवं ग्रामवासियों से पूजित, परंतु मलिन हृदय वाला होता है।

दुरुधरा योग—यदि जन्म-कुंडली में चंद्रमा से बारहवें तथा दूसरे दोनों ही स्थानों में सूर्य को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो, तो 'दुरुधरा योग' होता है। दुरुधरा योग का प्रभाव इस प्रकार समझना चाहिए—

यदि मंगल और बुध की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक मिथ्यावादी, महाशठ, लोभी, कुल में श्रेष्ठ, कार्य-कुशल, अत्यंत गुणी तथा अत्यधिक धनवान होता है।

यदि मंगल और गुरु की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक कपटी, ढीठ, धन-संचयी, शत्रुता रखने वाला, अपने लोगों की रक्षा करने वाला, परंतु सत्कर्म करने में प्रसिद्ध व्यक्ति होगा।

यदि मंगल और शुक्र की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक सुंदर स्वरूप वाला, शूर-वीर, व्यायामी, युद्ध में उत्साही, अस्त्र-शस्त्र विद्या का जानकार, विवादी तथा सुशीला एवं पतिव्रता पत्नी का पति होता है।

यदि मंगल और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक रतिक्रिया में प्रवीण, व्यसनी, क्रोधी, चुगलखोर, अधिक शत्रुओं वाला तथा बहुत धन संचय करने वाला होता है।

यदि बुध और गुरु की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक शास्त्रज्ञ, धर्मज्ञ, वाणी का धनी, दानी, संपत्ति को बढ़ाने वाला तथा लोक में प्रसिद्ध होता है।

यदि बुध और शुक्र की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक पुण्यात्मा, सुखी, शूर-वीर, राजमंत्री, कांतिमान, प्रियवादी, प्रवृत्तिमार्ग में रत तथा यशस्वी होता है।

यदि बुध और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक अनेक देशों में भ्रमण करने वाला, धन को तुच्छ समझने वाला, विद्वान, स्वजनों द्वारा अनादृत, परंतु अन्य जनों द्वारा सम्मानित होता है।

यदि गुरु और शुक्र की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक नीतिज्ञ, मेधावी, धीर, गंभीर, स्थिर, स्वर्ण-रत्नादि से परिपूर्ण, लोक-विश्रुति, सम्मानित तथा राजकर्मचारी होता है।

यदि गुरु और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो, तो जातक नीतिज्ञ, वैज्ञानिक, सुखी, प्रियवादी, संततिवान, धनी, सुंदर स्वरूपवान, विद्वान तथा सब कामों के करने में समर्थ एवं कुशल होता है।

यदि शुक्र और शनि की स्थिति से दुरुधरा योग बनता हो तो जातक धनी, अनेक विषयों का ज्ञाता, राजा के द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला, सब कामों को करने में चतुर, कुलीन स्त्रियों का प्रिय तथा अपने से अधिक आयु वाली स्त्री का पति होता है।

संक्षेप में, दुरुधरा योग में उत्पन्न जातक सुखी, धनी, भृत्य-वाहनादि से युक्त तथा गुणवान होता है।

केमद्रुम योग—यदि जन्म-कुंडली में चंद्रमा से दूसरे तथा बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह न हो, तो 'केमद्रुम' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री-पुत्र से हीन, दुःखी, अपने कुटुंबियों के सुख से हीन, व्यर्थ बोलने वाला, मलिन वस्त्रधारी, नीच, डरपोक, कुत्सित आचार-विचारों वाला, निर्धन, दूत कर्म करने वाला, परंतु दीर्घायु होता है। ऐसा जातक चाहे राजा के घर में ही जन्म क्यों न ले, फिर भी उसमें उपर्युक्त सभी कुलक्षण पाये जाते हैं। यदि चंद्रमा केंद्र में हो अथवा किसी अन्य ग्रह से युक्त हो तो 'केमद्रुम योग' भंग हो जाता है—ऐसा समझना चाहिए। यदि चंद्रमा पर सभी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो केमद्रुम योग-जनित अशुभ फल नष्ट हो जाता है और जातक दीर्घायु, शत्रुओं को जीतने वाला तथा सार्वभौम राजा के पद को प्राप्त करने वाला होता है।

इसी प्रकार यदि केमद्रुम योग में चंद्रमा पूर्ण बिंब होकर शुभ ग्रह की राशि पर बैठा हो अथवा उस पर बुध, बृहस्पति और शुक्र की दृष्टि पड़ रही हो तो भी अशुभ फल नष्ट हो जाता है तथा जातक धन-पुत्रादि से सुखी होकर लोक में यश, प्रसिद्धि तथा सम्मान प्राप्त करता है।

वोशि योग—यदि जन्म-कुंडली में सूर्य से बारहवें स्थान में चंद्रमा को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो, तो 'वोशि योग' होता है। वोशियोग का फल इस प्रकार समझना चाहिए—

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर गुरु की स्थिति हो, तो जातक धन का संचय करने वाला प्रसिद्ध पुरुष होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर शुक्र की स्थिति हो, तो जातक डरपोक, कामी, थोड़ा काम करने वाला तथा पराधीन होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर बुध हो, तो जातक कोमल स्वभाव वाला, विनम्र परंतु लज्जा-विहीन, दरिद्र तथा अन्य जनों की आलोचना का पात्र होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर मंगल हो, तो जातक परोपकारी, परंतु अपनी माता का अहित करने वाला होता है।

यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर शनि हो, तो जातक दयालु, तंद्रायुक्त स्वभाव वाला, वृद्ध के समान आकृति वाला तथा पर-स्त्रीगामी होता है।

वेशि योग— यदि जन्म-कुंडली में सूर्य से दूसरे स्थान में चंद्रमा को छोड़कर कोई अन्य ग्रह हो, तो 'वेशि योग' होता है। वेशियोग का फल इस प्रकार समझना चाहिए—

यदि सूर्य के दूसरे स्थान पर गुरु हो, तो जातक धैर्यवान, सत्यवादी, बुद्धिमान, संग्राम में वीरता दिखाने वाला होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर शुक्र हो, तो जातक लोक में विख्यात, गुणवान तथा श्रेष्ठ पुरुष होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर बुध हो, तो जातक प्रियवादी, सुंदर, परंतु दूसरों का अपकार करने वाला होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर मंगल हो, तो जातक वाहन चलाने में कुशल तथा युद्ध-क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाला होता है।

यदि सूर्य से दूसरे स्थान पर शनि हो, तो जातक वाणिज्य-कला में कुशल, दूसरों के धन का अपहरण करने वाला तथा गुरुजनों का द्वेषी होता है।

संक्षेप में 'वेशि योग' में जन्म लेने वाला जातक अच्छी स्मरण-शक्ति वाला, श्रेष्ठ वचन बोलने वाला, कमर से ऊपर पुष्ट शरीर वाला, सत्त्वगुणी, मंद गति से चलने वाला तथा भोगी होता है।

उभयचरी योग— यदि सूर्य से दूसरे तथा बारहवें दोनों ही स्थानों पर चंद्रमा को छोड़ कोई अन्य ग्रह स्थित हों, तो 'उभयचरी योग' होता है। उभयचरी योग में जन्म लेने वाले जातक कष्ट-सहिष्णु, समदर्शी, मध्यम शरीर वाला, स्थिर, गंभीर, सतोगुणी, कार्यकुशल, पुष्ट ग्रीवा वाला, सुंदर, बहुत से नौकर रखने वाला, बंधुओं को आश्रय देने वाला, हृष्ट-पुष्ट, भोगी, धनी तथा राजा के समान सुखी तथा उत्साही होता है।

पुत्रहीन योग — (१) जन्म-कुंडली में पांचवें घर का स्वामी छठे, आठवें अथवा बारहवें घर में बैठा हो, तो जातक पुत्रहीन होता है।

(२) जन्म-कुंडली में पांचवें घर का स्वामी किसी स्थान में अस्त होकर सूर्य के साथ बैठा हो, तो जातक पुत्रहीन होता है।

(३) जन्म-कुंडली के पांचवें घर में सूर्य, मंगल, राहु और शनि इनमें से कोई भी एक, दो, तीन अथवा चारों ग्रहों में स्थित हो, तो जातक पुत्रहीन होता है।

(४) जन्म-कुंडली के पांचवें घर में चंद्रमा राहु के साथ बैठा हो, तो जातक पुत्रहीन होता है।

(५) जन्म-कुंडली के पांचवें, दूसरे अथवा दसवें घर में मंगल बैठा हो, तो जातक पुत्रहीन होता है।

(६) जन्म-कुंडली के आठवें अथवा तीसरे घर में शनि बैठा हो, तो जातक पुत्रहीन होता है।

(७) जन्म-कुंडली के पांचवें घर में अकेला चंद्रमा हो, परंतु वह वृद्ध (मृतकावस्था) में हो, तो भी जातक पुत्रहीन होता है।

(८) पांचवें घर का स्वामी स्त्री-ग्रह हो और वह पहले, चौथे, सातवें अथवा दसवें घर में चंद्रमा, बुध, शनि अथवा राहु के साथ बैठा हो, तो जातक पुत्रहीन होता है। यदि पुत्र होता भी है तो वह मर जाता है।

संतान मृत्यु-योग—(१) पांचवें घर में सूर्य राहु, शनि अथवा केतु के साथ बैठा हो, तो जातक की संतान जन्म लेने के बाद मर जाती है।

(२) पांचवें घर में राहु मंगल के साथ बैठा हो, तो जातक की संतान जन्म लेने के बाद मर जाती है। ऐसे जातक की स्वयं की मृत्यु किसी अच्छे तीर्थ स्थान में होती है। यदि एक पुत्र जीवित बच भी जाय, तो अंत में उसके द्वारा दु:ख प्राप्त होता है।

महासागर योग—लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम—इन चारों केंद्र-स्थानों में बुध, गुरु, शुक्र तथा चंद्रमा बैठे हों, तो 'महासागर योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा अथवा राजमंत्री होता है। वह देवता तथा ब्राह्मणों से प्रीति रखता है, परंतु उसका शरीर किसी राजरोग (यक्ष्मा आदि) से दु:खी बना रहता है।

यमाकृति योग—जन्म-कुंडली में राहु, मेष अथवा वृश्चिक राशि का होकर बैठा हो, तीसरे घर में सूर्य की स्थिति हो तथा आठवें घर में बुध और शुक्र के साथ शनि तथा मंगल बैठे हों, तो 'यमाकृति योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यंत दरिद्र तथा संतानहीन होता है।

महिषाकृति योग —जन्म-कुंडली में शनि और राहु चौथे घर में बैठे हों, केतु और मंगल दशमभाव में हों तथा चंद्रमा, शुक्र और सूर्य छठेभाव में हो, तो 'महिषाकृति योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक के बड़े भाई के संतान नहीं होती, माता को अत्यंत कष्ट प्राप्त होता है तथा स्वयं का शरीर भी बार-बार रोगी हो जाता है।

मातृघातक योग—(१) यदि जन्म-लग्न में बृहस्पति, धन-स्थान में शनि तथा तीसरे स्थान में बैठा हो, तो ऐसे जातक की माता जीवित नहीं रहती।

(२) यदि आठवें घर में बृहस्पति, दसवें घर में मंगल और सिंह राशि में शनि हो, उस जातक की माता भी जीवित नहीं रहती।

दारिद्र्य योग—(१) यदि जन्म-कुंडली के चारों केंद्रों में पाप ग्रह बैठे हों, तो जातक दरिद्र होता है।

(२) यदि धन-स्थान (द्वितीयभाव) में सभी पाप ग्रह बैठे हों, तो जातक दरिद्र होता है।

विघात-योग— (१) यदि जन्म-कुंडली में लग्न अथवा ग्यारहवें घर में शनिश्चर, छठे घर में चंद्रमा तथा सातवें घर में मंगल की स्थिति हो, तो जातक के माता-पिता जीवित नहीं रहते ।

(२) यदि जन्म-कुंडली में लग्न तथा सप्तमभाव में पाप ग्रह बैठे हों, तो जातक के माता-पिता को अत्यंत कष्ट प्राप्त होता है और उसकी स्त्री जीवित नहीं रहती।

(३) यदि जन्म-कुंडली में लग्न छठे, आठवें तथा बारहवें इन सभी स्थानों में पाप ग्रह बैठे हों, तो उसकी संतान जीवित नहीं रहती।

(४) जिस जातक की जन्म-कुंडली में लग्न अथवा पंचमभाव में सूर्य, राहु, मंगल तथा शनि स्थित हों, वह अपने माता पिता का नाश करता है और संतानहीन भी होता है।

पुत्र-नाश योग—(१) सूर्य की सिंह राशि में शनि बैठा हो, मंगल की मेष अथवा वृश्चिक राशि में राहु बैठा हो, कन्या राशि में सूर्य बैठा हो तथा शनि की मकर अथवा कुंभ राशि में मंगल बैठा हो, तो जातक के पुत्र की मृत्यु हो जाती है।

(२) लग्न में, चौथे घर में अथवा पांचवें घर में शनि, राहु और मंगल बैठे हों, तो भी जातक के पुत्र की मृत्यु हो जाती है।

(३) तीसरे, छठे, दसवें अथवा ग्यारहवें घर में शनि, राहु और मंगल बैठे हों, तो भी जातक के पुत्र की मृत्यु हो जाती है।

शक्र योग— मेष राशि का सूर्य ग्यारहवें घर में बैठा हो, कर्क राशि का बृहस्पति दूसरे घर में बैठा हो तथा दसवें घर में शुक्र बैठा हो, तो 'शक्र योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति ब्राह्मणों एवं देवताओं का पूजक, श्रेष्ठ स्मरण शक्ति वाला, कांतिमान, नेमी, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है। उसके घर में धन नहीं टिक पाता। वह सदैव चिंतातुर बना रहता है। वह साधुजनों की सेवा करने वाला, लोगों में प्रसिद्ध, सम्मानीय, राजा के समान यशस्वी तथा कीर्तिमान होता है।

विलास हानि योग— (१) सातवें घर का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त होकर मिथुन, सिंह कन्या, तुला अथवा कुंभ राशि में स्थित हो, तो जातक को स्त्री द्वारा दुःख प्राप्त होता है।

(२) मंगल और राहु सातवें घर में बैठे हों और उन पर शनि तथा सूर्य की दृष्टि पड़ रही हो, तो जातक को स्त्री से दुःख होता है।

(३) सातवें घर में राहु और शनि बैठे हों, तो जातक को स्त्री से दुःख होता है।

(४) सातवें घर का स्वामी पाप ग्रहों के साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें स्थान में बैठा हो, तो जातक को स्त्री से दुःख प्राप्त होता है।

शून्य योग—लग्न का स्वामी पाप ग्रह के साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें स्थान में

बैठा हो और मंगल से राहु तीसरे घर में हो, तो 'शून्य' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का चित्त सदैव भ्रमित एवं चिंतित बना रहता है। रात्रि के समय उसका संताप अधिक बढ़ जाता है तथा बीस से तीस वर्ष की आयु के बीच उसे अनेक प्रकार के रोगों का शिकार बनना पड़ता है।

इलाख्यसर्प योग— यदि तीन केंद्रों में पाप ग्रह बैठे हों तो 'इलाख्यसर्प योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दुष्टात्मा, पापी, पर-स्त्रीगामी, ब्राह्मणों तथा देवताओं का निंदक होता है।

विफल योग—यदि चारों केंद्रों में पाप ग्रह बैठे हों और छठे अथवा आठवें घर में चंद्रमा हो, तो 'विफल' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला मनुष्य बत्तीस वर्ष की आयु तक तो सुख भोगता है, उसके बाद वह अनेक प्रकार के दुःख भोगता है तथा दरिद्र हो जाता है।

आम योग—यदि लग्न में शनि, आठवें घर में राहु और चौथे घर में सूर्य तथा मंगल बैठे हों, तो 'आम' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति कोढ़ी, धनहीन तथा दुःखी होता है और छत्तीस वर्ष की आयु में दरिद्र हो जाता है।

दारुण योग—यदि लग्न अथवा आठवें घर में सूर्य हो, छठे तथा बारहवें घर में पाप ग्रह हों और शुभ ग्रह केंद्र तथा त्रिकोण में बैठे हों, तो 'दारुण' नामक योग होता है। ऐसा व्यक्ति शास्त्रज्ञ, धनवान, धर्मात्मा, बहुत से नौकरों वाला, गुणी तथा सभा में बोलने वाला होता है। उसे सोलह वर्ष तक कष्ट मिलता है, तत्पश्चात छत्तीस वर्ष की आयु में वह दुखी होता है। छः वर्ष की आयु तक उसे रोग, शत्रु एवं राजा से भी भय रहता है।

चंद्रयोग—लग्न से पांचवें घर तक सभी पाप ग्रह तथा शुभ ग्रह बैठे हों, तो 'चंद्र योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति धन-वाहन से संपन्न, भोगी तथा धनी होता है, परंतु वह वात-कफ का रोगी होता है और उसे पुत्र की चिंता रहती है।

अर्धाद्‌भुत योग—जन्म-लग्न में चंद्रमा हो तथा शेष शुभ ग्रह केंद्र में हों, तो 'अर्धाद्‌भुत योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सेना का मर्दन करने वाला परम पराक्रमी होता है।

सागर योग—मंगल से शनि तक कोई भी एक ग्रह केंद्र में बैठा हो, तो 'सागर' नामक योग होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपनी चौवालीस वर्ष की आयु तक में धन-अन्न आदि से सुखी तथा प्रतापी बना रहता है, परंतु बाद में दुःख प्राप्त करता है।

विपाक योग—यदि चारों केंद्र शून्य हों और नौवें, पांचवें तथा आठवें घर में सभी पाप ग्रह बैठे हों, तो 'विपाक' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा के समान प्रतापी, परंतु म्लेच्छ बुद्धि का होता है। उसे पुत्रों तथा भाइयों का सुख तो खूब मिलता है, परंतु बाद में धन, शत्रु तथा राजा के कारण विभिन्न चिंता एवं संताप का शिकार बनना पड़ता है।

पात योग—लग्न में अथवा आठवें स्थान में, अथवा छठे स्थान में शनि, राहु और मंगल हों तो 'पात' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक का धन और अन्न नष्ट हो जाता है।

नंद योग—यदि जन्म-कुंडली में दो-दो ग्रह तीन जगह हों और तीन ग्रह एक जगह हों, तों 'नंद' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीर्घायु तथा राजाओं द्वारा पूजित एवं सम्मानित होता है।

ऐंद्रबाहु योग—जन्म-लग्न से चौथे घर तक यदि सभी ग्रहों की स्थिति हो, तो 'ऐंद्रबाहु योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक धनी-मानी, सुखी तथा पराक्रमी होता है।

श्रीनंद योग—मीन राशि में चंद्रमा तथा शुक्र हो, कर्क राशि में बृहस्पति हो तथा तीसरे और ग्यारहवें घर में पाप ग्रह हों, तो 'श्रीनंद' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक धनी-मानी, सुखी, भोगी, शांत, धीर, गंभीर मंत्रोपासना में तत्पर तथा गुणवान होता है।

विपत्ति योग—ग्यारहवें घर में राहु, पांचवें घर में शनि और दसवें घर में मंगल बैठा हो और सूर्य तथा शुक्र की इन पर दृष्टि हो, तो 'विपत्ति' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को अनेक प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

चक्रदामिनी योग—बुध के घर में बृहस्पति बैठा हो, बृहस्पति के घर में शुक्र बैठा हो तथा शुक्र के घर में चंद्रमा बैठा हो, तो 'चक्रदामिनी योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक कमल के समान नेत्रों वाला, दीर्घायु, प्रतापी, चतुर, निपुण, बुद्धिमान, पृथ्वी का स्वामी तथा अल्प-कामी होता है।

संताननाश योग—चौथे घर में राहु बैठा हो और पांचवें घर का स्वामी शनि के साथ हो, तो 'संताननाश योग' होता है। इस योग में जातक के घर में पहले दो-तीन कन्याओं का जन्म होता है। उसके बाद पुत्र का जन्म होता है। ऐसा व्यक्ति क्षीणकांति, कुटिल, प्रपंच, चतुर, यशस्वी, अनेक नौकर रखने वाला, पर-स्त्रियों से रमण करने वाला, दानी, मोटे शरीर वाला तथा लज्जावान होता है, परंतु उसका एक भी पुत्र जीवित नहीं रहता। जप, दान, पुण्य आदि से इस अरिष्ट का निवारण किया जा सकता है।

विपरीत योग—बृहस्पति के घर में सूर्य हो, सूर्य के घर में शुक्र हो, शनि, मंगल और चंद्रमा मेष राशि के होकर छठे अथवा आठवें हों, तो 'विपरीत' नामक योग होता है। इसमें जन्म लेने वाला मनुष्य दु:खी तथा संतानहीन होता है। उसके तीन पुत्र नष्ट हो जाते हैं। दान-पुण्य, धर्म-कर्मादि करने से बाद की संतानें बच सकती हैं।

कूट योग—पांचवें घर का स्वामी और मंगल छठे, आठवें अथवा बारहवें घर में बैठा हो तो 'कूट' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति के पुत्रों की भी मृत्यु हो जाती है। इस अरिष्ट के निवारणार्थ दान-पुण्य धर्म आदि करना आवश्यक है।

राज योग—कर्क राशि में बृहस्पति, नवें घर में शुक्र तथा सातवें घर में मंगल और शनि बैठे हों, तो 'राज योग' में जन्म लेने वाला जातक राजा या महाराजा के समान ऐश्वर्यशाली, प्रतापी, सुखी तथा धनी होता है।

अनुभाव योग—यदि जन्म-कुंडली के ग्यारहवें भाव में राहु, पांचवें में शनि, दसवें में मंगल, आठवें में चंद्रमा तथा छठे में सूर्य-बुध की स्थिति हों, तो 'अनुभाव' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति के भी पुत्र जीवित नहीं रहते तथा पत्नी का गर्भस्राव हो जाता है। दान-पुण्य करने से लाभ होता है।

श्रीमुख योग—यदि जन्म-लग्न में गुरु, नवम, स्थान में शुक्र और सूर्य दशमभाव में हो, तो 'श्रीमुख' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक बीस वर्ष की आयु तक राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करता है। वह हाथी, घोड़ा, धन आदि से संपन्न तथा अत्यंत पराक्रमी होता है।

कपाल योग—पांचवें घर का स्वामी चतुर्थभाव में हो, छठे घर का स्वामी लग्नेश संहित छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में हो और पांचवें घर को शनि, मंगल अथवा सूर्य देखते हों, तो उसे 'कपाल योग' कहा जाता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक के सभी पुत्र नष्ट हो जाते हैं। यदि कोई पुत्र जीवित भी रह जाए, तो वह बुरे कर्म करने वाला होता है।

पिशाच योग—सूर्य के घर में बृहस्पति, बृहस्पति के घर में सूर्य, बुध तथा पांचवें घर में शुक्र सहित मंगल और राहु हों, तो 'पिशाच' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक के घर में पूर्वजन्मकृत पापों के कारण संतान का जन्म नहीं होता ।

विनाश योग—यदि तीसरे घर का स्वामी तीसरे घर में पाप ग्रहों के साथ बैठा हो अथवा वह पाप ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तथा शनि की राशि में बृहस्पति बैठा हो, तो 'विनाश' नामक योग होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति को भी पुत्र, संतान, धन आदि की हानि उठानी पड़ती है।

वाग्भव योग—यदि चौथे, पांचवें, नौवें, ग्यारहवें तथा बारहवें, इन घरों में ही सब ग्रहों की स्थिति हो, तो वह 'वाग्भव योग' होता है। ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक धनी, यशस्वी तथा विद्वान होता है।

आनंद योग—यदि शनि के घर में गुरु और गुरु के घर में शनि हो, शेष शुभ ग्रह तथा पाप ग्रह ग्यारहवें घर में बैठे हों, तो 'आनंद' नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक बाल्यावस्था में दु:खी और युवावस्था से चालीस वर्ष की आयु तक बहुत सुख भोगता है।

अनुज्ञात योग—यदि मंगल के घर में शुक्र, शुक्र के घर में मंगल, चौथे घर में चंद्रमा तथा मेष राशि पर बुध और गुरु हों, तो 'अनुज्ञात योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक सोलह वर्ष की आयु तक अन्न-धन से संपन्न, सामान्य जीवन तथा तीस वर्ष की आयु के बाद राजा के समान वैभव एवं ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है।

द्ररिद योग—(१) चारों केंद्रों में शुभ-ग्रह बैठे हों, परंतु धन-स्थान में पाप ग्रह बैठे हों, तो ऐसा जातक सदैव दरिद्र बना रहता है।

(२) जन्म-लग्न का स्वामी बारहवें घर में बैठा हो तथा दसवें घर में पाप ग्रह बैठा हो और चंद्रमा उसे देखता हो, तो ऐसा जातक सदैव दरिद्र बना रहता है।

(३) सूर्य के नवांश में चंद्रमा और चंद्रमा के नवांश में सूर्य हो तथा सूर्य और चंद्रमा दोनों ही एक राशि पर बैठे हों, तो ऐसा मनुष्य निरंतर दरिद्र तथा दु:खी बना रहता है।

स्त्री मरण योग—(१) जन्म-कुंडली में शुक्र से चौथे अथवा आठवें स्थान पर पाप ग्रह स्थित हों, तो जातक की पत्नी अग्नि से जलकर मरती है।

(२) जन्म-कुंडली में शुक्र पाप ग्रहों के बीच बैठा हो, तो जातक की पत्नी ऊपर से गिरकर मरती है।

(३) यदि शुक्र को कोई शुभ ग्रह देखता न हो और उसके साथ भी कोई शुभ ग्रह न हो, तो जातक की पत्नी की मृत्यु फांसी से होती है।

स्त्री सहित काण योग—जिस जातक की जन्म-कुंडली में जन्म लग्न से बारहवें तथा छठे में चंद्रमा और सूर्य बैठे हों, तो वह अपनी पत्नी सहित काना होता है अर्थात् पति-पत्नी दोनों ही काने होते हैं।

अंगहीन योग—जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य तथा शुक्र दोनों ही लग्न से सातवें, नवें अथवा पांचवें स्थान में बैठे हों, तो वह अंगहीन स्त्री वाला होता है अर्थात् उसकी स्त्री विकलांग होती है।

जितेंद्रिय योग—यदि जन्म-कुंडली में लग्न में अथवा पंचमभाव में बृहस्पति और दशमभाव में चंद्रमा बैठा हो, तो ऐसा व्यक्ति सत्यवादी, जितेंद्रिय, सुंदर, शोभायमान तथा राजा जैसे लक्षणों वाला होता है। वह अपना जीवन सुखी तथा ऐश्वर्यपूर्ण ढंग से व्यतीत करता है।

कुलश्रेष्ठ योग—यदि जन्म-कुंडली में बृहस्पति तुला राशि पर स्थित हो, शुक्र कन्या राशि पर स्थित हो एवं बुध वृष राशि पर स्थित होकर दशमभाव में हो तथा वृश्चिक राशि को पूर्ण दृष्टि से देखता हो, तो ऐसा जातक अपने कुल में श्रेष्ठ, उदार, गुणवान, बुद्धिमान, धनी, सुखी, चतुर तथा प्रतिदिन आनंद का उपभोग करने वाला होता है।

वंध्यापति योग—यदि लग्न में शनिश्चर बैठा हो और कर्क, वृश्चिक तथा मीन के नवांश में प्राप्त शुक्र सातवें घर में स्थित हो तथा पांचवें घर में कोई भी शुभ ग्रह न हो, तो ऐसा व्यक्ति वंध्या स्त्री का पति होता है। यह योग मकर, वृष तथा कन्या लग्न वालों पर ही प्रभाव डालता है।

स्त्री-पुत्र-विहीन योग—यदि जन्म-कुंडली के लग्न, सातवें और बारहवें घर में पाप ग्रह बैठे हों और पंचमभाव में चंद्रमा की क्षीण स्थिति हो, तो ऐसा जातक स्त्री तथा पुत्र से रहित होता है।

तीर्थकृत योग—यदि जन्म-कुंडली के अष्टमभाव में शुभ-ग्रह स्थित हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि भी पड़ रही हो, तो ऐसा व्यक्ति अनेक तीर्थों की यात्रा करता है।

जल-योग—यदि केंद्र में सूर्य, चंद्रमा और शनि बैठे हों अथवा ये ही ग्रह हीन तथा निर्बल स्थिति में हों, तो 'जल योग' होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य ऐश्वर्य, धन तथा चातुर्य से हीन, पराये अन्न की इच्छा रखने वाला, चपल और अत्यंत दु:खी होता है। उसकी प्रकृति जलीय होती है।

चौर योग—(१) यदि छठे घर में बलवान बुध और मंगल बैठा हो, तो जातक चोर होता है। वह अपना कार्य करने में कुशल होता है। हाथ-पांव खंडित होते हैं तथा शत्रु नष्ट होते हैं।

(२) जिसके जन्म-काल में कर्क का शनि तथा मकर का मंगल हो, वह व्यक्ति चोर होता है।

(३) जन्म-कुंडली के तीसरे घर में क्रूर ग्रह हों अथवा ग्यारहवें भवन में क्रूर ग्रह हों और उन पर नीच ग्रह की दृष्टि होती हो, तो जातक चोर होता है।

(४) तीसरे घर में पाप ग्रह, विशेषकर शनि हो और उन पर किसी नीच ग्रह की दृष्टि भी पड़ रही हो, तो जातक चोर होता है।

(५)तीसरे घर में नीच ग्रह हो, मंगल राहु और शनि सहित लग्नेश भी नीच का हो, तो भी जातक चोर होता है।

(६) बारहवें घर में अन्य पाप ग्रह हों तथा तीसरे घर में विशेष रूप से कोई पाप ग्रह बैठा हो तथा इन भावों का स्वामी नीच में बैठा हो, तो जातक चोर पिता की संतान होता है और स्वयं भी चोर होता है।

(७) यदि लग्नेश पाप ग्रह के साथ हो, लग्न में नीच ग्रह बैठा हो और तीसरे घर का स्वामी भी नीच का हो, तो जातक चोरों का राजा होता है।

(८) जन्म-लग्न का स्वामी और लाभेश नीच के होकर पाप ग्रह के साथ बैठे हों तथा एकादशभाव का स्वामी तीसरे घर में बैठा हो, तो जातक भी चोरों का राजा होता है।

भिक्षुक योग—(१) संपूर्ण ग्रह शत्रु के नवांश में अथवा छठे घर में नीच के हों, तो फिर वे जन्म-कुंडली में अपने उच्च के ही क्यों न हों, फिर भी जातक भीख मांगने वाला, श्रेष्ठ कर्मों से हीन तथा नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला होता है।

(२) संपूर्ण ग्रह सप्तांश में नीच के हों अथवा दसवें घर में बैठे हों, तो जातक भिक्षुक होता है।

(३) लग्न का स्वामी बारहवें घर में बैठा हो तथा दसवें घर में मंगल एवं पाप ग्रह सहित चंद्रमा बैठा हुआ हो, तो जातक भीख मांगने वाला होता है।

(४) केंद्र में शनि हो, जन्म लग्न में चंद्रमा हो तथा बारहवें घर में गुरु हो, तो जातक घर से निकला हुआ, गुणहीन, जड़ तथा भिक्षुक होता है।

(५) जन्म-कुंडली में मेष का चंद्रमा हो और उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही हो, तो मनुष्य भीख मांगकर भोजन करने वाला होता है।

(६) मेष के चंद्रमा पर मंगल की दृष्टि पड़ रही हो, तो जातक धनहीन एवं दरिद्र होता है।

कृपण योग—मेष का चंद्रमा लग्न में बैठा हो और उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही हो, तो जातक कृपण होता है।

नीचवृत्ति योग—(१) मेष लग्न में शनि द्रेष्काण में हो और केंद्र पर चंद्रमा की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा जातक चाहे राजकुल में ही उत्पन्न क्यों न हो, नीच कर्मों को करने वाला होता है।

(२) नवम स्थान का स्वामी तथा शनि दूसरे अथवा पांचवें घर में बैठे हों और उन पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो अथवा वे किसी पाप ग्रह के साथ छठे घर में बैठे हों, तो उस मनुष्य का जीवन नीच वृत्ति से पूर्ण रहता है।

(३) चंद्रमा दसवें घर में हो और लग्न से पांचवें, नवें अथवा दूसरे स्थान में शनि स्थित हो, साथ ही आठवें घर में पाप ग्रह बैठे हों, तो ऐसे मनुष्य का जीवन भी नीचवृत्ति से परिपूर्ण रहता है।

स्त्री सह पुंश्चली योग—(१) यदि जन्म-काल में शनि और मंगल के षड्वर्ग में स्थित

शुक्र सातवें घर में बैठा हो और उन पर शनि और मंगल में से किसी एक की दृष्टि पड़ रही हो, तो, पुरुष पर-स्त्रीगामी होता है तथा उसकी स्त्री पर-पुरुषगामिनी होती है।

(२) यदि शनि और मंगल एक ही राशि में चंद्रमा के साथ बैठे हों और शनि अथवा मंगल के नवांशादि वर्ग में शुक्र सातवें स्थान में स्थित हो और शनि अथवा मंगल दोनों में से कोई उसे देखता हो, तो ऐसा मनुष्य पर-स्त्रीगामी होता है तथा उसकी स्त्री पर-पुरुषगामिनी होती है।

भार्या-पुत्र-विहीन योग—यदि जन्म-लग्न में चंद्रमा से सातवें स्थान पर शनि और मंगल हों, तो ऐसा व्यक्ति स्त्री तथा पुत्र से हीन होता है।

वृद्धा-स्त्री वृद्धपुरुष योग—यदि जन्म-लग्न में स्त्री-पुरुष ग्रह एक ही राशि में बैठे हों और उनसे सातवें स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट शनि तथा मंगल बैठे हों, तो ऐसा पुरुष वृद्धावस्था में वृद्धा स्त्री को प्राप्त करता है।

दु:खी योग—(१) शुक्ल पक्ष में बली चंद्रमा लग्न के स्वामी को देखता हो, तो ऐसा जातक तपस्वी, दुर्बल, दीन, दु:खी, धनहीन, शोक संतप्त तथा परजनहीन होता है।

(२) चंद्रमा बुध के नवांश में अधिक बली होकर बैठा हो, शेष सभी ग्रह उच्च राशि में हों तथा चंद्रमा के ऊपर बली शनि की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा जातक दु:खी, तपस्वी तथा दु:ख भोगने वाला होता है।

वंशध्वंसी योग—(१) यदि जन्म-काल में नवें घर का स्वामी बारहवें घर में स्थित हो और जन्म-राशि का स्वामी पाप ग्रह सहित हो तथा लग्नेश अस्त हो, तो जातक वंश का नाश करने वाला, पुत्र और स्त्री से रहित होता है।

(२) यदि जन्म-काल में चंद्रमा, शुक्र, सूर्य, मंगल और शनि दसवें, चौथे तथा सातवें घर में स्थित हों, तो जातक अपने वंश का नाश करने वाला होता है।

शिल्पी योग—जिस राशि संबंधी त्रिशांश में बुध की स्थिति हो और वह राशि केंद्र में स्थित तथा शनि द्वारा दृष्ट हो, तो जातक चित्रकारी, शिल्प कला आदि से अपनी आजीविका उपार्जित करता है।

दासी जात योग—यदि जन्म-काल में शनि के नवांश में शुक्र लग्न से बारहवें स्थान में स्थित हो, तो जातक को दासी-पुत्र समझना चाहिए।

नीच-कर्म-कृत् योग—लग्न से सातवें घर में सूर्य और चंद्रमा दोनों हों तथा शनि की दृष्टि उन पर पड़ रही हो, तो ऐसा जातक नीच कर्म करने वाला होता है।

चांडाल योग—(१) शुक्र और बुध केंद्र में एकत्र बैठे हों तथा चंद्रमा राहु के साथ लग्न में बैठा हो, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक अपने कर्म से हीन चांडाल होता है।

(२) बृहस्पति, केतु, राहु के साथ किसी भाव में बैठा हो और किसी पाप ग्रह की उस पर दृष्टि हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी चांडाल होता है।

(३) बृहस्पति नीच राशि अथवा नीच नवांश में किसी पाप ग्रह के साथ बैठा हुआ हो, तो ऐसा व्यक्ति ब्राह्मण के घर में भी जन्म लेकर चांडाल होता है।

कुलपांसु योग—यदि जन्म-कुंडली में केंद्र में शुभ तथा अशुभ ग्रह बैठे हुए हों और लग्नेश दशम स्थान में हो तथा चंद्रमा की उस पर दृष्टि न हो अथवा धनु राशि के नवांश

में शुभ ग्रह प्राप्त हो, तो 'कुलपांसु योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति परदेश में रहने वाला, अपने घर से च्युत अथवा बहिष्कृत, स्त्री-पुत्रादि से रहित, दोषों का समूह तथा दरिद्र होता है।

पिशाच योग—यदि जन्म-काल में राहु द्वारा ग्रस्त चंद्रमा लग्न में बैठा हो और नवें तथा पांचवें स्थान में शनि अथवा मंगल बैठा हो, तो ऐसे जातक पिशाचवृत्ति का होता है और पिशाच ही उसका इष्टदेव होता है।

अंध योग—(१) सूर्य राहु के साथ लग्न में बैठा हो और नवें अथवा पांचवें घर में शनि अथवा मंगल की स्थिति हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक अंधा होता है।

(२) जन्म समय में सिंह लग्न हो और उसमें सूर्य, चंद्रमा स्थित हों तथा उन पर शनि और मंगल की दृष्टि पड़ रही हो, तो भी जातक अंधा होता है। यदि दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो आंखें छोटी होती हैं और जातक को कम दिखाई देता है। यदि बारहवें स्थान में सूर्य, चंद्रमा बैठे हों, तो जातक बाईं आंख से हीन होता है।

(३) जन्म-कुंडली में दूसरे, छठे, आठवें तथा बारहवें घर में सूर्य, मंगल, शनि और चंद्रमा बैठे हों, तो ये ग्रह अपने बलाबल के अनुसार अन्य ग्रहों के दोष से जातक को अंधा अथवा नेत्रज्योति विहीन करते हैं।

(४) यदि सूर्य, चंद्रमा तीसरे भाव में अथवा केंद्र में बैठे हों और पाप ग्रह की राशि में मंगल केंद्र में स्थित हो तथा आठवें, छठे, और बारहवें घर में शुभ ग्रह बैठे हों और दसवें स्थान में सूर्य हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक भी अंधा होता है।

(५) जन्म-काल में शुक्र और बुध एक साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में स्थित हों, तो जातक को रतौंधी होती है।

(६) शुक्र और सूर्य लग्न के स्वामी के साथ छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में बैठे हों, तो जातक जन्म से ही अंधा होता है।

(७) जिस मनुष्य के जन्म-काल में छठे घर का स्वामी मंगल की राशि में अथवा मंगल के साथ स्थित हो, वह नेत्र रोगी होता है।

म्लेच्छ योग—(१) जन्म-लग्न में शनि तथा सातवें घर में सूर्य की स्थिति हो अथवा ये दोनों ग्रह नवम स्थान में एक ही राशि पर बैठे हों, तो जातक नीच स्त्रियों के संसर्ग से म्लेच्छ हो जाता है।

(२) जिस व्यक्ति के जन्म-काल में सूर्य और शनि द्रेष्काण अथवा नवांश अथवा त्रिशांश में पूर्वोक्त स्थानों में एक राशि में स्थित हों, वह मनुष्य श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होकर भी नीच स्त्रियों के संग से म्लेच्छ (मुसलमान आदि) हो जाता है।

कास्त्री संयोग योग—(१) जिस जातक की जन्म-कुंडली के सप्तमभाव में सूर्य की स्थिति हो, उसका वंध्या स्त्री से संयोग होता है।

(२) यदि सप्तमभाव में मंगल की स्थिति हो, तो रजस्वला अथवा बांझ स्त्री से संयोग होता है।

(३) यदि सप्तमभाव में बुध की स्थिति हो, तो धनहीन-वेश्या अथवा वैश्य वर्ण की स्त्री से संयोग होता है।

(४) यदि सप्तमभाव में गुरु की स्थिति हो, तो ब्राह्मण की स्त्री से संयोग होता है।

(५) यदि सप्तमभाव में शुक्र की स्थिति हो, तो ब्राह्मण की गर्भवती स्त्री से संयोग होता है।

(६) यदि सप्तमभाव में शनि, राहु अथवा केतु की स्थिति हो, तो जातक का हीनवर्ण की स्त्री अथवा रजस्वला स्त्री से संयोग होता है।

(७) यदि सप्तमभाव में शनि हो, तो सांवले रंग की अथवा कुबड़ी स्त्री से संयोग होता है।

(८) यदि सप्तमभाव में राहु हो, तो गर्भवती स्त्री से संयोग होता है।

(९) यदि सप्तमभाव में केतु हो, तो हीन वर्ण की अथवा रजस्वला स्त्री से संयोग होता है।

उच्चपद योग— यदि जन्म-काल में बृहस्पति मकर राशि में बैठा हो और उस पर शुक्र अथवा बुध की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति चाहे शूद्र के घर में ही क्यों न उत्पन्न हुआ हो, वह संपूर्ण विद्याओं को जानने वाला तथा श्रेष्ठ ब्राह्मण के समान होता है।

विप्रघाती योग— नीच राशि का शुक्र नवें स्थान में पाप ग्रह के साथ में बैठा हो और पाप ग्रहों की उस पर दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा जातक विप्रघाती होता है।

बालघाती योग—(१) यदि सूर्य, मंगल और राहु के साथ दसवें घर में बैठा हो, तो ऐसा जातक बालघाती (बालकों की हत्या करने वाला) होता है।

(२) यदि नीचे का बृहस्पति सूर्य के साथ तथा पाप ग्रहों के साथ बैठा हो, तो ऐसा जातक बालघाती होता है।

मृगादिघाती योग—यदि केंद्र में पाप ग्रह बैठे हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा शुक्र अष्टम स्थान में बैठा हो, तो ऐसा मनुष्य गाय, हिरण आदि चतुष्पदों की हिंसा करने वाला होता है।

पक्षिहंता योग—यदि जन्म-कुंडली में चंद्रमा और बुध दसवें स्थान में बैठे हों, उन पर ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो अथवा उनके साथ पाप ग्रह भी हों या नीच के नवांश में बैठे हों और शुभ ग्रहों की दृष्टि न पड़ती हो, तो ऐसा व्यक्ति पक्षियों को मारने वाला होता है और पक्षियों को मारकर ही अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।

दास योग—(१) जन्म-काल में चंद्रमा जिस नवांश में बैठा हो, उस राशि का स्वामी सूर्य, चंद्रमा, मंगल और बृहस्पति अपनी नीच राशि के नवांश में अथवा शत्रु के नवांश में स्थित हों, तो वह मनुष्य दासवृत्ति करता है। इन चारों ग्रहों में से कोई एक हो, तो जातक अपनी आजीविका के लिए दासवृत्ति करता है। दो ग्रह हों, तो वह खरीदा हुआ दास (गुलाम) होता है और जो चारों ग्रह में पूर्वोक्त रीति के अनुसार हों, तो जातक दासी का पुत्र दास होता है।

(२) जिस मनुष्य के जन्म-काल में सूर्य, शनि और मंगल दसवें स्थान में स्थित हों और कोई शुभ ग्रह न देखता हो, तो मनुष्य दास होता है। यदि इन तीनों ग्रहों में से कोई एक हो, तो मनुष्य दासों में भी श्रेष्ठ (प्रधान) होता है। यदि दो हों, तो मध्यम श्रेणी का दास होता है।

धनी योग—(१) लग्नेश जिस नवांश में स्थित हो, उस नवांश का स्वामी गोपुरांश में स्थित हो और उस पर दशमेश की दृष्टि पड़ रही हो, तो मनुष्य सहस्राधिपति होता है।

(२) जिसके जन्म-काल में दशमभाव का स्वामी, नवांशपति और सप्तांशपति—तीनों एकत्र होकर बलवान हों और शुक्र, बृहस्पति देखते हों, तो जातक सहस्राधिपति होता है।

(३) जन्म-काल में बुध के षष्ठांश में दूसरे, ग्यारहवें युक्त हों और उन स्थानों के स्वामी भी उन्हीं स्थानों में स्थित हों, तो जातक सहस्राधिपति होता है।

(४) जन्म-काल में दूसरे घर का स्वामी, द्रेष्काण का स्वामी और सप्तांशपति तीनों एकत्र होकर संपूर्ण बलसहित हों, तो भी जातक सहस्राधिपति होता है।

(५) जिसके जन्म-काल में लग्नेश, द्रेष्काणेश तथा सप्तांशपति—ये तीनों एकत्र होकर वैशेषिकांश में प्राप्त हों, तो वह मनुष्य दस सहस्र रुपयों का स्वामी होता है।

(६) कर्मेश, दृकाणेश तथा सप्तांशपति—ये तीनों ऐरावतांश में बैठे हों, तो ऐसा जातक लखपती होता है।

(७) यदि जन्म-काल में चारों केंद्रों में शुभ ग्रह सिंहासनांश अथवा पारावतांश में हों, तो भी वह जातक लखपती होता है।

(८) जन्म-काल में लाभ, लग्न और धन—इन तीनों स्थानों के स्वामी वैशेषिकांश में प्राप्त हों, तो जातक सुशील, बुद्धिमान तथा लखपती होता है।

(९) जन्म-काल में दूसरे और ग्यारहवें घर के स्वामी वृद्धिकेंद्र में स्थित हों और नवें घर का स्वामी बली हो, तो जातक तीन लाख रुपयों से भी अधिक का स्वामी होता है।

(१०) भाग्य स्थानाधिपति केंद्र अथवा त्रिकोण में बैठा हो तथा ग्यारहवें स्थान के स्वामी के साथ वैशेषिकांश में स्थित हो, तो ऐसा जातक भी तीन लाख रुपयों से भी अधिक का स्वामी होता है।

(११) जन्म-काल में लग्नपति, नवांशपति और भाग्येश परमोच्चांश में स्थित हों तथा ग्यारहवें घर का स्वामी वैशेषिकांश में प्राप्त हो, तो ऐसा जातक करोड़पति होता है।

(१२) यदि लग्न का स्वामी और नवांशपति और भाग्येश दोनों ही एक साथ केंद्र अथवा त्रिकोण में स्थित हों और बृहस्पति उन्हें देखता हो, तो ऐसा जातक ऋण देने वाला (साहूकार) होता है।

(१३) दूसरे और ग्यारहवें घर के स्वामी के साथ त्रिशांशपति और नवांशपति—दोनों को केंद्र या त्रिकोण में वैशेषिकांश में प्राप्त हों, तो ऐसा जातक ऋण देने वाला (साहूकार) होता है।

ऋणी योग—(१) यदि धन-स्थान में पाप ग्रह बैठा हो, लग्नेश बारहवें घर में हो और वह कर्मेश अथवा लाभेश द्वारा दृष्ट अथवा उसके साथ हो, तो जातक ऋणी (कर्ज लेने वाला) होता है।

(२) यदि धन-स्थान का स्वामी नीच राशि में बैठा हो और पाप ग्रहों के षष्ठांश में स्थित हो तथा लाभ स्थानपति उसी षष्ठांश में हो, तो भी मनुष्य ऋणी होता है।

(३) सूर्य द्वारा अस्त धन-स्थान का स्वामी नीच राशि में पाप ग्रहों के साथ दूसरे या आठवें स्थान में बैठा हो, तो जातक ऋणी होता है।

ज्योतिर्विद योग—बुध केंद्र में बैठा हो, गुरु बली हो, शुक्र धन-स्थान में हो तथा तीसरे घर में शुभ ग्रह हो अथवा धन स्थान में उच्चराशि का शुक्र बैठा हो, तो ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ ज्योतिषी होता है।

गणितज्ञ योग—(१) पांचवें घर में मंगल हो और चंद्रमा सहित बुध की उस पर दृष्टि पड़ रही हो अथवा बुध केंद्र में स्थित हो, तो जातक गणित-शास्त्र का जानकार होता है।

(२) पांचवें घर का स्वामी और बुध उच्च राशि में स्थित हों, लग्न में गुरु हो तथा अष्टमभाव में शनि बैठा हो, तो जातक गणितशास्त्र का विद्वान होता है।

(३) केंद्र अथवा त्रिकोण में गुरु हो, शुक्र उच्च राशि का होकर त्रिकोण में स्थित हो अथवा पंचमभाव का स्वामी और बुध दोनों त्रिकोण में स्थित हों, तो भी मनुष्य गणित-शास्त्र का ज्ञाता होता है।

न्यायशास्त्रज्ञ योग—जन्म-काल में गुरु, शुक्र और धनेश मूल त्रिकोण अथवा उच्च राशि में स्थित केंद्र-त्रिकोणवर्ती हों और सूर्य, मंगल इन्हें देखते हों, तो जातक न्यायशास्त्र के जानकारों में श्रेष्ठ होता है।

व्याकरणशास्त्रज्ञ योग—जन्म के समय गुरु बली और पंचम घर का स्वामी हो तथा सूर्य और शुक्र की उस पर दृष्टि पड़ती हो, तो जातक व्याकरणशास्त्र का जानकार होता है।

वेदांतज्ञ योग—यदि केंद्र अथवा त्रिकोण में बृहस्पति हो, तो जातक वेदांतशास्त्र का जानकार होता है।

काव्यशास्त्र योग—(१) यदि केंद्र अथवा त्रिकोण में बुध शुक्र के साथ बैठा हो, तो जातक काव्य-शास्त्र का पंडित होता है।

(२) यदि पंचम घर में शुक्र स्थित हो और पंचमेश केंद्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो एवं चंद्रमा सहित गुरु की उस पर दृष्टि पड़ रही हो, तो जातक काव्य-शास्त्र का विद्वान होता है।

विविध विद्या योग—(१) यदि जन्म-कुंडली में केंद्र में गुरु और शुक्र बैठे हों, तो मनुष्य छहों शास्त्रों को जानने वाला होता है।

(२) यदि पंचम घर में सूर्य और मंगल स्थित हों, तो ऐसा मनुष्य वैद्य-विद्या को जानने वाला होता है।

(३) यदि बृहस्पति केंद्र में हो अथवा पाप ग्रह के साथ त्रिकोण में बैठा हो, तो मनुष्य तंत्रशास्त्र का ज्ञाता होता है। यदि मंगल पाप ग्रहों के साथ केंद्र अथवा त्रिकोण में बैठा हो, तो वह जातक भी तंत्रशास्त्र का जानकार होता है।

(४) यदि जन्म-लग्न में चंद्रमा बैठा हो तथा पंचमेश पाप ग्रहों के साथ बैठा हो अथवा पंचम भवन में पाप ग्रह बैठा हो, तो वह जातक अरबी व फारसी आदि का जानकार होता है।

(५) यदि पांचवें घर में सूर्य और मंगल हों अथवा राहु, शनि और शुक्र में से कोई ग्रह बैठा हो, साथ ही इन पर पाप ग्रहों की दृष्टि भी पड़ती हो, तो जातक अंग्रेजी भाषा का जानकार होता है।

(६) यदि त्रिकोण में सूर्य या शुक्र बैठे हों और वे राहु, शनि अथवा केतु के साथ हों तो ऐसा व्यक्ति जैनशास्त्र का जानकार होता है।

(७) यदि लग्न में शनि व मंगल हों, गुरु चंद्रमा के नवांश में हो और राहु अथवा केतु के साथ बैठा हो, तो जातक सर्प पकड़ने की विद्या में प्रवीण होता है।

धर्माध्यक्ष योग—बृहस्पति अथवा शुक्र अपनी उच्च राशि में बैठा हो, शुभ ग्रह अपने मित्र के नवांश में स्थित हों तथा नवम घर का स्वामी बली हो, तो ऐसा जातक धर्माधिकारी होता है।

दानाध्यक्ष योग— (१) बृहस्पति अथवा शुक्र केंद्र में बैठे हों और उन पर नवमभाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही हो, तो जातक दानाध्यक्ष होता है।

(२) नवमभाव का स्वामी लग्न में बैठा हो और गुरु अथवा शुक्र केंद्र अथवा त्रिकोण में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दानाध्यक्ष का पद प्राप्त करता है।

(३) यदि नवें घर का स्वामी चौथे घर में बैठा हो तथा बारहवें घर के स्वामी को बृहस्पति देखता हो, तो ऐसा जातक महादानी होता है।

(४) यदि भाग्येश द्वारा दृष्ट बुध उच्च राशि में स्थित हो तथा लाभेश केंद्र में बैठा हुआ हो, तो ऐसा जातक भी महादानी होता है।

गुरु-भक्ति योग—(१) नवें भाव का स्वामी नवांश के स्वामी के साथ हो और शुक्र तथा बृहस्पति उसे देखते हों, तो ऐसा जातक भी गुरु-भक्त होता है।

(२) नवें घर में कोई शुभ ग्रह बैठा हो, बृहस्पति संबंध करता हो तथा नवें भाव का स्वामी लग्न में स्थित हो, तो ऐसा जातक भी गुरु-भक्त होता है।

गुरु-पत्नी-गमन योग—(१) चंद्रमा पाप ग्रह सहित नवें स्थान में बैठा हो, तो ऐसा जातक गुरु-पत्नी के साथ रमण करने वाला होता है।

(२) शुक्र पाप ग्रह के साथ नवें स्थान में बैठा हो, तो ऐसा व्यक्ति भी गुरु-पत्नी-गामी होता है।

(३) नवम स्थान का स्वामी और नवांशपति पाप ग्रह हों, तो ऐसा जातक गुरु-पत्नी सदृश स्त्रियों के साथ रमण करने वाला होता है।

(४) चंद्रमा नवम स्थान में किसी पाप ग्रह के साथ बैठा हो, तो ऐसा जातक अपने से अधिक आयु वाली स्त्रियों के साथ रमण करता है।

काण योग—(१) यदि जन्म-कुंडली के दूसरे घर में शुक्र किसी पाप ग्रह के साथ बैठा हो, तो जातक काना होता है या उसकी आंखें छोटी होती हैं।

(२) धन-स्थान में सूर्य, राहु अथवा शनि बैठा हो तथा धन-स्थान का स्वामी अस्त हो, पाप ग्रह के साथ हो और धन-स्थान को देखता भी ने हो, तो जातक काना होता है।

(३) बारहवें घर में सूर्य तथा राहु बैठे हों और धन-स्थान का स्वामी अस्त हो या शनि के साथ बैठा हो, तो जातक काना होता है।

मूक योग—यदि शुक्र किसी पाप ग्रह के साथ नवांशगत द्वितीयभाव में बैठा हो, तो जातक गूंगा होता है।

तुतला योग —यदि शुक्र किसी पाप ग्रह के साथ तीसरे घर में तीसरे नवांश में बैठा हो, तो जातक तोतला होता है।

बधिर योग —यदि जन्म-काल में तीसरे, नवें, पांचवें तथा ग्यारहवें स्थान में पाप ग्रह हो और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट भी न हों, तो जातक बहरा होता है।

दंतरोगी योग—(१) यदि जन्म-कुंडली के दूसरे घर में राहु की स्थिति हो, तो ऐसा मनुष्य बड़ें दांतों वाला तथा दंतरोगी होता है।

(२) यदि मंगल की राशि में छठे घर का स्वामी बैठा हो, मंगल लग्न में बैठा हो, लग्नेश और शनि की उस पर दृष्टि हो, तो भी जातक दंतरोगी होता है।

(३) अष्टमभाव में शुक्र और शनि बैठे हों तथा अष्टमेश सप्तमभाव में बैठा हो, तो भी जातक दंतरोगी होता है।

कुष्ठी योग- (१) मेष, मकर, मीन और कर्क –इन नवांशों में चंद्रमा पाप ग्रहों के बीच बैठा हो तथा शनि के ऊपर मंगल की दृष्टि हो, तो जातक कुष्ठी होता है।

(२) जन्म-काल में नवें, पांचवें घर में वृष, कर्क, वृश्चिक अथवा मकर में से कोई राशि हो, इन घरों में पाप ग्रह बैठे हों अथवा पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो जातक अवश्यमेव कोढ़ी होता है।

उन्माद योग- (१) लग्न, नवें अथवा पांचवें घर में सूर्य और चंद्रमा स्थित हों और शनि तथा गुरु केंद्र में बैठे हों, तो ऐसा मनुष्य विक्षिप्त अथवा उन्मादी होता है।

(२) शनि अथवा मंगल लग्न में हों, बुध और चंद्रमा केंद्र में हो और वे सौम्यांशहीन हों, तो भी ऐसा जातक उन्माद रोग से युक्त होता है।

(३) चंद्रमा पाप ग्रह के साथ तथा राहु के साथ बारहवें घर में बैठा हो तथा शुभ ग्रह आठवें घर में बैठा हो, तो ऐसा मनुष्य क्रोधी, कलह-प्रिय तथा विक्षिप्त होता है।

(४) लग्न, नवम तथा पंचम स्थान में सूर्य और चंद्रमा बैठे हों, केंद्र में अथवा तीसरे घर में गुरु, शनि और मंगल बैठे हों तथा दिन के समय का जन्म हो, तो जातक विक्षिप्त मनुष्य जैसा होता है।

राजमान्य योग- (१) वृष-लग्न में जन्म हुआ हो और लग्न में चंद्रमा बैठा हो तथा छः ग्रह उच्च के किसी भी भाव में स्थित हों, तो ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं प्रतापी होता है।

(२) सब ग्रह मूल त्रिकोण राशि में बैठे हों अथवा मंगल के साथ मित्र राशि में हों अथवा किसी घर में उच्च के हों, परंतु नवांश में नीचगत न हों, तो ऐसा जातक राजा के समान होता है।

(३) लग्न में चंद्रमा और गुरु, दसवें भाव में शुक्र और तुला, मकर अथवा कुंभ में शनि हो, तो जातक राजा के समान होता है।

(४) दसवें, ग्यारहवें, लग्न, दूसरे तथा तीसरे भाव में संपूर्ण शुभ ग्रह बैठे हों, तो जातक राजा के समान होता है।

(५) केंद्र अथवा त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें में पाप ग्रह हों और लग्न का स्वामी बलवान हो, तो मनुष्य राजा के समान होता है।

(६) गुरु बुध के साथ बैठा हो अथवा बुध के द्वारा दृष्ट हो तथा गुरु मीन का अथवा धनु राशि होकर केंद्र में हो, तो ऐसा जातक की आज्ञा को राजागण भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं।

(७) चंद्रमा केंद्र में हो और गुरु लग्न को छोड़कर नवम अथवा पंचम दृष्टि से केंद्र को देखता हो, साथ ही बलवान दृष्टि से शुक्र भी देखता हो, तो जातक राजा के समान भाग्यशाली होता है।

(८) जो जन्म लग्न में नीच के ग्रह बैठे हों तथा नवांश में उच्च के हों तो भी जातक राजा के समान भाग्यशाली होता है। परंतु यदि जन्म-कुंडली में उच्च के हों और नवांश में नीच के हों तो जातक भाग्यहीन होता है।

(९) लग्न में गुरु हो तथा बुध केंद्र में बैठा हो और वह नवें घर के स्वामी द्वारा दृष्ट हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१०) सातवें, नवें अथवा पांचवें भाव में गुरु बैठा हो और लग्नेश की उस पर दृष्टि हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(११) केंद्र, नवें अथवा पांचवें घर में शनि हो और वह अपनी उच्च राशि अथवा मूल त्रिकोण राशि में हो तथा दशमभाव पर शनि की दृष्टि हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१२) नीच का बृहस्पति लग्न में बैठा हो तथा नवें घर का स्वामी आठवें चंद्रमा के नवांश में हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१३) लग्न से छठे घर तक सभी ग्रह बैठे हों, तो जातक राजमान्य होता है।

(१४) नवें घर का स्वामी चंद्रमा के साथ दूसरे घर में बैठा हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१५) पाप ग्रह दशमेश सहित क्रमशः लग्न से छठे घर तक में बैठे हों, तो जातक राजमान्य होता है।

(१६) चंद्रमा जिस राशि में बैठा हो, उस राशि के नवांश का स्वामी केंद्र, त्रिकोण अथवा ग्यारहवें घर में अथवा बुध के साथ बैठा हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१७) चंद्रमा मंगल के साथ दूसरे अथवा तीसरे घर में हो अथवा राहु के साथ पांचवें घर में हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१८) नवें घर के स्वामी के साथ नवांशपति चौथे घर में हो अथवा पांचवें भाव के स्वामी के साथ हो, तो जातक राजमान्य होता है।

(१९) मीन का राहु शनि के साथ बैठा हो और नवमेश की उस पर दृष्टि हो तथा लग्नेश नीच ग्रह के साथ हो, तो जातक राजा के समान होता है।

(२०) मंगल, शनि, सूर्य और गुरु—ये चारों ग्रह अपनी उच्च राशियों में एक-एक के सामने केंद्र में बैठे हों, तो चार राजयोग होते हैं। शेष ग्रह चाहे जहां बैठे हों, परंतु इन्हीं चार ग्रहों में से तीन ग्रह अपनी उच्च राशियों मे बैठकर सम्मुख केंद्रवर्ती हों, तो बारह राजयोग होते हैं। ऐसे पहले के चार मिलकर सोलह राजयोग होते हैं। इन्हीं चारों ग्रह में से दो ग्रह अपनी उच्च राशियों में बैठकर केंद्र में हों तथा चंद्रमा कर्क राशि में बैठा हो, तो बारह राजयोग होते हैं। उन्हीं चार ग्रहों में से एक ग्रह अपनी उच्च राशि का होकर लग्न में बैठा हो, चंद्रमा कर्क में हो तथा शेष ग्रह कहीं भी बैठे हों, तो चार राजयोग होते हैं। पहले के बारह योग मिलकर सोलह और सब मिलाकर कुल बत्तीस राजयोग होते हैं।

(२१) जन्म का लग्न मेष, कर्क, तुला अथवा मकर हो तथा इनके पहले नवांश में जन्म हो; यदि वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ लग्न हो और इनके पांचवें नवांश में जन्म हो; यदि मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्न हो और इनके नौवें नवांश में जन्म हो; चंद्रमा लग्न में हो या न हो, चंद्रमा को छोड़कर चार, पांच अथवा छः ग्रह लग्न को देखते हों, तो चौवालीस राजयोग होते हैं। यही योग, चंद्रमा लग्न में हो और ये ग्रह देखते हों, तो बाईस राजयोग होते हैं। चंद्रमा लग्न में न हो और यही ग्रह देखते हों तो भी बाईस राजयोग होते हैं। परंतु यदि चंद्रमा देखता हो, तो योग भंग हो जाता है।

(२२) यदि जन्म-लग्न में पांच ग्रह उच्च के हों, तो मनुष्य चक्रवर्ती राजा होता है अथवा मंत्री तो होता ही है।

(२३) जन्म-काल में बुध उच्च राशि का हो, मंगल व शनि मकर राशि में हों और बृहस्पति, चंद्रमा तथा शुक्र मिलकर धनु राशि में बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति मंहाराजधिराज होता है।

(२४) सूर्य सिंहराशि में हो, मंगल मकर में, शनि कुंभ में तथा चंद्रमा मीन में हो और लग्न भी मीन ही हो, तो जातक महाराजा होता है।

(२५) मंगल मेष राशि का होकर लग्न में बैठा हो, तो जातक राजा होता है।

(२६) गुरु कर्क लग्न में हो तथा मंगल मेष राशि का होकर दशमभाव में बैठा हो, तो ऐसा जातक शत्रुजयी, राजनीतिज्ञ तथा राजा होता है।

(२७) बृहस्पति उच्च का होकर लग्न में बैठा हो, दशमभाव में मेष का सूर्य हो तथा शनि, शुक्र और बुध ग्यारहवें भाव में बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा पराक्रमी राजा होता है।

(२८) शनि मकर राशि का होकर लग्न में बैठा हो, सूर्य सिंह राशि का, बुध मिथुन का, मंगल मेष का, शुक्र तुला का तथा चंद्रमा कर्क का हो, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक समुद्र-पर्यंत पृथ्वी का स्वामी होता है।

(२९) शुक्र मिथुन का हो, बुध कन्याराशि का होकर लग्न में बैठा हो, मंगल तथा शनि मकर राशि में हों तथा चंद्रमा और गुरु मीन राशि में हो, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, बड़ा पराक्रमी तथा ऐश्वर्यशाली राजा होता है।

(३०) सिंह का सूर्य लग्न में हो, मेष में चंद्रमा, कुंभ में शनि, धनु में गुरु तथा मकर में मंगल हो, तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक राजाओं का राजा होता है।

(३१) मेष का गुरु लग्न में हो, चंद्रमा चौथे तथा शत्रु दशमभाव में हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा भारी राजा होता है।

(३२) कर्क का गुरु लग्न में हो, सातवें, चौथे अथवा दसवें स्थान में शुक्र, शनि और मंगल हो, तो व्यक्ति बड़ा प्रतापी राजा होता है।

(३३) वृष का चंद्रमा लग्न में बैठा हो, चौथे, सातवें तथा दसवें भाव में सूर्य, गुरु तथा शनि बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति अत्यंत प्रतापी तथा यशस्वी राजा होता है।

(३४) गुरु, चंद्र, बुध और शुक्र लग्न, तीसरे, नवें तथा ग्यारहवें भाव में बैठे हों तथा मकर का शनि लग्न में बैठा हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजाधिराज होता है।

(३५) जन्म-काल में मीन राशि का शुक्र बुध के साथ लग्न में बैठा हो, मंगल मकर राशि का और गुरु तथा चंद्रमा धनु राशि के हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति संपूर्ण पृथ्वी का स्वामी होता है।

(३६) जन्म-काल में गुरु उच्च कर्क का होकर केंद्र में बैठा हो और शुक्र दसवें घर में हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा यशस्वी राजा होता है।

(३७) गुरु और सूर्य मेष राशि में स्थित होकर लग्न में बैठे हों, मंगल दसवें घर में हो, शुक्र, बुध तथा चंद्रमा नवें घर में हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दिग्विजयी एवं संपूर्ण पृथ्वी का स्वामी होता है।

(३८) मेष में सूर्य, कर्क में गुरु और तुला में शनि तथा चंद्रमा हों, तो ऐसा व्यक्ति बहुत बड़ा राजा होता है।

(३९) मीन राशि का चंद्रमा लग्न में बैठा हो, लग्न वर्गोत्तम हो, चंद्रमा बलवान हो तथा संपूर्ण ग्रहों की उस पर दृष्टि हो, तो ऐसा जातक पृथ्वी का स्वामी तथा इंद्र के समान पराक्रमी होता है।

(४०) धन-स्थान में सूर्य हो तथा शुक्र, गुरु और चंद्रमा केंद्र में हो, परंतु न तो वे अस्त हों और न शत्रु ग्रहों की उस पर दृष्ट ही हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक शत्रुजयी एवं बड़ा यशस्वी राजा होता है।

(४१) कर्क में गुरु, मेष में सूर्य, मीन में शुक्र तथा वृष में चंद्रमा हो और वह शनि द्वारा दृष्ट हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रतापी राजा होता है।

(४२) पांचवें घर में बुध, शुक्र और गुरु हों, परंतु वे अस्त न हों, मकर का मंगल सूर्य से रहित हो तथा नवें घर में शनि बैठा हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक राजा-धिराज होता है।

(४३) गुरु और शुक्र चौथे घर में हों, तो जातक पराक्रमी, धनी एवं पृथ्वीपति होता है।

(४४) कर्क राशि में गुरु के साथ चंद्रमा बैठा हो, तो ऐसा व्यक्ति कश्मीर देश का राजा होता है।

(४५) गुरु को बुध देखता हो, तो ऐसा व्यक्ति महाधनी राजा होता है।

(४६) जन्म-काल में एक ग्रह पांचवें नवांश में बैठा हो, तो वह राजयोगकारक होता है।

(४७) चंद्रमा अपने अधिमित्र के नवांश में बैठा हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तो राजयोगकारक होता है।

(४८) चंद्रमा अपने नवांश में अथवा मित्र के नवांश में हो और गुरु उसे देखता हो, तो जातक के लिए राजयोगकारक होता है।

(४९) उच्च वृष राशि में चंद्रमा बुध के साथ बैठा हो, तो वह जातक को मगध देश का राजा बनाता है। यदि चंद्रमा बलवान हो, तो किसी भी अन्य अच्छे स्थान का राजा बनता है।

(५०) जन्म-राशि का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश बली होकर केंद्र में बैठा हो, तो नीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति भी राजा होता है।

(५१) मेष का सूर्य चंद्रमा के साथ बैठा हो, तो ऐसा जातक भी राजा होता है।

(५२) गुरु और शुक्र उच्च राशिस्थ होकर केंद्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों, तो ऐसा जातक राजा अथवा राजमंत्री होता है।

(५३) सातवें, दूसरे, बारहवें तथा लग्न में सभी ग्रह बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली तथा राजा होता है।

(५४) जन्म-काल में पाप ग्रह लग्न में हो, उस पर गुरु की दृष्टि हो और गुरु कर्क का हो, तो ऐसा व्यक्ति बड़ा धनी तथा यशस्वी होता है।

(५५) बृहस्पति मकर राशि के अतिरिक्त लग्न में बैठा हो अथवा कर्क राशिगत कर्क के नवांश में हो, तो जातक राजा होता है।

(५६) बृहस्पति चंद्रमा के साथ केंद्र में बैठा हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तथा कोई ग्रह नीच का न हो, तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी राजा होता है।

(५७) यदि जन्म-काल में दूसरे घर में बुध, शुक्र और गुरु बैठे हों तथा मंगल और

चंद्रमा सातवें घर में हों, तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं पर विजय पाने वाला तथा अत्यंत प्रतापी राजा होता है।

(५८) शुक्र भाग्य-भवन में बैठा हो, चंद्रमा दसवें घर में हो तथा अन्य सभी ग्रह लाभ भवन में हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा होता है।

(५९) सभी ग्रह तीसरे, छठे, दसवें तथा ग्यारहवें स्थान में बैठे हों, तो जातक राजा होता है।

(६०) सभी ग्रह सूर्य, गुरु, चंद्रमा और मंगल में तीसरे, पांचवें और नवें स्थान में बैठे हों, तो ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली राजा होता है।

(६१) बुध कर्क में हो और गुरु धनु राशि में हो तथा बुध को सूर्य और गुरु को मंगल देखते हों, तो जातक राजा होता है।

(६२) छठे घर में राहु और मंगल हों तथा दसवें घर में बुध व सूर्य हों, तो जातक राजा होता है।

(६३) गुरु और शनि के बीच में सभी ग्रह बैठे हों, तो ऐसा जातक भी हाथी-घोड़ों से युक्त पृथ्वी का स्वामी (राजा) होता है।

(६४) तीसरे घर में गुरु और आठवें घर में शुक्र हो तथा अन्य सभी ग्रह इनके बीच में बैठे हों, तो जातक पराक्रमी राजा होता है।

(६५) वृष में गुरु, मिथुन में चंद्रमा, मकर में मंगल, सिंह में शनि, कन्या में सूर्य और बुध तथा तुला में शुक्र हो, तो जातक महाराजा होता है।

(६६) बृहस्पति कर्क उच्च का होकर लग्न में स्थित हो और अन्य सभी ग्रह बुरे हों, तो भी जातक दीर्घायु, सेनापति, राजमान्य, धनी तथा सुखी होता है।

(६७) धनु का मंगल और शुक्र, मीन का बृहस्पति, तुला का बुध तथा नीच के शनि और चंद्र हों, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला जातक धनहीन राजा होता है।

(६८) मीन का शुक्र या बुध हो, राहु दूसरे भाव में हो तथा सूर्य लग्न में हो, तो जातक भोगी, दानी, यशस्वी, राजमान्य एवं भूस्वामी होता है।

(६९) तीसरे घर में गुरु और ग्यारहवें घर में चंद्रमा हो, तो जातक सुप्रसिद्ध भूपति एवं राजाओं में विख्यात होता है।

(७०) सभी शुभ ग्रह उच्च के होकर केंद्र में बैठे हों, तो जातक अपने वंश का पालन करने वाला तथा अचल राज्य का स्वामी होता है।

(७१) पांचवे घर में गुरु और दसवें घर में चंद्रमा हो, तो ऐसा जातक बड़ा बुद्धिमान, तपस्वी तथा जितेंद्रिय राजा होता है।

(७२) सिंह का गुरु हो और तुला, कर्क, धनु एवं मकर— इन राशियों में अन्य सभी ग्रहों की स्थिति हो, तो ऐसा व्यक्ति अत्यंत धनी, सुखी, तथा राजा होता है।

(७३) तुला, धनु अथवा मीन राशि का शनि लग्न में स्थित हो, तो ऐसा व्यक्ति पृथ्वीपति होता है।

(७४) कर्क राशि में गुरु, ग्यारहवें घर में चंद्रमा, बुध और शुक्र तथा मेष राशि में सूर्य हो, तो जातक पृथ्वी-पति होता है।

(७५) लग्न में शनि और चंद्रमा हों तथा आठवें घर में शुक्र हो, तो ऐसा जातक वेश्याओं से प्रीति रखने वाला मानी राजा होता है।

(७६) दूसरे घर में शुक्र, दसवें में गुरु तथा छठे स्थान में राहु की स्थिति हो, तो ऐसा जातक पराक्रमी राजा होता है।

(७७) मिथुन में राहु और सिंह में मंगल हो, तो जातक अपने पिता का संपूर्ण धन प्राप्त करता है। यदि सूर्य उच्चाभिलाषी होकर त्रिकोण में हो, तो जातक धन-धान्य से पूर्ण राजा होता है।

(७८) सिंह में गुरु, कन्या में शुक्र, मिथुन में शनि तथा स्वक्षेत्री मंगल चौथे घर में हो, तो जातक राजा होता है।

(७९) शनि और चंद्रमा कन्या राशि में, शुक्र मीन में तथा मंगल मकर राशि में हो, तो जातक सबको पालने वाला बड़ा राजा होता है।

(८०) चौथे घर में शुक्र, गुरु, मंगल, सूर्य तथा शनि एक साथ बैठे हों, तो जातक बड़ा प्रतापी राजा होता है।

(८१) आठवें और बारहवें घर में पाप ग्रह हो तथा अन्य सभी शुभ ग्रह इनके बीच में बैठे हों, तो ऐसा व्यक्ति बडा कामी, मद्यप परंतु धनवान और प्रतापी राजा होता है।

(८२) लग्न में शनि और चंद्रमा, पांचवें, तथा नवें घर में गुरु और सूर्य तथा दसवें घर में मंगल हो, तो जातक बड़ा राजा होता है।

(८३) दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे और दसवें घरों में यदि सभी ग्रह बैठे हों, तो जातक राजा होता है।

(८४) धनु में शनि और चंद्रमा, मेष में गुरु तथा दसवें घर में राहु और शुक्र हों, तो जातक राजा होता है।

(८५) चंद्रमा के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रह वृश्चिक राशि को देखते हों और वे छठे, सातवें तथा आठवें घर में स्थित हों, तो ऐसा व्यक्ति दीर्घायु तथा राजा होता है।

(८६) छठे, आठवें, बारहवें तथा दूसरे भाव में सभी ग्रह बैठे हों, तो जातक राज्य सिंहासन को प्राप्त करता है।

(८७) मेष में सूर्य हो, बृहस्पति चौथे घर में तथा मंगल दसवें घर में हो, तो जातक विश्वपति होता है।

(८८) केंद्र में उच्च के शुभ ग्रह बैठे हों, तो जातक लक्ष्मीपति होता है।

(८९) क्रेंद में उच्च के पाप ग्रह बैठे हों, तो ऐसा जातक धनहीन राजा होता है।

(९०) चारों केंद्रों में शुभ ग्रह हों और बारहवें तथा आठवें पाप ग्रह हों, तो जातक छत्रधारी राजा होता है।

(९१) सूर्य केंद्र में हो, तो जातक राजा की सेवा करता है। चंद्रमा केंद्र में हो, तो वणिक्‌वृत्ति करता है। मंगल केंद्र में हो, तो शस्त्र-वृत्ति करता है। बुध केंद्र में हो, तो अध्यापन कार्य करता है। गुरु केंद्र में हो, तो अनुष्ठानरत रहता है। शुक्र केंद्र में हो, तो विद्या और धन से पूर्ण होता है तथा शनि केंद्र में हो, तो जातक नीच जनों की सेवा करके अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।

विशेष टिप्पणी—वर्तमान काल में राजा-महाराजा नहीं होते, अत: यदि किसी जातक की कुंडली में उक्त प्रकार के राजयोग हों, तो ग्रहों के बलाबल के अनुसार उसका मंत्री, राज्यपाल, राष्ट्रपति, राजदूत आदि होना समझना चाहिए।

आवश्यक चक्र एवं कोष्ठक आदि

जन्मकुंडली का फलादेश देखते समय ग्रहों की पारस्परिक मैत्री-शत्रुता तथा अन्य विषयों की जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक चक्रों एवं कोष्ठकों को पाठकों के लाभार्थ यहां दिया जा रहा है—

भावों के कारक ग्रहों का चक्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तनु	धन	सहज	सुख	पुत्र	रिपु	स्त्री	आयु	धर्म	कर्म	लाभ	व्यय
सूर्य	गुरु	मंगल	चंद्र बुध	गुरु	मंगल	शुक्र	शनि	सूर्य गुरु	बुध गुरु शुक्र शनि	गुरु	शनि

तात्कालिक मैत्री-चक्र

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
मित्र	चंद्र मंगल शुक्र	मंगल सूर्य शुक्र बुध	सूर्य चंद्र बुध शनि	चंद्र मंगल शुक्र	शनि	चंद्र सूर्य बुध	मंगल गुरु
शत्रु	बुध गुरु शनि	गुरु शनि	शुक्र गुरु	सूर्य गुरु शनि	चंद्र सूर्य मंगल बुध शुक्र	मंगल गुरु शुक्र	सूर्य चंद्र बुध शुक्र

पंचधा मैत्री-चक्र

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
अधिमित्र	चंद्र मंगल	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र	शुक्र चंद्र		बुध	
मित्र	गुरु	मंगल शुक्र	शनि		शनि		गुरु
सम	शुक्र		गुरु बुध	सूर्य मंगल	शुक्र चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि	बुध मंगल शुक्र
शत्रु	बुध	गुरु शनि	शुक्र	गुरु शनि		मंगल गुरु	
अधिशत्रु	शनि				बुध शुक्र		सूर्य चंद्र

होरा ज्ञानार्थ चक्र

	१ से १५	१६ से ३०
मेष	सू०	चं०
वृष	चं०	सू०
मिथुन	सू०	चं०
कर्क	चं०	सू०
सिंह	सू०	चं०
कन्या	चं०	सू०
तुला	सू०	चं०
वृश्चिक	चं०	सू०
धनु	सू०	चं०
मकर	चं०	सू०
कुंभ	सू०	चं०
मीन	चं०	सू०

स्पष्ट ज्ञानार्थ देष्काण चक्र

	१ से १०	११ से २०	२१ से ३०
मेष	मेष	सिंह	धनु
वृष	वृष	कन्या	मकर
मिथुन	मिथुन	तुला	कुंभ
कर्क	कर्क	वृश्चिक	मीन
सिंह	सिंह	धनु	मेष
कन्या	कन्या	मकर	वृष
तुला	तुला	कुंभ	मिथुन
वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	कर्क
धनु	धनु	मेष	सिंह
मकर	मकर	वृष	कन्या
कुंभ	कुंभ	मिथुन	तुला
मीन	मीन	कर्क	वृश्चिक

राशि-चक्र

राशीश्वर	नक्षत्र									राशि
मंगल	अ	लो	ले	लू	ली	ला	चो	चे	चू	मेष
शुक्र	वो	वे	वू	वी	वा	ओ	ए	उ	इ	वृष
बुध	ह	को	के	छ	ङ	घ	कु	की	क	मिथुन
चंद्र	डो	डे	डू	डी	डा	हो	हे	हू	ही	कर्क
सूर्य	टे	टू	टी	टा	मो	मे	मू	मी	म	सिंह
बुध	पो	पे	ठ	ण	ष	पू	पी	प	टो	कन्या
शुक्र	ते	तू	ती	ता	रो	रे	रू	री	रा	तुला
मंगल	यू	यी	या	नो	ने	नू	नी	ना	तो	वृश्चिक
गुरु	भे	ढ	फ	ध	भू	भी	भ	यो	ये	धनु
शनि	गी.	गा	खो	खे	खू	खी	जी	ज	भो	मकर
शनि	द	सो	से	सू	सी	सा	गो	गे	गू	कुंभ
गुरु	ची	च	दो	दे	ञ	झ	थ	दू	दी	मीन

नवमांश चक्र

खंड		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
३	२०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६	४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०	०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३	२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६	४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०	०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३	२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६	४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
३०	०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

द्वादशांश चक्र

स्वामी	अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
गणेश	२।३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अश्विनीकुमार	५।००	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
यम	७।३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
सर्प	१०।००	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
गणेश	१२।३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
अश्विनीकुमार	१५।००	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
यम	१७।३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
सर्प	२०।००	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
गणेश	२२।३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
अश्विनीकुमार	२५।००	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
यम	२७।३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
सर्प	३०।००	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

स्पष्ट ज्ञानार्थ सप्तमांश चक्र

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
४।१७।८	१	८	३	• १०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८।३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

नैसार्गिक मैत्री-चक्र

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
मित्र	गुरु चंद्र मंगल	सूर्य बुध	गुरु चंद्र सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध राहु शनि	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि	शनि बुध शुक्र
सम	गुरु बुध	गुरु मंगल शुक्र शनि	शुक्र शनि राहु	मंगल गुरु राहु शनि	शनि राहु	मंगल गुरु	गुरु	गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि राहु		बुध	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र मंगल

१५८२

॥ समाप्त ॥